कोरिया की मजदूर पार्टी की केन्द्रीय
समिति का पार्टी इतिहास प्रतिष्ठान

प्रकाशक
अखिल भारतीय भारत-कोरिया मैत्री संघ
नई दिल्ली

भूमिका

हमें इस बात की प्रसन्नता है कि मार्शल किम इल सुंग के ६०वें जन्म दिवस के शुभ-अवसर पर अखिल भारतीय भारत-कोरिया मैत्री संघ की ओर से हम अपने देश की राष्ट्र भाषा हिन्दी में यह महत्वपूर्ण पुस्तक—"कामरेड किम इल सुंग की क्रान्तिकारी गतिविधियों का संक्षिप्त इतिहास" प्रकाशित कर रहे हैं।

जैसा कि इस पुस्तक के शुरू में कहा गया है, कामरेड किम इल सुंग की क्रान्तिकारी गतिविधियों का इतिहास कोरिया के कठोर स्वाधीनता संघर्ष का इतिहास है, वहां के मजदूर वर्ग की मुक्ति का इतिहास है, कोरिया की जनता के राष्ट्रीय मुक्ति संघर्ष की विजयों तथा कम्युनिस्ट आन्दोलन का इतिहास है और कोरिया में समाजवादी निर्माण का इतिहास है। प्रस्तुत पुस्तक को पढ़ने से आपको पता चलेगा कि एक गरीब किसान के घर में जन्म लेकर किस तरह मार्शल किम इल सुंग अपनी बाल्यावस्था से ही क्रान्तिकारी आन्दोलन में कूदे और किस तरह उन्होंने पन्द्रह साल के लम्बे जापान-विरोधी सशस्त्र संघर्ष में सेना तथा जनता का नेतृत्व किया और जापानियों को परास्त किया। इस सशस्त्र संघर्ष के बाद मार्शल किम इल सुंग ने पूरे कोरिया को जापान के चंगुल से तो निकाल लिया, परन्तु अमरीकी साम्राज्यवादियों ने कोरिया के दक्षिणी भाग पर कब्जा कर लिया और वहां अपनी कठपुतली सरकार कायम कर दी। अब कोरिया के इस महान नेता ने यह निश्चय किया कि देश के उत्तरी भाग में समाज-वादी निर्माण किया जाए और दक्षिणी भाग में अमरीका-विरोधी जन-आन्दोलनों को सहायता दी जाए। कोरिया के उत्तरी भाग में भूमि सुधार किए गए और उद्योग धंधे कायम हुए। उत्तरी भाग शक्तिशाली होता चला गया। दक्षिण कोरिया में अमरीका के विरुद्ध जन-आन्दोलन तेज हुए। यह सब भला अमरीकी साम्राज्यवादियों को कैसे सहन हो सकता था! उन्होंने शान्तिप्रिय समाजवादी कोरिया पर दक्षिण से आक्रमण कर दिया और संयुक्त राष्ट्र संघ के झण्डे की आड़ में १७ देशों की फौजें इस छोटे से एशियाई देश, कोरिया, की भूमि पर उतार दीं। लेकिन तीन साल की घमासान लड़ाई में अमरीकी साम्राज्यवादियों तथा अन्य देशों की सेनाओं को कोरियाई जन सेना के सामने घुटने टेकने पड़े। इस युद्ध में अमरीकी साम्राज्यवादियों के १,०९३८०० सैनिक हताहत

हुए। इसके अतिरिक्त १२,२०० वायुयान, २५० जलयान, ३००० से अधिक टैंक तथा अन्य साजोसामान से भी उन्हें हाथ धोना पड़ा। इस तरह अमरीकी आक्रमण को विफल करके, युद्ध विराम के बाद कोरिया के उत्तरी भाग में फिर पुनर्निर्माण शुरू हो गया और मार्शल किम इल सुंग के नेतृत्व में जनवादी जन गणतन्त्र कोरिया बड़ी तेज रफ्तार से आगे बढ़ा।

यह सब कैसे हुआ? मार्शल किम इल सुंग के नेतृत्व में कोरियाई जनता ने एक होकर इतनी बड़ी शक्तिशाली साम्राज्यवादी शक्ति को कैसे परास्त किया? इसकी पूरी जानकारी हासिल करने के लिए इस पुस्तक को पढ़ना जरूरी है।

कोरिया आज भी दो भागों—उत्तर तथा दक्षिण, में विभाजित है। पूरे देश की आबादी लगभग चार करोड़ है। पुस्तक के प्रारम्भ में ही मार्शल किम इल सुंग को चार करोड़ कोरियाई जनता के महान नेता कहा गया है। यह कहना कोई गलत बात नहीं है। दक्षिण कोरिया की जनता भी मार्शल किम इल सुंग को अपना नेता मानती है, क्योंकि वह अमरीकी साम्राज्यवादियों के दमन और अत्याचार से छुटकारा पाना चाहती है। दक्षिण कोरिया की जनता आधुनिक अस्त्रों से लैस अमरीकी सेना के भारी दमन के बीच अपनी स्वाधीनता के लिए संघर्ष कर रही है, और इस संघर्ष में वह मार्शल किम इल सुंग से प्रेरणा लेती है, जिनके मार्गदर्शन और नेतृत्व में उत्तरी भाग में समाजवादी निर्माण हो रहा है तथा हर व्यक्ति इज्जत की जिन्दगी बसर कर रहा है। इसलिए मार्शल किम इल सुंग को चार करोड़ कोरियाई जनता का नेता, यानी पूरे कोरिया का नेता माना जाता है।

यह कहने की आवश्यकता नहीं कि जनवादी जन गणतन्त्र कोरिया ने कामरेड किम इल सुंग के नेतृत्व में हर क्षेत्र में कितनी प्रगति की है। जनवादी जन गणतन्त्र कोरिया की स्थापना की २३वीं वर्षगांठ के अवसर पर आयोजित आम सभा में बोलते हुए केन्द्रीय इस्पात मंत्री श्री मोहन कुमार मंगलम ने कहा: "उत्तरी कोरिया के आर्थिक विकास की १९.१ प्रतिशत रफ्तार जापान तथा इटली के आर्थिक विकास की रफ्तार से भी ऊंची है। उत्तरी कोरिया आज ११ दिन में उतना उत्पादन कर लेता है, जितना १९४४ में साल भर में होता था। उसका औद्योगिक उत्पादन १९५६ से ६ गुना बढ़ा है, जिसमें २० लाख टन इस्पात तथा १५ लाख टन खाद शामिल है।"

समाजवादी कोरिया की अभूतपूर्व प्रगति में बहुत बड़ा योगदान है—मार्शल किम इल सुंग के "जूछे" विचार का। "जूछे" विचार का मतलब है कि कोरियाई जनता हर क्षेत्र—आर्थिक, राजनीतिक, रक्षात्मक आदि—में आत्म निर्भर बने; अपने स्रोतों, साधनों तथा अपनी मेहनत पर भरोसा रखे, किसी विदेशी सहायता पर निर्भर न रहे। इस पुस्तक में "जूछे" विचार के महत्व को विस्तार के साथ समझाया गया है। इस "जूछे" विचार से हम लोग भी बहुत कुछ सीख सकते हैं। जब मैं पिछले वर्ष जनवादी जन गणतन्त्र कोरिया

में था तो मैंने स्वयं अपनी आंखों से "जूछे" तथा "छलिमा" के करिश्मे देखे। विकासशील देशों का विदेशी सहायता, विशेष तौर पर साम्राज्यवादी व पूंजीवादी देशों की सहायता, पर निर्भर रहना खतरनाक साबित होता है।

प्रधान मंत्री किम इल सुंग और जनवादी जन गणतन्त्र कोरिया की सरकार ने देश के शान्तिपूर्ण पुनर्एकीकरण के लिए लगातार सुझाव रखे हैं और यह उन्हीं कोशिशों का नतीजा है कि "पानमुनजाम" में जनवादी जन गणतन्त्र कोरिया की रैडक्रास सोसायटी तथा दक्षिण कोरिया की रैडक्रास सोसायटी के प्रतिनिधियों के बीच वार्ता चल रही है। हमारी हार्दिक कामना है कि यह वार्ता सफल हो, ताकि उत्तर तथा दक्षिण के परिवार, मित्र व सम्बन्धी आपस में मिल सकें और पत्र व्यवहार कर सकें।

हमें आशा है कि प्रस्तुत पुस्तक पाठकों को पसन्द आएगी और अधिक से अधिक पाठक इससे लाभ उठाकर, ईमानदारी और लगन से अपने देश की सेवा करेंगे।

अमरनाथ विद्यालंकार
महामन्त्री
अखिल भारतीय भारत-कोरिया मैत्री संघ

दिसम्बर, नई दिल्ली

चार करोड़ कोरियाई जनता के महान नेता, अद्वितीय देशभक्त, राष्ट्रीय जननायक, सदाजयी, लौहसंकल्प सेनापति तथा अंतर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट और मजदूर आन्दोलन के एक महान नेता कामरेड किम इल सुंग ने अपने जीवन के आरंभिक वर्षों में क्रांतिकारी संघर्ष में कदम रखने के बाद से आज तक चालीस वर्ष से अधिक समय से स्वतंत्रता, जनता के सुख और क्रांति की विजय के लिए संघर्ष के प्रति अपना सर्वस्व अर्पित कर रखा है।

पितृभूमि तथा राष्ट्र के भविष्य को अपने कंधों पर ढोते हुए कामरेड किम इल सुंग ने कोरियाई क्रांति को विजयी बनाया और ऐसी महान उज्ज्वल उपलब्धियां अर्जित कीं जिनकी मिसाल हमारे देश के इतिहास के किसी युग में नहीं मिल सकती।

कामरेड किम इल सुंग के क्रांतिकारी क्रियाकलाप का इतिहास देश की स्वाधीनता तथा मजदूर वर्ग और जनता की मुक्ति के लिए रक्त रंजित संघर्ष का इतिहास है, एक ऐसा गौरवशाली इतिहास जो पितृभूमि और जनता के प्रति उनके उत्कट प्रेम तथा क्रांति के प्रति उनकी असीम निष्ठा से आद्योपान्त ओतप्रोत है।

यह इतिहास कोरियाई जनता के राष्ट्रीय मुक्ति संघर्ष और कोरियाई कम्युनिस्ट आन्दोलन की विजय का भी इतिहास है, कोरिया में मार्क्सवाद–लेनिनवाद के रचनात्मक विकास का इतिहास है।

कामरेड किम इल सुंग ने कोरियाई क्रांति में जूछे की पूर्ण प्रतिष्ठा को और इस प्रकार कोरिया में कम्युनिस्ट आन्दोलन तथा राष्ट्रीय मुक्ति संघर्ष का नया मार्ग प्रशस्त किया, हमारे देश को जीवन और मरण के संकट से उबारा और कोरियाई जनता को युगान्तकारी परिवर्तन और समृद्धि के मार्ग पर सही ढंग से आगे बढ़ाया और आज भी बढ़ा रहे हैं।

कामरेड किम इल सुंग ने हमारे देश के कम्युनिस्ट आन्दोलन के इतिहास में पहली बार कोरिया की वास्तविकताओं में मार्क्सवाद–लेनिनवाद को लागू किया और उसको नया विकास प्रदान किया। उन्होंने क्रांति और उसके निष्पादन की सही तथा मौलिक दिशा निर्धारित करके कोरिया की क्रान्ति को अथक रूप में विजय की मंजिल तक पहुंचाया है।

कोरियाई जनता ने क्रांति तथा निर्माण के क्षेत्र में शानदार उपलब्धियां और महान सफलताएं अर्जित की हैं। कोरियाई जनता द्वारा अर्जित हर जीत और सफलता निरपवाद रूप से कामरेड किम इल सुंग के विवेकपूर्ण नेतृत्व से जुड़ा है।

कामरेड किम इल सुंग ने लंबे अरसे तक क्रूरतम जापानी तथा अमरीकी साम्राज्य-वादियों के विरुद्ध अथक और अडिग संघर्ष चलाया है और सर्वहारा अंतर्राष्ट्रीयतावाद के झंडे को ऊंचा रखते हुए दूसरे देशों के जनगण के क्रांतिकारी संघर्ष में उन्हें सक्रिय समर्थन और सहायता प्रदान की है।

अपने गहन तथा मौलिक सैद्धांतिक और अमली क्रियाकलाप द्वारा कामरेड किम इल सुंग ने अंतर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट तथा मजदूर वर्ग आन्दोलनों और औपनिवेशिक तथा पराधीन देशों के जनगण के राष्ट्रीय मुक्ति संघर्षों में महान भूमिका अदा की है।

कोरियाई कम्युनिस्टों तथा जनता के लिए यह असीम सम्मान और आनन्द का विषय है कि उन्हें उस महान नेता कामरेड किम इल सुंग से सीखने का अवसर मिलता है जो वैज्ञानिक क्रांतिकारी सिद्धांत से नेतृत्व के अनुभव के ऐश्वर्य, विशिष्ट योग्यता तथा ऊंचे गुणों से संपन्न हैं और जिन्होंने हमारी जनता को क्रांति की निश्चित, लंबे तूफान के बीच, शानदार विजय के पथ पर नेतृत्व प्रदान किया है तथा वे उनके नेतृत्व की हिमायत करते हुए उनके निष्ठावान सिपाही के रूप में जीते और जूझते हैं।

१

कोरियाई जनता के सम्मानित और प्रिय नेता कामरेड किम इल सुंग का जन्म प्योंग्यांग के मांग्यंदै (तत्कालीन दक्षिण प्योंगआन सूबे में तेदोंग काउंटी, कोपियोंग उप-काउंटी के नाम-रि) में १५ अप्रैल, १६१२ को एक गरीब किसान के घर हुआ था।

कामरेड किम इल सुंग का परिवार एक देशभक्त तथा क्रांतिकारी परिवार है जो देश की स्वाधीनता और विदेशी आक्रमणकारियों के विरुद्ध जनता की स्वतंत्रता और मुक्ति के लिए पीढ़ी दर पीढ़ी लड़ता रहा है।

उनके प्रपितामह श्री किम उंग उ एक ऐसे देशभक्त थे जिन्होंन १८६६ में हमारे देश पर आक्रमण के बहाने अमरीकी आक्रमणकारियों द्वारा गुप्त रूप से भेजे गये 'जनरल शेरमन' नामक दस्यु जहाज को डुबाने के लिए युद्ध का नेतृत्व किया।

उनके पितामह श्री किम बो इयोन और उनकी दादी श्रीमती लि बो इक भी देशभक्त थे जो अपने पुत्रों और पौत्रों के क्रांतिकारी संघर्षों का समर्थन करते हुए जापानी साम्राज्यवादियों के कठोर दमन और ताड़ना के सामने बगैर झुके अपने राष्ट्रीय सिद्धांतों पर डटे रहे और आक्रमणकारियों के विरुद्ध अडिग संघर्ष करते रहे।

उनके पिता श्री किम ह्योंग जिक हमारे देश के राष्ट्रीय मुक्ति आन्दोलन के अग्रणी और असाधारण नेता थे। वे जबर्दस्त देश भक्ति पूर्ण जापान-विरोधी विचार और असाधारण प्रतिभा और उदात्त गुणों से संपन्न थे।

चिवोन (उदात्त लक्ष्यों) के साथ क्रांति के पथ पर आगे बढ़ कर उन्होंने अपने माध्यमिक स्कूली जीवन में ही जापान-विरोधी संघर्ष का नेतृत्व किया और मार्च, १६१७ में कोरियाई राष्ट्रीय संघ की स्थापना की।

कोरियाई राष्ट्रीय संघ ने व्यापक देशभक्त जापान-विरोधी शक्तियों को दृढ़ता के साथ एकजुट करने और जब कभी अनुकूल क्रांतिकारी परिस्थिति पैदा हो जाये तभी स्वयं कोरियावासियों के प्रयास से कोरिया की आजादी हासिल करने का जंगजू दायित्व

प्रतिपादित किया। यह हमारे देश में मार्क्सवाद–लेनिनवाद के प्रसार से पहले के काल में सबसे अविचल साम्राज्यवाद–विरोधी दृष्टिकोण वाला एक क्रांतिकारी संगठन था तथा आकार और कार्यक्षेत्र की दृष्टि से सबसे बड़ा भूमिगत जापान–विरोधी क्रांतिकारी संगठन भी था।

श्री किम ह्योंग जिक के पथ–प्रदर्शन में कोरियाई राष्ट्रीय संघर्ष ने स्वदेश के विभिन्न भागों में तथा विदेश में भी व्यापक रूप से अपनी शाखाएं फैला लीं और कानूनी तथा गैरकानूनी गतिविधियों का तालमेल बैठाते हुए सक्रिय रूप में आम जनता को जापान–विरोधी संघर्ष में संगठित और लामबंद कर लिया।

वे १९१७ के शरद में जापानी साम्राज्यवादी पुलिस द्वारा कोरियाई राष्ट्रीय संघ से सबंधित सौ से अधिक व्यक्तियों के साथ गिरफ्तार कर लिए गये।

जापानी साम्राज्यवादी पुलिस अधिक से अधिक पाशविक यंत्रणाएं दे कर और खुशामदें करके भी उनके महान क्रांतिकारी सिद्धांत तथा पितृभूमि के पुनरुद्धार संबंधी उनके उत्कट क्रांतिकारी विचारों को कुचल नही सकी।

जेल से रिहा होने के बाद उन्होंने अपना संघर्ष–क्षेत्र हमारे देशके उत्तरी सीमान्त क्षेत्र और उत्तर-पूर्व चीन को बना लिया और देश और विदेश में जापान–विरोधी आन्दोलनों की नेतृत्वकारी चेतना के रूप में अपनी क्रांतिकारी गतिविधियों का कर्मठता के साथ प्रसार किया।

श्री किम ह्योंग जिक ने दृढ़ता के साथ पूंजीवादी राष्ट्रवादियों के इस निरर्थक प्रयास को ठुकरा दिया कि जापानी साम्राज्यवादी ठगों के पास 'अर्जियां' भेज कर या साम्राज्यवादी शक्तियों की 'मदद' से आजादी हासिल की जाये। वे इस स्थिति पर अडिग रहे कि देश का पुनरुद्धार हर कीमत पर स्वतंत्र रूप से करना है, जिसके लिए कोरियाई जनता की व्यापक देश भक्त शक्तियों का सहयोग प्राप्त करना है और उन्होंने जापान–विरोधी क्रांतिकारी शक्तियों के ऐक्य और उनकी पांतों की एकता और एकजुटता के लिए पुरजोर गतिविधियों का संचालन किया।

प्रगतिशील विचारों के प्रति संवेदनशील होने के नाते हमारे देश में जापान-विरोधी राष्ट्रीय मुक्ति आन्दोलन की नयी प्रगति के प्रति आम अवाम में क्रांतिकारी जागरण का संचार करने के लिए वे सदा मेहनतकश जनता के बीच गहराई तक उतरते थे तथा जनता के हितों की रक्षा के लिए दृढ़तापूर्वक लड़ते थे।

उन्होंने अनेक स्थानों में स्कूलों की स्थापना की तथा उभरती हुई पीढ़ी को देशभक्ति और नये ज्ञान की शिक्षा–दीक्षा देने के लिए हर संभव प्रयास किया। साथ ही वे अपने

पुत्रों को पालपोसकर उत्कट देशभक्त और खरा क्रांतिकारी बनाने में अपनी समूची शक्ति लगाते रहे।

वे हमेशा अपने बेटों को देश के सुन्दर पहाड़ों और नदियों के बारे में, उसकी देशभक्त जनता के संघर्षों के बारे में, रूस में अक्तूबर समाजवादी क्रांति तथा विश्व की ताजी घटनाओं के बारे में बताते रहते।

इस प्रकार श्री किम ह्योंग जिक न सिर्फ ऐसे दुर्धर्ष जापान-विरोधी क्रांतिकारी योद्धा थे जिसने देश की स्वाधीनता तथा जनता की आजादी और मुक्ति के संघर्ष के लिए अपना समस्त जीवन सर्मापित कर दिया था। वे न सिर्फ एक देशभक्त, क्रांतिकारी शिक्षक थे, बल्कि वे हमारे देश के जापान-विरोधी राष्ट्रीय मुक्ति आन्दोलन के एक असाधारण नेता भी थे।

कामरेड किम इल सुंग की माता श्रीमती कांग बान सक भी अद्भुत प्रतिभा, सदय हृदय और दृढ़ चरित्र की जापान विरोधी क्रांतिकारी योद्धा थी और उन्होंने शत्रु के विरुद्ध अविचल संघर्ष किया।

घोर दरिद्रता और जापानी साम्राज्यवादी पुलिस की ताड़ना की परवाह किये बिना उन्होंने श्री किम ह्योंग जिक के क्रांतिकारी क्रियाकलाप में सक्रिय सहायता पहुंचायी। अपने पत्रों को उत्साही क्रांतिकारी और कम्युनिस्ट के रूप में ढाला और अपने दिवंगत पति की इच्छा का निर्वाह करते हुए उभरती हुई पीढ़ी की शिक्षा-दीक्षा में अपना सब कुछ सर्मापित कर दिया।

मुसोंग क्षेत्र में कम्युनिस्टों के साथ कामरेड किम इल सुंग द्वारा संगठित गुप्त क्रांतिकारी मंडल की सदस्य के रूप में कार्य करते हुए उन्होंने एक जापान-विरोधी महिला संगठन बना लिया और अनेक इलाकों में उसके ताने-बाने का विस्तार करते हुए उन्होंने कर्मठता के साथ देश की स्वाधीनता और महिलाओं की सामाजिक मुक्ति के लिए संघर्ष का संगठन और प्रसार किया।

हालांकि वे गरीबी और अशक्तता से प्रताड़ित थीं फिर भी वे अपने तन की परवाह किये बिना और मात्र क्रांति के लिए भूमिगत कार्य की अपने ऊपर सभी मुश्किल जिम्मे-दारियां लेती रहीं। खासतौर पर जापान-विरोधी छापामार सेना की स्थापना के कार्य में उन्होंने स्वयं को कामरेड किम इल सुंग की सहायता के लिए तन-मन से अर्पित कर दिया।

इस प्रकार श्रीमती कांग बान सक ऐसी उत्साही कम्युनिस्ट और विश्रुत राज-नीतिक महिला विभूति थीं, जिन्होंने एक क्रांतिकारी की पत्नी के रूप में और कोरियाई जनता के महान नेता कामरेड किम इल सुंग को जन्म देने और उन्हें पाल-पोस कर बड़ा

करने वाली मां के रूप में कोरियाई क्रांति की विजयके लिए ही सब कुछ समर्पित कर दिया।

कामरेड किम इल सुंग के चचा श्री किम ह्योंग ग्वोन भी जोशीले क्रांतिकारी योद्धा और कट्टर कम्युनिस्ट थे जो पितृभूमि के पुनरुद्धार के लिए बचपन में ही क्रांतिकारी संघर्ष में शामिल हो गये थे।

वे कोरियाई क्रांतिकारी सेना में भर्ती हो गये जिसे कामरेड किम इल सुंग ने जापान विरोधी सशस्त्र संघर्ष की तैयारी के सिलसिले में संगठित किया था और उन्होंने १९३० की गर्मियों में कोरिया के उत्तरी इलाकों में एक छोटी सैनिक टुकड़ी का नेतृत्व करते हुए सशस्त्र कार्रवाइयों का निर्भीकता के साथ संचालन किया और जापानी साम्राज्यवादियो पर घातक प्रहार किये।

जापानी साम्राज्यवादी पुलिस ने उन्हें गिरफ्तार कर लिया और १५ वर्ष की सजा दे दी। वे जेल में ही मर गये, जहां वे शत्रु की पाशविक ताड़नाओं और समझौते की कोशिशों के सामन बिना झुके कोरियाई क्रांति की विजय के लिए अपने जीवन के अन्त तक अदम्य संकल्प के साथ लड़ते रहे।

कामरेड किम इल सुंग के दो छोटे भाई भी कम्युनिस्ट थे जिन्होंने अपने बचपन में ही जापान–विरोधी संघर्ष में हिस्सा लिया था और दृढ़ता के साथ लड़े थे।

उनके छोटे भाई कामरेड किम छल जु अथक क्रांतिकारी योद्धा थे जिन्होंन स्थानीय तरुण कम्युनिस्ट लीग संगठन के नेता के रूप में कर्मठता के साथ आम जनता में राजनीतिक कार्य का संगठन और संचालन किया। तरुण कम्युनिस्ट लीग में प्रशिक्षित अनक अच्छे–अच्छे युवकों को जापान–विरोधी छापामार सेना में भर्ती होने के लिए भेजा और जापानी साम्राज्यवाद के खिलाफ सशस्त्र होकर लड़ते हुए १९३५ में वीरगति प्राप्त की।

उनके चचेरे भाई कामरेड किम वोन जु भी एक दृढ़ निश्चयी जापान–विरोधी क्रांतिकारी योद्धा थे जिन्होंने कामरेड:किम इल सुंग द्वारा संगठित तथा संचालित जापान–विरोधी सशस्त्र संघर्ष की अपील पर कारखानों के मजदूरों, युवकों तथा छात्रों के साथ भूमिगत क्रांतिकारी संगठनों का निर्माण किया और जापानी साम्राज्यवाद के विरुद्ध सक्रियता के साथ संघर्ष किया।

कामरेड किम इल सुंग के नाना श्री कांग दोन उक और उनके मामा श्री कांग जिन सक भी जापान–विरोधी योद्धा थे जिन्होंने पितृभूमि के पुनरुद्धार के लिए घनघोर संग्राम किया।

जैसा कि इससे स्पष्ट है, कोरियाई क्रांति के असाधारण नेता तथा कोरियाई जनता के महान नेता कामरेड किम इल सुंग का परिवार और उनके संबंधी प्रपितामह, परदादे

से लेकर दादा, दादी, पिता, मां, चाचा और छोटे भाइयों और नाना, मामा तक—देश की स्वाधीनता के लिए और जनता की आजादी और मुक्ति के लिए पीढ़ी–दर–पीढ़ी पुरजोर संघर्ष करते रहे।

क्रांतिकारी परिवार में जन्मे कामरेड किम इल सुंग ऐसे भीषण तूफानों और मुसीबतों के बीच पले और बड़े हुए जबकि सारे देश में राष्ट्रीय विनाश के प्रति आक्रोश और पीड़ा व्याप्त थी। साथ ही साथ उनके माता–पिता उनके बचपन से ही उन्हें देश भक्ति की शिक्षा देते रहे।

वे प्रथम मार्च के उस विद्रोह की देशभक्तिपूर्ण उमंग से अनुप्राणित हुए थे जो कोरियाई जनता का राष्ट्र व्यापी जापान–विरोधी प्रतिरोध संघर्ष था। अपने पिता को जापानी साम्राज्यवादी पुलिस द्वारा अमानुषिकता के साथ बार–बार गिरफ्तार होते देख कर शत्रु का नामोनिशान मिटा देने का जंगजू संकल्प कर लिया तथा अपने पिता की अदम्य क्रांतिकारी गतिविधियों से प्रभावित हो कर बिल्कुल बचपन से ही देश भक्ति पूर्ण जापान–विरोधी सबल विचारों तथा क्रांतिकारी वर्ग चेतना से अनुप्राणित हो गये।

बचपन से ही कामरेड किम इल सुंग उदारचेता और विशाल हृदय थे और असाधारण प्रतिभा के अलावा वे स्वभाव से ही परिश्रमी और उत्साही थे।

कामरेड किम इल सुंग हमेशा अपने हाथों में किताब लिये रहते। वे प्राइमरी स्कूल के दिनों से ही हमारे देश के प्रसिद्ध देशभक्त सेनापतियों और संसार के प्रसिद्ध व्यक्तियों की जीवनियां पढ़ा करते और नियमित रूप से समाचार पत्र पढ़ा करते थे।

इस प्रकार उन्हें न सिर्फ अध्ययन के हर विषय में सबसे अधिक अंक प्राप्त होते बल्कि उन्होंने खास तौर से समाज के बारे में विशाल ज्ञान भण्डार भी अर्जित कर लिया था जिसका श्रेय उनके पिता से प्राप्त शिक्षा को है।

जब कामरेड किम इल सुंग १४ वर्ष के थे तभी से उनके मन में जापानी–साम्राज्यवादियों के विरुद्ध लड़ने और हर कीमत पर देश को आजाद कराने की प्रचंड आकांक्षा घर कर चुकी थी और वे उसी उम्र में उत्तर–पूर्व चीन चले गये जहां उनके पिता क्रांतिकारी संघर्ष में लगे हुए थे।

उन दिनों की याद करते हुए कामरेड किम इल सुंग ने कहा :

"१४ वर्ष की आयु में मैंने दृढ़ निश्चय के साथ आमलोक–गांग नदी पार की कि जब तक कोरिया स्वाधीन नहीं हो जाता, मैं वापस नहीं लौटूंगा। मै उस समय बच्चा ही था और किसी के लिखे 'अमलोक नदी के गीत' को गुनगुनाते हुए यह सोच कर कि वह दिन कब आयेगा, जब मैं इस धरती पर जहां मैं बड़ा हुआ और जहां की कब्रों में हमारे पुरखे

विराजमान हैं, फिर पांव रखूंगा और उस पर फिर वापस आऊंगा, मैं हैरानी के मारे अपनी व्यथा को दबा नहीं पाता था।"

कामरेड किम इल सुंग गुप्त आदेशों को यथा स्थान पहुंचाने का काम स्तुत्य तरीके से निभाते हुए अपने पिता के क्रांतिकारी कार्यकलाप में सहायता पहुंचाते रहे तथा छात्रों और आम जनता को देशभक्तिपूर्ण जापान-विरोधी विचारों से सक्रियता के साथ अनुप्राणित करते रहे।

उन्होंने इस तथ्य पर क्षोभ व्यक्त करते हुए कि हमारी पितृभूमि हमसे छिन गयी है और हमारे देशवासी मुसीबत के दिन काट रहे हैं, अपने आक्रोशपूर्ण उत्कट भाषणों के द्वारा जापान-विरोधी संघर्ष में उतरने के लिए जनता का आवाहन किया।

उनके तर्कपूर्ण और पुरजोश जापान-विरोधी प्रचार श्रोताओं में प्राण फूंक देते थे।

कामरेड किम इल सुंग के गहन राजनीतिक ज्ञान और महान उदारता से प्रेरित होकर बच्चे और तरुण बहुत बड़ी संख्या में उनके इर्द-गिर्द एक जुट होने लगे।

बच्चे और नौजवान अपार सम्मान के साथ उनका अनुसरण करते और सदा उनके संसर्ग में रहना चाहते।

इस प्रकार उस समय ही कामरेड किम इल सुंग से आम जनता व्यापक रूप से सुपरिचित हो गयी थी और वे उसके ध्यान का केन्द्रविन्दु बन गये थे।

५ जून १९२६ को श्री किम ह्योंग जिक, जिन्होंने पितृभूमि के पुनरुद्धार के संघर्ष में अपना समूचा जीवन लगा दिया था, इस संसार से विदा हो गये। इससे जनता को गहरा दुख पहुंचा। पिता की मृत्यु से कामरेड किम इल सुंग को गहरा मानसिक सदमा पहुंचा।

कामरेड किम इल सुंग ने इस बात का दृढ़ संकल्प लिया कि वे अपने उस पिता की महान आकांक्षा का अनुसरण करते हुए क्रांतिकारी संघर्ष के प्रति स्वयं को समर्पित कर देंगे, जिन्होंने कहा था कि चाहे शरीर की हड्डियां चूर कर डाली जायें, शरीर के टुकड़े-टुकड़े कर डाले जायें, किन्तु हर कीमत पर देश का पुनरुद्धार करना ही है।

१९२६ की गर्मियों में कामरेड किम इल सुंग ने हवाजन काउंटी के ह्वासंग इसुक स्कूल में दाखिला लिया।

इस स्कूल की स्थापना राष्ट्रवादियों ने स्वतंत्रता सेनानियों को दीक्षित करने के उद्देश्य से की थी।

ह्वासंग इसुक स्कूल का पाठ्यक्रम आदि से अंत तक राष्ट्रवादी विचारों के रंग में रंगा था जो नयी चीजों के आकांक्षी कामरेड किम इल सुंग को मुश्किल से ही संतुष्ट कर सकता था।

कामरेड किम इल सुंग छिप कर बड़े उत्साह के साथ समाजवाद संबंधी किताबें पढ़ते रहे और उन्होंने समाजवादी तथा कम्युनिस्ट विचार आत्मसात कर लिये।

कामरेड किम इल सुंग जापानी साम्राज्यवाद के उत्पीड़न से देश और जनता को मुक्त कराने का नया मार्ग ढूंढ़ रहे थे। उन्हें पक्का विश्वास हो गया था कि मार्क्सवाद–लेनिनवाद का रास्ता ही एकमात्र ऐसा रास्ता है जिससे देश और जनता को सच्ची मुक्ति मिल सकती है।

कामरेड किम इल सुंग ने १९२६ की शरद में एक गैरकानूनी क्रांतिकारी संगठन बनाया जिसका नाम था 'साम्राज्यवाद–विरोधी संघ' (कोरियाई भाषा में उस संघ का संक्षिप्त नाम था थ. द.)।

इस संगठन के उद्देश्य के बारे में कामरेड किम इल सुंग ने यह कहा है :

——'थ. द.' का लक्ष्य है भविष्य में कोरिया में समाजवाद और कम्युनिज्म का निर्माण करना तथा वर्तमान में जापानी साम्राज्यवाद को पराजित करने और कोरिया की मुक्ति तथा स्वाधीनता प्राप्त करने के लिए संघर्ष।

यह अपने ढंग का ऐसा पहला कार्यक्रम था जिसमें कोरियाई क्रांति के चरम लक्ष्य तथा फौरी जंगजू दायित्वों को सर्वथा सही ढंग से प्रस्तुत किया गया। संघर्ष का यह मार्क्सवाद–लेनिनवादी–कार्यक्रम था।

'थ. द.' संघ न उन प्रगतिशील तरुणों और छात्रों को एक जुट करने का, जिनका लक्ष्य था कोरिया से जापानी साम्राज्यवाद का सफाया करना तथा समाजवादी और कम्युनिस्ट समाज की रचना करना, तथा उनके माध्यम से तरुणों के व्यापक हिस्सों को जापान–विरोधी संघर्ष के लिए संगठित और लाभबंद करन का, उज्जवल सुअवसर प्रदान किया। कामरेड किम इल सुंग के पथ–प्रदर्शन में इस साम्राज्यवाद–विरोधी संघ ने तरुणों और छात्रों में क्रांतिकारी मार्क्सवादी–लेनिनवादी विचारों का प्रचार करने तथा उनकी वर्ग–चेतना का स्तर ऊंचा करने के लिए सतत सैद्धांतिक शिक्षा देकर प्रगतिशील युवकों और छात्रों को कम्युनिस्ट बनाने का संघर्ष चलाया।

इसमें कोई संदेह नहीं कि साम्राज्यवाद–विरोधी संघ का निर्माण हमारे देश के कम्युनिस्ट तथा राष्ट्रीय आन्दोलन के विकास की एक युगान्तकारी घटना थी।

इसी के साथ कामरेड किम इल सुंग के क्रांतिकारो क्रियाकलाप का आरंभ हुआ और इसी समय से वे क्रांतिकारी तरुण और छात्र आन्दोलन के नता के रूप में उभरे।

कामरेड किम इल सुंग ने वैज्ञानिक कम्युनिज्म का गहनतर अध्ययन करने तथा साम्राज्यवाद–विरोधी संघ के संगठन को विस्तृत और दृढ़ीभूत करने के महान

उद्देश्य से, दृढ़ संकल्प के साथ बीच में ही "ह्वांसग इसुक" स्कूल छोड़ दिया।

इस प्रकार कामरेड किम इल सुंग न उस सत्य के प्रति, जिसकी वे खोज कर रहे थे, दृढ़ विश्वास ले कर तथा जोखिम संकल्प की ऐसी भावना लेकर, जो न्याय का सवाल उठने पर कभी शिथिल नहीं पड़ती थी, एक नया पथ, क्रांति का सही पथ, प्रशस्त किया।

१९२६ की सर्दियों में कामरेड किम इल सुंग ने फुसुंग में बच्चों और युवकों का सैनाल (नया दिन) बाल संघ संगठित किया और उनका समाचार–"पत्र सैनाल" (नया दिन) प्रकाशित किया, ताकि उन्हें देशभक्तिपूर्ण जापान–विरोधी विचारों और समाजवादी तथा कम्युनिस्ट विचारों की दीक्षा दी जा सके।

१९२७ के वसन्त में कामरेड किम इल सुंग अपनी क्रांतिकारी गतिविधियों के केन्द्र को किरिन में ले गये। किरिन युवेन मिडिल स्कूल के छात्र की हैसियत से कामरेड किम इल सुंग कम्युनिस्ट घोषणा–पत्र, पूंजी आदि मार्क्सवाद–लेनिनवाद के संस्थापकों की रचनाओं का तथा क्रांतिकारी साहित्य का गुप्त रूप से अध्ययन करते रहे।

कामरेड किम इल सुंग ने मार्क्सवाद–लेनिनवाद का अध्ययन सिर्फ प्रचलित विचारधारा या सिद्धांत के रूप में नहीं किया, वल्कि उन्होंने इसे संघर्ष का अस्त्र और व्यावहारिक गतिविधियों का साधन माना।

कामरेड किम इल सुंग गुप्त रूप से स्वाध्याय गोष्ठियों का संगठन कर के तरुणों और छात्रों में सक्रियता के साथ मार्क्सवाद–लेनिनवाद की व्याख्या और प्रचार करते रहे।

मार्क्सवाद–लेनिनवाद के प्रचार में कामरेड किम इल सुंग ने पुराने कठमुल्लापन और प्रामाण्यवादी पद्धति को ठुकरा दिया। उन्होंने उसके निचोड़ की गहरी समझदारी को अपनाया और उसे कोरियाई क्रांति की अमली समस्याओं के साथ जोड़ा।

कामरेड किम इल सुंग के पथ–प्रदर्शन में तरुणों तथा छात्रों में मार्क्सवाद–लेनिनवाद का जो अध्ययन किया गया वह ऐसा जीवन्त अध्ययन बन गया जिसका उद्देश्य न सिर्फ मार्क्सवाद–लेनिनवाद के विचारों और सिद्धांत को गहराई से समझना था, बल्कि तत्कालीन अमली संघर्ष के स्पष्ट तरीकों को ग्रहण करना भी था।

तरुणों तथा छात्रों समेत आम जनता के व्यापक हिस्सों को मार्क्सवाद लेनिनवाद से लैस करके उन्हें क्रमशः और क्रांतिकारी संगठनों में दृढ़ता के साथ एकताबद्ध करने की आवश्यकता के बारे में कामरेड किम इल सुंग ने निम्नलिखित कहा :

——यदि हमें जापानी दुष्टों को कुचलना है और देश को फिर से आजाद करना है तो हमें सबसे पहले उस आम जनता को एकता के सूत्र में बांधना है जिसे देश से प्यार

कामरेड किम इल सुंग अपने युवेन मिडिल स्कूल काल में

है----हम सभी को अपनी शक्तियां संयुक्त करके क्रांतिकारी संघर्ष के लिए उठ खड़े होना चाहिए----भविष्य में सारे तरुणों को तरुण संगठन में, लड़के-लड़कियों को किशोर संगठन में, महिलाओं को महिला संगठनों में शामिल हो कर जापानी साम्राज्यवादियों और वर्ग शत्रुओं के विरुद्ध और अधिक दृढ़ संकल्प के साथ लड़ना चाहिए . . . .

१९२७ की गर्मियों में कामरेड किम इल सुंग ने साम्राज्यवाद-विरोधी संघ का नाम बदल कर साम्राज्यवाद-विरोधी तरुण लीग कर दिया ताकि प्रगतिशील तरुणों और छात्रों के व्यापक हिस्सों को उसमें एकजुट किया जा सके और इस तरह उन्होंने विभिन्न क्षेत्रों से आए हुए प्रगतिशील तरुणों और छात्रों को उसमें एकता के सूत्र में बांधा। साम्राज्यवाद-विरोधी तरुण लीग तरुणों और छात्रों का एक गैर कानूनी क्रांतिकारी जन संगठन था।

कामरेड किम इल सुंग ने प्रगतिशील तरुणों और छात्रों को एकता के सूत्र में बांध कर उनका संगठन विस्तृत करते हुए १९२७ की गर्मियों में ही उन तरुणों और छात्रों से चुने हुए लोगों को ले कर कोरिया की तरुण कम्युनिस्ट लीग की स्थापना की।

कामरेड किम इल सुंग के पथ-प्रदर्शन में तरुण कम्युनिस्ट लीग और साम्राज्यवाद विरोधी तरुण लीग ने अपने संगठनों का विस्तार किरिन युवेन स्कूल तथा शहर के अनेक अन्य स्कूलों में भी कर दिया जैसे वुन्कुआंग मिडिल स्कूल, मिडिल स्कूल नं.१, मिडिल स्कूल नं. ५, किरिन नार्मल स्कूल, किरिन गर्ल्स मिडिल स्कूल, किरिन कानून तथा राजनीति स्कूल। इसके अलावा अनेक शहरी और ग्रामीण इलाकों में भी ये तरुण संगठन फैल गये जैसे दोनहवा, गयोहा, डुआजन, मुसोंग, बानसक, जांछुन, सिमयां आदि। इस प्रकार उन्होंने ऐसे जुझारू क्रांतिकारी संगठन का रूप ले लिया जिसके दायरे में तरुणों और छात्रों की बहुत बड़ी संख्या आ गयी।

इस बीच बच्चों और तरुणों के व्यापक हिस्सों को शिक्षित और प्रशिक्षित करने के उद्देश्य से कामरेड किम इल सुंग न १९२७ के वसन्त में किरिन में बच्चों और तरुणों का एक कानूनी संगठन बनाया जिसका नाम था कोरियाई-बाल संघ। साथ ही उन्होंने किरिन में कोरियाई र्यूगिल छात्रों के संघ को, जोकि राष्ट्रवादियों के प्रभाव में था, कोरियाई र्यूगिल छात्रों के संघ के रूप में पुनर्गठित किया और उसका पथ प्रदर्शन शुरू किया।

कामरेड किम इल सुंग ने किरिन के कोरियाई बाल संघ और कोरियाई र्यूगिल छात्रों के संघ के माध्यम से बच्चों और तरुणों की राष्ट्रीय तथा वर्ग चेतना में वृद्धि की और उन्हें ऐसी शिक्षा-दीक्षा देनी शुरू की कि वे धीरे-धीरे कम्युनिज्म के समर्थक बनने लगे।

कामरेड किम इल सुंग ने अपनी राजनीतिक गतिविधियों का क्षत्र बच्चों और

युवकों में ही नहीं बढ़ाया, बल्कि व्यापक शहरी और ग्रामीण इलाकों की जनता में भी विस्तृत किया।

१९२८ से कामरेड किम इल सुंग ने तरुण कम्युनिस्ट लीग तथा साम्राज्यवाद–विरोधी तरुण लीग के अनेक सदस्यों को किरिन के पूर्व के जिले के तथा गिलिम–जांगछुन रेलव लाइन के किनारे के शहरों और गांवों में कार्रवाइयां करने को भेजन, और खुद उन क्षेत्रों में ही जाकर जनता को क्रांतिकारी भावना से अनुप्राणित करने के लिए सरगर्मी से काम शुरू कर दिया।

तरुण कम्युनिस्ट लीग तथा साम्राज्यवाद–विरोधी तरुण लीग के सदस्यों का नेतृत्व करत हुए कामरेड किम इल सुंग न ग्रामीण क्षेत्रों में स्कूलों की स्थापना की, बच्चों और तरुणों को शिक्षा और संस्कार प्रदान किया तथा इन स्कूलों को आधार बना कर जनता में राजनीतिक कार्य का व्यापक रूप से संगठन और संचालन किया। तथा अनेक प्रकाशनों के द्वारा उन्होंने जनता को देशभक्ति और जापान–विरोधी विचारों से ओतप्रोत किया और जनता के व्यापक हिस्सों को क्रांतिकारी संगठनों में एकताबद्ध किया।

कामरेड किम इल सुंग के नेतृत्व में, विश्वस्त रूप में तरुणों और छात्रों का विकास अपने उच्च क्रांतिकारी आदर्शों के प्रति सचेत संगठित शक्ति के रूप में, हमारे देश में कम्यु-निस्ट आन्दोलन तथा राष्ट्रीय मुक्ति संघर्ष को सपन्न करने वाले सच्चे लोगों के रूप में, होने लगा तथा शहरों और ग्रामांचलों की आम जनता की राष्ट्रीय और वर्ग चेतना बढ़ गयी और उसकी क्रांतिकारी भावना तेजी से ऊंचे स्तर पर पहुंच गयी।

कामरेड किम इल सुंग ने तरुणों तथा छात्रों को क्रांतिकारी संगठनों में मजबूती से एकताबद्ध करने तथा शिक्षित करने तक ही अपने को सीमित नहीं रखा। उन्होंने उनकी संगठित शक्ति को जापानी साम्राज्यवाद और प्रतिक्रियावादी युद्ध नायकों के खिलाफ संघर्ष में संगठित और लामबद किया और इस प्रकार व्यावहारिक संघर्ष में उनको अग्रिम दीक्षा दी।

१९२८ की गर्मियों में हुए प्रतिक्रियावादी शिक्षकों के विरुद्ध स्कूली हड़ताल संघर्ष से प्राप्त विजय मंडित अनुभव के आधार पर कामरेड किम इल सुंग ने तरुणों और छात्रों के जबर्दस्त जापान–विरोधी प्रदर्शन का संगठन और नेतृत्व किया। इस प्रदर्शन का उद्देश्य था किरिन–हाईरयं रेलवे लाइन निर्माण का विरोध करना, जिसे जापानी साम्राज्यवादी मंचूरिया पर कब्जा करने के उद्देश्य से बना रहे थे। इसी वर्ष उन्होंने हेमन्त में जापानी माल के बहिष्कार के संघर्ष का संगठन और नेतृत्व किया।

इन संघर्षों के जरिए कामरेड किम इल सुंग ने जापानी साम्राज्यवाद तथा प्रतिक्रिया-

वादी युद्ध नायकों पर जबर्दस्त प्रहार किये तथा व्यावहारिक संघर्ष के माध्यम से तरुण कम्युनिस्ट लीग तथा साम्राज्यवाद–विरोधी तरुण लीग के सदस्यों को प्रशिक्षित किया और विजय के प्रति उनका विश्वास अधिक दृढ़ कर दिया। इस प्रकार उन्होंने क्रांतिकारी संगठनों में तरुणों और छात्रों के व्यापक हिस्सों को और अधिक मजबूती के साथ एक जुट किया।

उन दिनों किरिन में देश और उसके बाहर के अनक स्थानों से लोग बहुत बड़ी संख्या में जमा थे जो अपने को कम्युनिस्ट तथा राष्ट्रवादी आन्दोलन के 'नता' कहते थे।

तरुणों और छात्रों के नेता की हैसियत से कामरेड किम इल सुंग को उन लोगों से भेंट करने के अनेक अवसर मिल।

इन मुलाकातों के दौरान उन्होंने कम्युनिस्ट तथा राष्ट्रवादी आन्दोलनों के अन्दर की बहुत सारी बातों की जानकारी हासिल की उनकी पुरानी खामियों को समझा–बूझा।

उन दिनों जो लोग अपने को कम्युनिस्ट तथा राष्ट्वादी आन्दोलन के 'नेता' कहत थे, उनमें से अधिकांश बिना अपवाद के गुटबाज या संकीर्णतावादी तथा अनुदार राष्ट्रवादी थे और वे अपना 'नेतृत्व' लादने के लिए गुटबाजी की कलह में डूबे हुए थे। इसके लिए वे अपनी–अपनी जमात के चंद ऐसे लोगों के साथ सांठगांठ करते जिनका कोई जन आधार नहीं था अथवा ऐसी दक्षिणपंथी या वामपंथी लफ्फाजी और खोखली बकवासों में डूबे थे जो हमारे देश की विशिष्ट यथार्थ वास्तविकताओं से कोई सरोकार न रखती थीं।

गुटबाज लोगों में से हर एक अपने को 'सिद्धांतकार' और 'नेता' के रूप में पेश करता तथा दक्षिणपंथी और वामपंथी कुतर्क प्रस्तुत करके तरुणों को गुमराह करने की कोशिश करता। उनके कुतर्क इस तरह के होते "कोरिया की क्रांति सर्वहारा की क्रांति है 'या' कोरिया की क्रांति चूंकि पूंजीवादी जनवादी क्रांति है, इसलिए इसका नेतृत्व राष्ट्रीय पूंजीपति वर्ग के हाथों में होना चाहिए।"

कामरेड किम इल सुंग ने गुटबाजों के इस तरह के अवसरवादी सिद्धांतों के असली चारित्र्य का बेरहमी से पर्दाफाश किया, उनकी आलोचना की और समय रहते उनके दांवपेच को धूल में मिला दिया।

कामरेड किम इल सुंग अक्सर राजनीतिक मसलों पर तरुणों और छात्रों की बहसें आयोजित करते जहां वे विस्तृत विचार–विमर्श के लिए ऐसे प्रश्न प्रस्तुत करते, जैसे "आक्रमण की जापान साम्राज्यवादी नीति" "कोरियाई क्रांति का मौजूदा चरण" तथा "कोरियाई की क्रांति को कैसे संचालित किया जाय?" और इन पर सही निष्कर्ष पेश करते हुए वे गुटबाजों के अवसरवादी "सिद्धांतों" को धूल में मिला देते तथा तरुणों और छात्रों

को यह सही–सही जानने का अवसर प्रदान कर देते कि कोरिया की क्रांति का आगे का रास्ता क्या है और उस पथ पर अविचल भाव से कैसे बढ़ा जा सकता है।

गुटबाजी तथा दक्षिणपंथी और वामपंथी अवसरवाद के विरुद्ध कामरेड किम इल सुंग ने जो संघर्ष छेड़ा, वह क्रांतिकारी मार्क्सवादी–लेनिनवादी सिद्धांत के लिए संघर्ष था ताकि हमारे देश के कम्युनिस्ट आन्दोलन में पहली बार अवसरवाद पर विजय हासिल की जा सके तथा क्रांतिकारी शक्तियां अवसरवादियों की साजिशों को नाकाम कर सकें।

कामरेड किम इल सुंग ने राष्ट्रवादी संगठनों के उन आकाओं के कृत्यों का भी जम कर पर्दाफाश किया और उनकी आलोचना की जिनमें से हर एक ने अलग–अलग क्षेत्र में अपना–अपना सिक्का जमा रखा था और देश की स्वाधीनता की कोई चिन्ता किये बिना आपस में प्रभुत्व के लिए लड़ते रहते थे और देशभक्त देशवासियों से जमा किये गये 'स्वाधीनता आन्दोलन कोष' को फिजूल में उड़ाते थे। कामरेड किम इल सुंग ने राष्ट्रीय सुधारवादियों द्वारा प्रतिपादित प्रतिरोध–विरोधी और राष्ट्रीय निषेधवाद के सिद्धांत के असली चरित्र का भी पर्दाफाश किया और इस प्रकार उन्होंने उन तरुणों और छात्रों में जागृति पैदा की तथा उन्हें क्रांतिकारी संगठनों में एकताबद्ध किया जो राष्ट्रवादियों के प्रभाव में थे या उनके बारे में गलतफहमियां पाले हुए थे।

जैसा कि ऊपर से स्पष्ट है, कामरेड किम इल सुंग ने अपनी क्रांतिकारी गतिविधियों के प्रारंभिक दिनों से ही उन गुटबाजों और राष्ट्रीय सुधारवादियों की असलियत को पहचान लिया था जो कोरियाई क्रांति को बहुत क्षति पहुंचा चुके थ। उन्होंने विचारधारा, सिद्धांत और व्यवहार की दृष्टि से उनके द्वारा प्रचारित विकृत विचार–प्रवृत्तियों को समय रहत ध्वस्त कर दिया तथा तरुणों, छात्रों तथा आम जनता को कोरियाई क्रांति के सही रास्ते पर आगे बढ़ाया।

इस प्रकार कामरेड किम इल सुंग एक ऐसे सर्वमान्य नेता के रूप में बहु विख्यात हो गये जिनका तरुणों, छात्रों और आम जनता पर अद्वितीय प्रभाव था और जिन्हें वे सभी हृदय से प्यार और अत्यधिक सम्मान देते थे।

कामरेड किम इल सुंग ने क्रांति का पथ–प्रशस्त करने में जो रास्ता तय किया था वह निष्कटंक नहीं था।

ज्यों–ज्यों समय के साथ उनकी ख्याति बढ़ने लगी, त्यों–त्यों उन पर जापानी साम्राज्यवादियों और उनके चाकर–प्रतिक्रियावादी युद्धनायकों की निगरानी और चौकसी सदा बढ़ती गयी।

जापानी साम्राज्यवादियों ने जब यह देखा कि कामरेड किम इल सुंग के नेतृत्व में तरुणों और छात्रों का जापान-विरोधी आन्दोलन पुरजोर तरीके से आगे बढ़ रहा है, तब उन्होंने प्रतिक्रियावादी चीनी युद्धनायकों को घूस देकर १६२६ की शरद में जापान–विरोधी आन्दोलन में शरीक कोरिया वासियों की बड़ी संख्या में गिरफ्तारी के लिए उकसाया।

उस समय कामरेड किम इल सुंग को भी प्रतिक्रियावादी पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया और उनके अन्य साथियों के साथ उन्हें किरिन जेल में डाल दिया।

उन्हीं दिनों कामरेड किम इल सुंग को शत्रु ने तीन बार हिरासत में लिया।

लेकिन क्रांति की विजय के प्रति कामरेड किम इल सुंग की दृढ़ आस्था को, उनके उत्कट क्रांतिकारी जोश को, उनके सुदृढ़ क्रांतिकारी सिद्धांत और उनकी सशक्त लड़ाकू भावना को बार–बार गिरफ्तारियों और अमानुषिक से अमानुषिक यातनाओं द्वारा भी नष्ट नहीं किया जा सका।

कामरेड किम इल सुंग गिललिम जेल के भीतर से भी क्रांतिकारी संगठनों को दिशा निर्देश देते रहे और कोरियाई क्रांति की अपनी महान योजनाओं को निरूपित करते रहे।

१६३० के वसन्त में सजा पूरी होने पर कामरेड किम इल सुंग किरिन जेल से बाहर आये।

किरिन को केन्द्र बनाकर कामरेड किम इल सुंग ने आरंभिक क्रांतिकारी गति-विधियों के जिस रास्ते का श्रीगणेश किया था वह ऐसा रास्ता था जिस पर चल कर उन्होंने मार्क्सवादी–लेनिनवादी विश्व दृष्टिकोण को पूर्णतया नया रूप दे डाला तथा कोरिया की वास्तविकताओं में मार्क्सवाद–लेनिनवाद को लागू करके उन्होंने एक अद्वितीय क्रांतिकारी मार्ग प्रशस्त कर दिया–एक ऐसा रास्ता जिस पर उन्होंने अगणित असंख्य तरुणों और छात्रों को दीक्षित करके कोरियाई क्रांति को संपन्न करने वाला उत्साही कम्युनिस्ट बना दिया।

और वह रास्ता था कोरियाई क्रांति को विकसित करके एक उच्चतर धरातल पर ला खड़ा करने का रास्ता।

इस रास्ते पर चलते हुए कामरेड किम इल सुंग ने कोरियाई क्रांति के मार्ग निर्देशक सिद्धांत की सृष्टि की और खुद एक असाधारण मार्क्सवादी–लेनिनवादी के रूप में, कोरिया की क्रांति के दृढ़ और अडिग क्रांतिकारी सिद्धांत, अजय संकल्प, विलक्षण संगठनक्षमता,

असाधारण क्रांतिकारी विस्तार, क्रांतिकारी कार्य-पद्धति, लोकप्रिय कार्यशैली तथा नेतृत्व की उत्कृष्ट कला से लैस नेता के रूप में, विकसित हुए।

इस प्रकार कामरेड किम इल सुंग ने कोरियाई क्रांति का सही रास्ता निकाला तथा नयी क्रांतिकारी शक्तियां, कम्युनिस्ट आन्दोलन के आरंभिक काल के पुराने दुर्गुणों और दूषणों से मुक्त हो कर उद्यत होने लगीं।

कोरियाई क्रांति का सूर्योदय निकट आने लगा था।

२

सदी के चौथे दशक के आरंभ में कामरेड किम इल सुंग ने एक नये ऐतिहासिक अध्याय के आरंभिक चरण का सूत्रपात कर दिया, जो हमारे देश में जापान–विरोधी मुक्ति संघर्ष तथा कम्युनिस्ट आन्दोलन के एक महान मोड़ का सूचक है।

जापानी साम्राज्यवादियों ने तीसरे दशक के उत्तरार्द्ध और चौथे दशक के आरंभ में अपने देश में व्याप्त विनाशकारी आर्थिक संकट को दूर करने के लिए पागलों की तरह उतावलेपन में आधुनिक युद्ध की तैयारियां शुरू कर दीं और कोरियाई जनता का फासिस्ट उत्पीड़न और लूट–खसोट इतनी तेज करदी जैसा पहले कभी नहीं किया था।

फलतः कोरियाई जनता और जापानी साम्राज्यवादियों के बीच राष्ट्रीय वर्ग–विरोध चरम सीमा पर पहुंच गया तथा मजदूरों, किसानों तथा आम जनता के अन्य हिस्सों को विवश होकर जापानी साम्राज्यवाद के अत्याचारी उत्पीड़न के विरुद्ध हिंसात्मक ढंग से उठ खड़ा होना पड़ा।

ऐसे समय में जबकि क्रांति और प्रतिक्रांति के बीच का विरोध इतना गहरा हो गया था, गुटबाज लोग कोरियाई कम्युनिस्ट पार्टी के भंग होने से गंभीर सबक सीखने के बजाय अपने गुटबाजी विग्रह में ही लगे रहे और उनमें से अधिकांश जापानी साम्राज्यवादी प्रतिक्रियावाद के हमले के आगे झुक गये। उन्होंने या तो आत्मसमर्पण कर दिया या अपना रंग बदल दिया और आराम की जिन्दगी बिताने की ओर भाग खड़े हुए।

हमारे देश में कम्युनिस्ट आन्दोलन तथा जापान–विरोधी राष्ट्रीय मुक्ति संग्राम के पिछले दौर में कोरिया की जनता को अनेक उतार–चढ़ावों से होकर गुजरना पड़ा है, क्योंकि उसके पास ऐसा कोई सच्चा नेता न था, जो क्रांतिकारी संघर्ष को क्रांतिकारी मार्क्सवादी–लेनिनवादी दिशा पर और उसी दिशा के अनुसार रणनीति और कार्यनीति के आधार पर, सही ढंग से चला सकता। अतः कोरिया की जनता एक ऐसे नेता के लिए इच्छुक थी जो पितृभूमि और राष्ट्र को संकट से उबारता, कोरिया की क्रांति के मार्ग को आलोकित करता तथा उसे विजयी बनाता।

ठीक इसी समय अद्वितीय देशभक्त तथा महान मार्क्सवादी–लेनिनवादी कामरेड किम इल सुंग ने बहुत ही सही ढंग से क्रांतिकारी परिस्थिति का मार्ग पहचाना और वे कोरिया की जनता को निश्चित विजय तक पहुंचाने के लिए क्रांति के अगले मोर्चे पर आ खड़े हुए।

जिस समय कामरेड किम इल सुंग किरिन जेल से रिहा हुए, परिस्थिति बहुत ही तनावपूर्ण थी। गुटबाजों ने ३० मई के दंगों में जिस वामपंथी दुस्साहसिकतावाद का सबूत दिया, उस से क्रांतिकारी आन्दोलन के विकास पर बहुत ही गंभीर प्रभाव पड़े। इस दंगे के बाद जापानी साम्राज्यवादियों तथा प्रतिक्रियावादी फौजीशाहों ने कम्युनिस्ट आन्दोलन पर बर्बर दमन चक्र तेज कर दिया, असंख्य क्रांतिकारियों को गिरफ्तार किया और उनके संगठनों को तोड़ दिया।

इस गंभीर परिस्थिति में कामरेड किम इल सुंग ने यह बहुत ही जरूरी कर्त्तव्य समझा कि संघर्ष की सही दिशा निश्चित की जाय, क्रांतिकारी संगठनों को फिर से संस्थापित और स्थिति के अनुकूल बनाया जाय, जनता को एकजुट किया जाय और क्रांति-उन्मुख बनाया जाय, इसलिए वे पूरे पैमाने पर भूमिगत कार्य शुरू करने के लिए शहरों और गांवों में रहने वाली जनता के बीच गये।

१९३० की गर्मियों में कामरेड किम इल सुंग काल्पनिक गये और वहां उन्होंने तरुण कम्युनिस्ट लीग तथा साम्राज्यवाद–विरोधी तरुण लीग के अग्रणी सदस्यों की मीटिंग बुलाई।

उस मीटिंग में कामरेड किम इल सुंग ने कोरियाई क्रांति की विजय के लिए सबसे सही मार्क्सवादी–लेनिनवादी दिशा और नीति प्रस्तुत की। उन्होंने स्पष्ट किया कि कोरिया की क्रांति का चरित्र साम्राज्यवाद विरोधी, सामन्तवाद विरोधी जनवादी क्रांति का है। उन्होंने उसकी परिचालक शक्ति और उसके लक्ष्यों की वैज्ञानिक परिभाषा प्रस्तुत की।

उन्होंने कहा कि साम्राज्यवाद विरोधी, सामन्तवाद–विरोधी जनवादी क्रांति की बुनियादी परिचालक शक्ति मजदूर वर्ग तथा उसका सबसे भरोसे का मित्र किसान तथा निम्न पूंजीवादी वर्ग है और इसके अलावा राष्ट्रीय पूंजीपति वर्ग के साथ भी मोर्चा बनाया जा सकता है। उन्होंने यह स्पष्ट किया कि क्रांति का प्रहार लक्ष्य है–जापानी साम्राज्यवाद और उसके चट्टे बट्टे जमींदार, दलाली करने वाले पूंजीपति, जापान–समर्थक तत्व और राष्ट्र के गद्दार। उन्होंने स्पष्ट रूप से बताया कि हमारा क्रांतिकारी कर्त्तव्य है जापानी साम्राज्यवाद का तख्ता उलट देना, देश को आजाद कराना और इस साम्राज्यवाद–विरोधी, सामन्तवाद विरोधी जनवादी क्रांति के फलस्वरूप

देश में समाजवाद का निर्माण करना और फिर विश्व क्रांति को पूरा करना।

कामरेड किम इल सुंग ने निम्नलिखित आशय की बातें कहीं :

-----हम कोरिया की जनता हैं, तरुण हैं। हम कोरिया के तरुण अपने सुन्दर देश और प्यारे देशवासियों को, अपने भाइयों और बहनों को जापानी साम्राज्यवादियों द्वारा पैरों तले कुचले जाते और उत्पीड़ित होते देख कर सिर्फ बैठे और तमाशबीन बने नहीं रह सकते। हमें अपने देश की धरती से जापानी साम्राज्यवादियों को मार भगाना है, कोरिया को आजाद कराना है और आजादी हासिल करनी है। लेकिन हम यहीं नहीं रुक सकते। हम कम्युनिस्ट हैं। कम्युनिस्ट उन धूर्त जमींदारों और पूंजीपतियों को अकेला नहीं छोड़ सकते जो सर्वहारा जनता को दमन की चक्की में पीसते और उसका शोषण करते हैं।

अतः हमें पूंजीवादी व्यवस्था का तख्ता उलटना है और समाजवादी तथा साम्य-वादी समाज की रचना करनी है, जोकि सर्वहारा जनता की हार्दिक आकांक्षा है। लेकिन ये दो क्रांतिकारी कर्त्तव्य एक-दूसरे के प्रतिकूल नहीं हैं।--सर्वहारा क्रांति को पूरा करने के लिए सबसे पहले जापानी साम्राज्यवाद को कुचलना और कोरिया की मुक्ति तथा स्वाधीनता को उपलब्ध करना चाहिये और इसके बाद, अपनी भूमि पर समाजवादी और साम्यवादी समाज की रचना और विश्व क्रांति को भी पूरा करना चाहिये।

कामरेड किम इल सुंग ने हमारे देश के यथार्थ का सर्वांग संपन्न मार्क्सवादी लेनिन-वादी विश्लेषण किया और कोरिया की क्रांति के चरित्र, उसके कर्त्तव्य, उसकी परिचालक शक्ति तथा संघर्ष के लक्ष्यों की वैज्ञानिक परिभाषा प्रस्तुत की।

इस प्रकार कामरेड किम इल सुंग के निर्देश के अनुसार कम्युनिस्ट और क्रांतिकारी जनता क्रांतिकारी संघर्ष को लेकर, अडिग भाव से संघर्ष के सही लक्ष्य की ओर बढ़ने के योग्य बनी।

उसी मीटिंग में कामरेड किम इल सुंग ने जापान-विरोधी सशस्त्र संघर्ष की, कोरियाई क्रांति के लिए जूछे-प्रेरित क्रांतिकारी कार्यवाही प्रस्तुत की, जो सशस्त्र संघर्ष संबंधी मार्क्सवादी-लेनिनवादी सिद्धांत का रचनात्मक विकास था।

कामरेड किम इल सुंग ने निम्नलिखित आशय की बातें कहीं :

---हमारा तात्कालिक लक्ष्य है जापानी साम्राज्यवादी आक्रामकों को कुचलना और कोरिया की मुक्ति और स्वाधीनता प्राप्त करना। और जापानी साम्राज्यवाद, जोकि हमारे संघर्ष का प्रहार-लक्ष्य है, एक ऐसा लुटेरा है जो सर से पैर तक शस्त्रास्त्र से लैस है----अतः जापानी साम्राज्यवाद अपने आप देश छोड़ कर नहीं जायेगा। फिर कोरिया

के लिए आजादी कौन जीतेगा? विदेशी सहायता से आजादी जीतना बिल्कुल असंभव है।....

हम कोरियावासियों के सामने एक ही रास्ता है—लड़ना और अपनी ही ताकत से जापानी साम्राज्यवादियों को परास्त करना। इसके लिए सशस्त्र संघर्ष जरूर चलाना पड़ेगा।....

कामरेड किम इल सुंग ने जापानविरोधी सशस्त्र संघर्ष की जो कार्यनीति प्रस्तुत की, वह जूछे के इस सुसंगत विचार से ओतप्रोत एकमात्र सही, क्रांतिकारी कार्यनीति थी कि कोरियाई क्रांति को कोरियावासी स्वतंत्रतापूर्वक अपनी शक्ति और अपने संघर्ष के बल पर संपन्न करें।

यह कार्यनीति अत्यन्त सर्वांग साम्राज्यवाद—विरोधी क्रांतिकारी कार्यनीति थी, जिसका अर्थ यह था कि उपनिवेशों में राष्ट्रीय मुक्ति संघर्ष के दौरान प्रति—क्रांतिकारी हिंसा का मुकाबला क्रांतिकारी हिंसा द्वारा होना चाहिए और सशस्त्र प्रतिक्रांति को केवल सशस्त्र संघर्ष से ही पराजित किया जा सकता है।

इसके अतिरिक्त यही सबसे अधिक सही क्रांतिकारी कार्यनीति थी, जिसमें सशस्त्र सेना द्वारा सुसंगठित जापान—विरोधी सशस्त्र संघर्ष को कोरियाई जनता के जापान—विरोधी राष्ट्रीय मुक्ति आन्दोलन में संघर्ष का मुख्य रूप बनाया गया था और जिसका लक्ष्य था कि इस संघर्ष द्वारा आम जनता के सभी तरह के संघर्षों का सर्वतोमुखी पथ—प्रदर्शन करके कोरियाई क्रांति की विजय शीघ्रता से संपन्न की जाय।

कामरेड किम इल सुंग ने जापान—विरोधी सशस्त्र संघर्ष की महान कार्यनीति की व्याख्या करते हुए उस पर अमल करने के ठोस रास्ते भी बताये कि सशस्त्र संघर्ष की केन्द्रीय धुरी कैसे तैयार की जाय, जन आधार कैसे बनाया जाय, सैनिक अनुभव कैसे संजोया जाये आदि।

कामरेड किम इल सुंग ने निम्नलिखित आशय की बात कहीं :

----हमें न तो शत्रु की शक्ति को कम करके आंकना चाहिए, न किसी तरह बढ़ा-चढ़ा कर आंकना चाहिए। धूर्त्त शत्रु से लड़ने और उसे पराजित करने के लिए हमें अपनी शक्ति को तेजी से बढ़ाना चाहिए—यह सही है कि हमें व्यर्थ के मुठभेड़ों और बलिदानों से बचना चाहिए क्योंकि अभी हम क्रांतिकारी शक्तियों की तैयारी के दौर में हैं। फिर भी हमारे लिए यह जरूरी है कि हम वास्तविक संघर्ष में अपने को मजबूत करें और रणनीति तथा कार्यनीति का भी अध्ययन करें।---हम हाथ पर हाथ रखकर इस आशा में नहीं बैठे रह सकते कि विजय अपने आप चली आयेगी। हमें शस्त्रों के जरिए जापानी साम्राज्यवाद

को कुचलना है और इसके लिए हमें अपनी शक्ति का तेजी से निर्माण करना चाहिए ।....

कामरेड किम इल सुंग ने जापान–विरोधी सशस्त्र संघर्ष की जो कार्यनीति बतायी और उस पर अमल के जो तरीके स्पष्ट किये, वे पिछले दौर के कम्युनिस्ट आन्दोलन और राष्ट्रीय मुक्ति संघर्ष के कटु अनुभवों पर तथा हमारे देश की क्रांतिकारी परिस्थिति पर आधारित थे और विशेषकर, वे आम जनता की, जो उग्र रूप से आगे बढ़ रही थी–आकांक्षाओं को अत्यन्त सही रूप से अभिव्यक्ति दे रहे थे ।

उस मीटिंग में कामरेड किम इल सुंग ने न सिर्फ जापान–विरोधी सशस्त्र संघर्ष की मौलिक कार्यनीति की व्याख्या की, बल्कि जापान विरोधी राष्ट्रीय संयुक्त मोर्चे की दिशा भी प्रस्तुत की ताकि मजदूर वर्ग के नेतृत्व में मजदूर-किसान मैत्री के आधार पर कोरियाई जनता की समस्त विरोधी शक्तियों को संगठित और लामबन्द किया जा सके ।

कामरेड किम इल सुंग ने सिखाया कि केवल मुट्ठी भर कम्युनिस्टों की शक्ति से जापानी साम्राज्यवादियों को भगाना और क्रांति में विजय प्राप्त करना संभव नहीं है । क्रांति में विजय के लिए क्रांति की प्रमुख शक्तियों को सुदृढ़ता से निर्माण करना चाहिए, साथ ही उन सभी साम्राज्यवादविरोधी, सामन्त–विरोधी शक्तियों को, जिनकी क्रांति में दिलचस्पी है, जापानी साम्राज्यवाद के विरुद्ध संघर्ष करने वालों की पांतों में घनिष्ठ रूप से एकताबद्ध करना चाहिए ।

कामरेड किम इल सुंग द्वारा प्रस्तुत जापान–विरोधी संयुक्त राष्ट्रीय मोर्चे की कार्यनीति एक विवेकपूर्ण कार्यनीति थी, जिसमें देशभक्त कोरियाई जनता की तीव्र आकांक्षाएं प्रतिबिम्बित हो रही थीं और वह सबसे अधिक सही कार्यनीति थी, जिसके आधार पर कोरियाई जनता के राष्ट्रीय और वर्गीय शत्रु, जापानी साम्राज्यवाद, को हराने और उसका सफाया करने के लिए समस्त साम्राज्यवाद विरोधी वर्गों और क्षेत्रों को संगठित और लामबंद करना संभव हुआ, और इस प्रकार शत्रु और हमारे बीच शक्ति का पलड़ा क्रांति की ओर भारी हो सका, ताकि क्रांति में निर्णायक विजय प्राप्त हो ।

उसी मीटिंग में कामरेड किम इल सुंग ने कोरियाई कम्युनिस्ट पार्टी की स्थापना की नीति भी प्रस्तुत की ।

उन दिनों गुटबाज लोग 'नेतृत्व' पर कब्जा करने की कपटपूर्ण आकांक्षावश, 'पार्टी पुर्ननिर्माण' के नारे उठा रहे थे और पार्टी की स्थापना की किसी तैयारी के बिना ही हर गुट पार्टी की तथाकथित स्थापना के लिए जल्दबाजी मचा रहा था ।

कामरेड किम इल सुंग ने सिखाया कि क्रांतिकारी पार्टी को उन गुटबाजों की

साजिशों की पराजय तथा पार्टी की स्थापना के लिए पूर्ण संगठनात्मक तथा विचारधारात्मक तैयारी के आधार पर संस्थापित करना चाहिए। उन्होंने निर्देश दिया कि इस उद्देश्य के लिए जरूरी है कि मजदूर और किसान वर्ग मूल के सुयोग्य तत्वों को कम्युनिस्ट के रूप में ढाला जाये, और पार्टी की स्थापना के लिए संगठनात्मक नींव का निर्माण करने के लिए उनकी पांतों का विस्तार किया जाय। तथा गुटबाजी और दक्षिणपंथी तथा वामपंथी अवसरवाद को दूर किया जाये, ताकि संघर्ष द्वारा कम्युनिस्टों की पांतों में अडिग संगठनात्मक और विचारधारात्मक एकता स्थापित हो। उन्होंने यह भी सिखाया कि मेहनतकश जनता में राजनीतिक कार्य बढ़ाया जाये ताकि जन–संगठनों में जनता के व्यापक हिस्से शामिल हों और सुदृढ़ जन आधार स्थापित हो।

कोरियाई कम्युनिस्ट पार्टी की स्थापना की जो कार्यनीति कामरेड किम इल सुंग ने बतायी वह एक सही नीति थी जिसको उन्होंने उन दिनों की क्रांतिकारी परिस्थितियों का और तीसरे दशक के कम्युनिस्ट आन्दोलन के गंभीर सबकों का विश्लेषण और सिंहावलोकन करके, तथा हमारे देश में कम्युनिस्ट आन्दोलन की विशेष परिस्थितियों के अनुरूप क्रांतिकारी पार्टी के निर्माण से संबंधित मार्क्सवादी–लेनिनवादी सिद्धांत को अत्यन्त सही ढंग से लागू और विकसित करते हुए, निर्धारित किया था।

इस प्रकार कामरेड किम इल सुंग ने जापान–विरोधी सशस्त्र संघर्ष को धुरी बना कर, संयुक्त जापान–विरोधी राष्ट्रीय मोर्चा आन्दोलन तथा कोरियाई कम्युनिस्ट पार्टी की स्थापना की तैयारी के काम को घनिष्ठ रूप से जोड़ते हुए और एक साथ आगे बढ़ाते हुए कोरियाई क्रांति को सर्वांगतः विकसित करने की रणनीतिगत विधि स्पष्ट रूप में बतायी।

महान मार्क्सवादी–लेनिनवादी और कोरियाई जनता के महान नेता कामरेड किम इल सुंग द्वारा कोरियाई क्रांति के लिए जूछे–प्रेरित क्रांतिकारी कार्यनीति को ही श्रेय है कि उनके द्वारा प्रस्तुत महान क्रांतिकारी विचारों के पथ–प्रदर्शन में कम्युनिस्ट तथा क्रांतिकारी जनता अडिग भाव से आगे बढ़ते रहे।

कोरियाई क्रांति के संचालन की सही दिशा और नीति को स्पष्ट करने के बाद कामरेड किम इल सुंग ने तरुण कम्युनिस्टों और आम जनता को अमली संघर्ष के लिए संगठित और आन्दोलित किया ताकि वह दिशा और नीति व्यवहार में आ सके।

१९३० की गर्मियों में कामरेड किम इल सुंग ने इथोंग काउन्टी के गोपुशू में तरुण कम्युनिस्ट लीग तथा साम्राज्यवाद विरोधी तरुण लीग के सुयोग्य सदस्यों को लेकर कोरियाई क्रांतिकारी सेना का निर्माण किया।

कोरियाई क्रांतिकारी सेना कोरिया के कम्युनिस्टों का राजनीतिक तथा अर्ध सैनिक संगठन था जिसका निर्माण जापान विरोधी सशस्त्र संघर्ष की तैयारी के लिए हुआ था।

कामरेड किम इल सुंग ने कोरियाई क्रांतिकारी सेना की राजनैतिक तथा सैनिक संगठन संबंधी व्यवस्था को निर्धारित किया और उसकी छोटी-छोटी टुकड़ियों को विस्तृत शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में भेजा।

कोरियाई क्रांतिकारी सेना की छोटी-छोटी टुकड़ियों ने आम जनता में कोरियाई क्रांति के लिए कामरेड किम इल सुंग की जूछे-प्रेरित कार्यनीति का प्रचार-प्रसार किया और उसके नेतृत्व में जापान-विरोधी सशस्त्र संघर्ष की तैयारी के लिए पूरे जोश के साथ राजनीतिक और सैनिक गतिविधियां शुरू कर दीं।

कामरेड किम इल सुंग द्वारा कोरियाई क्रांतिकारी सेना का गठन, सशस्त्र पांतों की केन्द्रीय धुरी तैयार करने, उनको राजनीतिक और सैनिक प्रशिक्षण देने और व्यापक जापान-विरोधी देशभक्त शक्तियों की गोलबंदी द्वारा उनका जन-आधार तैयार करने की दृष्टि से, अर्थात्, पूरे पैमाने पर जापान-विरोधी सशस्त्र संघर्ष की तैयारी और जापान-विरोधी छापेमार सेना की नींव डालने की दृष्टि से, महान व्यावहारिक महत्व का सही कदम था।

कोरियाई क्रांतिकारी सेना का संगठन और उसकी कार्यवाहियों का पथ-निर्देश करते हुए कामरेड किम इल सुंग ने क्रांतिकारी संघर्ष का व्यापक जन-आधार तैयार करने के लिए जांगछून, इथोंग, होईदक तथा अन्य काउंटियों का दौरा किया। और इस प्रकार उन क्षेत्रों की क्रांति-स्फूर्ति बना कर एक उदाहरण प्रस्तुत किया।

कामरेड किम इल सुंग ने उभरती हुई पीढ़ी को क्रांतिकारी शिक्षा देने के लिए अनेक गांवों में स्कूलों की स्थापना की और बहसों, भाषणों, राजनीतिक प्रशिक्षण शिविरों तथा "बोलशेविक" और "नोंऊ" (साथी किसान) जैसे क्रांतिकारी प्रकाशनों और कला-प्रचार जत्थों की गतिविधियों आदि जैसे विविध लोक-व्यापी राजनीतिक कार्यवाहियों द्वारा आम जनता की राष्ट्रीय तथा वर्ग चेतना को ऊंचा उठाया।

इस प्रकार से आम जनता की देशभक्ति की भावना तथा उनकी क्रांतिकारी वर्ग चेतना को तीव्र बना कर कामरेड किम इल सुंग ने क्रमशः बच्चों, नौजवानों, महिलाओं तथा किसानों को उनकी सामाजिक स्थितियों के अनुसार व्यापक पैमाने पर जापान-विरोधी जनसंगठनों में एकजुट किया और इस प्रकार हर जगह क्रांतिकारी खेतिहर गांवों का निर्माण किया।

अगस्त, १९३० में जब जापानी साम्राज्यवादियों तथा प्रतिक्रियावादी फौजशाहों ने शहरी क्रांतिकारी संगठनों पर अपना दमन चक्र और अधिक तेज कर दिया, तब कामरेड किम इल सुंग प्रस्तुत खतरों की अवहेलना करते हुए खुद उन संगठनों की रक्षा के लिए संघर्ष के मैदान में कूद पड़े।

शत्रु द्वारा निरन्तर चौकसी और पीछा किये जाने के खतरों का मुकाबला करते हुए कामरेड किम इल सुंग ने किरिन, हेलोंग, गयोहा, हारबिन, दोनहुआ और दूसरे शहरों में क्रांतिकारी संगठनों के संगठन का कार्य–संचालन किया, उनका निर्देश किया और रास्ते में खड़ी मुश्किलों को खत्म किया।

कामरेड किम इल सुंग ने, जो खुद यथा-स्थल शहरी क्रान्तिकारी संगठनों का कार्य संचालन कर रहे थे, एक बार फिर कोरियाई क्रान्तिकारी सेना की गतिविधियों का निर्देशन करने के लिए और ग्रामीण क्षेत्रों में गांव-गांव जाकर ग्रामीण क्षेत्रों का दौरा करते हुए क्रान्तिकारी मोर्चाबन्दी को सुदृढ़ तथा विस्तारित किया।

उन्होंने न थकावट जानी और न आराम, वे रात–दिन काम में जुटे रहते थे।

दिन में किसानों को खेती में मदद करते हुए वे उन्हें शिक्षित करते और उनका पथ–प्रदर्शन करते तथा रात को वे क्रांतिकारी प्रकाशनों की व्यवस्था करते या कोरियाई क्रांतिकारी सेना की छोटी–छोटी टुकड़ियों के सदस्यों के कामों का पथ–प्रदर्शन करने के लिए जिन्हें वे विभिन्न जिलों में भेज चुके थे, कोई लम्बी यात्रा करते।

क्रांति के महान नेता कामरेड किम इल सुंग को, जो इस तरीके से कोरियाई क्रांति के भारी बोझ को अपने कंधों पर संभाल कर पूरी निष्ठा के साथ संघर्ष कर रहे थे, अपने साथियों तथा आम जनता का असीम विश्वास और सम्मान प्राप्त हो रहा था।

इसी समय से उनके साथी और क्रांतिकारी जनता उन्हें कामरेड किम इल सुंग कह कर पुकारने लगी (वे पहले कामरेड किम सुंग जु कहलाते थे)। पहले उन्हें कामरेड इल सुंग कह कर पुकारा गया (इल का अर्थ एक, सुंग का अर्थ तारा), या कुछ लोग उन्हें कामरेड हान ब्यौल भी कहते थे, जिसका भाव यह था कि वे भोर का तारा बन कर कोरियाई जनता को अंधकार से निकाल कर मुक्ति के सूर्योदय तक पहुंचा दें। और बाद को उन्हें कामरेड किम इल सुंग (इल का अर्थ सूर्य, सुंग का अर्थ उपलब्धि) इस आशा में कहा जाने लगा कि वे कोरिया के उज्जवल सूर्य बनेंगे और इसलिए ऐसे महान राष्ट्रीय नेता की केवल भोर के तारे से तुलना नहीं की जा सकती।

यह बात जनता के प्रधान नेता और क्रांति के महान निर्देशक कामरेड किम इल सुंग के प्रति कोरियाई जनता के असीम विश्वास और सम्मान की अभिव्यक्ति थी।

१९३१ के शुरू होते ही जापानी साम्राज्यवादियों ने मंचूरिया पर आक्रमण के अपने मंसूबे स्पष्ट कर दिये और उसकी तैयारियां तेज कर दीं।

तेजी से बदलती हुई परिस्थिति के साथ चलते हुए कामरेड किम इल सुंग ने सशस्त्र संघर्ष की तैयारी के काम को और अधिक सक्रियता से तीव्र कर दिया।

१९३१ के प्रारंभ में कामरेड किम इल सुंग ने दुमान गांग नदी के मैदानी क्षेत्रों को, जहां भौगोलिक और जनता की आबादी के संयोजन की दृष्टि से परिस्थितियां अनुकूल थीं, एक केन्द्र बना कर सशस्त्र संघर्ष संगठित करने और छेड़ देने की योजना से, अपनी कार्यवाही का मंच बनाया।

दोनहुआ में उन्होंने कोरियाई क्रांतिकारी सेना, तरुण कम्युनिस्ट लीग तथा साम्राज्यवादविरोधी तरुण लीग के सदस्यों को विभिन्न क्षेत्रों में भेजा, ताकि वे वहां सशस्त्र संघर्ष की तैयारी के काम को सक्रियता से बढ़ायें और उन्होंने काम को निर्देशित करने के लिए स्वयं विभिन्न क्षेत्रों का दौरा किया।

उसी वर्ष सितम्बर में जापानी साम्राज्यवादियों ने आखिरकार मंचूरिया पर आक्रमण कर दिया और कोरियाई जनता पर, विशेषकर क्रांतिकारी शक्तियों पर, पूरे जोर से प्रतिक्रियावदी हमला तेज कर दिया ताकि वे मोर्चे के "पिछवाड़े" की सुरक्षा की गारंटी कर सकें। जापानी साम्राज्यवादियों ने शस्त्र बल से कोरियाई जनता के क्रांतिकारी बढ़ाव को दबाया और हर जगह बड़े पैमाने पर निर्दोष लोगों की हत्या की।

जापानी साम्राज्यवाद के उस खुले खूनी आतंक को क्रांतिकारी सेनाओं द्वारा विफल किये जाने का प्रश्न इतना तात्कालिक बन गया कि उसके हल में एक क्षण की भी देरी नहीं की जा सकती थी।

कोरियाई क्रांतिकारी सेना के निर्माण और उसके कामों के निर्देशन के अनुभवों तथा सशस्त्र संघर्ष की तैयारियों में प्राप्त सफलताओं के आधार पर कामरेड किम इल सुंग ने नवम्बर, १९३१ में म्योंगब्युलगु सम्मेलन में जापान–विरोधी सशस्त्र संघर्ष के संगठन और संचालन के लिए ठोस कदम प्रस्तावित किये।

सम्मेलन में कामरेड किम इल सुंग ने छापामार युद्ध की परिभाषा बताते हुए उसे जापान–विरोधी संघर्ष का बुनियादी रूप कहा और स्पष्ट रूप से बताया कि जापान–विरोधी–छापामार सेना को क्रांतिकारी सशस्त्र सेना के रूप में स्थापित करना चाहिए।

उन्होंने यह भी सिखाया कि चूंकि जापान–विरोधी सशस्त्र संघर्ष छापामार ढंग से चलाना होगा, इसलिए हम चाहे लम्बी अवधि तक हर और दुश्मन से घिरे

भी क्यों न हों, यह संघर्ष तभी सफल हो सकता है, जब ऐसे छापामार अड्डे स्थापित किये जायं, जिन पर जापान–विरोधी छापामार दल भरोसा कर सकें और इन अड्डों में तथा उनके इर्दगिर्द सशस्त्र संघर्ष का व्यापक जन आधार भी कायम हो।

और उन्होंने पड़ोसी देश की उस जनता से क्रांतिकारी एकजुटता को मजबूत करने की कार्यनीति प्रस्तुत की जो जापानी साम्राज्यवादी आक्रमण से पीड़ित थी और उसकी जापान–विरोधी सशस्त्र शक्तियों के साथ साम्राज्यवाद विरोधी संयुक्त मोर्चा बनाने की भी कार्यनीति प्रस्तुत की ताकि जापान विरोधी सशस्त्र संघर्ष तेजी से विकसित और विस्तृत हो सके, शत्रु की सेनाओं को अधिक से अधिक अकेला किया जा सके और उन पर घातक प्रहार किये जा सकें।

म्योंगब्युलगु सम्मेलन के बाद कामरेड किम इल सुंग ने सबसे पहले अपनी पूरी शक्ति ऐसी जापान विरोधी छापामार सेना तैयार करने में लगायी जो आगे चल कर कोरिया में क्रांतिकारी आन्दोलन की नेतृत्वकारी शक्ति बन सके।

जापान विरोधी छापामार सेना के संगठन और उसकी कार्यवाहियों में आरंभ करने में शुरू से ही अनेक कठिनाइयां आने लगी थीं।

ऐसी परिस्थितियों में जब न हाथ में राजकीय सत्ता हो और न राष्ट्रीय सेना की बुनियाद और जब सारे देश में जापानी साम्राज्यवादी उत्पीड़न व्यवस्था का जाल बिछा हो और शत्रु का बर्बर दमन हर ओर चल रहा हो, तब सशस्त्र सेना संगठित करना और हथियार जुटाना कोई आसान काम न था।

कामरेड किम इल सुंग ने इस कठिन कार्य को अदम्य क्रांतिकारी संकल्प और असाधारण क्रांतिकारी वेग के साथ तेजी से आगे बढ़ाया।

उन्होंने जापान–विरोधी छापामार सेना की स्थापना के काम को आम जनता की क्रांतिकारी प्रगति के साथ घनिष्ठ रूप से जोड़कर, इस दौरान कसौटी पर खरे उतरे हुए श्रेष्ठ प्रगतिशील लोगों को सशस्त्र सेना का सदस्य बनाया और शस्त्र हासिल करने के लिए आम क्रांतिकारी जनता को जगाया।

कामरेड किम इल सुंग ने निम्नलिखित आशय की बातें सिखायीं :

---हमारे लिए हथियार हाथ में लेना आसान काम नहीं। लेकिन आज की परिस्थिति हमें ऐसा करने के लिए विवश करती है।---

यदि हम शत्रु के वहशी अत्याचारों पर सीना पीटते, रोते या चुपचाप आंसू बहाते बैठे रहे तो समस्या हल नहीं होगी।

हमें उठ खड़े होकर हाथ में हथियार लेकर संघर्ष करना है। हमें हथियार कहां

से मिलेंगे? अगर हमारे पास धन हो तो हम खरीद सकते हैं या उनका निर्माण कर सकते हैं। लेकिन सबसे आसान रास्ता है कि शत्रु के हथियारों पर कब्जा किया जाय। अगर हर कोई अपनी सूझ–बूझ से काम ले, एक जगह चुने और जान पर खेल कर हमला बोल दे तो उसे हथियार मिल सकते हैं और वह अपने को हथियारों से लैस कर सकता है।—

इस सीख से अतिशय रूप से प्रेरित होकर शत्रु की दमनकारी पैंतरेबाजियों को नाकाम कर के क्रांतिकारी जन समूह, पुरुष, स्त्री, बूढ़े, नौजवान-सब हथियार हासिल करने के संघर्ष में उठ खड़े हुए। और उन्होंने एक तरफ अपनी जान की बाजी लगा कर शत्रु से हथियार छीन लिए और दूसरी तरफ स्वयं हथियार बनाकर प्रगतिशील युवकों को शस्त्रों से लैस किया।

जापान–विरोधी छापामार सेना की स्थापना के रास्ते में सिर्फ जापानी साम्राज्य-वादियों द्वारा चलाये गये क्रांतिकारी संगठनों और क्रांतिकारी जनता पर राक्षसी दमन से ही मुश्किलें नहीं पैदा हुईं, कोरियाई कम्युनिस्टों और कोरियाई जनता के प्रति जापान-विरोधी टुकड़ियों की शत्रुतापूर्ण कार्यवाहियों से भी गंभीर कठिनाइयां खड़ी हो गयीं।

वे जापानी–विरोधी चीनी टुकड़ियां, राष्ट्रवादी सशस्त्र सेनाएं, जिन्होंने उस समय मंचूरिया में जापानी आक्रमण के विरुद्ध संघर्ष छेड़ दिया था, साम्यवाद के विरुद्ध जापानी साम्राज्यवादियों के प्रचार और जातीय अलगाव पैदा करने की उनकी कोशिशों की शिकार हो कर कोरियाई कम्युनिस्टों के साथ न सिर्फ शत्रुता का भाव रखती थीं, बल्कि उन्होंने कई स्थानों पर उन कोरियाई तरुणों की हत्या की, जो कामरेड किम इल सुंग द्वारा संगठित की जान वाली जापान–विरोधी सेनाओं में भर्ती होने आ रहे थे।

जापान–विरोधी छापामार सेना संगठित कर के सशस्त्र संघर्ष छेड़ने के लिये कोरियाई कम्युनिस्टों और क्रांतिकारी जनता के विरुद्ध उन जापान–विरोधी टुकड़ियों के शत्रुतापूर्ण कामों को रोक कर उनके साथ सहयोग करना सर्वाधिक तात्कालिक कर्तव्य था। लेकिन उन दिनों जो परिस्थितियां थीं, उनमें उनसे संपर्क तक स्थापित करना मुश्किल था, जिसके लिए जान पर खेलने की कटिबद्धता अपेक्षित थी।

इन परिस्थितियों में कामरेड किम इल सुंग ने एक मात्र क्रांति के हित में अपनी जान की बाजी लगा कर उन जापान विरोधी टुकड़ियों की कमान से सीधे संपर्क स्थापित किया और धीरज के साथ समझा–बुझा कर ऐसे लोगों को सही रास्ते पर ला खड़ा किया जोकि अंध कम्युनिस्ट विरोध और अंधराष्ट्रवाद के चक्कर में फंसे हुए थे और घोर उत्पात मचा रहे थे, और इस प्रकार अंततः उनके साथ मिल कर संयुक्त जापान–विरोधी संघर्ष छेड़ने में सफलता प्राप्त की।

इस प्रकार जापान–विरोधी छापामार सेना की स्थापना के प्रारंभिक चरण की कठिनाइयों पर विजय हासिल की गयी।

इस प्रकार रास्ते में खड़ी सारी मुश्किलें दूर करके कामरेड किम इल सुंग ने २५ अप्रैल, १९३२ को जापान–विरोधी छापामार सेना की स्थापना की, जो कोरियाई जनता की पहली मार्क्सवादी–लेनिनवादी क्रांतिकारी सेना थी, जिसकी धुरी बने प्रगतिशील मजदूर, किसान तथा देशभक्त तरुण और जिसमें शामिल हुए कोरियाई क्रांतिकारी सेना, तरुण कम्युनिस्ट लीग और साम्राज्यविरोधी तरुण लीग के सदस्य जो बहुत पहले से उसकी रीढ़ बने हुए थे।

कामरेड किम इल सुंग ने कहा :

"जापानी साम्राज्यवादी शासन के सबसे अंधकारमय युग में हमारे देश के समर्पित कम्युनिस्टों ने मार्क्सवादी–लेनिनवादी सिद्धांत के आलोक में जापान–विरोधी छापामार सेना संगठित की जो कि हमारे देश में क्रांतिकारी सशस्त्र जनसेना की पहली टुकड़ी थी और जिसमें प्रगतिशील मजदूर और किसान और देशभक्त तरुण शामिल थे, जिन्होंने राष्ट्रीय स्वाधीनता और कोरियाई जनता की सामाजिक मुक्ति के लिए अपने को जापानी साम्राज्यवाद के विरुद्ध समर्पित कर दिया था।"

जापान–विरोधी छापामार सेना मेहनतकश वर्ग की क्रांतिकारी सशस्त्र सेना थी जो कामरेड किम इल सुंग के महान क्रांतिकारी विचार, जूछे के विचार से पूर्णतया लस थी और जो कोरियाई जनता की राष्ट्रीय स्वाधीनता तथा समाजिक मुक्ति के लिए लड़ रही थी। वह एक ऐसी जन सेना थी जो जनता से रक्त–संबंध स्थापित किये रहती थी और जो जनता के हितों के लिए संपूर्ण और एकात्म निष्ठा से लड़ती थी।

जापान –विरोधी छापामार सेना सर्वहारा के अंतर्राष्ट्रीयतावाद की भी क्रांतिकारी सेना थी जो 'दुनिया के मजदूरों एक हो' के क्रांतिकारी नारे की पताका ऊंचा उठाये हुए विश्व क्रांति के लिए लड़ रही थी।

कामरेड किम इल सुंग द्वारा जापान–विरोधी छापामार सेना की स्थापना एक महान ऐतिहासिक घटना थी जिसने कोरियाई जनता के क्रांतिकारी आन्दोलन में एक युगान्तकारी परिवर्तन ला दिया। कामरेड किम इल सुंग के बुद्धिमत्तापूर्ण नेतृत्व में इस सेना ने कोरिया में कम्युनिस्ट आन्दोलन और जापान–विरोधी राष्ट्रीय मुक्ति संघर्ष के विकास को एक नये तथा उच्चतर दौर में पहुंचा दिया।

अद्वितीय देशभक्त, राष्ट्रीय जननायक तथा सदाजयी, लौह संकल्प वाले, प्रतिभाशाली

कमाण्डर कामरेड किम इल सुंग के नतृत्व में कोरिया की जनता अपने इतिहास में पहली बार अपनी सच्ची क्रांतिकारी सशस्त्र सेना को लेकर पितृभूमि की पुर्नस्थापना और स्वाधीनता तथा मुक्ति के पवित्र संघर्ष में कूद पड़ी।

कामरेड किम इल सुंग ने जैसे ही जापान–विरोधी छापामार सेना की स्थापना की और जापान–विरोधी सशस्त्र संघर्ष छेड़ा, हमारे देश में कम्युनिस्ट आन्दोलन तथा कोरियाई जनता के जापान–विरोधी राष्ट्रीय मुक्ति संघर्ष ने अत्यन्त गौरवशाली युग में प्रवेश किया।

चूंकि वह जापान–विरोधी सशस्त्र संघर्ष, नख से शिख तक शस्त्रों से लैस जापानी आक्रामकों को पराजित करने तथा कोरियाई क्रांति को विजयी बनाने के लिए सबसे सक्रिय और निर्णयकारी संघर्ष था और साथ ही, चूकि वह आम जनता के संघर्षों के सभी स्वरूपों को तीव्र रूप से प्रेरित करने और प्रोत्साहित करने वाले संघर्ष का सबसे अधिक शक्तिशाली संघर्ष था, इसलिए वह हमारे देश में जापान–विरोधी राष्ट्रीय मुक्ति आन्दोलन और कम्यु-निस्ट आन्दोलन का निश्चित केन्द्र–बिन्दु बना।

जापान–विरोधी सशस्त्र संघर्ष को संगठित करने तथा छेड़ने से कामरेड किम इल सुंग ने इसको केन्द्र बनाकर जापान–विरोधी संयुक्त मोर्चा आन्दोलन और उस कोरियाई कम्युनिस्ट पार्टी की स्थापना के काम से संपूर्ण कोरियाई क्रांति की तीव्र प्रगति का प्रशस्त मार्ग खोल दिया।

जापान–विरोधी सशस्त्र संघर्ष ने, इस महान संघर्ष ने, जिसमें मजदूर वर्ग और किसान जनता के मूल हितों और हमारी जनता की राष्ट्रीय आकांक्षाओं के सही और सर्वांग प्रतिफलन द्वारा राष्ट्रीय मुक्ति का काम सामाजिक क्रांति के काम से आंगिक रूप में जुड़ गया, समस्त कोरियाई जनता को राष्ट्रीय पुनर्जीवन की आशाओं और क्रांति की विजय में विश्वास से अनुप्राणित किया और उसे राष्ट्र-व्यापी जापान–विरोधी प्रतिरोध संघर्ष के लिए कटिबद्ध किया।

मार्क्सवाद–लेनिनवाद के झंडे के नीचे राष्ट्रीय तथा सामाजिक मुक्ति के लिए उपनिवेशी देशों में छेड़ा गया यह पहला सशस्त्र संघर्ष होने के कारण कामरेड किम इल सुंग द्वारा संगठित और संचालित यह जापान–विरोधी सशस्त्र संघर्ष विश्व क्रांति के विकास के संदर्भ में भी महान महत्व का था।

जिस समय अंतर्राष्ट्रीय मंच पर फासिज्म सिर उठा रहा था और साम्राज्यवादियों का प्रतिक्रियावादी अभियान आमतौर से तेज हो रहा था, उस समय सैनिक–फासिस्ट जापानी साम्राज्यवादियों पर जबरदस्त हमले का लक्ष्य लेकर छेड़े गये जापान–विरोधी

सशस्त्र संघर्ष ने सामाजिक प्रगति और राष्ट्रीय स्वाधीनता के लिए लड़ने वाली विश्व जनता पर महान क्रांतिकारी प्रभाव डाला।

ऐसे लुटेरे जापानी साम्राज्यवाद के खिलाफ, जो अन्य देशों पर आक्रमण करके और उनमें उपनिवेशी लूट मचा कर शक्तिशाली बन गया था और जिसके पास नये से नये हथियारों से लैस लाखों की आक्रमणकारी सेना थी, जापान-विरोधी सशस्त्र संघर्ष संगठित करना और छेड़ देना प्रारंभ से ही अभूतपूर्व रूप से दुष्कर कार्य था।

जापान-विरोधी छापामारों को हथियारों, भोजन और सशस्त्र संघर्ष के लिए जरूरी दूसरी चीजें जुटाने के लिए शत्रु के विरुद्ध स्वयं अपने बल पर खूनी संघर्ष करना पड़ता था, और रास्ते में आड़े आने वाली अकल्पनीय कठिनाइयों और बाधाओं को पार करते हुए दीर्घकालिक संघर्ष करना पड़ रहा था।

लेकिन क्रांति के प्रतिभाशाली नेता कामरेड किम इल सुंग ने प्रत्येक अवधि में तथा संघर्ष के हर चरण में संघर्ष की सही दिशा, रणनीति तथा कार्यनीति निर्धारित की और अपने परमश्रेष्ठ नेतृत्व से इन सारी मुश्किलों और कठिनाइयों पर विजय हासिल की तथा जापान विरोधी सशस्त्र संघर्ष को केन्द्र बना कर संपूर्ण कोरियाई क्रांतिकारी आन्दोलन का विजय की दिशा में पथ-प्रदर्शन किया।

कामरेड किम इल सुंग ने सदा जूछे के सुदृढ़ विचार पर तथा आत्मनिर्भरता की इस क्रांतिकारी भावना पर कि कोरियाई क्रांति को कोरियाई कम्युनिस्टों तथा कोरियाई जनता द्वारा स्वयं अपने प्रयत्नों के बल पर पूरा किया जाना है, अपने को सख्ती से आधारित करते हुए सभी समस्याओं का विवेकपूर्ण हल निकाला।

जापान-विरोधी छापामार सेना की स्थापना के बाद कामरेड किम इल सुंग ने छापामार अड्डों की स्थापना के काम का संगठन और निर्देशन शुरू किया जो सशस्त्र संघर्ष के विकास और कोरियाई क्रांति की विजय की गारंटी के लिए महत्वपूर्ण रणनीतिक प्रश्नों में से एक था।

उन्होंने सिखाया कि छापामार अड्डे जापान-विरोधी छापामार सेना के लिए सैनिक रणनीति के अड्डे होने चाहिएं और साथ ही, वे कोरियाई क्रांति के अभियान संचालन के भी अड्डे होने चाहिए जो उस समय की परिस्थिति और क्रांति के विकास की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए अनुकूल हों।

केवल ऐसे ही अड्डों की स्थापना से जापान-विरोधी छापामार सेना को सैनिक कार्यवाहियों के लिए अड्डे मिल सकते थे और पीछे से सहायता देन वाले अड्डे भी सुलभ हो सकते थे और इस प्रकार वे अनथक रूप से उस जापान-विरोधी सशस्त्र संघर्ष को चला

सकत थ जोकि दीर्घकालिक और कठिन रूप धारण करने लगा था। और केवल एसे अड्डों की स्थापना से ही यह संभव था कि उन दिनों जापानी साम्राज्यवादियों के अंधाधुंध कत्ले-आम और दमन से, क्रांतिकारी शक्तियों की रक्षा की जा सके, उनको मजबूत बनाया जा सके, सशस्त्र संघर्ष की ठोस नींव रखी जा सके, आम जनता के जापान-विरोधी विविध संघर्षों को सही दिशा पर ले जाया जा सके और समस्त कोरियाई जनता को क्रांतिकारी संघर्ष के लिए प्रेरित और प्रोत्साहित किया जा सके।

छापामार अड्डों के क्या स्वरूप हों, वे किन इलाकों में हों, इसके बारे में भी कामरेड किम इल सुंग ने सही रास्ता दिखाया। छापामार अड्डों को सुदृढ़ करने तथा सशस्त्र संघर्ष के विकास के लिए यह एक महत्वपूर्ण प्रश्न था।

कामरेड किम इल सुंग ने सिखाया कि यदि छापामार अड्डों को जापान-विरोधी छापामार सेना के सैनिक रणनीतिक अड्डों के रूप में संतोषजनक भूमिका निभानी है और साथ ही उनको कोरियाई क्रांति के अभियान केन्द्र भी बनना है तो उन अड्डों के स्वरूपों की सही-सही परिभाषा होनी चाहिए—जैसे पूर्ण छापामार अड्डा और अर्ध छापामार अड्डा। उनकी एक क्षेत्र विशेष के निवासियों की विचारधारात्मक और राजनीतिक जागरूकता तथा वहां की विशिष्ट परिस्थितियों के अनुसार स्थापना होनी चाहिए। और उन्होंने कहा कि पूर्ण छापामार अड्डे को मुक्त क्षेत्र में मान कर वहां क्रांतिकारी सरकार स्थापित होनी चाहिए, जिसमें मजदूर, किसान और वे सभी वर्ग तथा समूह, जो जापान-विरोधी हों, शामिल किये जाने चाहिएं।

शत्रु तथा अपने पक्ष की शक्तियों के संतुलन की तथा सशस्त्र संघर्ष की दूसरी सभी परिस्थितियों की बारीक समीक्षा करके कामरेड किम इल सुंग ने कोरिया की उत्तरी सीमा पर दुमान-गांग नदी के किनारे छापामार अड्डों की स्थापना की कार्यनीति प्रस्तुत की।

उन दिनों दुमान-गांग नदी के किनारे के क्षेत्रों में छापामार अड्डों की स्थापना के लिए अनुकूल परिस्थितियां थीं।

उन क्षेत्रों में आबादी का ८० प्रतिशत भाग गरीब कोरियाई किसानों और खेतिहर मजदूरों का था जो जापानी साम्राज्यवादियों के क्रूर दमन और शोषण से ऊब कर वहां जा बसे थे और लम्बे जापान-विरोधी संघर्ष से गुजरकर वहां जन-आधार इस्पाती बन चुका था।

और उन क्षेत्रों का अधिकांश भाग जंगल था जो ऊंची पहाड़ियों और गहरी घाटियों तक में फैला हुआ था और वहां ऐसी प्राकृतिक परिस्थितियां सुलभ थीं जो शत्रु के हमले के लिए अहितकर तथा जापान-विरोधी छापामार सेना की सुरक्षा के लिए हितकर थीं।

कामरेड किम इल सुंग द्वारा निर्धारित छापामार अड्डे स्थापित करने की कार्यनीति ऐसा अत्यन्त क्रियाशील और दूरदर्शी कदम था, जिसका लक्ष्य था कि उस समय की अत्यन्त प्रतिकूल परिस्थितियों में, जबकि राजकीय समर्थन के बिना और किसी बाहरी फौजीतथा आर्थिक सहायता के बिना ही सशस्त्र संघर्ष चलाया जाना था, क्रांति के सुदृढ़ गढ़ों का निर्माण करके, केवल आम जनता की शक्ति पर भरोसा करके और समस्त उपस्थित परिस्थितियों का पूरा लाभ उठा कर, जापान-विरोधी सशस्त्र संघर्ष को धुरी बनाते हुए संपूर्ण कोरियाई क्रांति को तेजी से आगे बढ़ाया जाय।

घृणित जापानी साम्राज्यवादी आक्रामक सेनाओं से भरे क्षेत्र में छापामार अड्डों की स्थापना के काम का शुरू से ही अर्थ था--शत्रु के विरुद्ध घनघोर युद्ध करना।

छापामार अड्डों की स्थापना रोकने की कोशिश में जापानी साम्राज्यवादियों ने बड़ी-बड़ी सशस्त्र सेनाओं को जमा किया, जिनमें सेना के अलावा पुलिस के लोग भी थे। उन्होंने क्रांतिकारी गांवों में आग लगायी, गांव वालों का अन्धाधुन्ध कत्ल किया और छापामारों तथा जनता के बीच संबंध तोड़ने के लिए बदहवास कोशिशें कीं। लेकिन अपने तमाम दमन और जहरीली तिकड़मों के बावजूद शत्रु को इसमें कामयाबी न मिल सकी कि वह जापान-विरोधी छापामारों और उस जनता की क्रांतिकारी भावना को कुचल सकें जो कामरेड किम इल सुंग की छापामार अड्डे स्थापित करने की कार्यनीति को लेकर आगे बढ़ने के लिए उठ खड़े हुए थे और न वह संघर्ष की बढ़ती लपट को रोकने में सफल हो सका।

क्रांतिकारी जनता के सक्रिय समर्थन के साथ अनेक लड़ाइयां लड़ते हुए जापान-विरोधी छापामार सेना ने जनता पर दमन की आंधी चलाने वाले शत्रु पर नकेल लगायी और साथ ही, छापामार अड्डों की स्थापना भी की। इस प्रकार कुछ ही महीनों में दूमान-गांग नदी के तटवर्ती क्षेत्रों में शत्रु से पूर्णतया मुक्त बड़े-बड़े स्वतंत्र इलाकों की स्थापना की गयी। उन क्षेत्रों में मजदूर, किसान-प्रगतिशील बुद्धिजीवी समेत सभी तरह के लोग केन्द्रित थे जो जापानी साम्राज्यवाद के फासिस्ट दमन के प्रतिरोध के--लिए उठ खड़े हुए थे।

यह बात बहुत महत्वपूर्ण थी कि अड्डों की स्थापना के बाद उनको राजनीतिक, आर्थिक तथा सैनिक दृष्टि से क्रांति के सुदृढ़ अड्डों के रूप में विकसित किया जाय। लेकिन यह कोई आसान काम न था।

कामरेड किम इल सुंग ने एक ओर बाहर से होने वाले शत्रु के बदहवास हमलों को धूल में मिलाने के लिए गंभीर संघर्ष संगठित करते और चलाते हुए और दूसरी ओर भीतर

कामरेड किम इल सुंग अपनी मां से अपने स्वर्गीय पिता के रिवाल्वर प्राप्त कर रहे हैं

से गुटबाजों और वामपंथी अवसरवादियों की विध्वंसक गतिविधियों को भी चूर–चूर करते हुए उन अड्डों को क्रांति के सशक्त गढ़ों के रूप में परिवर्तित कर दिया।

जो छापामार अड्डे बन चुके थे, वहां उन्हें बढ़ाने व मजबूत बनाने और पुरानी व्यवस्था को मिटा कर एक नयी, क्रांतिकारी व्यवस्था बनाने का संघर्ष छेड़ दिया गया।

छापामार अड्डों की स्थापना के प्रारंभिक दिनों में गुटबाजों और वामपंथी अवसरवादियों ने, जिन्हें सशस्त्र संघर्ष के बारे में कुछ भी मालूम न था, मुक्त क्षेत्र के रूप में केवल पूर्ण छापामार अड्डों की स्थापना पर जोर दिया और उनके इर्द–गिर्द अर्ध छापामार अड्डों की स्थापना का विरोध किया। और भी बुरी बात यह कि उन्होंने मुक्त क्षेत्रों तथा शत्रु नियंत्रित क्षेत्रों में विभेद करना शुरू किया, उन्हें क्रमशः लाल जिले और श्वेत जिले कह कर पुकारने लगे और शत्रु–नियंत्रित क्षेत्रों की जनता को वैरभाव से देखने लगे या उसे दूर रखने लगे और इस प्रकार मुक्त क्षेत्रों को बाहरी संसार से काट कर अलग करने लगे।

शेखचिल्लीपन और मतवाद के शिकार इन गुटबाजों और वामपंथी अवसरवादियों ने तुरन्त समाजवादी नीतियों पर अमल करने की कोशिश की और हमारे देश की क्रांति के चरित्र तथा उसके तात्कालिक कर्त्तव्यों की अवहेलना करते हुए सोवियत ढंग की सरकार कायम करने पर जोर दिया। इससे छापामार अड्डों में पेचीदा परिस्थिति पैदा हो गई।

इन वामपंथी भटकावों पर विजय पाये बगैर छापामार अड्डों को क्रांति के सुदृढ़ अड्डों के रूप में नहीं विकसित किया जा सका और न व्यापक जापान–विरोधी क्रांतिकारी शक्तियों को एकजुट किया जा सका।

कामरेड किम इल सुंग ने वामपंथियों द्वारा फैलाये गये मतिभ्रम को दूर करने के लिए पूरे जोश से काम किया।

उन्होंने उन गुटबाजों और वामपंथी अवसरवादियों की अंधी कोशिशों की जम कर निन्दा की, जो शत्रु–नियंत्रित क्षेत्रों की जनता को दुश्मनी की नजर से देखते और उसे अपने से दूर रखते थे, उन्होंने मुक्त क्षेत्रों के इर्द–गिर्द विशाल क्षेत्रों में भूमिगत क्रांतिकारी संगठनों की स्थापना की, जनता को एकजुट किया और उसे क्रांतिकारी बनाया तथा इस प्रकार अर्ध-छापामार अड्डों की स्थापना की जो ऊपर से शत्रु की प्रशासन–व्यवस्था के अधीन दिखायी देते थे, किन्तु यथार्थ में वे जापान–विरोधी छापामार सेना का भौतिक और नैतिक समर्थन करते थे।

अर्ध-छापामार अड्डों की स्थापना तथा शत्रु-नियंत्रित क्षेत्रों में जनता के बीच राजनीतिक कार्य की मजबूती से उस वामपंथी प्रवृत्ति पर विजय प्राप्त कर ली गयी जो मुक्ति क्षेत्र की जनता को शत्रु–नियंत्रित जिलों की जनता से अलग करती थी और जो उन्हें

एक दूसरे के विरुद्ध खड़ी करती थी। इस प्रकार सशस्त्र संघर्ष का जन-आधार और अधिक व्यापक बन गया।

गुटबाजों तथा लफ्फाजों की यह कोशिश थी कि चूंकि दूसरों ने सोवियत सत्ता स्थापित की है, इसलिए उनकी नकल पर हमें भी सोवियत सत्ता की स्थापना करनी चाहिए। इस वामपंथी, अवसरवादी, कठमुल्ले प्रयास को जोरों से ठुकराकर कामरेड किम इल सुंग ने जन क्रांतिकारी सरकार की मौलिक कार्यनीति को स्पष्ट किया जो कोरियाई क्रांति के साम्राज्यवाद विरोधी, सामन्तवाद-विरोधी जनवादी चरित्र और राष्ट्रीय मुक्ति के तात्कालिक कर्त्तव्य के सर्वथा अनुकूल थी।

कामरेड किम इल सुंग ने निम्नलिखित आशय की बात कही :

—जिस प्रकार की हम स्थापना करने वाले हैं, उस सरकार का संचालन न तो कोई राजा करेगा, न वह जमींदारों, पूंजीपतियों या किसी व्यक्ति का हित साधन करेगी, बल्कि वह हमारी जनता की सरकार होगी, जो जनता की स्वतंत्रता और स्वाधीनता के लिए काम करेगी और यह सरकार किसानों को जमीन देगी, महिलाओं को पुरुषों के बराबर अधिकार देगी और हर-एक को सीखने, काम करने और अच्छी तरह जीवन बिताने का अवसर प्रदान करेगी—

कामरेड किम इल सुंग ने सिखाया कि क्रांति के उस दौर में, जब साम्राज्यवाद का विरोध तथा राष्ट्र की मुक्ति तात्कालिक कर्त्तव्य बन गये हैं, कोरियाई क्रांति के विकास की वास्तविक मांग यह है कि जन-क्रांतिकारी सरकार की स्थापना की जाय, जिसका आधार मजदूर वर्ग के नेतृत्व में मजदूर-किसान मैत्री हो और जिसे व्यापक जापान-विरोधी शक्तियों के संयुक्त मोर्चे का सहारा हो। उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि इस जन-क्रांतिकारी सरकार को अपना तात्कालिक कर्तव्य यह मानना चाहिए कि वह जापानी साम्राज्यवाद के औपनिवेशिक शासन का तख्त पलट दे और राष्ट्रीय मुक्ति हासिल करे तथा ऐसी जनवादी नीतियों का सही ढंग से पालन करे जिसमें न सिर्फ मजदूरों-किसानों के, बल्कि समाज के उन दूसरे हिस्सों के हितों का भी प्रतिनिधित्व हो जो साम्राज्यवाद और सामन्तवाद के विरोधी हैं।

जन संख्या के समस्त साम्राज्यवाद-विरोधी, सामन्त-विरोधी हिस्सों के ऐसे संयुक्त मोर्चे पर आधारित, जिसकी बुनियाद कम्युनिस्टों के नेतृत्व में मजदूर-किसान मैत्री थी, एक सत्ताधारी संगठन के रूपमें जनता की, क्रांतिकारी सरकार सत्ता का एक अत्यंत क्रांतिकारी, लोकव्यापी स्वरूप था जो मेहनतकश जनता के हितों की सर्वांगतः रक्षा करने तथा मजदूरों और किसानों समेत आम जनता की सामाजिक मुक्ति प्राप्त करने में सक्षम थी।

कामरेड किम इल सुंग द्वारा प्रतिपादित जन–क्रांतिकारी सरकार की कार्यनीति गुटबाजों और वामपंथी अवसरवादियों पर घातक चोट सिद्ध हुई और सच्चे कम्युनिस्टों के लिए तथा आम जनता के लिए ऐसी नयी रोशनी और कार्यक्रम संबंधी पथप्रदर्शक दिशा सिद्ध हुई, जिससे आगामी संघर्ष के मार्ग और अधिक आलोकित हो गया।

आम जनता कामरेड किम इल सुंग के महान नेतृत्व को तथा जनक्रांतिकारी सरकार की, उनकी सही कार्यनीति को स्वीकार करके उसके अमल के लिए उठ खड़ी हुई और उसने जो सक्रिय संघर्ष छेड़ा, उसको ही श्रेय है कि सोवियत शैली की सरकार की स्थापना पर जोर देने वाला वामपंथी भटकाव पूरी तरह मिट्टी में मिल गया और पूर्ण छापामार अड्डों में जन क्रांतिकारी सरकार की स्थापना की गयी।

कामरेड किम इल सुंग के नेतृत्व में जन क्रांतिकारी सरकार ने सारे जनवादी सुधार सफलतापूर्वक पूरे किये–उसने जापानी साम्राज्यवादियों तथा जापान समर्थक जमींदारों से जमीन छीन कर बिना मुआविजा दिए किसानों में बांट दी, काम के लिए आठ घंटे के दिन की तथा न्यूनतम वेतन की व्यवस्था की घोषणा की, भारी टैक्सों और उगाही का उन्मूलन कर दिया, मर्द–औरत की समानता का कानून पास कर दिया तथा मुफ्त अनिवार्य शिक्षा व्यवस्था लागू कर दी। इस प्रकार पूर्ण छापामार अड्डों में शोषण–उत्पीड़न से मुक्त नये सामाजिक–आर्थिक संबंध स्थापित हो गये और एक क्रांतिकारी व्यवस्था कायम हो गयी।

कामरेड किम इल सुंग द्वारा प्रस्तुत जन–क्रांतिकारी सरकार की कार्यनीति, जिस पर उनके नेतृत्व में छापामार अड्डों में शानदार तरीके से अमल हुआ, एक ऐसी कार्यनीति थी जिसमें कोरियाई क्रांति के विकास की वस्तुगत आवश्यकताओं तथा हमारी जनता के संकल्प की अभिव्यक्ति मिलती थी और जिसने एक ऐसे क्रांतिकारी झंडे की भूमिका अदा की, जिसके इर्द–गिर्द आम जनता क्रांतिकारी शक्तियों को सुदृढ़ करने के लिए घनिष्ठ रूप से एकजुट हुई तथा जापान–विरोधी संघर्ष में तेजी से आगे बढ़ी।

और जन क्रांतिकारी सरकार की उस कार्यनीति ने, जिसने परिवर्तित ऐतिहासिक परिस्थितियों के अनुकूल राज्य और क्रांति संबंधी मार्क्सवादी–लेनिनवादी सिद्धांत को समृद्ध और विकसित किया, प्रभुसत्ता, राष्ट्रीय स्वाधीनता और सामाजिक मुक्ति के लिए संघर्षरत, दुनिया की शोषित–पीड़ित जनता पर महान क्रांतिकारी प्रभाव डाला।

कामरेड किम इल सुंग के नेतृत्व में जन–क्रांतिकारी सरकार की कार्यनीसि पर अमल से छापामार अड्डे क्रांति के शक्तिशाली अड्डों के रूप में बदल गये।

इन अड्डों की जनता ने, जिसे कामरेड किम इल सुंग के नेतृत्व की जन-सरकार के

अधीन पहली बार एक नया, उन्मुक्त जीवन भोगने का अवसर मिला, शत्रु के बार-बार होन वाले "दण्ड अभियानों" और आर्थिक नाकेबन्दी से पैदा होन वाली अग्निपरीक्षाओं और विपत्तियों का बहादुरी से सामना करत हुए, सशस्त्र संघर्ष के लिए खेती करके रसद जुटायी और हथियार तथा विभिन्न युद्ध-सामग्रियां बनाने तथा सप्लाई करने के लिए हथियारों और कपड़ों के कारखाने स्थापित किये।

कामरेड किम इल सुंग ने छापामार अड्डों में कम्युनिस्ट पार्टी, तरुण कम्युनिस्ट लीग तथा अन्य अनेक जनसंगठनों की भी रचना की और इन संगठनों के जरिए अड्डों में रहने वाली जनता को शिक्षित किया और ट्रेनिंग दी। इस प्रकार, अड्डों में रहने वाली जनता को क्रांतिकारी और कम्युनिस्ट के रूप में ढाला गया। छापामार अड्डों में समाचार पत्रों, पुस्तिकाओं समेत अनेक क्रांतिकारी प्रकाशन प्रारंभ किये गये ताकि जनता को सैद्धांतिक, राजनीतिक तथा सांस्कृतिक शिक्षा दी जा सके। ये प्रकाशन न सिर्फ छापामार अड्डों में, बल्कि शत्रु के अधीन रहने वाले क्षेत्रों में तथा मातृभूमि के अनेक भागों में भी व्यापक रूप से वितरित किये जाते थे, ताकि जनता में जागरण पैदा हो और उसे जापान विरोधी संघर्ष के लिए संगठित और लामवन्द किया जा सके।

इसमें कोई संदेह नहीं कि कामरेड किम इल सुंग द्वारा स्थापित और मजबूत बनाये गये छापामार अड्डों ने ऐसे पृष्ठ प्रदेशीय शक्तिशाली अड्डों की भूमिका अदा की, जिनसे जापान-विरोधी छापामारों को भौतिक तथा सैनिक सहायता मिलती थी, और जो क्रांतिकारी अड्डों के रूप में आम जनता में क्रांति की विजय की आस्था पैदा करते थे तथा जापान-विरोधी संघर्ष के लिए उसको प्रेरित तथा प्रोत्साहित करते थे।

हमारे देश के मजदूरों और किसानों समेत समस्त देशभक्त जनता में क्रांतिकारी सरकार के लिए तथा छापामार अड्डों में नयी व्यवस्था के प्रति गहरा स्नेह था, अतः जनता ने उन अड्डों की पूरी लगन से रक्षा की और उन उपलब्धियों से महान शक्ति प्राप्त करके तीव्र और अनथक जापान-विरोधी संघर्ष छेड़ा।

छापामार अड्डों को क्रांति के सुदृढ़ दुर्ग के रूप में बदलते हुए कामरेड किम इल सुंग ने मार्क्सवादी–लेनिनवादी पार्टी की स्थापना की संगठनात्मक तथा सैद्धांतिक तैयारियों के लिए, क्रांति की प्रमुख शक्ति को दृढ़ता से निर्मित करने के लिए, संयुक्त जापान–विरोधी राष्ट्रीय मोर्चे के आन्दोलन को विकसित करने के लिए तथा संयुक्त साम्राज्यवाद विरोधी मोर्चा बनाने के लिए जोरदार संघर्ष किया।

जापान-विरोधी सशस्त्र संघर्ष के दौरान कामरेड किम इल सुंग ने इस सिद्धांत का सुसंगत ढंग से पालन किया कि कम्युनिस्टों की नयी पीढ़ी को प्रशिक्षित करके क्रांतिकारियों

की संख्या में निरन्तर वृद्धि की जाये, मार्क्सवादी–लेनिनवादी पार्टी की स्थापना के लिए संगठनात्मक रीढ़ को मजबूत बनाया जाये और साथ ही आम जनता को क्रांति के पक्ष में जीता जाये।

कामरेड किम इल सुंग ने निम्नलिखित आशय की बात सिखायी :

पार्टी की स्थापना की तैयारियों के सिलसिले में सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि जापान-विरोधी सशस्त्र संघर्ष के जरिए कम्युनिस्टों की संख्या बढ़ायी जाय। अमली संघर्ष की कसौटी पर खरे उतरे कम्युनिस्ट हमेशा और हर कहीं हमारी क्रांति के संचालन में एक केन्द्रीय शक्ति की भूमिका अदा करेंगे। यदि हम कम्युनिस्टों को लेकर एक क्रोड़ स्थापित करें और उसके इर्द-गिर्द क्रांतिकारी जनता को घनिष्ठ रूप से एकजुट करें तो हम मार्क्सवादी-लेनिनवादी पार्टी की स्थापना कर सकते हैं और मुश्किल से मुश्किल परिस्थितियों में जटिल से जटिल क्रांतिकारी काम को सही ढंग से पूरा कर सकते हैं।

अतः जापान-विरोधी सशस्त्र संघर्ष के दौरान हमें चाहिए कि हम हमेशा अपनी सशस्त्र पांतों को बढ़ाते और सुदृढ़ करते रहें तथा शत्रु के विरुद्ध युद्ध में कम्युनिस्ट तैयार करते रहें और उन्हें प्रशिक्षण देते रहें।

पार्टी की स्थापना के लिए सशस्त्र संगठनात्मक रीढ़ बनाने के लिए कामरेड किम इल सुंग ने कोरियाई क्रांति की अग्रणी शक्ति, जापान-विरोधी छापामार सेना, में कम्युनिस्ट पार्टी तथा तरुण कम्युनिस्ट लीग के संगठन बनाये और छापामारों में रोजमर्रा के राजनीतिक कामों को तेजी से पूरा किया तथा इस प्रकार उन्हें जूछे के क्रांतिकारी विचार से पूर्णतया लैस करते हुए अडिग कम्युनिस्ट और योग्य राजनीतिक कार्यकर्ता के रूप में विकसित किया।

छापामार अड्डों में कम्युनिस्ट पार्टी और तरुण कम्युनिस्ट लीग के संगठनों में अपना नेतृत्व सुदृढ़ करते हुए कामरेड किम इल सुंग ने जापान-विरोधी छापामारों और दूसरे अनेक राजनीतिक कार्यकर्ताओं को शत्रु के अधीन पड़े क्षेत्रों में भेजा। उन्होंने वहां भूमिगत क्रांतिकारी संगठनों का निर्माण और विस्तार किया और प्रगतिशील मजदूरों और किसानों को कम्युनिस्ट बनाया।

इसके साथ-साथ उन्होंने जापान-विरोधी सशस्त्र संघर्ष में शामिल लोगों में पाई जाने वाली गुटबाजी, लफ्फाजी तथा दक्षिण और वामपंथी अवसरवाद के विरुद्ध जमकर संघर्ष किया और इस प्रकार कम्युनिस्टों की संगठनात्मक तथा सैद्धांतिक एकता उपलब्ध की।

कामरेड किम इल सुंग ने पार्टी की स्थापना की संगठनात्मक तथा सैद्धांतिक

तैयारियों के काम को दृढ़तापूर्वक आन्तरिक क्रांतिकारी शक्तियों का निर्माण करने तथा जापान-विरोधी राष्ट्रीय मोर्चे को स्थापित करने के संघर्ष के साथ घनिष्ठ रूप से जोड़ा।

कामरेड किम इल सुंग ने क्रांति की प्रमुख शक्ति को उन कम्युनिस्टों के इर्द-गिर्द निर्मित किया जो उसकी अग्रगी शक्ति के रूप में क्रांतिकारी अमल में दीक्षित थे और मजदूर वर्ग तथा किसान जनता की मैत्री के सुदृढ़ीकरण को आधार बना कर उन्होंने अनेक तरह के जापान-विरोधी जन संगठनों का निर्माण किया और उनके माध्यम से समाज की सभी श्रेणियों की जापान-विरोधी आम शक्तियों को एकजुट किया।

कामरेड किम इल सुंग ने क्रांतिकारी शक्तियों को गोलबन्द करने के उद्देश्य से जनता में काम करते समय व्यक्त होने वाले दक्षिणपंथी तथा वामपंथी भटकावों को दूर करने तथा क्रांतिकारी कार्यपद्धति और जन-प्रिय कार्यशैली की स्थापना के लिए अपनी पूरी शक्ति लगा दी।

तरुणों में काम करने वाले राजनीतिक कार्यकर्ताओं के बीच मार्च १९३३ में दिये गये अपने भाषण में कामरेड किम इल सुंग ने गुटबाजों की साजिशों की आलोचना की—उनकी वामपंथी प्रवृत्ति के उदाहरण थे : मजदूरों, किसानों और तरुणों के बीच राजनीतिक कार्य की अवहेलना और 'गोपनीयता' के बहाने क्रांतिकारी संगठनों के विस्तार को रोकना, और दक्षिण पंथी प्रवृत्ति थी : क्रांतिकारी संगठनों के दरवाजे सबके लिए खोल देने की सिद्धांतहीन कोशिश—और अपने भाषणों में उन्होंने क्रांतिकारी संगठनों के तीव्र विस्तार और सुदृढ करने के लिए तथा आम जनता में काम की विधि में सुधार के लिए ठोस तरीके सुझाये।

उन्होंने सिखाया कि तरुणों में काम करने वाले राजनीतिक कार्यकर्ताओं को यह बात साफ-साफ जान लेनी चाहिए कि वे जनता के वफादार सेवक हैं और जनता के दु:ख-सुख में समान रूप से सहभागी होने के लिए उन्हें जनता के बीच जाना चाहिए, जनता के विभिन्न सामाजिक अंगों की प्रवृत्तियों और अपेक्षाओं की सही समझदारी हासिल करनी चाहिए, समझाने-बुझाने और स्पष्टीकरण करने के तौर-तरीकों से उन्हें जनता में जागरण लाना चाहिए और इस प्रकार उसे क्रांतिकारी संघर्ष में शामिल और संगठित करना चाहिए।

कामरेड किम इल सुंग ने यह भी सिखाया कि लम्बे और दुष्कर जापान-विरोधी सशस्त्र संघर्ष में विजय के लिए क्रांति की रिजर्व शक्ति को मजबूत बनाना चाहिए।

कामरेड किम इल सुंग ने निम्नलिखित आशय की बात बतायी :

"तरुण कम्युनिस्ट लीग के हर सदस्य को यह बात हमेशा याद रखनी चाहिए कि जिस सेना के पास रिजर्व शक्ति नहीं होती, उसे हार खानी पड़ती है। मौजूदा दौर में

जापान-विरोधी राष्ट्रीय मुक्ति संघर्ष का तकाजा है कि सशस्त्र संघर्ष किया जाय और जापान-विरोधी सशस्त्र संघर्ष का तकाजा है कि तरुणों की आम आबादी संघर्ष में प्रत्यक्ष रूप से हिस्सा ले। इसलिए तरुणों में काम करने वाले राजनीतिक कार्यकर्ताओं को हमेशा यह बात याद रखनी चाहिए कि जीत तभी हो सकती है, जब आम तरुणों को ऐसे संगठित तरीके से आन्दोलित कर दिया जाय कि वे क्रांतिकारी शक्ति तथा रिजर्व शक्ति को निरन्तर सुदृढ़ करते रहें।"

क्रांतिकारी शक्ति के विस्तार तथा शक्तिवर्धन के संघर्ष में कामरेड किम इल सुंग की यह सीख कम्युनिस्टों के लिए अचूक पथ प्रदर्शक सिद्ध हुई।

कामरेड किम इल सुंग के विवेकपूर्ण नेतृत्व में, जनता में काम के सिलसिले में व्यक्त दक्षिणपंथी तथा वामपंथी भटकाव और पुराने नौकरशाही तरीके दूर किये गये और एक नयी क्रांतिकारी कार्यपद्धति और जनप्रिय कार्यशैली ने जन्म लिया तथा उसके फलस्वरूप आम जनता क्रांतिकारी पांतों में एकताबद्ध हुई।

कामरेड किम इल सुंग पड़ौसी देश की जनता के साथ क्रांतिकारी एकजुटता को मजबूत करने के लिए तथा विशेषरूप से समान शत्रु, जापानी-साम्राज्यवाद, के विरुद्ध सशस्त्र जापान-विरोधी सेनाओं के साथ साम्राज्यवाद विरोधी संयुक्त मोर्चा बनाने के लिए संघर्ष में आगे खड़े थे।

एक ऐसे समय जब कि जापान-विरोधी छापामार सेना की लड़ाकू शक्ति बढ़ी तथा सुदृढ़ हुई और क्रांति की अन्दरूनी शक्तियों का निर्माण सुदृढ़ हो रहा था, जापान-विरोधी टुकड़ियों पर सक्रिय रूप से क्रांतिकारी प्रभाव डालना तथा उन्हें साम्राज्यवाद के विरुद्ध समान संघर्ष में खींच लाना बहुत बड़े महत्व की घटना सिद्ध हुई।

कामरेड किम इल सुंग के सक्रिय प्रयासों के फलस्वरूप जापानी साम्राज्यवाद के विरुद्ध समान संघर्ष में जो जापान-विरोधी टुकड़ियां जापान-विरोधी छापामार सेना के साथ मिल कर भाग ले रही थीं, वे एक बार फिर राष्ट्रीय अलगाव पैदा करने के लिए की गई जापानी साम्राज्यवाद की कपटी साजिशों और तत्कालीन गुटबाजों की अंधी वामपंथी हरकतों के फलस्वरूप गलत रास्ते पर भटक गयीं।

जापान-विरोधी दस्ते शत्रु के तीव्र सैनिक तथा राजनीतिक आक्रमणों से घबरा कर संघर्ष में बेहद ढुलमुल होने लग और जापानी साम्राज्यवाद की राष्ट्रीय अलगाव पैदा करने की नीति तथा जहरीले प्रचार के जाल में फंस कर कोरियाई कम्युनिस्टों के न्यायोचित संघर्ष और गुटबाजों तथा वामपंथी अवसरवादियों की अंधी कार्यवाहियों में भेंद न कर सके। इस प्रकार जापान-विरोधी टुकड़ियों के ऊपरी हिस्से के लोग कोरिया-

वासियों से दुश्मनीपूर्ण थे, उन्हें "जापानी साम्राज्यवाद के दलाल" कहते थे और आरोप लगाते थे कि वे 'मंचूरिया को साम्यवादी' बनाना चाहते हैं तथा वे छापामारों की हत्या तक करने लगे।

इस परिस्थिति में जापान-विरोधी सशस्त्र संघर्ष के विकास के लिए यह एक बहुत ही आवश्यक बात थी कि जापान-विरोधी टुकड़ियों में जागरण लाया जाय और उनके साथ संयुक्त मोर्चा बनाया जाय। लेकिन यह सचमुच एक कठिन और पेचीदा समस्या थी जिसे कोई भी व्यक्ति तुरन्त हल करने में सफल नहीं हो सकता था।

महान मार्क्सवादी—लेनिनवादी तथा महान रणनीतिज्ञ कामरेड किम इल सुंग ही समस्या का सही हल निकाल सके और उसे सफलतापूर्वक सुलझा सके।

ऐसी स्थिति में जब भी जापान-विरोधी छापामार सेना और जापान—विरोधी टुकड़ियों के संबंधों में कुछ पेचीदगियां पैदा हुई, तभी कामरेड किम इल सुंग ने उन टुकड़ियों के साथ संयुक्त मोर्चा बनाने, उसे मजबूत करने तथा विकसित करने की रणनीति का सख्ती से अनुसरण किया और आंशिक मैत्री से व्यापक मैत्री की ओर, समान संघर्ष के निचले स्तर से ऊंचे स्तर की ओर आग बढ़े। और वे जापान-विरोधी टुकड़ियों के साथ काम करने में पैदा हुए उन दक्षिण तथा वामपंथी भटकावों पर विजयी हुए जो उनके आम सदस्यों से एकता को उनके ऊपरी नेताओं से एकता से अलहदा करके देखने और इन एकताओं में से किसी एक पर बल देन या उसको निरपेक्ष मान लेने के रूप में प्रकट होते थे। उन्होंने जापान-विरोधी टुकड़ियों के ऊपरी नेताओं से एकता तथा उनके आम सदस्यों से एकता को उचित तरीके से संयुक्त करने तथा इनमें से आम सदस्यों से एकता पर बल देने और ऊपरी नेताओं के दोमुंहे चरित्र में स्पष्ट विभेद करते हुए एकता के साथ संघर्ष को जोड़ने के कार्यनीतिक सिद्धांत पर कौशलपूर्वक अमल किया।

जून, १९३३ में कामरेड किम इल सुंग ने अपने जीवन को खतरे में डाल कर संयुक्त मोर्चा बनाने के प्रश्न पर जापान-विरोधी दस्तों की कमान से साहसपूर्वक वार्ता की।

जापानी साम्राज्यवादियों के विरुद्ध कामरेड किम इल सुंग की अडिग नीति और अदम्य लड़ाकू भावना और उनके नेतृत्व में जापान-विरोधी छापामारों के सशस्त्र संघर्ष की महान सफलताओं, उनकी महान क्रांतिकारी भावना तथा महान सहनशक्ति; ठोस तर्क और विश्वसनीय व्याख्या शक्ति ने जापान-विरोधी दस्तों के शत्रुतापूर्ण ऊपरी नेतृत्व जैसे हठी लोगों को भी संयुक्त साम्राज्य-विरोधी मोर्चा बनाने के लिए विवश कर दिया।

राष्ट्रीय फूट पैदा करने के उद्देश्य से चली जाने वाली जापानी-साम्राज्यवादियों

की चालों और गुटबाजों की अंधी अतिवामपंथी हरकतों के कारण जापान-विरोधी टुक-ड़ियों के साथ जो संबंध बिगड़ गये थे, वे कामरेड किम इल सुंग के निष्ठापूर्ण प्रयासों और अडिग संघर्ष के कारण सफलतापूर्वक सुधर गये और इस प्रकार शत्रु की छलपूर्ण चालें नाकाम हो गयीं तथा क्रांतिकारी परिस्थिति बेहतर बन गयी।

जापान-विरोधी इकाइयों के साथ संयुक्त मोर्चा बनाने में सफलता कामरेड किम इल सुंग की उस दिशा की शानदार विजय थी, जिसका उद्देश्य संयुक्त साम्राज्य-विरोधी मोर्चा गठित करना था और इससे इसका भी उदाहरण मिला कि जापान-विरोधी सशस्त्र संघर्ष में मुश्किलों को कैसे पार किया जाय।

सितम्बर, १९३३ में कामरेड किम इल सुंग ने जापान-विरोधी दस्तों के साथ मिल कर तोंगन्यं काउण्टी में बहुत बड़े पैमाने के युद्ध को सफलतापूर्वक जीता और इस प्रकार संयुक्त साम्राज्य-विरोधी मोर्चे की दिशा की सत्यता और शक्तिमत्ता को प्रमाणित कर दिखाया, साथ ही उन जापान-विरोधी दस्तों को भी प्रेरित और उत्साहित किया, जो जापानी साम्राज्यवादियों के विरुद्ध संघर्ष में डावांडोल महसूस करते थे, और उनके साथ संयुक्त मोर्चे को मजबूत तथ विकसित किया।

कामरेड किम इल सुंग ने अनेक क्षेत्रों में जापान-विरोधी दस्तों के बीच अनेक राजनीतिक कार्यकर्ताओं को भेजा, ताकि वे उनके बीच वर्ग चेतना जगायें और साथ ही उन्होंने जापान-विरोधी दस्तों के साथ मिलकर अनेक छोटे-बड़े विजय अभियान चलाये, इस प्रकार उन दस्तों के मन में विजय के प्रति आस्था बढ़ायी तथा उन्हें क्रांतिकारी शिक्षण-प्रशिक्षण दिया, जिसकी वजह से अनेक जापान-विरोधी टुकड़ियां जापान-विरोधी मित्र सेनाओं में शामिल हो गयीं।

कामरेड किम इल सुंग द्वारा संयुक्त साम्राज्य-विरोधी मोर्चे का निर्माण, उसकी मज-बूती और विकास जापानी साम्राज्यवादी आक्रामकों के लिए भारी राजनीतिक तथा सैनिक आघात सिद्ध हुआ और साथ ही, उससे अन्तर्राष्ट्रीय फासिस्ट-विरोधी जन मोर्चा आन्दोलन में एक अग्रगामी उदाहरण भी उपस्थित हो गया।

कामरेड किम इल सुंग ने संयुक्त साम्राज्य-विरोधी मोर्चे को सक्रिय रूप से विकसित कर के जापानी साम्राज्यवादी आक्रामकों पर घोर प्रहार किया और साथ ही अनेक तरीकों से शत्रु सेनाओं के राष्ट्रीय तथा वर्ग अन्तर्विरोधों का लाभ उठा कर शत्रु को भीतर से दुर्बल बनाने का कार्य भी हर तरीके से व्यापक पैमाने पर संगठित और संचालित किया। शत्रु-सेनाओं के विघटन के लिए जापान-विरोधी छापामार सेना द्वारा की गयी कौशलपूर्ण कार्यवाहियों के कारण कठपुतली मंचूरियाई सेना की कई टुकड़ियों ने एक के बाद एक

विद्रोह किये और वे जापान-विरोधी छापामार सेना के साथ आ मिलीं तथा कठपुतली मंचूरियाई सेना के अनेक दस्तों ने जापान विरोधी छापामार सेना से लड़ना नामंजूर कर दिया ।

कामरेड किम इल सुंग ने छापामार अड्डों में चट्टानी किलेबंदी करके शत्रु के हमले से उनकी जम कर रक्षा की और छापामार अड्डों पर भरोसा करके जापान-विरोधी सशस्त्र संघर्ष को पूरे जोश के साथ विस्तृत और विकसित किया ।

कोरियाई क्रान्ति के अभियान केन्द्रों, छापामार अड्डों, की दृढ़ता से और उनके बढ़ते हुए प्रभाव से घबरा कर जापानी साम्राज्यवादियों ने अन्धाधुंध सैनिक तथा राजनीतिक हमले शुरू कर दिये और उन छापामार अड्डों को "पूर्व की शांति का नासूर" कहने लगे।

छापामार अड्डों पर अपने बार-बार के हमलों में विफल होकर जापानी साम्राज्यवादियों ने अपने अधीन जिलों में "नजरबंदी गांव" स्थापित किये, उनमें गांव वासियों को बलात्, ठूंसना शुरू किया और एक मध्य युगीन 'सामूहिक पहरेदारी व्यवस्था' लागू की, ताकि छापामारों और जनता के बीच संबंध-सूत्र टूट जाय तथा अपने जासूसी और किराये के दलाल संगठनों और अनेक तरह के प्रचार का सहारा लेकर छापामार अड्डों को अन्दर से तोड़ने के लिए विध्वंसक पेंतरेबाजियाँ कीं। छापामार अड्डों के विरुद्ध इस तरह की आर्थिक तथा राजनीतिक नाकेबन्दी और तोड़-फोड़ की कार्रवाई चलाते रहने के साथ–साथ जापानी साम्राज्यवादियों ने बड़ी–बड़ी सेना जमा करके छापामार अड्डों में 'सबको मारो, सब कुछ जलाओ, सब कुछ लूटो' की नीति अपनायी और अड्डों को घेरे बन्दी में रख कर लम्बी अवधि के लिए हमले की साजिश शुरू की।

लेकिन शत्रु का इस प्रकार का अंधाधुंध आम हमला भी हर कदम पर कामरेड किम इल सुंग की सही नीति, श्रेष्ठ कार्यनीति और विवेकशील नेतृत्व के द्वारा नाकाम किया गया ।

छापामार अड्डों की स्थापना के प्रारंभिक दिनों में कामरेड किम इल सुंग ने शत्रु के इस हमले को पहले ही भांप लिया था और जापान–विरोधी छापामार सेना की युद्ध क्षमता-अनवरत रूप से सुदृढ़ कर ली थी । साथ ही उन्होंने समस्त जनता को हथियारबन्द करने तथा अड्डों की किलेबंदी करने की कार्यनीति पेश की और सर्वजन प्रतिरक्षा व्यवस्था स्थापित कर दी थी ।

कामरेड किम इल सुंग द्वारा स्थापित सर्वजन प्रतिरक्षा व्यवस्था सर्वाधिक शक्तिशाली व्यवस्था थी, जिससे यह संभव हो सका कि किसी भी शत्रु के सशस्त्र हमले को अपने ही बल बूते पर नाकाम किया जा सके ।

कामरेड किम इल सुंग के महान क्रांतिकारी विचारों से लैस हो कर जापान-विरोधी छापामारों और छापामार अड्डों में बसने वाली जनता ने, जो उनके द्वारा स्थापित शक्तिशाली सुरक्षा-व्यवस्था के तत्वावधान में इन अड्डों की सुरक्षा के लिए एक होकर उठ खड़ी हुई थी, थोड़े से हथियारों की सहायता से भी ऐसे शत्रु को वीरतापूर्ण नष्ट कर के, जो संख्या में बीसियों गुना और कभी-कभी तो सौ गुना अधिक शक्तिशाली होता था, छापामार अड्डों की अंत तक रक्षा की।

प्रारंभिक दिनों में, जब छापामार सेना संगठित हुई और संघर्ष छिड़ा तब न तो छापामार युद्ध की बनी-बनायी कार्यनीति थी और न ही छापामार गतिविधियों के विषय में कोई पथ-प्रदर्शक ग्रंथ ही था।

चूंकि कामरेड किम इल सुंग ने छापामार युद्ध की नयी, शानदार रणनीति और कार्यनीति की रचना की और व्यावहारिक संघर्ष के दौरान उस पर कौशल के साथ अमल किया, जापान-विरोधी छापामार सेना मात्र इसी वजह से शत्रु के विरुद्ध सदा सैद्धांतिक और कार्यनीतिक श्रेष्ठता उपलब्ध करती रही, अपने हाथ में पहल रखती रही तथा छापामार अड्डों की सुरक्षा के काम में और अन्य युद्धों में शानदार जीतें हासिल करती रहीं।

छापामार सेना को सुरक्षित रखते हुए, यथा संभव अधिक-से-अधिक शत्रुओं का सफाया करने को छापामार युद्ध का मूल सिद्धांत मान कर कामरेड किम इल सुंग ने जो सर्वश्रेष्ठ कार्यनीति तैयार की और युद्ध में उस पर कौशलपूर्वक अमल किया, वह यह थी कि जब शत्रु किसी एक स्थल पर जम कर वार करे तो छापामारों को बिखर जाना चाहिए और शत्रु का सफाया करने के लिए उस पर हर जगह पीछे से हमला करना चाहिए। और जब शत्रु तितर-बितर हो जायं तो छापामारों को शक्ति केन्द्रित कर हमला करना चाहिए और शत्रु का सफाया कर देना चाहिए।

कामरेड किम इल सुंग ने सैनिक दुस्साहसिकतावादियों की इस अंधी दलील को जम कर ठुकरा दिया, जिसमें जोर दिया जाता था कि चाहे शत्रु संख्या बल और शस्त्र-बल में कितना ही श्रेष्ठ क्यों न हो, शत्रु की दृढ़ "घिराव कार्यवाहियों" छापामार अड्डों की सुरक्षा के लिए उस का सीधे मुकाबला करना चाहिए। इसके बदले कामरेड किम इल सुंग ने सक्रिय सुरक्षात्मक युद्ध, चलती-फिरती कार्यवाहियों के जरिए शत्रु को पीछे से परेशान करने का युद्ध तथा तितर-बितर व केन्द्रीभूत होने को सही तरीके से मिलाने की सर्वश्रेष्ठ कार्यनीति पेश की और स्वयं वास्तविक संघर्ष के द्वारा उदाहरण दिखाया तथा उसे सभी छापामार दस्तों के लिए मान्य आम सिद्धांत बना दिया। इस प्रकार उन्होंने १९३३–३४ की सर्दियों में छापामार अड्डों के विरुद्ध शत्रु के बड़े पैमाने के हमलों और उसकी

"घिराव कार्यवाहियों" को, जो बाद में भी चलती रहीं, नाकामयाब करके विस्तृत छापामार अड्डों की वीरतापूर्वक रक्षा की और शत्रु पर घातक प्रहार किये।

उन दिनों की याद करते हुए कामरेड किम इल सुंग ने निम्नलिखित आशय की बातें कहीं---

---चूंकि हमने यह कार्यनीति अपनायी, इसलिए शत्रु के बदहवास हमलों के बावजूद हम ४-५ साल तक छापामार अड्डों की रक्षा कर सके। उन दिनों जापानी सैनिक शहरों के इर्द-गिर्द राजमार्गों पर ही चक्कर लगाया करते थे और वे ग्रामीण क्षेत्रों में खुले आम नहीं जा सकते थे। क्या उन दिनों हमारे पास अच्छे हथियार थे? केवल छापामारों के पास बन्दूकें और तोड़दार बन्दूकें थीं तथा दूसरे लोगों के पास भाले और तलवारें थीं और बहुत हुआ तो कुछ लोगों के पास शिकार की बन्दूकें थीं। इन हथियारों की मदद से भी हमने अपने सब को– पुरुषों और स्त्रियों को–सशस्त्र किया और सही छापामार कार्यनीति के अनुसार वीरतापूर्वक लड़े और इस प्रकार ४-५ साल तक छापामार अड्डों को कायम रख सके----

कामरेड किम इल सुंग ने छापामारों और जनता को अडिग क्रांतिकारी भावना, विजय के प्रति सुदृढ़ विश्वास तथा क्रांतिकारी आशावादी भावना से दीक्षित किया।

वे हमेशा कम्पनियों और पलटनों के पास जाते, सिपाहियों के साथ रहते और उनके राजनीतिक जीवन का स्वयं दिशा-निर्देश करते और उनके राजनीतिक और फौजी ज्ञान के स्तर को ऊंचा उठाने तथा उनकी व्यावहारिक योग्यता बढ़ाने के लिए अक्सर लघु सैनिक तथा राजनीतिक पाठ्यक्रम संचालित करते। सदा सैनिकों और आम जनता में रहते हुए कामरेड किम इल सुंग ने उन्हें अदम्य क्रांतिकारी विचारों से दीक्षित किया।

जनता के सुख-दुख को अपना मानते हुए कामरेड किम इल सुंग ने उन दिनों में भी, जब शत्रु को मार भगाने के लिए घनघोर युद्ध चलते रहते, छापामार अड्डों में रहने वाली जनता के जीवन के प्रति गहन चिन्ता और देखभाल की।

वे लगभग हर रोज जिले और गांव के सरकारी दफ्तरों में जाते, उनके काम के बारे में जानकारी हासिल करते, उनकी मुश्किल समस्याओं को हल करते, स्कूलों की स्थापना करते और उन बच्चों की शिक्षा की व्यवस्था करते जो छापामार अड्डों में रहते थे खासतौर से उन बच्चों की, जो शत्रु द्वारा अपने माता-पिता के मारे जाने के बाद उन अड्डों में आये थे। वे छापामार अड्डों की जनता के जीवन के हर पहलू को पितृ-भाव से देखते, यहां तक कि वे इसका भी ध्यान रखते कि बच्चों को कपड़े और बिस्तरे मिले या नहीं और बूढ़ों, विकल लोगों और बीमारों को दवाइयां मिली या नहीं?

जब शत्रु की लम्बी घेराबन्दी और हमले के कारण उन अड्डों में रहने वाली जनता को कठिन जीवन का सामना करना पड़ता, तब कामरेड किम इल सुंग एक ओर अड्डों की प्रतिरक्षात्मक लड़ाइयां संगठित करते; उनका संचालन करते, दूसरी ओर खतरों की चिन्ता किये बगैर वे खुद शत्रु-अधिकृत क्षेत्रों में जाते, शत्रु के यातायात दल व पिछाये के गोदाम पर हमला करते और रसद, कपड़ा, जूता आदि जरूरी सामान अपने कब्जे में कर ले आते और उसे जनता में बांट देते।

अड्डों के छापामार और वहां की जनता, जिन्हें कामरेड किम इल सुंग का असीम प्यार और देखभाल सुलभ थी, अपने नेता की शिक्षाओं का पालन करते हुए अनेक मुश्किलों के बीच बराबर दुगने साहस से शत्रु पर हमले करते रहते और अपने रक्त का मूल्य चुका कर प्राप्त की गयी क्रांतिकारी उपलब्धि---छापामार अड्डों--की अंत तक रक्षा करते।

आधुनिक अस्त्रों से लैस शत्रु की बहुत बड़ी सेना के घनघोर हमलों को नाकाम करके छापामार अड्डों की सुरक्षा में जो शानदार जीत हासिल हुई, वह कामरेड किम इल सुंग के महान नेतृत्व, तथा चिर विजयिनी विलक्षण कार्यनीति और रणनीति का सुपरिणाम था और ऐसे छापामारों और उनके अड्डों की जनता की आम वीरता का फल था, जो कामरेड किम इल सुंग द्वारा शिक्षित हुए थे, जो उनके प्रति असीम श्रद्धा और विश्वास रखते थे और अपने नेता के इर्द-गिर्द अटूट एकता के साथ लड़ते थे।

जिन जापान-विरोधी छापामारों ने और छापामार अड्डों की जनता ने इतने दीर्घकाल तक भीषण अग्नि परीक्षाओं से गुजरकर, प्राणों की बाजी लगा कर अड्डों की रक्षा की, उनका वीरतापूर्ण संघर्ष एक ऐसी अमर वीरगाथा है, जिसे कामरेड किम इल सुंग के नेतृत्व में कोरियाई जनता ने अपने गौरवशाली क्रान्तिकारी इतिहास में अंकित किया।

मार्च, १९३४ में कामरेड किम इल सुंग ने जापान-विरोधी छापामार सेना की संगठनात्मक व्यवस्था में सुधार करके कोरियाई जन क्रान्तिकरी सेना का संगठन किया ताकि जापान-विरोधी सशस्त्र संघर्ष को और भी सशक्त तथा विकसित किया जा सके।

जन क्रान्तिकारी सेना, जो विकसित और सशक्त हो चुकी थी, की कमान में लाजागु युद्ध समेत नगरों पर बड़े पैमाने के आक्रमणों, घातें लगाने और हमलों के द्वारा कामरेड किम इल सुंग ने एक के बाद एक शत्रु को कई बार गहरी चोट पहुंचायी। उस बीच, उन्होंने शत्रु के अधीन क्षेत्रों की जनता में राजनीतिक कार्य को सुदृढ़ किया, ताकि जापान-विरोधी संघर्ष में जनता के बड़े-बड़े हिस्सों को शामिल किया जा सके। विशेषकर, उन्होंने मातृभूमि में जनक्रान्तिकारी सेना की अनेक टुकड़ियां और राजनीतिक कार्यकर्ता भेजे, ताकि वहां जापान-विरोधी संघर्ष को तेज किया जा सके।

मातृभूमि में भेजी गयी इन टुकड़ियों और राजनीतिक कार्यकर्ताओं ने मुसान, युसन, ओनसोंग तथा ग्यंगवान काउण्टी समेत उत्तरी सीमा के अनेक क्षेत्रों में साहसपूर्ण लड़ाऊ कार्यवाहियां कीं और इस प्रकार सशस्त्र संघर्ष की शक्ति का प्रदर्शन किया। इसी बीच उन्होंने कोरिया के उत्तरी हिस्सों में गुप्त शिविरों की स्थापना की और उन शिविरों को अड्डा बना कर काम शुरू करके औद्योगिक केन्द्रों, बन्दरगाहों, खान-क्षेत्रों और ग्रामीण क्षेत्रों को अपनी गतिविधियों का क्षेत्र बनाया; आम जनता में राजनीतिक कार्य तेजी से संगठित किया और इस प्रकार उन्हें जापान-विरोधी संघर्ष के लिए जगाया।

जापान-विरोधी सशस्त्र संघर्ष के प्रभाव तथा राजनीतिक कार्यकर्ताओं की गतिविधियों में वृद्धि के साथ आम जनता का जापान-विरोधी संघर्ष तीव्र हो चला जिसमें मजदूरों की हड़तालें और काश्तकारी संबंधी किसान संघर्ष भी शामिल है, जो देश के हर हिस्से में जोर-शोर से शुरू हो गये।

१९३४ की सर्दियों में कामरेड किम इल सुंग व्यक्तिगत रूप से जन क्रान्तिकारी सेना की कुछ टुकड़ियों का नेतृत्व करते हुए उत्तरी मंचूरिया तक पहुंच गये और सशस्त्र संघर्ष का प्रभाव बढ़ाया।

जापानी साम्राज्यवादियों ने "मिनसेंदान" नामक जो किराये का संगठन खड़ा कर लिया था, उसके विरुद्ध संघर्ष के दौरान, एक ओर छापामार अड्डों को मजबूत करने, जापान-विरोधी सशस्त्र संघर्ष को विस्तृत और विकसित करने तथा क्रान्तिकारी शक्तियों को बढ़ाने तथा उन्हें मजबूत बनाने में महान सफलताएं प्राप्त हुई तो दूसरी ओर उन राष्ट्र-दम्भियों तथा गुटबाजों की तोड़-फोड़ संबंधी तिकड़मों को खत्म करने के संघर्ष के दौरान भी सफलताएं हासिल हुई, जो "मिनसैंदान विरोधी" संघर्ष को बुरा-भला कहते थे। कोरियाई क्रान्ति में जुछे की कार्यनीति को अत्यन्त सुसंगत रीति से लागू करने में भी सफलता प्राप्त हुई।

जापानी साम्राज्यवदियों ने, जिन्हें अहसास हो चुका था कि अड्डों के खिलाफ केवल सशस्त्र हमलों और घेराबन्दियों से जापान-विरोधी सशस्त्र संघर्ष की भयंकर ज्वालाओं को नहीं बुझाया जा सकता, क्रान्तिकारी पांतों को अन्दर से छिन्न-भिन्न करने के लिए, छापामार अड्डों में "मिनसैंदान" नाम से बनाये गये अपने प्रति क्रान्तिकारी जासूसी संगठन में अपने दलालों को गुपचुप रीति से भेजना शुरू कर दिया।

जापानी साम्राज्यवादी ठगों ने "मिनसैंदान" के जरिए कोरियावासियों और चीनियों में झगड़ा पैदा करने, और कोरियाई को ही अन्य कोरियाइयों के विरुद्ध खड़ा करने की कोशिशें की, ताकि क्रान्तिकारी शक्तियों को अन्दर से असंगठित किया जाय, लेकिन अड्डों

की जागरूक जनता के संघर्ष उनकी चालों को प्रारम्भिक अवस्था में ही कुचल दिया।

लेकिन यह "मिनसैंदान" विरोधी संघर्ष अति-वामपंथी ढंग से संचालित किया गया और राष्ट्र-दम्भियों तथा गुटबाजों के अंधे वामपंथी तरीकों के गंभीर परिणाम निकले।

राष्ट्रदम्भियों, गुटबाजों और सिद्धान्तहीन लफ्फाजों ने, जापानी साम्राज्यवादियों की अलगाव पैदा करने की छलपूर्ण नीति का शिकार होकर, क्रान्ति के हित को बिलकुल नजरन्दाज किया और सत्ता तथा ऊंचे पदों की भूख से अन्धे होकर उन्होंने "मिनसैंदान" विरोधी संघर्ष को अति-वामपंथी तरीके से चलाया और इस प्रकार राष्ट्रीय मुक्ति के लिए कोरियाई कम्युनिस्टों के संघर्ष में बाधा डाली और क्रान्तिकारी पांतों की एकरसता तथा एकता में बड़ी दरार पैदा की। खासतौर से उस समय जब कामरेड किम इल सुंग एक अभियान के सिलसिले में उत्तरी मंचूरिया गये हुए थे, राष्ट्र-दम्भियों और गुटबाजों न इस परिस्थिति का लाभ उठाया और "मिनसैंदान" विरोधी संघर्ष को और अधिक अति-वामपंथी ढंग से चला कर क्रान्तिकारी पांतों को छिन्न-भिन्न करने की खलनायकीय चाल चल दी।

उन राजनीतिक बुद्धिहीनों ने कोरियाई कम्युनिस्टों और क्रान्तिकारी लोगों पर अंधाधुंध तरीके से "मिनसैंदान" का बिल्ला लगा कर उनकी हत्या की, या उन्हें क्रान्तिकारी पांतों से बाहर निकाल दिया। विशेषकर महान-राष्ट्र-दम्भियों ने राष्ट्रीय मुक्ति संबंधी कोरियाई जनता के क्रान्तिकारी नारों को 'मिन-सैंदान' द्वारा पेश किये गये 'राष्ट्रीय स्वायत्त' के प्रतिक्रियावादी नारे का ही एक रूप बताते हुए कोरियाई क्रांति के बारे में जब जिसने जो भी कुछ कहा, उसे 'मिनसैंदान तत्व' या 'राष्ट्रीय अहंवादी' कहकर उनका सफाया किया। इससे एक खतरनाक परिस्थिति पैदा हो चली जिसमें एक कामरेड दूसरे पर अविश्वास करने लगा और अड्डों में रहन वाले लोगों में निराशा और बेचैनी दिन-प्रति-दिन बढ़ने लगी।

कोरियाई क्रान्ति पर सचमुच एक गम्भीर संकट छा गया।

उस भयानक वातावरण में जबकि किसी ऐसे कामरेड से, जिस पर झूठे ही 'मिनसैंदान' का सदस्य होने का आरोप लगा हो, सहानुभूति का चिन्ह मात्र प्रकट करना आप उत्पीड़न को आमंत्रित करना था, किसी में भी हिम्मत न थी कि वह स्थिति को बचाने के लिए संघर्ष करता।

अड्डों के लोग कामरेड किम इल सुंग की बड़ी विकलता से प्रतीक्षा करने लगे कि वे अपने अभियान से शीघ्र वापस आयें।

इस गंभीर परिस्थिति को केवल कामरेड किम इल सुंग ही काबू में ला सकते थे,

जिनमें क्रान्तिकारी सिद्धान्तों के प्रति अटूट निष्ठा थी, क्रान्ति के हित में अपना सर्वस्व निछावर करन की महान भावना थी और अदम्य संकल्प शक्ति तथा अडिग क्रान्तिकारी धैर्य था।

१९३५ के वसन्त में उत्तरी मंचूरिया के अभियान से लौटने के तुरन्त बाद कामरेड किम इल सुंग ने ताहोन्ग्वे तथा योगोन्गु सम्मेलन बुलाये और राष्ट्र-दम्भियों तथा गुटबाजों की तिकड़मों को निर्णायक ढंग से खत्म करने तथा "मिनसैंदान" विरोधी संघर्ष को ठीक दिशा में चलाने के लिए साहसी संघर्ष छेड़ दिया।

कामरेड किम इल सुंग ने उन राष्ट्र-दम्भियों के गलत विचारों का निर्ममतापूर्वक भंडाफोड़ किया और निन्दा की, जिन्होंने राष्ट्रीय मुक्ति के कोरियाई जनता के नारों को 'मिनसैंदान' के प्रतिक्रियावादी नारे से जोड़ कर और कोरियाई कम्युनिस्टों के राष्ट्रीय कर्तव्यों को अन्तर्राष्ट्रीय कर्तव्यों के विरोध में खड़ा करके, राष्ट्रीय क्रांतिकारी कर्त्तव्यों को अस्वीकार कर दिया था और कामरेड किम इल सुंग ने कोरियाई क्रान्ति की जुछे कार्य-नीति और कोरियाई क्रान्ति की स्वतंत्र दिशा को सही ढंग से स्पष्ट किया।

कामरेड किम इल सुंग ने स्पष्ट कर दिया कि कोरियाई जनता का यह परम वैध अधिकार और महान क्रान्तिकारी कर्त्तव्य है कि कोरियाई कम्युनिस्ट तथा कोरियाई जनता अपने देश की क्रान्ति की जिम्मेदारी संभालें और कोरियाई क्रान्ति के लिए संघर्ष करें। उन्होंने यह तथ्य भी स्पष्ट किया कि यह राष्ट्रीय अहं का कार्य नहीं, बल्कि इसके विपरीत यह सर्वहारा के अन्तर्राष्ट्रीयतावाद के सिद्धान्त के अनुरूप है और अन्त-र्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट आन्दोलन के विकास में सहायक है कि हर देश के कम्युनिस्ट देश की क्रान्ति सफलतापूर्वक सम्पन्न करें।

कामरेड किम इल सुंग ने वामपंथी रुष्ट दम्भियों और गुटबाजों के मुजरिमाना कामों की तीव्र निन्दा की, जिन्होंने जापानी साम्राज्यवादियों की राष्ट्रीय अलगाव पैदा करने की नीति के चक्कर में आकर मित्रों को शत्रु समझ लिया और इस प्रकार क्रांतिकारी पांतों में फूट डाली। कामरेड किम इल सुंग ने इस प्रकार आन्तरिक क्रांतिकारी शक्तियों की सुरक्षा में तथा क्रांतिकारियों की एकता और एकरसता के लिए जोरदार संघर्ष चलाया।

कामरेड किम इल सुंग ने सिखाया कि क्रांतिकारी कामरेड को किसी पूर्वधारणा या पूर्वाग्रह के आधार पर नहीं, मुख्यतः उसके असली संघर्ष से परखना चाहिए और यह कि कामरेडों पर पूर्ण विश्वास रखना चाहिए तथा क्रांतिकारी पांतों में एकता और एक-रूपता की दृढ़ता से रक्षा होनी चाहिए। तब उन्होंने यह भी सिखाया कि आम जनता के बारे में सतही राय बनाने और जनता की गतिविधियों पर जल्दबाजी से फैसला देने जैसी

कामरेड किम इल सुंग : कोरियाई जन क्रांतिकारी सेना के कमांडर

हरकतों को सदा के लिए खत्म कर देना चाहिए और यह कि जनता को हमेशा सावधानी तथा वैज्ञानिक ढंग से परखना चाहिए और क्रांति के बुनियादी हितों पर नजर रखते हुए व्यापक साम्राज्यवाद–विरोधी क्रांतिकारी शक्तियों को सर्वांगतः एकजुट और लाभप्रद करना चाहिए ताकि मुख्य शत्रु, जापानी साम्राज्यवाद, का सफाया किया जा सके।

उन्होंने यह भी सिखाया कि चूंकि 'मिनसैंदान' जापानी साम्राज्यवादियों के दलालों और जासूसों का एक संगठन था, इसलिए उसके विरुद्ध लड़ना जरूरी था, लेकिन यह संघर्ष ऐसे रूप में चलाना चाहिए कि शत्रु की छलपूर्ण तिकड़में चूर–चूर हों, क्रांतिकारी पांतों की एकता और एकरसता और अधिक सुदृढ़ हो, असली सूत्रधारों का सफाया हो और उनके नादान अनुगामियों को गले लगाया जा सके, शिक्षित किया जा सके और फिर से ढाला जा सके, ताकि अधिक से अधिक जनता को क्रांति के पक्ष में शामिल किया जा सके।

क्रांतिकारी सिद्धान्तों के प्रति कामरेड किम इल सुंग की निष्ठा, वैज्ञानिक विश्लेषण पर आधारित उनकी सच्ची शिक्षाओं तथा उनके अडिग तथा दृढ़ संकल्पवान संघर्ष के कारण राष्ट्र–दम्भियों और गुटबाजों को निर्णायक पराजय का सामना करना पड़ा और वे धूल में मिल गये तथा अन्ततः 'मिनसैंदान' विरोधी संघर्ष, जिसे अतिवामपंथी रास्ते पर चलाया जा रहा था, सही रास्ते पर चलने लगा।

कामरेड किम इल सुंग द्वारा प्रतिपादित विवेकपूर्ण कार्यनीति के फलस्वरूप 'मिनसैंदान' विरोधी संघर्ष में वामपंथी भटकाव के कुफल मिटा दिये गये। खासतौर से, कामरेडों में उनके गहन विश्वास और महान सहनशीलता के कारण ऐसे अनेक व्यक्ति बच गये जिन पर 'मिनसैंदान' के सदस्य होने का झूठा कलंक लगा था और जिन्हें क्रांतिकारी पांतों से निकाल कर अनेक तरह के दुर्व्यवहार और दमन का शिकार बनाया जा रहा था। फलतः, वे अपनी अदम्य क्रांतिकारी भावना का पूर्ण रूप से उपयोग करते हुए जापान–विरोधी सशस्त्र संघर्ष के समूचे दौर में कामरेड किम इल सुंग के वफादार क्रांति-कारी सैनिकों की तरह बहादुरी से लड़े।

इस प्रकार कोरियाई क्रांति में राष्ट्र–दम्भियों और गुटबाजों द्वारा पैदा किये गये गहरे संकट को, क्रांति के महान नेता कामरेड किम इल सुंग के सिद्धान्तपरक और कठोर संघर्ष के सहारे दूर किया जा सका और इस प्रकार कोरियाई क्रांति उनके द्वारा रचित जुछे की महान क्रांतिकारी कार्यनीति के अनुसार गतिमय ढंग से बराबर आगे बढ़ती गयी।

'मिनसैंदान' विरोधी संघर्ष में वामपंथी भटकाव पर विजय के संघर्ष द्वारा उन राष्ट्रदम्भियों तथा गुटबाजों की चालें जिन्होंने कामरेड किम इल सुंग की क्रांतिकारी

जुछे कार्यनीति के ग्रमल के रास्ते में बाधाएं डाली थीं, चूर-चूर कर दी गयीं और जिस वामपंथी दुस्साहसिकता, कठमुल्लापन, सिद्धान्तहीनता और गुटबाजी के बीज उन्होंने बोये थे, उसको मिटा दिया गया। फलतः क्रांतिकारी पांतों में एकता और एक-रूपता हासिल हो गयी तथा कोरियाई जनता की आन्तरिक क्रांतिकारी शक्तियां और भी ठोस ढंग से मजबूत हो गयीं।

जिन लोगों को 'मिनसैंदान' विरोधी संघर्ष में कठोर और कटुअग्नि परीक्षाओं से गुजरना पड़ा था उनकी कोरियाई क्रांति के महान नेता कामरेड किम इल सुंग के प्रति आस्था और गहरी हुई तथा और भी दिल खोल कर उनके नेतृत्व को माना और उनके इर्द-गिर्द अखण्ड एकता स्थापित कर उनके द्वारा बताये गये मार्ग पर तेजी से आगे बढ़े।

योयोन्गू सम्मेलन के बाद कामरेड किम इल सुंग ने नयी परिस्थिति तथा सशस्त्र संघर्ष के विकास की आवश्यकताओं के अनुरूप मुक्त क्षेत्रों के स्थिर छापामार अड्डों को भंग कर दिया और वहां से जन-क्रांतिकारी सेना को कोरिया के विशाल क्षेत्रों में तथा उत्तरी और दक्षिणी मंचूरिया के क्षेत्रों में भेज दिया ताकि जापानी साम्राज्यवादियों के विरुद्ध क्रियाशील आक्रमण किया जा सके।

१९३५ की गर्मियों में कामरेड किम इल सुंग ने कोरिया की जन क्रांतिकारी सेना की मुख्य शक्ति की कमान संभाल कर उत्तरी मंचूरिया की ओर प्रयाण किया और जनवरी, १९३६ तक न्यंआन तथा ऐकमोक जिलों के व्यापक क्षेत्रों में शत्रु के विरुद्ध बड़े पैमाने पर चलते-फिरते हमले करके, उस पर बार-बार गहरे आघात किये और इस प्रकार कोरियाई जन-क्रांतिकारी सेना की महान लड़ाकू शक्ति का व्यापक प्रदर्शन किया। इसके अलावा उन्होंने उत्तरी मंचूरिया में जन क्रांतिकारी सेना के दस्तों के पास कुशल कमाण्डरों और छापामारों को भेजा ताकि उन दस्तों को राजनीतिक तथा सैनिक दृष्टि से अभेद्य बनाया जा सके और उन्होंने आम जनता को विजय के विश्वास से प्रेरित किया तथा इस प्रकार उन्होंने क्रांति की ज्वालाओं को विशाल क्षेत्रों तक फैला दिया।

कामरेड किम इल सुंग ने जब जापान-विरोधी छापामार सेना की स्थापना की और जापान-विरोधी सशस्त्र संघर्ष शुरू किया तबसे १९३६ के प्रारंभ तक बाह्यतः संघर्ष का मार्ग रक्त रंजित संघर्ष का रहा जिसमें जापानी साम्राज्यवाद जैसे भयानक शत्रु के विक्षप्त हमलों का मुंहतोड़ जवाब दिया जाता रहा और आंतरिक दृष्टि से वह एक कठिन संघर्ष का रास्ता था जिसमें क्रांतिकारी पांतों के भीतर वामपंथी अवसरवादियों, गुटबाजों और राष्ट्रदम्भी तत्वों की हर तरह की चालों को चकनाचूर किया गया और कोरियाई क्रांति में जुछे को प्रतिष्ठित किया गया, क्रांतिकारी तत्वों का विस्तार किया

गया और उनकी एकता तथा एकरूपता स्थापित की गयी।

यह कामरेड किम इल सुंग के विवेकपूर्ण नेतृत्व तथा विलक्षण रणनीति और कार्यनीति का सुफल था कि कोरियाई क्रांति ने सभी मुश्किलों पर विजय प्राप्त की और तेजी से आगे बढ़ती गयी।

इस संघर्ष के दौरान जापान–विरोधी छापामार और क्रांतिकारी जनता ने कामरेड किम इल सुंग के क्रांतिकारी विचारों से अपने को लैस करने का क्रांतिकारी स्वभाव पैदा करने की एकात्मक विचारधारा को भलीभांति आत्मसात किया और उनके द्वारा निश्चित दिशाओं और नीतियों का बिना शर्त पालन करने लगी।

चौथे दशक के प्रथमार्ध में कामरेड किम इल सुंग के नेतृत्व में प्राप्त शानदार उपलब्धियों और मूल्यवान अनुभव ऐसे ठोस आधार बने जिसके सहारे जापान–विरोधी सशस्त्र संघर्ष के चारों तरफ एक समूचा क्रांतिकारी आन्दोलन भारी उभार के साथ उठ खड़ा हुआ।

३

चौथे दशक के उत्तरार्द्ध में कामरेड किम इल सुंग ने जापान–विरोधी सशस्त्र संघर्ष को केन्द्र बनाकर कोरिया के ग्राम क्रांतिकारी आन्दोलन में एक विराट तूफान लाने के लिए एक नयी रणनीति और कार्यनीति प्रस्तुत की।

फरवरी, १९३६ में कामरेड किम इल सुंग ने नामहोदू सम्मेलन बुलाया और एक नयी रणनीति तथा कार्यनीति संबंधी दिशा प्रस्तुत की और उसे उसी साल मई में तोंग्गांग सम्मेलन में और अधिक ठोस रूप दिया।

चौथे दशक के मध्य में जापानी साम्राज्यवादियों ने अपने को महाद्वीप पर आक्रामक युद्ध का विस्तार करने में जुटा दिया और उन्होंने एक ओर कोरिया की जनता पर फासिस्ट दमन और आर्थिक लूट का चक्र चलाया, दूसरी ओर कोरियाई जनता के बीच से हर ऐसी चीज खत्म कर देने की बदहवास कोशिश की जिस पर राष्ट्रीयता की छाप हो। इससे कोरिया की जनता और जापानी साम्राज्यवादियों के बीच राष्ट्रीय अन्तर्विरोध और बढ़ गये तथा कोरिया की जनता की जापान–विरोधी भावना की आग और अधिक भड़क उठी।

परिस्थिति का वैज्ञानिक विश्लेषण करके कामरेड किम इल सुंग ने संयुक्त जापान–विरोधी राष्ट्रीय मोर्चे का ऐसा स्थायी संगठन स्थापित करने का सुझाव दिया जिसमें सभी देशभक्त शक्तियां शामिल हों ताकि वह संयुक्त जापान–विरोधी राष्ट्रीय मोर्चा तेजी से राष्ट्रव्यापी पैमाने पर आगे बढ़े तथा कोरियाई कम्युनिस्ट पार्टी की स्थापना का संघर्ष और तेजी से बढ़ाने ी नीति रखी।

उन्होंने शत्रु पर और भारी आघात करने के लिए कोरिया की जनक्रांतिकारी सेना को हमारे देश के उत्तरी सीमावर्ती क्षेत्रों में भेजने की और पैकदु–सान पर्वत के चारों ओर नयी तरह के अड्डे कायम करने की और सशस्त्र संघर्ष को मातृभूमि के अन्दर दूर तक पहुंचाने की कार्यनीति का भी स्पष्टीकरण किया, ताकि कोरिया की जनता अपने जापान–
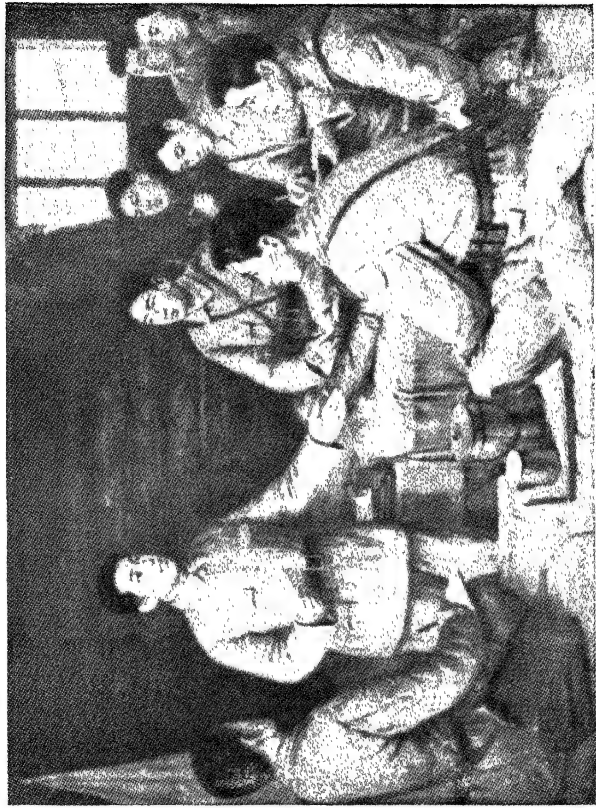
कामरेड किम इल सुंग नामहोदु कांफ्रेंस की अध्यक्षता कर रहे हैं

विरोधी संघर्ष में और भी अधिक प्रेरित और प्रोत्साहित हो तथा कोरियाई क्रांति का पथप्रदर्शन सर्वांगिम सुदृढ़ हो।

कामरेड किम इल सुंग द्वारा प्रस्तुत यह कार्यनीति एक ऐसी दूरदर्शी नीति थी जिसे उन्होंने मुठभेड़ों में प्राप्त उपलब्धियों और अपनी क्रांतिकारी गतिविधियों के प्रारंभिक दौर में तथा बाद के जापान–विरोधी संघर्ष के कुछ वर्षों में प्राप्त अमूल्य अनुभवों के आधार पर निर्मित किया था। उसमें देश और विदेश की परिस्थितियों के अनुसार क्रांति के विकास की वस्तुगत आवश्यकताओं की सही अभिव्यक्ति थी।

जुछे की अडिग नींव पर स्थापित यह अत्यन्त सही कार्यनीति थी कि कोरियाई क्रांति के सिलसिले में पैदा होने वाली समस्याओं को कोरिया की जनता को स्वयं और अपनी ही जिम्मेदारी पर तथा अपनी ही शक्ति पर भरोसा कर अपने देश की वास्तविक परिस्थितियों के अनुसार हल करना चाहिये।

इस कार्यनीति ने हमारे देश में क्रांतिकारी आन्दोलन के विकास को एक महान नया मोड़ दिया।

इस कार्यनीति की स्थापना से यह संभव हुआ कि कोरियाई क्रांति में जुछे की पूर्ण प्रतिष्ठा की जा सकी, राष्ट्रदम्भवाद, कठमुल्लापन और लफ्फाजी पर विजय पायी जा सकी और कोरियाई क्रांति में नया, महान उत्थान लाया जा सका।

कामरेड किम इल सुंग द्वारा प्रतिपादित इस महान कार्यनीति को तथा उनके विवेकपूर्ण नेतृत्व को स्वीकारते हुए तथा क्रांति पर अपार गर्व करते हुए और उसकी विजय में दृढ़ आस्था रखते हुए कोरियाई कम्युनिस्ट उस कार्यनीति पर अमल करने के संघर्ष में तूफानी भावना से जुट गये।

कामरेड किम इल सुंग ने इस महान कार्यनीति पर अमल के लिए एक विस्तृत योजना बनायी और संघर्ष में खुद आगे बढ़कर भाग लिया।

लम्बी तैयारियों और अनेक वर्षों के अनुभवों के आधार पर कामरेड किम इल सुंग ने ५ मई, १९३६ को हमारे देश के संयुक्त जापान–विरोधी राष्ट्रीय मोर्चे के प्रथम संगठन, पितृभूमि पुनर्स्थापना सभा (ए. आर. एफ.) की नींव डाली।

कामरेड किम इल सुंग पितृभूमि पुनर्स्थापना सभा के अध्यक्ष चुने गये।

पितृभूमि पुनर्स्थापना सभा संयुक्त जापान–विरोधी राष्ट्रीय मोर्चे का स्थायी संगठन था, जिसकी व्यवस्था और संगठनात्मक स्वरूप अनोखा था और साथ ही, वह एक क्रांतिकारी संगठन था और कामरेड किम इल सुंग के व्यक्तिगत नेतृत्व में कम्युनिस्ट उसके क्रोड थे।

पितृभूमि पुनर्स्थापना सभा की स्थापना सभी देशभक्त शक्तियों को एकजुट कर के जापानी साम्राज्यवाद को कुचल कर पितृभूमि की पुनर्स्थापना के लिये कामरेड किम इल सुंग की लम्बी अवधि से सोची गई महान कल्पना और इस को अमल में लाने के खूनी संघर्ष का मूल्यवान फल था और यह एक ऐसी घटना थी जिसने हमारी जनता के जापान-विरोधी राष्ट्रीय मुक्ति संघर्ष के विकास में नया मोड़ पैदा कर दिया। विदेशी साम्राज्यवादी आक्रामकों के विरुद्ध संघर्ष में समस्त राष्ट्र की एकता संबंधी कोरियाई चिर-संचित आकांक्षा ए. आर. एफ. की स्थापना से शानदार ढंग से पूर्ण हुई तथा हमारे देश में संयुक्त जापान-विरोधी राष्ट्रीय मोर्चा आन्दोलन ने विकास के एक नये दौर में प्रवेश किया।

ए. आर. एफ. की स्थापना करते हुए कामरेड किम इल सुंग ने दस सूत्री कार्यक्रम, उद्घाटन भाषण और ए. आर. एफ. के नियम प्रस्तुत किये, जिन्हें उन्होंने स्वयं तैयार किया था।

ए.आर.एफ. के उद्घाटन भाषण में कामरेड किम इल सुंग ने जापानी-साम्राज्य-वाद के शोषण, लूट और निर्मम दमन का पर्दाफाश किया और उसकी सख्त निन्दा की और यह अपील की कि पूरा राष्ट्र वर्ग, लिंग, सामाजिक-स्थिति, आयु, धार्मिक विश्वास आदि के भेद भाव भुला कर, तथा एक होकर जिनके पास धन हो, वे धन दें; जिनके पास अनाज हो, अनाज दें और जिनके पास कौशल व विद्या हो वे उसकी भेंट चढ़ा कर, दो करोड़ तीस लाख जनसमूह एक होकर जापान-विरोधी पितृभूमि पुनर्स्थापना मोर्चे के मैदान में उतरें।

कामरेड किम इल सुंग ने ए. आर. एफ. के लिए खुद जो दस सूत्री कार्यक्रम तैयार किया, वह इस प्रकार है :

"१-कोरियाई राष्ट्र की आम लामबन्दी करके एक व्यापक संयुक्त जापान-विरोधी मोर्चा स्थापित करके लुटेरे जापानी साम्राज्यवादी शासन को खत्म करके सच्चे अर्थों में जनता की सरकार स्थापित की जायगी।

२-मंचूरिया में बसने वाली कोरियाई जनता कोरियाई तथा चीनी राष्ट्रीय घनिष्ठ मैत्री द्वारा जापान तथा उसकी कठपुतली "मांचुकुक' शासन का तख्त पलट कर कोरियाई निवासियों द्वारा चीनी प्रदेश के अन्दर एक सच्चा स्वायत्त शासन प्राप्त किया जायगा।

३-जापानी सेना, किराये की सेना और पुलिस तथा उसके दलालों को निरस्त्र कर के कोरिया की स्वाधीनता के लिए सच्चे अर्थों में लड़ने वाली क्रांतिकारी सेना की

स्थापना की जायगी ।

४–जापानी सरकार और जापानी लोगों के स्वामत्व के सारे उद्योग, धंधे, रेलवे, बैंक, जहाज, फार्म और सिंचाई की सुविधाएं तथा जापान समर्थक देशद्रोही तत्वों की जमीन–जायदाद जब्त करली जायगी ताकि स्वाधीनता आन्दोलन के लिए धन सुलभ हो सके और अंशतः गरीबों को राहत दी जा सके ।

५–जापानियों तथा उनके दलालों ने जनता पर जो ऋण, कर या इजारेदारी व्यवस्था थोपी है, उसका उन्मूलन कर दिया जायगा, जनता के जीवन यापन में सुधार किया जायगा, तथा राष्ट्रीय उद्योग, खेती और व्यापार को सुचारू रूप से विकसित किया जायगा ।

६–भाषण, समाचार पत्र, सभा और संगठन की आजादी फिर से जीती जायगी, जापानियों की आतंकवादी नीति तथा सामन्ती विचारधारा को प्रोत्साहन देने की नीति को ठुकराया जायगा और सभी राजनीतिक बन्दियों को रिहा किया जायगा ।

७–अभिजात जनों और जन–साधारण के बीच की तथा अन्य असमानताएं दूर की जायंगी, लिंग, राष्ट्रीयता तथा धर्म आदि के भेद के बगैर मानवीय समानता की प्रतिष्ठा की जायगी, महिलाओं की सामाजिक हैसियत ऊंची बनायी जायगी और उनके व्यक्तित्व का आदर किया जायगा ।

८–गुलाम मजदूरी और दास शिक्षा का उन्मूलन किया जायगा, युवकों तथा बच्चों की अनिवार्य सैनिक सेवा और अनिवार्य सैनिक शिक्षा अस्वीकृत की जायगी, शिक्षा हमारी भाषा और हमारी लिपि में होगी और अनिवार्य मुफ्त शिक्षा–व्यवस्था लागू की जायगी ।

९–दिन में आठ घंटे काम की व्यवस्था लागू की जायगी, काम के हालात में सुधार होगा, मजदूरी बढ़ायी जायगी । श्रम कानून बनाये जायेंगे, राज्य की ओर से मजदूरों के लिए विभिन्न बीमों का कानून बनाया जायगा, और बेरोजगार मजदूरों को सहायता दी जायगी ।

१०–उन राष्ट्रों तथा राज्यों से घनिष्ठ मैत्री स्थापित की जायगी, जो कोरियाई राष्ट्र को समानता के आधार पर स्वीकार करते हैं तथा उन राज्यों तथा राष्ट्रों के साथ साथियों जैसी मैत्री स्थापित की जायगी जो हमारे राष्ट्रीय आन्दोलन के प्रति सद्भावना और तटस्थता प्रदर्शित करते हैं ।"

ए. आर. एफ. का दस–सूत्री कार्यक्रम एक ऐसा कार्यक्रम था जिसने साम्राज्यवाद विरोधी, सामन्त विरोधी जनवादी क्रांति के दौर में जनता के विभिन्न वर्गों के हितों तथा

मेहनतकश वर्ग की बुनियादी मांगों को समेट लिया और बहुत ही सही ढंग से उनकी अभिव्यक्ति की और साथ ही वह एक ऐसा मौलिक कार्यक्रम था, जिसमें वे सारे बुनियादी कर्त्तव्य चौतरफा रूप से अभिव्यक्त होते थे जिन्हें क्रांति के उस दौर में मार्क्सवादी लेनिनवादी पार्टी को पूरा करना था।

यह एक क्रांतिकारी कार्यक्रम था जिसमें साम्राज्य-विरोधी, सामन्त-विरोधी जनवादी क्रांति के कर्त्तव्यों को पूरा करते हुए समाजवादी क्रांति के कर्तव्य पूरे करने के लिए एक अनुकूल दौर के प्रारंभ की परिकल्पना थी और जिसमें वर्तमान के लिए यह लक्ष्य निर्धारित था कि साम्राज्यवाद-विरोधी राष्ट्रीय मुक्ति के कर्त्तव्यों को पूरा करने के लिए उन मजदूरों, किसानों और जनता के दूसरे सभी हिस्सों को आमतौर पर एकजुट किया जाय जो जापानी साम्राज्यवाद के विरुद्ध हैं।

ए. आर. एफ. का दस-सूत्री कार्यक्रम कोरियाई क्रांति के प्रतिभाशाली नेता और महान मार्क्सवादी लेनिनवादी कामरेड किम इल सुंग के जुछे संबंधी महान विचार का शानदार साकार रूप है और एक ऐसा अमर दस्तावेज है जो मार्क्सवादी-लेनिनवादी सिद्धान्त का एक मौलिक विकास है।

सबसे सही क्रांतिकारी मार्क्सवादी-लेनिनवादी कार्यक्रम की हैसियत से और हमारे जनता के क्रांतिकारी इतिहास में अपने ढंग के पहले कार्यक्रम के रूप में ए. आर. एफ. का दस-सूत्री कार्यक्रम कोरियाई जनता के लिए एक ऐसा प्रकाश-स्तम्भ सिद्ध हुआ जिसने संघर्ष का लक्ष्य और क्रांति का परिप्रेक्ष्य स्पष्ट रूप से दिखाया और जो कोरियाई क्रांति की चिरन्तन पताका बना।

वह कार्यक्रम कोरिया के कम्युनिस्टों और राष्ट्रीय मुक्ति आन्दोलनों की पांतों को, कामरेड किम इल सुंग द्वारा निर्धारित एकमात्र और समान लक्ष्य की प्राप्ति के संघर्ष द्वारा एक सूत्र में बांध कर, उनकी एकता और एकरसता की सुदृढ़ता से गारंटी करने के लिए राजनीतिक और सैद्धान्तिक आधार बन गया।

ए. आर. एफ. के दस सूत्री कार्यक्रम ने महान क्रांतिकारी आकर्षण के साथ जनता में जड़ें जमा लीं।

कामरेड किम इल सुंग ने अपनी रचना **"कोरिया में आम जनता को जापान-विरोधी आन्दोलन में कैसे संगठित किया जाय?"** में, जो १९३७ के वसन्त में लिखी, ए. आर. एफ. के दस सूत्री कार्यक्रम पर अमल करने के ठोस तरीके बताये।

इस कृति में कामरेड किम इल सुंग ने जापानी साम्राज्यवादी आक्रामकों के विरुद्ध कोरियाई जनता द्वारा संघर्ष के दौरान प्राप्त अनुभवों और सीखों का वैज्ञानिक विश्लेषण

किया और यह स्पष्ट किया कि तत्कालीन परिस्थिति में कोरियाई जनता और कम्युनिस्टों के उनके संघर्ष में क्या कर्त्तव्य हैं।

संयुक्त जापान–विरोधी राष्ट्रीय मोर्चे की कार्यनीति के अनुसार कोरियाई कम्युनिस्टों को जो संघर्ष चलाना था, उसके व्यावहारिक तरीकों का वैज्ञानिक विश्लेषण पेश करने वाले एक कार्यक्रम–दस्तावेज के रूप में, कामरेड किम इल सुंग की एक ऐसी कृति के रूप में जो जुछे के विचार से ओतप्रोत थी, वह कार्यक्रम जीवन के सभी क्षेत्रों की जनता को जापान–विरोधी संघर्ष के लिए तेजी से संगठित और लामबन्द करने की कार्यवाही के लिए पथ–प्रदर्शन बना।

मुश्किल संघर्ष की परिस्थितियों तक में भी कामरेड किम इल सुंग ने न सिर्फ अनेक क्रांतिकारी रचनाएं लिखीं, बल्कि घने जंगलों में स्थित गुप्त शिविरों में प्रकाशन संगठनों की भी व्यवस्था की और व्यक्तिगत रूप से स्वयं क्रांतिकारी अखबारों का संगठन, निर्देशन किया ताकि छापामारों और जनता की राजनीतिक शिक्षा का काम सुदृढ़ किया जा सके।

१ दिसम्बर, १९३६ को कामरेड किम इल सुंग ने पितृभूमि पुनर्स्थापना सभा के मुखपत्र के रूप में "साम्इल वलगान" (प्रथम मार्च) नामक मासिक की स्थापना की।

जापान–विरोधी सशस्त्र संघर्ष के प्रारंभिक दिनों से ही कामरेड किम इल सुंग ने सिखाया था कि जैसे शत्रु को पराजित करने के लिए क्रांतिकारी सेना के वास्ते अस्त्र–शस्त्र जरूरी होते हैं, उसी प्रकार आम जनता को विजयी बनाने के लिए एक क्रांतिकारी संगठन को प्रकाशनों जैसे तीखे तथा लड़ाकू विचारधारात्मक अस्त्र की जरूरत होती है। कामरेड किम इल सुंग की व्यक्तिगत देख रेख में प्रकाशित "साम्इल वलगान" ने संगठनकर्ता और प्रचारक के रूप में न सिर्फ छापामारों को शिक्षित करने में, बल्कि संयुक्त जापान–विरोधी राष्ट्रीय मोर्चे के इर्द–गिर्द मजदूरों–किसानों समेत तमाम देशभक्त जनता के व्यापक भागों को एक जुट करने में तथा जापान–विरोधी संघर्ष में उन्हें संगठित और लामबन्द करने में सचमुच बड़ी जबर्दस्त भूमिका अदा की।

कामरेड किम इल सुंग व्यक्तिगत रूप से न सिर्फ "साम्इल वलगान" के साथ "सगुआं" (सूर्योदय), जोंग सोरी (घंटी का स्वर) आदि अखबारों तथा विभिन्न पुस्तिकाओं के प्रकाशन की व्यवस्था का संगठन तथा निर्देशन करते रहे, बल्कि उन्होंने शिक्षात्मक उद्देश्यों की पूर्ति के लिए अनेक व्याख्याएं और निबंध भी लिखे।

कामरेड किम इल सुंग के कुशल निरीक्षण और व्यक्तिगत पथ–प्रदर्शन में प्रकाशित क्रांतिकारी प्रकाशन ऐसे शक्तिशाली साधन बन गये. जिनसे न सिर्फ नेता के महान

क्रांतिकारी विचारों और कार्यनीतियों की रक्षा की जा सकी, बल्कि उनसे जनता को क्रांतिकारी विचारों से लैस किया जा सका, और उनसे ऐसे अस्त्र मिले, जिनकी सहायता से जापानी साम्राज्यवादियों के छलपूर्ण प्रतिक्रियावादी प्रचार को चकनाचूर किया जा सका।

पितृभूमि पुनर्स्थापना सभा की स्थापना के बाद कामरेड किम इल सुंग ने कोरिया की जन–क्रांतिकारी सेना की प्रमुख शक्ति का व्यक्तिगत रूप से नेतृत्व करके आमरोक–गांग नदी के किनारे वाले क्षेत्रों में आ कर बैक्दु–सान पर्वत अड्डे की स्थापना की रहनुमाई की।

कोरिया की जन क्रांतिकारी सेना का नेतृत्व करके सक्रिय सैनिक तथा राजनीतिक गतिविधियां चलाने से कामरेड किम इल सुंग ने बैक्दु–सान पहाड़ी के इर्द–गिर्द जंगलों में गुप्त शिविरों की स्थापना की और इन शिविरों को केन्द्र बनाकर क्रांतिकारी जनता में ए. आर. एफ. के संगठन कायम किये तथा इस प्रकार एक नये तरह के बैक्दु सान पर्वतीय अड्डे को स्थापित किया।

बैक्दु–सान पर्वत अड्डा एक अदृश्य दुर्ग था जो उन सारे गुप्त शिविरों को, जो आमरोक–गांग और तुमान–गांग नदियों के किनारे फैल विस्तृत क्षेत्रों में वहां की भौगोलिक परिस्थिति का लाभ उठाते हुए बनाये गये थे, उन क्षेत्रों की आम जनता में जड़ें जमाये हुए क्रांतिकारी संगठनों के साथ अखण्ड रूप से जोड़ता था।

बैक्दु–सान पर्वत अड्डे ने विराट भूमिका अदा कीं, उसने कोरियाई जन क्रांतिकारी सेना को इस योग्य बनाया कि वह शत्रु के बदहवास हमलों को नाकाम करे। कामरेड किम इल सुंग के नेतृत्व में क्रांतिकारी सेनाने ठोस, गतिशील सैनिक गतिविधियां विकसित कीं, पूरी कोरियाई क्रांति के लिए उनके स्वरूप तथा व्यवस्थित नेतृत्व को और भी सुदृढ़ किया तथा संपूर्ण कोरियाई क्रांति की महान प्रगति की, जो जापान–बिरोधी सशस्त्र संघर्ष की धुरी बन गयी।

बैक्दु–सान पर्वत अड्डे की स्थापना के बाद कामरेड किम इल सुंग ने जनता के सक्रिय समर्थन और प्रोत्साहन से बैक्दु–सान पर्वत के दक्षिण–पश्चिमी क्षेत्रों में सैनिक गतिविधियों का तेजी से विस्तार किया और शत्रु पर एक के बाद एक घातक आघात किये।

उत्तरी सीमावर्ती क्षेत्रों में कोरियाई जन क्रांतिकारी सेना की प्रगति से बेहद घबरा कर जापानी साम्राज्यवादियों ने 'संकटकालीन कदम' उठाने में जल्दबाजी की और बहुत बड़ी फौज जमा करके कोरियाई जन क्रांतिकारी सेना के विरुद्ध बडे पैमाने पर हमला कर दिया।

उन्होंने 'छानने वाली कार्यनीति' अपनायी यानी एक दस्ता पहाड़ के ऊपरी भाग को 'छान' रहा था तो दूसरा मध्यवर्ती ढलान को और तीसरा घाटी में तलहटी को, ताकि कोरियाई जन क्रांतिकारी सेना कहीं चंगुल से न निकल जाये।

शत्रु के व्यग्र हमलों का मुकाबला करने के लिए कामरेड किम इल सुंग ने बड़े दस्तों और छोटे दस्तों की कार्यवाहियों में कौशलपूर्ण संयोग स्थापित कर शत्रु को चोट पहुंचाने और फिर उसका सफाया करने की नयी और श्रेष्ठ छापामार कार्यनीति अपनायी। कामरेड किम इल सुंग की इस श्रेष्ठ कार्य नीति के अनुसार छोटे दस्ते शत्रु को धमकाते, उसे हर कहीं भ्रान्ति में डाल देते और शत्रु की स्वतंत्रतापूर्वक कार्यवाही कर सकने की क्षमता में बाधा डाल देते, उधर बड़े दस्ते चुपचाप दुश्मन के बड़े दस्ते पर हमला बोलते, शत्रु को अचम्भे में डालते और उसका सफाया कर डालते।

इस कार्यनीति के साथ-साथ कामरेड किम इल सुंग ने हर उस जगह अनेकानेक ढंग के छापामार तरीके अपनाये जहां शत्रु के पांव जमे हुए थे। मसलन, शोरगुल पूर्व में मचाते, हमला पश्चिम में करते, पश्चिम में प्रकट होते, किंतु हमला करते एक साथ दक्षिण और उत्तर में; किसी जगह दुश्मन को अकेला कर देते और उसकी टुकड़ी पर घात लगा कर हमला करते जो मदद के लिये आ रही होती, कभी शत्रु के बीच में जाकर चुपके से तथा तेजी से खिसक ऐसी स्थिति पैदा कर देते कि शत्रु की दो टुकड़ियां आपस में ही टकरा जातीं। कभी विश्वास दिलाते कि छापामार बहुत दूर निकल गये, लेकिन तभी लौटकर ठीक शत्रु की नाक के नीचे आकर हमला बोल देते, कभी सेना के शानदार मार्च को जरा सी देर में खुली मोर्चाबंदी में बदल कर शत्रु पर बाजू से आघात करते और पीछे से हमला करते, आदि वास्तव में हजार ढंगों में दस हजार रूप बदलने वाली छापामार कार्यनीति का कुशल इस्तेमाल करने से शत्रु को हमेशा प्रतिरक्षा में व्यस्त रख कर पहले अपने हाथ में रखी, और उसको नकेल पकड़ कर चलाया, और शत्रु पर लगातार भारी चोटें करते।

कामरेड किम इल सुंग की कमान में कोरिया की जन क्रांतिकारी सेना हमारे देश के उत्तरी सीमावर्ती क्षेत्रों में पहुंच गयी और उसने अनेक शक्तिशाली सैनिक अभियान किये और इस प्रकार कोरिया की जनता पर जबर्दस्त क्रांतिकारी प्रभाव डाला। युद्ध में कोरियाई जन क्रांतिकारी सेना की विजय के फलस्वरूप हमारे देश के उत्तरी सीमावर्ती क्षेत्र क्रांतिकारी उत्साह से उमड़ उठे और कोरिया की समूची धरती क्रांतिकारी भावना से ओत-प्रोत हो गयी।

शत्रु पर बलशाली सैनिक गतिविधियों से घातक चोट पहुंचाते हुए तथा जनता की क्रांतिकारी भावना को आन्दोलित करते हुए कामरेड किम इल सुंग ने बैक्दु-सान

पर्वत अड्डे पर भरोसा कर पूरे देश में पितृभूमि पुर्नस्थापना सभा के संगठनात्मक जाल का विस्तार करने के काम को तेजी से आगे बढ़ाने के काम का संयोजन और पथ–प्रदर्शन किया।

कामरेड किम इल सुंग ने सर्वोत्तम राजनीतिक कार्यकर्त्ताओं को मातृभूमि की हर जगह में भेजा और साथ ही वहां कम्युनिस्टों का व्यक्तिगत रूप से निर्देश करते हुए ए. आर. एफ. के संगठनात्मक जाल को देश भर में फैलाया।

जांगबैक क्षेत्र में कामरेड किम इल सुंग की व्यक्तिगत देखरेख में पितृभूमि पुनर्स्थापना सभा की जांगबैक काउन्टी कमेटी बनायी गयी तथा उसके अंतर्गत अनेक उप संगठन बनाये गये। ए. आर. एफ. का संगठनात्मक जाल तेजी से अनेक स्थानों में फैल गया। इसकी एक मिसाल है कोरिया का राष्ट्रीय मुक्ति संघ जो मातृभूमि में ए. आर. एफ. का ही एक संगठन था।

ए. आर. एफ. का संगठनात्मक जाल अनेक नामों के अंतर्गत किन्तु एक सुव्यवस्थित ढंग से उत्तर, तथा दक्षिण हामग्योंग सूबों, उत्तर तथा दक्षिण प्योंगआन सूबे, कांगवोन सूबे, क्योंन्गी सूबे, दक्षिण क्योंगसांग सूबे तथा देश के अन्य हिस्सों तथा मंचूरिया के विशाल क्षेत्रों में फैल गया। कुछ ही महीनों में जापान–विरोधी जन–समूह जिसमें हजारों मजदूर, किसान, तरुण छात्र, बुद्धिजीवी, राष्ट्रवादी, राष्ट्रीय पूंजीपति तथा देशभक्त धार्मिक लोग थे, ए. आर. एफ. के झंडे के नीचे जमा हो गये।

कामरेड किम इल सुंग ने निम्नलिखित बातें कहीं :

पितृभूमि पुनर्स्थापना सभा के कायम होने के कुछ ही महीनों के अन्दर हमारे देश की विभिन्न सामाजिक श्रेणियों से हजारों–लाखों लोग उसके झण्डे के नीचे एकजुट हो गये, यही इस बात का सबूत है कि हमारी जनता ए. आर. एफ. पर कितना गहरा विश्वास करती है।

पितृभूमि पुनर्स्थापना सभा ने आम जनता में हमारे राष्ट्रीय मुक्ति संघर्ष के उद्देश्यों और लक्ष्यों की व्याख्या करने में और पितृभूमि की मुक्ति के लिए संयुक्त संघर्ष के झंडे के नीचे कोरिया की समस्त देशभक्त जनता को एकजुट करने में महान भूमिका अदा की है।

संयुक्त जापान–विरोधी राष्ट्रीय मोर्चा आन्दोलन के सफल संगठन और विकास से कोरियाई जनता की शक्तिशाली आन्तरिक क्रांतिकारी शक्तियों का निर्माण हुआ और जापान–विरोधी सशस्त्र संघर्ष को धुरी बना कर कोरिया के क्रांतिकारी आन्दोलन ने भारी प्रगति की।

कामरेड किम इल सुंग ने विकसित होती हुई परिस्थिति की आवश्यकताओं का ध्यान रखते हुए संयुक्त जापान-विरोधी राष्ट्रीय मोर्चा आन्दोलन को जापान-विरोधी सशस्त्र संघर्ष के साथ घनिष्ठ रूप से मिला कर चलाया और इस प्रकार अंतर्राष्ट्रीय फासिस्तवाद की एक प्रमुख शक्ति, जापानी साम्राज्यवाद, को सैनिक तथा राजनीतिक चोटें पहुंचायीं तथा अंतर्राष्ट्रीय पैमाने पर संयुक्त साम्राज्यवाद विरोधी मोर्चा आन्दोलन के विकास में बहुत बड़ा योग दिया।

हमारे देश में संयुक्त जापान-विरोधी राष्ट्रीय मोर्चा बनाने की शानदार सफलता और संयुक्त जापान-विरोधी राष्ट्रीय मोर्चा आन्दोलन की अमर उपलब्धियां कोरियाई क्रांति के विलक्षण नेता कामरेड किम इल सुंग के विवेकपूर्ण नेतृत्व का सुपरिणाम था और जुझे संबंधी उनके महान विचार का गौरवपूर्ण फल था।

कामरेड किम इल सुंग के व्यक्तिगत नेतृत्व में जापान-विरोधी सशस्त्र संघर्ष का क्रांतिकारी प्रभाव देश भर में तेजी से बढ़ने और ए. आर. एफ. की शाखाओं में फैलते जाने के कारण कोरियाई जन क्रांतिकारी सेना के प्रति आम जनता का समर्थन और प्रोत्साहन अधिकाधिक सुदृढ़ होता जा रहा था।

समूचे जापान-विरोधी सशस्त्र संघर्ष के दौरान जापान-छापामार सेना को क्रांतिकारी जनता ने जिस प्रकार पूर्ण समर्थन प्रदान किया वह कोरियाई क्रांति के महान नेता कामरेड किम इल सुंग के प्रति जनता के अपार विश्वास और आदर-भाव का द्योतक था, जो इस गहन चेतना से पैदा हुआ था कि कामरेड किम इल सुंग के नेतृत्व वाली कोरियाई जन क्रांतिकारी सेना ही एक ऐसी सेना है जो जनता की स्वाधीनता और मुक्ति के लिए सही अर्थों में लड़ रही है। इसका स्रोत यह तथ्य भी था कि कामरेड किम इल सुंग ने सदा जनता के बीच जाने और जनता की शक्ति का भरोसा तथा विश्वास करके ही सारे काम को संगठित करने की क्रांतिकारी कार्य पद्धति निकाली, उस पर अमल करने की दिशा में खुद उदाहरण पेश किया और उन्होंने छापामारों में सेना और जनता के बीच एकता की क्रांतिकारी विशिष्टता स्थापित की।

कामरेड किम इल सुंग ने निम्नलिखित आशय की बातें कहीं :

"..हमारी सेना किसके लिए लड़ रही है ? हमारी सेना देश तथा जनता के लिए लड़ रही है।

यही हमारे छापामार संघर्ष का उदात्त लक्ष्य और उसकी शक्ति का स्रोत है।..

जैसे पानी बिना मछली जीवित नहीं रह सकती, उसी प्रकार जनता के बगैर छापामार जीवित नहीं रह सके। जब हम अपने संघर्ष में जनता पर विश्वास

करेंगे और उस पर भरोसा करेंगे, तभी हम अपने लक्ष्य हासिल कर सकते हैं—

कामरेड किम इल सुंग ने सदा जनता के हितों की रक्षा की और जनता के दुख को अपना दुख समझते हुए उसे दूर करने के लिए अपनी सारी शक्ति लगायी।

जनता के प्रति कामरेड किम इल सुंग का जैसा गहरा प्यार और चिन्ताभाव था, वैसे ही जनता से उन्हें अपार सम्मान और गहन विश्वास और पूरी हार्दिकता से मदद दी।

संयुक्त जापान-विरोधी राष्ट्रीय मोर्चा आन्दोलन को संगठित और निर्देशित करते हुए कामरेड किम इल सुंग ने खासतौर से कोरिया की कम्युनिस्ट पार्टी की राष्ट्र-व्यापी स्थापना की संगठनात्मक तथा सैद्धान्तिक तैयारी तेजी से आगे बढ़ायी।

कामरेड किम इल सुंग ने जापान-विरोधी सशस्त्र संघर्ष की तैयारी के प्रारम्भिक दिनों से ही मार्क्सवादी-लेनिनवादी पार्टी की स्थापना को सबसे महत्वपूर्ण कर्त्तव्य माना और उसे पूरा करने के लिए संघर्ष छेड़ा। जापान-विरोधी सशस्त्र संघर्ष के पूरे दौर में, जबकि जापानी साम्राज्यवादियों का जालिमाना दमन अपनी पराकाष्ठा पर था तथा तरह-तरह के अवसरवादियों और गुटबाजों की तोड़-फोड़ संबंधी गतिविधियां सीमा पार कर चुकी थी, उन्होंने कठिन परिस्थिति के बावजूद पार्टी की स्थापना तथा क्रान्तिकारी शक्ति के निर्माण का कठिन और जटिल काम सफलतापूर्वक आगे बढ़ाया।

पार्टी की स्थापना के प्रश्न के सिलसिले में कामरेड किम इल सुंग ने देश में कम्युनिस्टों की वास्तविक परिस्थितियों को समझा, उन्हें गलत तर्कों पर आधारित खण्डन-मण्डन में पड़ने के खतरे से आगाह किया और उन्हें पार्टी-स्थापना के लिए सही रास्ता दिखाया। उन्होंने स्थानीय कम्युनिस्ट गोष्ठियां संगठित करने से संबंधित ठोस कदम सौंपे और स्वयं उनके काम की देखरेख की।

कामरेड किम इल सुंग ने पार्टी की स्थापना के लिए विदेशी शक्तियों पर निर्भर करने की आडम्बरपूर्ण प्रवृत्ति को ठुकराया, और ऐतिहासिक परिस्थितियों तथा देश में कम्युनिस्ट आन्दोलन की यथार्थ स्थिति के अनुरूप पार्टी की स्थापना की तैयारियों को स्वतंत्र तथा सृजनात्मक रीति से आगे बढ़ाने की सुदृढ़ नीति स्पष्ट की और उस पर अमल के लिए उन्होंने जम कर संघर्ष किया।

कामरेड किम इल सुंग ने जापान-विरोधी सशस्त्र संघर्ष तथा जापान-विरोधी राष्ट्रीय संयुक्त मोर्चा आन्दोलन के व्यावहारिक संघर्ष के दौरान कम्युनिस्टों की संख्या में वृद्धि की और उन्हें दिन प्रतिदिन के शिक्षात्मक और संगठनात्मक जीवन के माध्यम से अडिग

कम्युनिस्ट के रूप में विकसित किया। उन्होंने पार्टी और तरुण कम्युनिस्ट लीग संगठनों के कामों का निर्देशन किया ताकि छापामारों की शिक्षा में वृद्धि हो सके और छापामारों को शिक्षित करने के लिए या पार्टी बैठकों में हिस्सा लेने के लिए और यह सिखाने के लिए कि संगठनात्मक जीवन कैसे शक्तिशाली बनाया जाय, अक्सर वे स्वयं छापामार दस्तों में जाते। कामरेड किम इल सुंग के विवेकशील नेतृत्व का ही सुफल था कि कठिन सशस्त्र संघर्ष की अग्निपरीक्षा में तप कर, क्रान्ति तथा नेता के प्रति अगाध आस्था वाले कम्युनिस्टों की एक विशाल नयी पीढ़ी मजदूर किसान परिवारों से उठ खड़ी हुई, पार्टी की स्थापना की संगठनात्मक रीढ़ सुदृढ़ रूप से निर्मित हुई और आम कम्युनिस्टों में संगठनात्मक एकता कायम हुई और उनकी पांतों की शुद्धता की गारंटी हुई।

कामरेड किम इल सुंग ने पितृभूमि पुनर्स्थापना सभा के दससूत्री कार्यक्रम में प्रस्थापित, जुछे की क्रान्तिकारी कार्यनीति पर आधारित विचारों और उद्देश्यों के लिए कम्युनिस्ट पांतों की एकता उपलब्ध करने का सक्रिय संघर्ष छेड़ा। कामरेड किम दल सुंग ने जिस क्रांतिकारी दिशा, रणनीति और कार्यनीति की रचना की थी, उस पर अमल करने के लिए संघर्ष के दौरान कम्युनिस्टों ने अपने नेता के विचारों के आधार पर अपने चिन्तन, उद्देश्य और कार्य में बिना शर्त और पूर्ण एकता की गारंटी कर ली।

कामरेड किम इल सुंग ने सशस्त्र संघर्ष और जापान-विरोधी राष्ट्रीय संयुक्त मोर्चा आन्दोलन के दौरान पार्टी की स्थापना के लिए व्यापक जन-आधार कायम करने का काम तेजी से बढ़ाया। कामरेड किम इल सुंग के व्यक्तिगत नेतृत्व में कम्युनिस्ट लोग जनता में गये, उन्होंने शत्रु के कम्युनिस्ट-विरोधी प्रचार को ध्वस्त किया और जनता के लिए पूरी आस्था से काम किया जिससे जनता को यह बोध हुआ कि कम्युनिस्ट लोग कोरिया के सच्चे देशभक्त तथा क्रांतिकारी हैं जो जनता के हित में लड़ रहे हैं और जनता ने कम्युनिस्टों के प्रति गहरी आस्था और समर्थन व्यक्त किया। पार्टी-स्थापना के लिए जन आधार बनाने के संघर्ष के दौरान वे कमियां दूर हो गयीं जो पिछले दौर में हमारे देश के कम्युनिस्ट आन्दोलन में पायी जाती थीं और कम्युनिस्टों ने आम जनता का विश्वास व्यापक पैमाने पर अर्जित किया और जनता में अपनी जड़ें गहराई तक जमा लीं।

इस प्रकार कामरेड किम इल सुंग ने लम्बे क्रान्तिकारी संघर्ष के दौरान कम्युनिस्ट पार्टी की स्थापना के लिए पूरी संगठनात्मक तथा सैद्धान्तिक तैयारियां कीं और कोरियाई क्रान्ति के और अधिक विकास के लिए क्रान्तिकारी शक्तियों का दृढ़तासे निर्माण किया।

कामरेड किम इल सुंग ने कोरियाई क्रान्ति में महान ज्वार पैदा करने के लिए सशस्त्र संघर्ष को मातृभूमि तक फैला दिया ।

उन दिनों जापानी-साम्राज्यवादी आक्रामक एक ओर हमारे राष्ट्र का गला घोटने के लिए जी तोड़ कोशिशें कर रहे थे, जिसके लिए कहानियां गढ़ी जाती थीं कि 'जापान और कोरिया एक हैं' या 'जापानी और कोरियाई एक पूर्वजों के वंशज हैं' और दूसरी ओर वे घोर फासिस्ट दमन व लूट-पाट के जरिए कोरिया को महाद्वीप के विरुद्ध अपने आक्रमण के लिए 'रसद पहुंचाने का अड्डा' और 'ठोस पिछवाड़ा' का प्रयत्न कर रहे थे ।

कामरेड किम इल सुंग ने मार्च, १९३७ में सगांग सम्मेलन बुलाया जहां उन्होंने रणनीति संबंधी यह दिशा प्रस्तुत की कि कोरियाई जन क्रांतिकारी सेना की टुकड़ियां स्वदेश में भीतर तक पहुंचा दी जायं ताकि जापानी साम्राज्यवादी आक्रामकों पर जोरदार चोट की जा सके, साथ ही कोरिया के हर नागरिक के दिल में विजय के प्रति विश्वास भर दिया जाय और कोरिया की जनता के दिलों में, जो अंधकार में पड़ी थी, संघर्ष की मशाल जला दी जाय ।

४ जून, १९३७ को कामरेड किम इल सुंग कोरियाई जन क्रान्तिकारी सेना की मुख्य टुकड़ी का खुद नेतृत्व करते हुए बोछन्बो पहुंचे जो शत्रु के लिए रणनीति महत्व का स्थान था ।

शत्रु ने जिस सीमा सुरक्षा पांत को 'लौह दीवार' कह कर जोर-शोर से प्रचार किया था उसे तोड़ कर कामरेड किम इल सुंग के नेतृत्व में कोरिया की जन क्रान्तिकारी सेना की टुकड़ियों ने बोछन्बो पर हमला बोल दिया और शत्रु पर प्रतिहिंसा की आग बरसाते हुए जापानी साम्राज्यवादियों की प्रशासन व्यवस्था का सफाया कर दिया ।

बोछन्बो में रात का आकाश क्रान्ति की जिन क्रुद्ध लपटों से भड़क उठा उससे लुटेरे जापानी साम्राज्यवादियों के दिल में डर पैदा हो गया और आक्रोश से पूर्ण कोरिया की जनता के राष्ट्रीय विद्रोह का मार्ग आलोकित हो उठा ।

बोछन्बो युद्ध के महान ऐतिहासिक महत्व की चर्चा करते हुए कामरेड किम इल सुंग ने कहा :

"महत्व इस बात का नहीं कि हमने कुछ जापानियों को मारा, बल्कि महत्व इसमें है कि बोन्छन्बो की लड़ाई ने आशा की क्रांतिकारी किरणें फैलायीं, जिससे यह विश्वास पैदा हो चला कि कोरिया की जनता मरी नहीं, बल्कि जिन्दा है और यदि वह युद्ध के मैदान में उतर आये तो जापानी साम्राज्यवाद को पीटा जा सकता है। बोछन्बो की लड़ाई
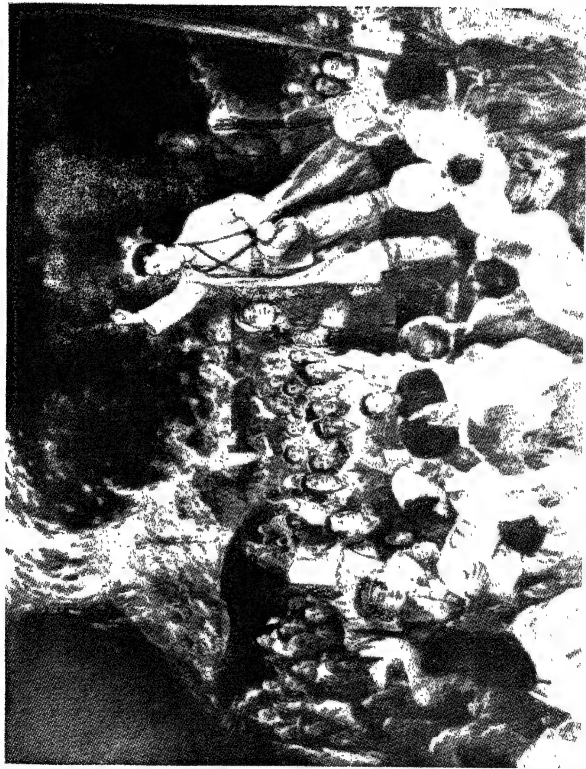
पोचोन्बो लड़ाई के दौरान जनता के उत्साहपूर्ण स्वागत का उत्तर देते हुए, कामरेड किम इल सुंग ने उनसे देश की मुक्ति और स्वाधीनता के लिए एक होकर उठ खड़े होने का आवाहन किया

ने सारे संसार को बता दिया कि कोरिया की जनता जापानी साम्राज्यवाद का प्रतिरोध करती है, वह इस विचार को नहीं मानती कि कोरिया और जापान एक हैं। जापानी और कोरियाई एक वंशज नहीं हैं, चीन पर हमला करने में कोरियावासी जापानियों का साथ नहीं देते। कोरियाई जनता न तो अपनी मातृभाषा छोड़ेगी, न अपने उपनाम जापानियों की तरह बनायेगी। कोरियाई जनता मृत नहीं, जीवित है, और यदि वह लड़े तो जापानियों को परास्त कर सकती है। बोछन्बो युद्ध का यही रणनीतिक महत्व है। इसी में बोछन्बो युद्ध का ऐतिहासिक महत्व निहित है।"

कामरेड किम इल सुंग की व्यक्तिगत कमान में कोरियाई जन क्रान्तिकारी सेना की मातृभूमि की ओर प्रगति और बोछन्बो में विजय की सूचना देश के कोने-कोने में बिजली की तरह फैल गयी जिससे जनता में भयानक संघर्ष की आग धधक उठी।

बोछन्बो युद्ध की विजय ने कोरियाई जन में पितृभूमि की पुनर्स्थापना के प्रति एक अडिग विश्वास भर दिया और हमारे देश में जापान-विरोधी राष्ट्रीय मुक्ति संघर्ष को सशक्त बढ़ावा मिला।

उन दिनों तक में जबकि जापानी साम्राज्यवाद का दमन अपनी पराकाष्ठा पर था, कोरियाई जनता ने राष्ट्र के सूर्य कामरेड किम इल सुंग को अपना सर्वस्व समर्पित कर दिया, जिन्होंने अपने कंधे पर पितृभूमि और राष्ट्र के भविष्य को उठाये हुए हमेशा जनता को विजय की ओर आगे बढ़ाया और कोरियाई जनता अपने नेता के बताये हुए क्रान्तिकारी मार्ग पर निरन्तर बढ़ने लगी, इस सुदृढ़ विश्वास के साथ कि जब तक कामरेड किम इल सुंग का विवेकशील नेतृत्व हासिल है और जब तक उनके नेतृत्व में कोरिया की जनक्रान्तिकारी सेना का वीरतापूर्ण संघर्ष जारी है, कोरियाई क्रान्ति की विजय निश्चित है। जनता ने जापान-विरोधी सशस्त्र संघर्ष के आवाहन पर सारे देश में जापान-विरोधी संघर्ष को और अधिक तेज कर दिया।

अन्ततः, जुलाई १९३७ में पूरे महाद्वीप पर हमले की लम्बी तैयारियों के बाद जापानी साम्राज्यवाद ने चीन-जापान युद्ध छेड़ दिया और कोरियाई जनता की क्रूर लूट और दमन का चक्र और तीव्र कर दिया।

इस नयी परिस्थिति का सामना करने के लिए कामरेड किम इल सुंग ने पहले से तैयार की हुई अपनी शानदार रणनीति के अनुसार कोरियाई जनक्रांतिकारी सेना के दस्तों की कार्यनीतियों को देश में दूर-दूर फैला कर और सशस्त्र संघर्ष को सर्वांग लोक-व्यापी प्रतिरोध युद्ध से जोड़ कर जापानी साम्राज्यवादियों पर और गहरी चोटें करने का संघर्ष तेजी से बढ़ाया।

अगस्त, १६३७ में कोरियाई जन क्रान्तिकारी सेना के कमाण्डरों और सैनिकों की मीटिंग में और इसी वर्ष सितम्बर में कोरियाई जनता के नाम एक अपील में कामरेड किम इल सुंग ने नयी परिस्थिति का सामना करने के लिए और अधिक सक्रिय संघर्ष की कार्यनीति प्रस्तुत की।

जापानी साम्राज्यवाद की राजनीतिक, आर्थिक और सैनिक कमजोरी का वैज्ञानिक विश्लेषण प्रस्तुत करते हुए कामरेड किम इल सुंग ने कहा कि यदि जापानी साम्राज्यवाद ने आक्रामक युद्ध का विस्तार किया तो देश और विदेश—दोनों जगह व्यापक जापान-विरोधी क्रांतिकारी शक्तियां उसका डट कर प्रतिरोध करेंगी और इस प्रकार अन्ततः जापानी साम्राज्यवाद का अन्त तेजी से निकट आ जायगा।

इसके अलावा, कामरेड किम इल सुंग ने बताया कि मौजूदा परिस्थिति में पितृभूमि की मुक्ति को निकट लाना सम्भव हो गया है और उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि कोरियाई जन क्रान्तिकारी सेना अपना सशस्त्र संघर्ष शत्रु के मोर्चे के पीछे तेज करे, ताकि जापानी साम्राज्यवादी आक्रामकों को और भारी राजनीतिक तथा सैनिक चोट पहुंचायी जा सके। साथ ही उन्होंने जोर दिया कि और अधिक राजनीतिक कार्यकर्ताओं को देश के अन्दर दूर-दूर तक भेजा जाय ताकि वे जापान विरोधी राष्ट्रीय मोर्चा आन्दोलन को विस्तृत करते रहें और जापानी साम्राज्यवादियों के आक्रामक युद्ध के विरुद्ध व्यापक पैमाने पर तोड़फोड़ और हड़तालों के संघर्ष को संगठित और विकसित करते रहें। खासतौर से उन्होंने अपील की कि सर्वतोमुखी जन प्रतिरोध युद्ध की तैयारी शुरू कर देनी चाहिएं ताकि कोरिया की जन क्रान्तिकारी सेना की सैनिक गतिविधियों के साथ तालमेल बैठा कर जनता देश के तमाम हिस्सों में एक निर्णायक संघर्ष छेड़ सके।

कामरेड किम इल सुंग की अपील ने कोरियाई जन क्रान्तिकारी सेना तथा समस्त जनता को एक नये संघर्ष के लिए आन्दोलित कर दिया।

कामरेड किम इल सुंग द्वारा प्रस्तुत कार्यनीति के अनुसार कोरिया की जन क्रान्तिकारी सेना की टुकड़ियों ने शत्रु को पीछे से तंग करने की जबर्दस्त कार्यवाहियां शुरू कीं, मसलन, शहरों पर हमला करना, शत्रु के सैनिक संस्थानों को नष्ट करना और इस तरह शत्रु पर घातक आघात किये। अनेक राजनीतिक कार्यकर्ताओं को देश के दूर-दराज हिस्सों में महत्वपूर्ण सैनिक अड्डों, युद्ध-उद्योग जिलों तथा अन्य विभिन्न क्षेत्रों में भेजा गया ताकि वे पितृभूमि पुनर्स्थापना सभा के संगठन का विस्तार करें और कामरेड किम इल सुंग की अपील पर अमल के लिए संघर्ष में आम जनता को संगठित और लामबंद करें।

इस प्रकार कामरेड किम इल सुंग की लड़ाकू अपील के उत्तर में एक ओर मजदूरों

ने बड़े पैमाने पर जोशीली और लगातार हड़तालें और जापानी साम्राज्यवाद के आक्रामक युद्ध के विरुद्ध तोड़फोड़ करके युद्ध रसद की सप्लाई को तथा सैनिक संस्थानों के विस्तार की योजनाओं को छिन्न-भिन्न कर दिया और दूसरी ओर किसानों ने जापानी साम्राज्यवादियों की जबरिया लूट-खसोट के विरुद्ध काश्तकारी हकों के लिए तथा लगान में कमी के लिए जोरदार संघर्ष छेड़ दिया ।

उस समय जीवन के हर क्षेत्र के लोगों का संघर्ष जापानविरोधी राष्ट्रीय संयुक्त मोर्चे के झंडे के नीचे एकताबद्ध और संगठित था, वे संघर्ष जापानी साम्राज्यवाद की युद्ध नीति के विरुद्ध संघर्ष के साथ घनिष्ठ रूप से संयुक्त होकर तेजी से आगे बढ़ रहे थे ।

जैसे-जैसे जापान-विरोधी सशस्त्र संघर्ष के इर्द-गिर्द कोरियाई जनता का जापान-विरोधी क्रान्तिकारी संघर्ष राष्ट्रव्यापी पैमाने पर उग्रतर बनता गया, जापानी साम्राज्यवादी घोर निराश हो चले ।

जापानी साम्राज्यवादियों ने एक ओर सीमाओं पर सुरक्षा पंक्ति सुदृढ़ की और 'राष्ट्रीय सुरक्षा के प्रतिरक्षण' के लिए अपनी शक्तियां केन्द्रीभूत कीं, दूसरी ओर कोरिया की जन क्रान्तिकारी सेना के विरुद्ध 'दंड अभियान' तेज कर दिया ताकि जापान-विरोधी सशस्त्र संघर्ष का दमन किया जा सके और पीछे से जो हमले हो रहे हैं उन्हें रोका जा सके । साथ ही, जापानी साम्राज्यवादी बदहवास होकर सीमावर्ती क्षेत्रों तथा हमारे देश में स्थापित ए० आर० एफ० की शाखाओं को नष्ट करने लगे तथा अनगिनत कम्युनिस्टों और क्रान्तिकारी लोगों को गिरफ्तार करके जेलों में भरने लगे ।

जापानी साम्राज्यवादियों के बराबर तेज होते हुए बदनीयत हमलों का सामना करने के लिए कामरेड किम इल सुंग ने कोरिया की जन क्रान्तिकारी सेना की मुख्य टुकड़ी का खुद नेतृत्व करते हुए हर जगह अप्रत्याशित आक्रमण करके शत्रु पर घातक चोटें कीं और उन्होंने कोरिया की जन क्रान्तिकारी सेना के छोटे-छोटे दस्तों को सीमावर्ती क्षेत्रों में तथा स्वदेश में दूर-दूर तक भेजने का प्रबन्ध किया ताकि उन क्षेत्रों के क्रांतिकारी संगठनों को बचाया और पुनर्गठित किया जा सके तथा उनके नेतृत्व को मजबूत बनाया जा सके ।

१९३७ की सर्दियों में कामरेड किम इल सुंग ने आगे बढ़ते हुए शत्रु को दिग्भ्रमित कर दिया और कोरिया की जन क्रान्तिकारी सेना के दस्तों के शीतकालीन राजनीतिक तथा सैनिक अध्ययन के प्रबन्ध और निर्देशन में लग गये ।

'कोरियाई कम्युनिस्टों के कर्तव्य' नामक अपनी पुस्तक द्वारा कामरेड किम इल सुंग ने छापामारों के सामने कोरियाई क्रान्ति के चरित्र और कर्त्तव्य की स्पष्ट समझ पेश की और उन्हें जुछे की नीति पर डटे रह कर लड़ना सिखाया ।

पिछले शीत अभियानों में करारी हार खानी पड़ी है, तथा सैनिक कार्यवाहियों के साथ जनता में राजनीतिक गतिविधियां भी और अधिक तेज करनी है। और उन्होंने सिखाया कि जब शत्रु बैक्दुसान पर्वत के दक्षिण-पश्चिम क्षेत्र में अपनी शक्ति केन्द्रित करे तो कोरियाई जन क्रांतिकारी सेना को बैक्दुसान पर्वत के उत्तर पूर्व क्षेत्र में तेजी से पहुंच जाना चाहिए और इस प्रकार शत्रु को मतिभ्रम में डाल कर अपनी राजनीतिक तथा सैनिक गतिविधियों के लिए अनुकल वातावरण तैयार करना चाहिए।

कामरेड किम इल सुंग की यह दिशा एक ऐसा सक्रिय कदम सिद्ध हुआ जो परिस्थिति के बारे में उनके बुद्धियुक्त फैसले तथा असाधारण क्रांतिकारी गतिमयता के आधार पर उठाया गया था और जो ऐसा सर्वाधिक बुद्धिमत्तापूर्ण कदम था जिसने कोरियाई क्रांति के निरन्तर विकास की गारन्टी कर दी।

सम्मेलन के बाद कामरेड किम इल सुंग ने कोरिया की जन क्रांतिकारी सेना की प्रमुख टुकड़ी का नेतृत्व स्वयं कर के, बड़े पैमाने पर आक्रमण शुरू कर के समस्त सीमावर्ती क्षेत्रों में शत्रु पर एक के बाद एक आघात करते हुए स्वदेश में सुदूर भीतर तक पहुंचने के लिये बड़े पैमान पर कार्यवाहियां करने की तैयारी की।

मई १६३६ में कामरेड किम इल सुंग ने व्यक्तिगत रूप से प्रमुख टुकड़ी का नेतृत्व करके आमरोक–गांग नदी पार की और मुसान क्षेत्र पर हमला करने के लिए अभियान शुरू किये।

कामरेड किम इल सुंग की व्यक्तिगत कमान के अधीन कोरिया की जन क्रांतिकारी सेना ने मुसान क्षेत्र में एक हफ्ते का अभियान चलाया और कई युद्धों में, जिनमें तेहोंगदान युद्ध भी शामिल है, जापानी साम्राज्यवादी आक्रामकों पर घनघोर चोटें कीं और साथ ही जनता में जोरदार राजनीतिक कार्य भी चलाया।

कामरेड किम इल सुंग की व्यक्तिगत कमान में कोरिया की जन क्रांतिकारी सेना की मुसान क्षेत्र पर चढ़ाई और युद्धों में विजय से जनता में नयी शक्ति भर उठी, जो शत्रु के दमन और क्रांतिकारी संगठनों के छिन्न-भिन्न होने से अस्थायी रूप से हतोत्साहित हो गयी थी।

मुसान क्षेत्र में बोछन्बो युद्ध जैसी कोरियाई जन क्रांतिकारी सेना की प्रगति एक ऐतिहासिक अभियान था जिसने कोरियाई जनता को जापान-विरोधी संघर्ष में और तेजी के साथ शामिल किया।

बुक्दैजंजा सम्मेलन के बाद मुसान क्षेत्र में कोरिया की जन क्रांतिकारी सेना के महान अभियान और आक्रमण की कार्यवाहियों में विजय ने कोरिया की जन क्रांतिकारी

सेना के विरुद्ध जापानी साम्राज्यवादियों की छल-कपट भरी लफ्फाजी को धूल में मिला दिया, क्रांति की विजय में जनता की ग्रास्था ग्रौर मजबूत कर दी तथा उन्हें जापानी साम्राज्यवाद के विरुद्ध ठोस संघर्ष के लिए तत्पर कर दिया।

मुसान क्षेत्र में विजयी युद्ध के बाद कामरेड किम इल सुंग ने ग्रपनी पूर्वनिश्चित कार्यनीति के ग्रनुसार कोरिया की जन क्रांतिकारी सेना की प्रमुख शक्ति का बैक्दुसान पर्वत के उत्तरपूर्व क्षेत्र के ग्रभियान में नेतृत्व किया ग्रौर दृढ़तापूर्वक पहल ग्रपने हाथ में लेकर शत्रु पर एक के बाद एक जोरदार हमले किये। सैनिक गतिविधियों के मंच पर तीव्र परिवर्तन सबसे बुद्धिमत्तापूर्ण कदम था, जो उस समय की परिवर्तनशील क्रांतिकारी स्थिति तथा स्वयं छापामार संघर्ष के विकास के सर्वथा ग्रनुकूल था।

जब कामरेड किम इल सुंग कोरिया की जन क्रांतिकारी सेना के दस्तों का खुद नेतृत्व करते हुए यकायक बैक्दु-सान पर्वत के उत्तरपूर्व में पहुंचे ग्रौर जोरदार ढंग से राजनीतिक ग्रौर सैनिक गतिविधियां शुरू कीं तो शत्रु का दिमाग चकरा गया, इधर उधर ग्रस्त–व्यस्त होकर भागने लगा ग्रौर जल्दी से एक 'दंड कमान' की स्थापना कर डाली तथा 'दक्षिणपूर्व क्षेत्र में सुरक्षा के लिए सफाई ग्रभियान' के नारे के ग्रंतर्गत 'घेरा बन्दी' ग्रौर 'नाके बन्दी' द्वारा ग्रौर हजारों की संख्या में भारी फौजें जमा कर के कोरिया की जन क्रांतिकारी सेना के दस्तों पर हमले शुरू कर दिये।

शत्रु के ग्रभियान का सामना करने के लिए कामरेड किम इल सुंग ने नयी छापामार कार्यनीति ग्रपनायी।

शत्रु की घृणित साजिश को भलीभांति समझ कर कामरेड किम इल सुंग ने सैनिक दस्तों के संचरण का मार्ग पहले से तय किया, फिर बड़े-बड़े दस्तों का वृत्ताकार संचरण कराया—यह कभी न रुकने वाला संचरण किसी क्षेत्र विशेष की सीमाग्रों के भीतर नहीं होता था, बल्कि उसका फैलाव बैक्दु-सान पर्वत के समूचे क्षेत्र में होता था, जिससे सैनिक-गतिविधियों से समय रहते शत्रु की साजिश नाकाम की जा सकी, उसे निष्क्रिय बनाया जा सका ग्रौर उसका नाश किया जा सका।

कामरेड किम इल सुंग की विलक्षण छापामार कार्यनीति का ही सुफल था कि कोरिया की जन क्रांतिकारी सेना ने शत्रु पर एक के बाद एक गहरी चोटें कीं ग्रौर शत्रु को हर बार परेशानियों ग्रौर भय से कंपा दिया।

ग्रपनी श्रेष्ठ कार्यनीति के द्वारा शत्रु सेनाग्रों का सफाया करने के लिये सैनिक गतिविधियां चलाते हुए कामरेड किम इल सुंग ने राजनीतिक कार्यकर्ताग्रों के छोटे-छोटे दल सीमावर्ती क्षेत्रों में तथा स्वदेश के सुदूर स्थित प्रदेशों में भेजे ग्रौर वहां जापान-विरोधी

राष्ट्रीय संयुक्त मोर्चा आन्दोलन को सतत विकसित करने तथा क्रांतिकारी संगठनों की पुनर्स्थापना और विस्तार के कार्य का पथ-प्रदर्शन किया।

शत्रु की सख्त निगरानी के बावजूद राजनीतिक कार्यकर्ताओं के छोटे-छोटे दलों ने हर तरह का खतरा उठा कर जापान-विरोधी राष्ट्रीय संयुक्त मोर्चा संबंधी कामरेड किम इल सुंग की कार्यनीति पर अमल करने का सुदृढ़ संघर्ष छेड़ा तथा मुसान क्षेत्र और बैक्दु-सान के उत्तरपूर्व के विस्तृत क्षेत्रों में अनगिनत लोगों को एकजुट करते हुए क्रांतिकारी संगठनों का पुनर्निर्माण किया और उनका विस्तार किया।

जापान-विरोधी सशस्त्र संघर्ष के पूरे दौर में कामरेड किम इल सुंग ने निरन्तर बदलती और विकसित होती परिस्थिति तथा क्रांतिकारी कर्त्तव्य को पूरा करने में उठ खड़ी आवश्यकताओं की वजह से सैनिक गतिविधियों के लिए क्षेत्रों को चुनना, विभिन्न प्रकार के छापामार अड्डों की स्थापना, छापामार संघर्ष के स्वरूपों को चुनना, छापामारों की पांतों का विकास आदि सशस्त्र संघर्ष की राजनीतिक तथा कार्यनीतिक समस्याओं को नये रूप से पेश किया और इस को अभूतपूर्व रीति से हल किया, इस प्रकार उन्होंने छापामार युद्ध के सिद्धांत को शानदार तरीके से संपूर्ण बनाया।

जापान-विरोधी सशस्त्र संघर्ष के दौरान भयानक युद्धों की परिस्थितियों में भी कामरेड किम इल सुंग क्रांतिकारी सैनिकों की शक्ति बढ़ाने की दृष्टि से छापामारों के राजनीतिक तथा सैनिक अध्ययन पर बहुत ध्यान देते थे।

कामरेड किम इल सुंग ने निम्नलिखित आशय की बात सिखायी :

—छापामारों को कम्युनिस्ट विचारों से लैस किये बगैर लम्बे तथा कठिन जापान–विरोधी सशस्त्र संघर्ष में विजय प्राप्त करना असंभव है। अतः छापामारों का सैनिक प्रशिक्षण तो तेज करना ही चाहिए, साथ ही उनकी सैद्धांतिक शिक्षा भी मजबूत करनी चाहिए–

"अध्ययन क्रांतिकारियों का प्रथम और सर्वोपरि कर्त्तव्य है", इस लड़ाकू नारे को पेश कर कामरेड किम इल सुंग ने छापामारों में सर्वांगतः क्रांतिकारी विश्व-दृष्टिकोण स्थापित करने के लिए उन्हें जुछे के क्रांतिकारी विचार तथा मार्क्सवादी-लेनिनवादी सिद्धान्त से लैस किया और उन्हें ऐसे अदम्य क्रांतिकारी सिपाही, ऐसे अडिग कम्युनिस्ट बनाने के लिए शिक्षित तथा दीक्षित करने में तन–मन लगा दिया जो व्यावहारिक संघर्ष के साथ राजनीतिक तथा फौजी अध्ययन को घनिष्ठ रूप से संयुक्त करके राजनीतिक तथा विचारधारात्मक रूप से तथा फौजी कौशल में सिद्धहस्त हों। छापामारों को अध्ययन में सहायता करने के लिए स्वयं भाषण देते और देर रात गये तक सामूहिक या व्यक्तिगत

रूप से उनके अध्ययन का पथ-प्रदर्शन करते रहते। और उन्होंने छापामारों की शिक्षा के लिए स्वयं कई पुस्तकें लिखी और शिक्षा-सामग्री तैयार की।

कामरेड किम इल सुंग की शिक्षाओं को ध्यान में रखते हुए छापामारों ने युद्धों के बीच अवकाश में हर परिस्थिति और संभावना का इस्तेमाल करके अपने नेता के क्रांतिकारी विचारों तथा दिशाओं, रणनीति तथा कार्यनीति का लड़ाकू लगन से अध्ययन किया और अपने को लैस किया। इस प्रकार जापान-विरोधी छापामार कामरेड किम इल सुंग के क्रांतिकारी विचारों से पूरी तरह लैस हुए और राजनीतिक तथा सैनिक दृष्टि से मजबूती से तैयार हो गये कि वे कामरेड किम इल सुंग ने क्रांति का जो रास्ता दिखाया उस पर जोरदार संघर्ष करते हुए आगे बढ़ सकें, किसी भी मुश्किल में उनके पग डगमगाने न पायें, क्रांति की विजय में उनकी पूर्ण आस्था हुई और वे अपने नेता के चारों ओर एकता के सूत्र में बंध गये।

कामरेड किम इल सुंग अपनी क्रांतिकारी गतिविधियों के प्रथम दिनों से ही सर्वहारा के अन्तर्राष्ट्रीयतावाद के प्रति वफादार रहे।

कामरेड किम इल सुंग ने उस समय भी सर्वहारा के अन्तर्राष्ट्रीयतावाद का झंडा ऊंचा रखा जब जापानी साम्राज्यवादियों ने १९३९ की गर्मियों में नोमोन्हान पर सशस्त्र हमला किया और उन्होंने शत्रु पर पीछे से लगातार हमले किये ताकि उसकी सैनिक गतिविधियों को आगे बढ़ने से रोका जा सके।

कामरेड किम इल सुंग ने सर्वहारा अन्तर्राष्ट्रीयतावादी एकजुटता को और सुदृढ़ किया, सोवियत संघ की शस्त्रों से रक्षा की, चीनी जनता को उसके क्रांतिकारी संघर्ष में सक्रिय समर्थन दिया, गुलाम तथा औपनिवेशिक देशों की जनता के संघर्ष को जोरदार ढंग से प्रोत्साहन दिया और इस प्रकार विश्व क्रांति के विकास में बड़ा योगदान किया।

कोरिया की जन क्रांतिकारी सेना की कमान अपने हाथ में लेकर बैक्दुसान पर्वत के उत्तर पूर्व क्षेत्रों में राजनीतिक तथा सैनिक गतिविधियों को तेज करके कामरेड किम इल सुंग ने कोरिया की जनता के जापान विरोधी क्रांतिकारी आन्दोलन को विजय के मार्ग पर आगे बढ़ाया, जिसका केन्द्र जापान विरोधी सशस्त्र संघर्ष था।

पांचवें दशक के प्रारंभ होते ही कामरेड किम इल सुंग ने पितृभूमि की मुक्ति तथा जापान-विरोधी सशस्त्र संघर्ष की अंतिम विजय की कार्यनीति प्रस्तुत की और उसे पूरा करने के लिए संघर्ष किया।

फासिस्ट देशों ने आक्रामक युद्ध की जो आग सुलगायी थी वह अब द्वितीय विश्व-युद्ध के रूप में फैल गयी। उस समय जापानी-साम्राज्यवादियों ने चीनी-जापानी युद्ध

को जल्दी से खत्म करने की चालें चलाने के साथ खुले ग्राम सोवियत संघ ग्रौर दक्षिणपूर्व एशिया के विरुद्ध ग्रपने ग्राक्रामक इरादों को स्पष्ट किया। इस मदमाती महत्वाकांक्षा को पूरा करने के लिए जापानी साम्राज्यवादियों ने कोरिया ग्रौर मंचूरिया को ग्रपने "ठोस पिछले मोर्चे" के रूप में बदलने के लिए हर संभव उपाय ग्रौर साधन का उपयोग किया। जापानी-साम्राज्यवादियों ने सबसे पहले ग्रपनी पूरी शक्ति को कोरिया की जन क्रांतिकारी सेना का "पूर्ण विनाश" करने में केन्द्रित किया जो उन्हें पीछे से गंभीर खतरा पहुंचा रही थी। शत्रु ने 'दण्ड ग्रभियान' में दस लाख की गुग्रानदोंग सेना को तथा कोरिया में स्थित जापानी साम्राज्यवादी ग्राक्रामक सेना की डिवीजनों को झोंक दिया।

इस नयी परिस्थिति में संघर्ष की कौन सी कार्यनीति ग्रपनायी जाय, यह एक ऐसा गंभीर प्रश्न बन गया जिस पर जापान-विरोधी सशस्त्र संघर्ष ग्रौर समूची कोरियाई क्रांति का भविष्य निर्भर करता था।

कामरेड किम इल सुंग ने ग्रगस्त १६४० में सोहालबारयोंग सम्मेलन बुलाया ग्रौर वर्तमान परिस्थिति तथा शत्रु ग्रौर हमारे बीच शक्ति के सन्तुलन के वैज्ञानिक विश्ले-षण के ग्राधार पर जापान-विरोधी सशस्त्र संघर्ष में निर्णायक विजय के लिए एक नयी रणनीति निर्धारित की।

कामरेड किम इल सुंग ने देश ग्रौर विदेश में परिस्थितियों की प्रवृत्तियों ग्रौर संभावनाग्रों की गहरी समीक्षा करके इस तथ्य की वैज्ञानिक ढंग से व्याख्या की कि जापानी साम्राज्यवाद समेत फासिस्ट देशों का पतन ग्रनिवार्य है ग्रौर कोरिया की क्रांति की विजय शीघ्र ही ग्रवश्यम्भावी है।

परिस्थिति के विकास की रोशनी में कामरेड किम इल सुंग ने क्रांति के भविष्य को पहले ही देख लिया ग्रौर यह सिखाया कि ग्रनेक राजनीतिक तथा सैनिक कार्यकर्ताग्रों का प्रशिक्षण होना चाहिए, बड़े-बड़े दस्तों की कार्यवाहियों को छोटे-दस्तों की कार्य-वाहियों में तबदील करना चाहिए ग्रौर भूमिगत संघर्ष को तेज कर देना चाहिए ताकि जापानी साम्राज्यवादी ग्राक्रामकों पर एक के बाद एक भारी हमले किये जा सकें ग्रौर इसी के साथ राष्ट्रव्यापी विद्रोह की तैयारी करनी चाहिए।

कामरेड किम इल सुंग ने जो नयी कार्यनीति प्रस्तुत की उसमें परिस्थिति के विकास की ग्रावश्यकताएं बिल्कुल सही ढंग से परिलक्षित होती थीं, वह कार्यनीति बहुत ही सकारात्मक ग्रौर जूछे उन्मुख दिया थी जिसका उद्देश्य यह था कि छापामार युद्ध में राजनीतिक, सैद्धान्तिक तथा कार्यनीतिक श्रेष्ठता बनाये रख कर शत्रु पर निरंतर हमले किये जायं ग्रौर साथ ही कोरियाई जनता की क्रांतिकारी सेनाग्रों को मजबूत बनाते हुए
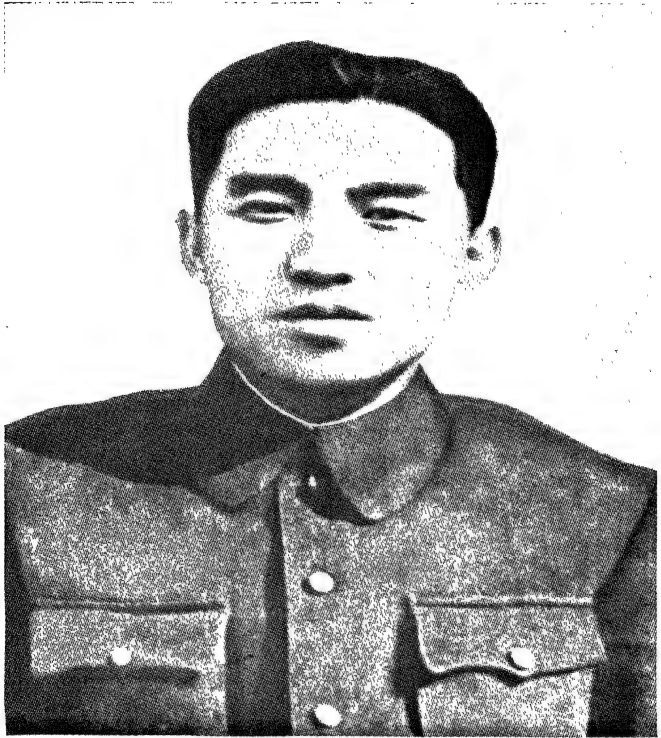
कामरेड किम इल सुंग : जापान विरोधी सशस्त्र संघर्ष के दिनों में

उस घड़ी की मुश्किल परिस्थितियों को सक्रियता से पार कर लिया जाय और जापान-विरोधी सशस्त्र संघर्ष को केन्द्र बनाकर उसके इर्द-गिर्द कोरियाई क्रांति की अंतिम विजय की गारंटी की जाय।

कामरेड किम इल सुंग की रणनीति संबंधी दिशा कितनी सही थी, इसकी स्पष्ट पुष्टि आने वाले क्रांतिकारी अमल से हुई।

कामरेड किम इल सुंग ने सिखाया कि कोरिया की जन क्रांतिकारी सेना को चाहिए कि वह अपनी सैनिक गतिविधियां ज्यादा खामोशी से चलाये, जनता में संगठनात्मक तथा राजनीतिक कार्य को गोपनीय रखे और उन्होंने सुझाव दिया कि सैनिक और राजनीतिक गतिविधियों के लिए अस्थायी गुप्त अड्डे बनाये जायं।

सम्मेलन के बाद कामरेड किम इल सुंग ने कोरिया की जन क्रांतिकारी सेना को छोटी-छोटी दर्जनों टुकड़ियों में बांट दिया, उन्हें विभिन्न क्षेत्रों में भेजा और उनकी गतिविधियों का पथ-निर्देश करने लगे।

१९४१ के वसन्त में कामरेड किम इल सुंग एक टुकड़ी की कमान संभाले हुए आन्दो और यन्गील काउण्टी क्षेत्रों में पहुंचे, दूसरे स्थानों पर भेजी गयी टुकड़ियों के कामों का निर्देश करते रहे और उसके साथ ही खुद उन्होंने मिसाल पेश की कि टुकड़ियों को फौजी कार्यवाहियां कैसे करनी चाहिएं।

कामरेड किम इल सुंग के निर्देश पर कोरिया की जन क्रांतिकारी सेना की टुकड़ियों ने विभिन्न स्थानों पर अस्थायी गुप्त अड्डे बना लिये जहां सैनिक गतिविधियां चालू थीं और इन अड्डों पर भरोसा करते हुए शत्रु पर अचानक हमले किये, उसका सफाया किया और आम जनता में तेजी से राजनीतिक कार्य का संचालन किया।

जून १९४१ में कोरिया की जन क्रांतिकारी सेना के कमाण्डरों और सैनिकों के सामने बोलते हुए कामरेड किम इल सुंग ने एक बार फिर निकट भविष्य के लिए कार्य पद्धति स्पष्ट की ताकि देश और विदेश में तेजी से बदलती हुई परिस्थिति का सामना किया जा सके।

अपने भाषण में कामरेड किम इल सुंग ने घरेलू और विदेशी परिस्थिति का विश्लेषण किया और फिर सिखाया कि परिस्थिति जितनी ही पेचीदा और मुश्किल बनती जाती है, हमें अपने हर काम में जुछे का पूर्णतया पालन करते हुए क्रांति की विजय में अपना विश्वास दृढ़ करते जाना चाहिए तथा सैनिक और राजनीतिक गतिविधियों को और तेज करना चाहिए ताकि देश की मुक्ति की महान घटना चरितार्थ हो और कोरियाई जनता की क्रांतिकारी सेनाओं का आधार सुदृढ़ हो।

कामरेड किम इल सुंग की सीखों को सिर आंखों पर लगाये हुए सैनिक टुकड़ियों के सदस्यों ने विजय में पूर्ण विश्वास के साथ राष्ट्रव्यापी पैमाने पर तेज सैनिक तथा राज-नीतिक कार्यवाहियां कीं।

कामरेड किम इल सुंग के पथ-प्रदर्शन में छापामार टुकड़ियों ने अपने सैनिक अभियान तीव्र कर दिये। छोटी-छोटी असंख्य टुकड़ियों ने उंगी, राजिन, छंगजिन, हामहुंग, प्योंग्यांग, वानसात, सिओल, इंछन, बुसान और देश के दूसरे अनेक हिस्सों में पहले से कहीं अधिक तीव्रता से अपनी गतिविधियां चलायीं।

जापानी साम्राज्यवादियों की सख्त निगरानी के बावजूद कोरिया की जनक्रांति-कारी सेना की टुकड़ियों और छोटे-छोटे दलों ने शत्रु पर जोरदार हमले किये, अनेक स्थानों पर रेलवे, पुल, शस्त्रागार नष्ट किये और आने वाली फैसलाकुन जंगों की आशा में सैनिक टोह संबंधी गतिविधियां तेज कर दीं।

इसी बीच उन्होंने छिन्न-भिन्न क्रांतिकारी संगठनों को व्यवस्थित किया, नये संगठन बनाये और उनका विस्तार किया, तथा मजदूरों और किसानों समेत जनता के व्यापक हिस्सों में कामरेड किम इल सुंग की विचारधारा और क्रांतिकारी नीतियों को प्रचारित किया और समझाया तथा इस प्रकार आम जनता में क्रांति की विजय के प्रति पूर्ण आस्था पैदा की तथा जापान-विरोधी, युद्ध विरोधी संघर्ष के प्रति जनता को जागरूक किया।

कोरिया की जन क्रांतिकारी सेना की टुकड़ियों और राजनीतिक कार्यकर्ताओं के दलों की ठोस गतिविधियों को श्रेय था कि चिर-विजयी, लोह संकल्पशक्ति वाले, गौरव-शाली कमाण्डर कामरेड किम इल सुंग की प्रसिद्धि, जापान-विरोधी सशस्त्र संघर्ष में युद्ध के विलक्षण विजय परिणामों के समाचारों के साथ, वैक्दू सान पर्वत से लेकर जेजू-दो द्वीप तक, देश के कोने-कोने में फैल गयी।

जापानी साम्राज्यवादी शासन के सबसे अंधकारमय दिनों में कोरियाई जनता ने अपने महान नेता कामरेड किम इल सुंग पर अपनी समस्त आशाएं और अपेक्षाएं लगा कर जापानी साम्राज्यवादियों की लूट, जबरिया सैनिक सेवा और अनिवार्य भर्ती के खिलाफ हड़तालों, तोड़-फोड़ तथा अन्य अनेक तरीकों से जापान-विरोधी संघर्ष को बहादुरी से चलाया। उन दिनों जापान-विरोधी सशस्त्र संघर्ष में शामिल होना व्यापक रूप में जन आन्दोलन बन गया।

खासतौर से मजदूर वर्ग तथा युवकों और छात्रों ने गुप्त संगठन और सशस्त्र विद्रोह की तैयारी तेज कर दी ताकि वे निर्णायक घड़ी में कामरेड किम इल सुंग के नेतृत्व में कोरिया की जन क्रांतिकारी सेना का साथ दे सकें।

देश की जनता के हर वर्ग ने जो जापान-विरोधी संघर्ष छेड़ रखा था उस सबकी जड़ें कोरिया की जनता के महान नेता कामरेड किम इल सुंग के प्रति उनकी अनन्य आस्था और आशा में गहराई से जमी थीं और यह एक ऐसा संघर्ष था जिसमें जनता इस दृढ़ विश्वास के साथ उमड़ उठी थी कि चूंकि कोरिया की क्रांति का नेतृत्व महान नेता कामरेड किम इल सुंग के हाथों में है इसलिए कोरिया जल्द ही आजाद हो जायगा।

इस प्रकार जापानी साम्राज्यवाद का विनाश और निकट लाने तथा कामरेड किम इल सुंग के नेतृत्व में पितृभूमि की मुक्ति उपलब्ध करने के लिए कोरियाई जनता की क्रांतिकारी भावना और ऊंचे स्तर तक पहुंची और महान क्रांतिकारी घटना को शीघ्र लाने के लिए सभी तैयारियां शुरू कर दी गयीं।

उस समय अपना अन्त निकट देख कर जापानी साम्राज्यवादियों ने जापान-विरोधी सशस्त्र संघर्ष की महान शक्ति को रोकने की यथा शक्ति पूरी कोशिश की, लेकिन वे किसी प्रकार भी इसे रोक न सके और न किसी भी बदहवास कोशिश से जनता के क्रांतिकारी लड़ाकू संकल्प को ही तोड़ सके।

कामरेड किम इल सुंग ने छोटी-छोटी टुकड़ियों की गतिविधियों का पथ-प्रदर्शन करने के साथ-साथ कोरिया की जन क्रांतिकारी सेनाकी मुख्य शक्ति के सैनिक और राज-नीतिक प्रशिक्षण के निर्देशन के लिए अपनी शक्ति लगा दी।

कोरिया की जन क्रांतिकारी सेना के लोगों को विकास की प्रवृत्तियों की दृष्टि से जुछे के विचारों से मजबूती से लैस कर कामरेड किम इल सुंग ने आने वाले नये संघर्ष का पूर्वानुमान करके उन्हें ऐसे भरोसे के स्तम्भों के रूप में शिक्षित-प्रशिक्षित किया कि वे पार्टी तथा राज्य के निर्माण को संभाल सकें।

कामरेड किम इल सुंग ने निम्नलिखित बातें कहीं :

——अपनी क्रांति दूसरों के भरोसे चलाने की आशा हमें कतई छोड़ देनी चाहिए। जो भी हो, हमारी क्रांति हमारे ही प्रयासों से पूरी होनी चाहिए।

इसीमें हमारे जापान-विरोधी सशस्त्र संघर्ष का महान महत्व निहित है। ऐसा करके ही हम आने वाली महान घटना को सगर्व मना सकेंगे और मुक्त पितृभूमि में अपने भरोसे जनवादी निर्माण कार्य भी चला सकेंगे।——

कामरेड किम इल सुंग की शिक्षाओं का पालन करते हुए कोरिया की जन क्रांति-कारी सेना के सभी अफसरों और सैनिकों ने उनके जुछे संबंधी महान विचार से अपने को पूर्णतया लैस करने में और अपने को राजनीतिक तथा सैद्धांतिक दृष्टि से और भी सुदृढ़ करने के लिए मार्क्सवाद-लेनिनवाद का अध्ययन करने में अपनी समूची शक्ति लगा दी।

और कामरेड किम इल सुंग ने अपने कार्यकर्त्ताओं को सैनिक तकनीक में पक्का बनाया, उनकी सैनिक शिक्षा को और आगे बढ़ाया ताकि वे युद्ध की आधुनिक प्रणाली से परिचित हो सकें और इस प्रकार उन्हें बड़े पैमाने के आधुनिक युद्ध में कौशलपूर्वक सैनिक कार्यवाहियां संचालित करने में नेतृत्व दे सकने वाला सुयोग्य फौजी कमाण्डर बनाया ।

सितम्बर १९४४ में कोरिया की जन क्रांतिकारी सेना के सभी सदस्यों के सामने कामरेड किम इल सुंग ने अपने भाषण में सोहाल्बारयोंग सम्मेलन के बाद की सैनिक तथा राजनीतिक गतिविधियों का सारतत्व प्रस्तुत किया और यह स्पष्ट किया कि मौजूदा परिस्थिति में कोरिया के कम्युनिस्टों के तात्कालिक रण-कर्तव्य क्या हैं ।

उन दिनों जापानी साम्राज्यवादी अपने आक्रामक युद्ध के प्रमुख मोर्चे पर पूर्णतया अरक्षात्मक बना दिये गये थे। और उनकी अन्त-घड़ी धीरे-धीरे निकट आ रही थी ।

कामरेड किम इल सुंग ने वर्तमान परिस्थितियों को दूरदर्शिता से समझा-परखा और उनका सामना करने के लिए छोटी टुकड़ियों की गतिविधियां तथा प्रमुख सेना का सैनिक और राजनीतिक प्रशिक्षण तीव्र कर दिया। इसी बीच उन्होंने सिखाया कि कोरिया की जनता की जापान-विरोधी शक्तियों की आम लामबंदी करके पितृभूमि की मुक्ति के लिए तैयारियां शुरू होनी चाहिएं और पार्टी की स्थापना, सरकार की स्थापना और भविष्य में मुक्त देश में जनवादी निर्माण को सफल बनाने के सिलसिले में सर्वांग संपन्न तैयारियां होनी चाहिएं।

कामरेड किम इल सुंग का ऐतिहासिक भाषण कई अर्थों में बहुत महत्वपूर्ण सिद्ध हुआ। उसने क्रांति की आन्तरिक शक्तियों को सुदृढ़ किया, जापान–विरोधी सशस्त्र संघर्ष की विजय की गारंटी की, मुक्ति के बाद देश के निर्माण के लिए राजनीतिक तथा विचार-धारात्मक तैयारियां कीं और क्रांति की रीढ़ शक्ति को सुदृढ़ किया।

जापान-विरोधी सशस्त्र संघर्ष की अंतिम विजय निकट देख कर कामरेड किम इल सुंग ने उसके लिए तैयारियों में अपनी समूची शक्ति लगा दी।

कामरेड किम इल सुंग के नेतृत्व में कोरिया की जनक्रांतिकारी सेना का टुकड़ी-अभियान सक्रिय हुआ, साधारण और विशेष सैनिकों को सैनिक तथा राजनीतिक प्रशिक्षण दिया गया और अभियान योजनाओं और सैन्य निर्माण संबंधी अंतिम युद्ध की तैयारियां होने लगीं। इसी बीच जापान-विरोधी जन-संघर्ष तेजी से आगे बढ़ा और राष्ट्रव्यापी विद्रोह की तैयारियां होने लगीं ताकि जनता कोरिया की जन क्रांतिकारी सेना की सैनिक कार्यवाहियों में शामिल हो जाय।

९ अगस्त, १९४५ को कामरेड किम इल सुंग ने देश को मुक्त कराने के पवित्र युद्ध के लिए कोरिया की जन-क्रांतिकारी सेना की टुकड़ियों को आम लामबंदी का आदेश दिया।

कामरेड किम इल सुंग की अभियान योजनाओं के अनुसार कोरिया की जन क्रांतिकारी सेना ने सोवियत सेनाओं के साथ कंधे से कंधा मिला कर जापानी साम्राज्यवाद को पराजित करने के अन्तिम और निर्णायक युद्ध में हिस्सा लिया।

कोरिया की जन क्रांतिकारी सेना के दस्ते राजिन, छंगजिन, नामयांग और उंगी की ओर क्रमशः बढ़े और अनेक क्षेत्रों को मुक्त किया और जनता के संघर्ष के साथ तालमेल रख कर जापानी साम्राज्यवाद की कुआंगदोंग सेना को और कोरिया में स्थित उसकी सेनाओं को, जहां कहीं भी उन्होंने प्रतिरोध किया—कुचल दिया और उनका सफाया कर दिया।

१५ वर्ष पर्यन्त जो गौरवशाली जापान-विरोधी सशस्त्र संघर्ष कामरेड किम इल सुंग के नेतृत्व में संगठित तथा संचालित हुआ, वह अन्त में ऐतिहासिक विजय से मंडित हुआ और हमारा देश लगभग ४० वर्ष तक जापानी साम्राज्यवादी शासन में रहने के बाद मुक्त हुआ।

कामरेड किम इल सुंग के नेतृत्व में जो जापान–विरोधी सशस्त्र संघर्ष संगठित और संचालित हुआ वह एक गर्व योग्य संघर्ष था जिसमें कोरियाई जनता का क्रांतिकारी उत्साह कसौटी पर खरा उतरा और राष्ट्र के सम्मान की रक्षा की गयी, यह एक महान क्रांतिकारी संघर्ष था जिसमें देश की आजादी और जनता की मुक्ति हासिल हुई और यह एक सबसे शानदार क्रांतिकारी संघर्ष था जिसके दौरान ऐसी अमर उपलब्धियां अर्जित हुईं जो हमारी क्रांति की विजय के लिए शक्ति का स्रोत हैं और रहेंगी।

जापान-विरोधी सशस्त्र संघर्ष की शानदार जीत क्रांति के महान नेता कामरेड किम इल सुंग के प्रतिभाशाली नेतृत्व का सुफल है जो कि एक महान मार्क्सवादी-लेनिनवादी तथा अद्वितीय देशभक्त हैं।

जापान-विरोधी राष्ट्रीय मुक्ति संघर्ष तथा हमारे देश के कम्युनिस्ट आन्दोलन के इतिहास में पहली बार जुछे की प्रतिष्ठा करके कामरेड किम इल सुंग ने कोरिया की क्रांति की यथार्थ परिस्थितियों में रचनात्मक ढंग से लागू करके मार्क्सवाद-लेनिनवाद का विकास किया, क्रांतिकारी दिशा, रणनीति और कार्यनीति को मौलिक ढंग से प्रस्तुत किया

और उन पर अमल करने के लिए संघर्ष का सही ढंग से संगठन और नेतृत्व किया।

पहली बार कामरेड किम इल सुंग ने ही कोरिया की यथार्थ स्थिति में मार्क्सवाद-लेनिनवाद को लागू किया और राष्ट्रीय स्वतंत्रता तथा सामाजिक मुक्ति के लिए छेड़े गये कोरियाई जनता के क्रांतिकारी संघर्ष से कम्युनिस्ट आन्दोलन इतने घनिष्ठ रूप से जुड़ गया कि वे एक ही धारा के रूप में विकसित हुए।

जापान-विरोधी सशस्त्र संघर्ष को संगठित कर और विजयी बनाकर कामरेड किम इल सुंग ने जापानी साम्राज्यवादियों को हमेशा के लिए परास्त कर दिया, हमारे देश में शक्ति संतुलन को क्रांति के पक्ष में मोड़ दिया और कोरियाई क्रांति की आन्तरिक क्रांतिकारी शक्तियों का दृढ़ता से निर्माण किया।

जापान-विरोधी सशस्त्र संघर्ष के जरिए कामरेड किम इल सुंग ने सिद्ध किया कि सिर से पैर तक अस्त्रों से लैस प्रतिक्रांतिकारियों के विरुद्ध साम्राज्य-विरोधी राष्ट्रीय मुक्ति संघर्ष में अंतिम विजय तक पहुंचने का एकमात्र सही रास्ता है—सशस्त्र संघर्ष।

जापान-विरोधी सशस्त्र संघर्ष की अग्नि-परीक्षाओं में कामरेड किम इल सुंग ने हमारे देश में शानदार क्रांतिकारी परम्पराएं कायम कीं जो समाजवादी और साम्यवादी क्रांति की ऐतिहासिक जड़ें हैं।

कामरेड किम इल सुंग ने जो क्रांतिकारी परम्पराएं स्थापित कीं उनमें उनके महान क्रांतिकारी विचार, उनके नेतृत्व की विवेकशीलता, उनकी श्रेष्ठ रणनीति और कार्यनीति, उनके महान गुण, उनका अटल संकल्प तथा क्रांतिकारी सिद्धान्तों के प्रति निष्ठा, उनका क्रांतिकारी कार्य तरीका तथा जनप्रिय कार्यशैली मूर्तिमान हैं।

जापान-विरोधी संघर्ष के वर्षों में कामरेड किम इल सुंग द्वारा उपलब्ध विचारा-धारात्मक व्यवस्था, संघर्ष भावना, कार्य-पद्धति तथा शैली और संघर्ष के अनुभव और सिद्धियां जिन क्रांतिकारी परम्पराओं का प्रमुख सारतत्व बनीं, वे परम्पराएं अत्यन्त मूल्यवान क्रांतिकारी निधि और ठोस सम्पदा तथा कोरियाई क्रांति का मूल हैं जिनको हमारी पार्टी तथा जनता को सर्वतोमुखी रूप में पीढ़ी-दर-पीढ़ी आगे बढ़ाना चाहिए।

कामरेड किम इल सुंग ने जो गौरवशाली क्रांतिकारी परम्पराएं कायम कीं उन्हीं के फलस्वरूप कोरिया की जनता मुक्ति के बाद पेचीदा परिस्थितियों में भी बिना देर किये पार्टी तथा जन-सरकार की स्थापना कर सकी, जनवादी सुधार सफलतापूर्वक लागू कर सकी, जापान-विरोधी क्रांतिकारी योद्धाओं को आधार बना कर कोरियाई जन सेना की स्थापना कर सकी, थोड़े समय में क्रांतिकारी जनवादी आधार को राजनीतिक, आर्थिक

तथा सैनिक दृष्टि से चट्टान की तरह मजबूत बना सकी, विश्व साम्राज्यवाद के सरगना अमरीकी साम्राज्यवाद को पराजित करके पितृभूमि–मुक्ति युद्ध में महान विजय अर्जित कर सकी तथा समाजवादी क्रांति को आगे बढ़ा सकी और समाजवाद की रचना कर सकी।

अपने विशिष्ट नेतृत्व तथा विलक्षण रणनीति और कार्यनीति के कारण, जिनकी वजह से जापान–विरोधी सशस्त्र संघर्ष विजयी हुआ, और जनता के प्रति अपनी असीम लगन तथा उदात्त गुणों के कारण कामरेड किम इल सुंग ने जनता में असंदिग्ध प्रतिष्ठा तथा गहन विश्वास अर्जित किया और कोरिया के महान नेता के रूप में समस्त कोरियाई जनता का अपार सम्मान और विश्वास प्राप्त किया।

जिस समय से कामरेड किम इल सुंग ने जापान–विरोधी सशस्त्र संघर्ष के संगठन की तैयारियां शुरू कीं तभी से कोरियाई जनता उनको राष्ट्र–सूर्य मानकर और यह विश्वास लेकर कि जब तक उनका दूरदर्शी नेतृत्व प्राप्त है तब तक क्रांति निश्चय ही विजयी होगी, अपने नेता के इर्द–गिर्द घनिष्ठ रूप से बद्ध होकर लड़ती रही।

४

जापानी साम्राज्यवादियों को पराजित करके कामरेड किम इल सुंग अपनी विजय यात्राओं के बाद स्वदेश लौटे।

कोरिया की जनता ने अपने सम्मानित तथा परमप्रिय नेता कामरेड किम इल सुंग के विजयी होकर लौटने का जोरदार स्वागत किया जिनके प्रति वह बहुत दिनों से सम्मान की भावना संजोये हुए थी।

जिस असीम उत्साह और खुशी के साथ सारा देश उनका स्वागत कर रहा था, उसके बीच प्योंग्यांग में एक लाख से भी अधिक मेहनतकशों ने कामरेड किम इल सुंग के विजयी होकर लौटने पर स्वागत करने के लिए विशाल जन सभा का आयोजन किया।

स्वागत करने वाले जन–समूह के सामने बोलते हुए कामरेड किम इल सुंग ने निम्नलिखित अपील की :

"हमारे राष्ट्र ने ३६ वर्ष पुराने अंधेरे जीवन से छुटकारा प्राप्त कर लिया और उसने मुक्ति और स्वाधीनता जीती और तीन हजार री की धरती हमारी मातृभूमि अब आशा की किरणों से उसी तरह जगमगा रही है जैसे प्रातः कालीन सूर्य।

"हम कोरिया राष्ट्रवासियों के लिए समय आ गया है कि अब हम अपनी शक्ति को एकजुट करें और एक नये, जनवादी देश की रचना में आगे बढ़ें। इस महान उद्देश्य को कोई एक पार्टी या व्यक्ति नहीं पूरा कर सकता। वह सारी जनता, जो देश को, राष्ट्र को, और जनवाद को प्यार करती है, एकजुट होकर आगे आये और हमारे इस देश को एक जनवादी, प्रभुसत्ता संपन्न तथा स्वाधीन राज्य बनाये तथा इसके लिए श्रम, ज्ञान या धन, जो भी दे सकती है, देने का प्रयास करे।"

राष्ट्रीय मुक्ति पर उत्पन्न भावावेश और उत्तेजना के साथ कोरिया की जनता ने सम्मानित तथा लोकप्रिय नेता कामरेड किम इल सुंग के आवाहन को हृदय से लगाया और वह जापानी साम्राज्यवाद के शासक यंत्र को मटियामेट करती हुई, जापान–समर्थक

प्योंगयांग नगर में एक विशाल जन सभा, जो कामरेड किम इल सुंग के विजयपूर्वक पितृभूमि लौटने के स्वागत में आयोजित की गई ।

तत्वों तथा राष्ट्र-द्रोहियों का पर्दाफाश तथा उनकी निन्दा करती हुई, देश में नये इतिहास की रचना के लिए आगे बढ़ चली।

मुक्ति के तुरन्त बाद हमारे देश में एक निहायत पेचीदा परिस्थिति पैदा हो चली और हमारी जनता के सामने नयी गंभीर मुश्किलें आ खड़ी हुई। जापानी साम्राज्यवादियों की पराजय के बाद अमरीकी साम्राज्यवादियों ने, जो बहुत पहले से हमारे देश पर अपने आक्रमण का घिनौना पंजा फैला रहे थे, दक्षिण कोरिया पर गैर कानूनी ढंग से कब्जा कर लिया और जी-जान से इस कोशिश में लग गय कि समूचा कोरिया उनका उपनिवेश बन जाय तथा एशिया पर उनके आक्रमण के लिए सैनिक अड्डा बन जाय तथा साथ ही, उन्होंने देशभक्त जनवादी शक्तियों को कुचलना और प्रतिक्रियावादी शक्तियों को साथ लेकर अपने पांव जमाना शुरू कर दिया। देश-विदेश के प्रतिक्रियावादी दक्षिण कोरिया में जमा हो गये और जो पहले जापानी साम्राज्यवाद के भाड़े के टट्टू थे, वे अब अमरीकी साम्राज्यवाद के दलाल बन कर कोरिया की जनता के विरुद्ध छलपूर्ण चालें चलने लगे। ऐसे ही समय गुटबाजों, दक्षिणपंथियों तथा वामपंथियों ने अपने-अपने दरबों से निकल कर 'देशभक्त' या 'क्रांतिकारी' का वेश धारण कर लिया और क्रांतिकारी शक्तियों में फूट डालने की कोशिश में लग गये तथा उन्होंने यह कह कर कि देश में पूंजीवादी गणतंत्र राज्य की स्थापना होनी चाहिए या कि समाजवादी क्रांति करनी चाहिए, जनता में मतिभ्रम फैलाना शुरू किया, जो नये देश के निर्माण के लिए उठ खड़ी हुई थी।

कौन सा रास्ता अपनाया जाय ? जनता भी समझ नहीं पा रही थी। क्रांति के भविष्य के लिए यह जरूरी था कि जनता को संघर्ष का सही मार्ग सुझाया जाय, देशभक्त जनवादी शक्तियों को संगठित और एकजुट किया जाय ताकि देश उस सही मार्ग पर आगे बढ़ सके।

कामरेड किम इल सुंग ने इसी परिस्थिति का वैज्ञानिक विश्लेषण किया और सिखाया कि कम्युनिस्ट पांतों को तेजी से पुनर्गठित होना है तथा आम जनता को एकजुट होना है और इस आधार पर साम्राज्यवादी अवशेषों की शक्तियों तथा सामन्ती शक्तियों के विरुद्ध सर्वांग जनवादी क्रांति पूरी करने के लिए संघर्ष छड़ना है। और एक एकताबद्ध, स्वतंत्र जनवादी राज्य का निर्माण करना है। सर्वोपरि उन्होंने यह सिखाया कि देश के एकीकरण और क्रांति की देश व्यापी विजय का मार्ग तभी सफलतापूर्वक खोला जा सकता है जबकि अमरीकी साम्राज्यवादियों की आक्रामक नीति को देखते हुए देश के उत्तरी आधे भाग में एक शक्तिशाली क्रांतिकारी अड्डा बना लिया जाय।

कामरेड किम इल सुंग द्वारा प्रतिपादित यह क्रांतिकारी कार्यनीति पितृभूमि

पुनर्स्थापना सभा के दस सूत्री कार्यक्रम का, तथा जापान–विरोधी सशस्त्र संघर्ष के दिनों में प्रस्तुत क्रांतिकारी अड्डों की स्थापना से संबंधित कार्यनीति का, नयी परिस्थिति के अनुकूल, विकसित रूप था जो कोरियाई क्रांति की देशव्यापी विजय उपलब्ध करने के लिए अत्यन्त सुसंगत नीति थी।

खासतौर से उन्होंने जनवादी अड्डा तैयार करने की जो कार्यनीति रखी वह अमरीकी आक्रामक नीति को दृष्टि में रखते हुए देश के उत्तरी आधे भाग को एक सशक्त क्रांतिकारी अड्ड के रूप में निर्मित करने, अमरीकी साम्राज्यवादियों को देश से भगा देने और क्रांतिकारी अड्डे के बल पर स्वयं कोरिया की जनता द्वारा क्रांति की राष्ट्रव्यापी विजय प्राप्त करने के लिए जुछे की सुदृढ़ क्रांतिकारी कार्यनीति थी और सर्वांगत: साम्राज्यवाद–विरोधी, अमरीका–विरोधी कार्यनीति थी।

कामरेड किम इल सुंग ने जो क्रांतिकारी कार्यनीति प्रस्तुत की उसमें कोरिया की जनता को एक नये देश की स्थापना के लिए स्पष्ट निर्देश मिला और उस लक्ष्य को पूरा करने के लिए वह जोर–शोर से संघर्ष में कूद पड़ी।

क्रांतिकारी कार्यनीति पेश करने के बाद कामरेड किम इल सुंग ने सबसे पहले मार्क्सवादी–लेनिनवादी पार्टी की स्थापना का काम शुरू किया, ताकि पेचीदा परिस्थिति को सुलझाया जा सके और क्रांति को विजयी बनाया जा सके।

पार्टी, यानी क्रांति के जनरल स्टाफ की स्थापना, से ही मजदूर वर्ग समेत आम जनता एक सूत्र में बांधी जा सकती थी और देश के एकीकरण तथा क्रांति की राष्ट्रव्यापी विजय के लिए एक सशक्त क्रांतिकारी शक्ति का निर्माण हो सकता था और देश के उत्तरी भाग में जल्द ही एक सशक्त क्रांतिकारी जनवादी अड्डा स्थापित हो सकता था। पार्टी की स्थापना का प्रश्न वास्तव में कोरियाई क्रांति के भाग्य का विकास करने वाली निर्णायक समस्या बन गया था।

पार्टी की स्थापना के लिये अनक मुश्किलों का सामना करना पड़ा था।

दक्षिण कोरिया में अमरीकी साम्राज्यवादी देश–विदेश से प्रतिक्रियावादियों को जमा करके अमरीकी–समर्थक प्रतिक्रियावादी पार्टियों को जन्म देने और क्रांतिकारी शक्तियों को कुचलने के लिए बदहवास होकर भाग–दौड़ कर रहे थे। दूसरी ओर, दक्षिण कोरिया में गुटबाज, जो कम्युनिस्ट पांतों में घुस आये थे, धोखाधड़ी और साजिशों के जरिए 'कम्युनिस्ट पार्टी' की तख्ती लगाकर अपनी–अपनी पार्टियां खड़ी कर रहे थे, हालांकि जनता में उनकी कोई जड़ नहीं थी और फिर वे अपने–अपने दलाल विभिन्न क्षेत्रों में भेज कर अपने–अपने गुट के लिए समर्थन जुटाने में व्यस्त हो गये। उसी समय उत्तर कोरिया

में गुटबाजों तथा प्रांतीयता वादियों ने अपने-अपने गुट के पांव जमाने की कोशिशें शुरू कीं और वे 'नेतृत्व' अपने हाथ में लेने की होड़ में जुट गये।

ऐसी पेचीदा और उलझी परिस्थिति में पार्टी की स्थापना का प्रश्न सिर्फ कामरेड किम इल सुंग के जरिए ही हल हो सकता था जिन्होंने लम्बी क्रांति की लपटों के बीच पार्टी की स्थापना का संगठनात्मक और सैद्धांतिक आधार तैयार किया था और जिन्हें कोरिया के कम्युनिस्टों और वहां की जनता का पूर्ण विश्वास और एकदम प्राधिकार प्राप्त था।

कामरेड किम इल सुंग ने लम्बे जापान-विरोधी सशस्त्र संघर्ष की अग्निदीक्षा पाये कम्युनिस्टों को पार्टी का केन्द्र बिन्दु मान कर और पार्टी निर्माण के मार्क्सवादी-लेनिनवादी सिद्धान्त का सख्ती से पालन करते हुए उन सभी कम्युनिस्ट समूहों को पार्टी में शामिल करके, जो विभिन्न स्थानों में सक्रिय थे, एक एकताबद्ध पार्टी की स्थापना की कार्यनीति रखी और उस पर अमल करने का प्रयत्न किया।

अमरीकी साम्राज्यवादियों तथा प्रतिक्रियावादियों की तोड़-फोड़ की चालों और गुटबाजों की फूट डालने वाली कार्यवाहियों पर निर्णायक चोट करते हुए कामरेड किम इल सुंग ने उन क्रांतिकारी योद्धाओं को विभिन्न क्षेत्रों में कम्युनिस्टों को उदारता के साथ पार्टी में भरती करने के लिए भेजा, जिन्हें उन्होंने खुद-जापान-विरोधी सशस्त्र संघर्ष के दौरान व्यक्तिगत रूप से विकसित किया था। और वे खुद अनेक स्थानों पर गये और वहां क्रांति की दिशा तथा पार्टी-स्थापना की नीति को समझाते हुए पार्टी की स्थापना की तैयारी के काम का सावधानी से निर्देशन किया।

तैयारी के काम के आधार पर कामरेड किम इल सुंग ने १० अक्तूबर, १९४५ को प्योंग्यांग में उत्तर कोरिया की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रित संगठनात्मक कमेटी की स्थापना की और संसार को हमारी पार्टी की स्थापना के बारे में सूचित कर दिया जिसने जापान-विरोधी सशस्त्र संघर्ष की शानदार क्रांतिकारी परम्पराएं उत्तराधिकार में प्राप्त कीं।

पार्टी स्थापना की कांग्रेस में कामरेड किम इल सुंग ने पार्टी की राजनीतिक दिशा की व्याख्या की जो मुक्ति के बाद की नई परिस्थिति के अनुकूल पितृभूमि पुनर्स्थापिना सभा के दस-सूत्री कार्यक्रम का ही प्रतिरूप थी।

राजनीतिक दिशा के संदर्भ में कामरेड किम इल सुंग ने जनवादी जन-गणतन्त्र की स्थापना के लिये संघर्ष को बुनियादी कर्तव्य बताया और निम्नलिखित चार सूत्री कार्यक्रम फौरी अमल के लिये पेश किया :

(१) सभी देशभक्त, जनवादी राजनीतिक पार्टियों तथा दलों को शामिल करते हुये संयुक्त जनवादी राष्ट्रीय मोर्चा बना कर व्यापक देशभक्त जनवादी शक्तियों को एकजुट करना, और इस आधार पर ऐसे जनवादी जन गणतंत्र की स्थापना के लिये प्रयास करना जो हमारी पूर्ण राष्ट्रीय स्वाधीनता और प्रभुसत्ता की गारंटी करे।

(२) जापानी साम्राज्यवाद के अवशेषों तथा अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिक्रिया के पिछलगुओं तथा अन्य उन सभी प्रतिक्रियावादी तत्वों का जड़ से उन्मूलन करके, जो जनवादी राज्य के निर्माण के रास्ते में हैं सबसे बड़ी बाधा है, हमारे राष्ट्र को जनवादी दिशाओं में विकसित करने का कार्य सुगम बनाना।

(३) एक अस्थायी संयुक्त अखिल-कोरियाई जनवादी सरकार की स्थापना करने के लिये सर्व प्रथम, हर जगह जनता की सच्ची सत्ता, जन-समितियां, संगठित करके समस्त जनवादी सुधार पूरे करना और ऐसे कारखानों और व्यवसायों तथा सर्वांगत राष्ट्रीय अर्थतंत्र का पुनरुद्धार करना जिन्हें जापानी साम्राज्यवादियों ने नष्ट कर दिया था, और जनता के भौतिक तथा सांस्कृतिक स्तर को ऊंचा उठाने से, एक स्वतंत्र जनवादी राज्य के निर्माण की नींव डालना।

(४) ऊपर बताये गये सभी कामों को पूरा करने के लिये पार्टी को और भी विस्तृत और शक्तिशाली बनाना और आम जनता के सभी हिस्सों को पार्टी के इर्द-गिर्द संगठित तथा गोलबन्द करने के लिये जन-संगठनों के कार्य को आगे बढ़ाना, और उन्हें सक्रिय बनाना।

कामरेड किम इल सुंग ने बताया कि यह पार्टी की ऐसी राजनीतिक दिशा है जिससे अमरीकी साम्राज्यवादियों की आक्रामक नीति को ध्यान में रख कर देश के उत्तरी आधे भाग में एक शक्तिशाली क्रांतिकारी जनवादी आधार की रचना हो सकेगी।

कामरेड किम इल सुंग ने कहा :

"मुक्ति के बाद हमारी पार्टी ने इस को बुनियादी राजनीतिक दिशा के रूप में निर्धारित किया कि उत्तरी कोरिया में जनवादी सुधारों को पूरी तरह कर के जनवादी निर्माण को तीव्र करने से उत्तरी कोरिया में सुदृढ़ जनवादी अड्डे की स्थापना की जाय ताकि भविष्य में कोरियाई राष्ट्र को पूर्णतः मुक्त किया जा सके तथा कोरिया को समृद्ध, शक्तिशाली और प्रभुसत्ता सम्पन्न स्वाधीन राज्य बनाया जा सके।"

पार्टी की स्थापना कांग्रेस में कामरेड किम इल सुंग ने पार्टी को संगठन और विचारधारात्मक दृष्टि से सुदृढ़ बनाने, विचारधारा और संकल्प शक्ति की एकता की गारंटी करने तथा पार्टी कार्यकर्ताओं के तीव्र विकास की गारंटी करने के लिये सही

संगठनात्मक कार्यनीति निर्धारित की ।

कामरेड किम इल सुंग ने पार्टी की जो राजनीतिक तथा संगठनात्मक कार्यनीतियां प्रस्तुत कीं वह पार्टी की राजनीतिक, सैद्धांतिक और संगठनात्मक एकता का आधार बना और उससे हमारी पार्टी की गतिविधियों को संचालित करने की निर्देश दिशा प्राप्त हुई ।

हमारी पार्टी की स्थापना कामरेड किम इल सुंग के अथक संघर्ष का अमूल्य सुफल था जिन्होंने जापान-विरोधी संघर्ष के दिनों से ही क्रांतिकारी पार्टी की स्थापना में अपनी समस्त शक्ति लगा दी थी और पार्टी की स्थापना उनके नेतृत्व में कोरियाई कम्युनिस्टों तथा मजदूर वर्ग के लम्बे संघर्ष की शानदार विजय थी ।

सच्ची मार्क्सवादी-लेनिनवादी पार्टी, हमारी पार्टी की स्थापना एक ऐसी महान घटना थी जो हमारे देश में सम्पूर्णतः कम्युनिस्ट आन्दोलन तथा कोरियाई क्रांति के विकास में एक ऐतिहासिक मोड़ बनी । इसके अलावा हमारी पार्टी की स्थापना अन्तर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट आन्दोलन तथा विश्व क्रांति के विकास में एक महान महत्व की घटना सिद्ध हुई ।

उसी समय से कोरिया के मजदूर वर्ग और जनता इस योग्य बने कि वे मार्क्सवादी-लेनिनवादी पार्टी के नेतृत्व में, उसके हिरावल दस्ते, कोरियाई क्रांति के जनरल स्टाफ, जिसके नेता हैं कामरेड किम इल सुंग, के झंडे के नीचे क्रांति का उज्ज्वल पथ प्रशस्त करते आ रहे हैं ।

पार्टी की स्थापना के बाद कामरेड किम इल सुंग ने पार्टी को संगठनात्मक तथा सैद्धांतिक दृष्टि से मजबूत बनाने और उसके इर्द गिर्द मेहनतकशों को एकजुट करने के लिये अपने प्रयास केन्द्रित किये ।

कामरेड किम इल सुंग ने कहा :

"क्रांतिकारी शक्तियों को निर्मित करना, यानी पार्टी को, क्रांति के जनरल स्टाफ को, सुदृढ़ बनाना और उसके इर्द गिर्द आम जनता को जमा करना क्रांतिकारी संघर्ष और रचनात्मक कार्य-दोनों की विजय की निर्णायक गारंटी है । क्रांतिकारी शक्तियों की रचना में हमारी पार्टी की सुसंगत दिशा यह है कि पार्टी को क्रांति और निर्माण के लिये सक्षम बनाने के लिये जरूरी है कि अमली संघर्ष के जरिये उसे संगठनात्मक और सैद्धांतिक दृष्टि से सुदृढ़ बनाया जाय, जनता को जगाया जाय, और उसे क्रांति के पक्ष में लाया जाय । वर्षों के क्रांतिकारी संघर्ष में तपे कम्युनिस्टों को धुरी मान कर अन्य पार्टी सदस्यों को क्रांतिकारी के रूप में विकसित किया जाय और पार्टी सदस्यों की बुनियादी भमिका के माध्यम से समस्त जनता को क्रांतिकारी भावना से लैस किया जाय ।"

पार्टी को मजबूत बनाने के लिये कामरेड किम इल सुंग ने सबसे पहले पार्टी में

गुटबाजों और क्षेत्रवादियों पर निर्णायक प्रहार किया जो पार्टी की राजनीतिक तथा संगठनात्मक कार्यनीति के रास्ते में रोड़े अटका रहे थे और फिर उन्होंने पार्टी के एकरूप सिद्धांत के आधार पर विचारों और संकल्पों में समूची पार्टी की एकता को सुदृढ़ करने, जनवादी केन्द्रीयता के आधार पर पार्टी का संगठनात्मक अनुशासन सुदृढ़ करने, और पार्टी के गठन को और सुधारने, पार्टी सदस्यों की संख्या में तेजी से वृद्धि करने और साथ ही पार्टी और जनता के बीच सम्बन्धों को मजबूत करने के सम्बन्ध में पथ-प्रदर्शन किया।

नवम्बर और दिसम्बर १९४५ में कामरेड किम इल सुंग के पथ-प्रदर्शन में पार्टी कार्यकारिणी की दूसरी और तीसरी विस्तृत बैठकें हुई जो उन गुटबाजों की चालों को कुचलने में, जो पार्टी की राजनीतिक तथा संगठनात्मक दिशा के रास्ते में रोड़े अटकाते थे, पार्टी की कार्यनीति की रक्षा करने में, पार्टी के संगठनात्मक नेतृत्व की सुव्यवस्था स्थापित करने में, पार्टी-कार्य को सही रास्ते पर ले जाने में, और पार्टी के संघर्षकौशल का स्तर ऊंचा उठाने में युगान्तरकारी महत्व की सिद्ध हुईं। सबसे बड़ी बात तो यह कि कार्यकारिणी कमेटी के तीसरे विस्तृत अधिवेशन ने कामरेड किम इल सुंग की कार्यनीति के अनुसार पार्टी में गलत संगठनात्मक, राजनीतिक और सैद्धांतिक प्रवृत्तियों को दूर करने के लिये दृढ़ कदम उठाये। इससे पार्टी कार्य तथा पार्टी जीवन में महान परिवर्तन आये और पार्टी एक स्वस्थ तथा शक्तिशाली संगठन के रूप में विकसित हो चली।

कार्यकारिणी समिति के तीसरे विस्तृत अधिवेशन में कामरेड किम इल सुंग ने जो आदेश दिये हैं उन्हें पूरा करने के संघर्ष के जरिये फूट-परस्तों तथा क्षेत्रीयतावादियों की चालें और गुटबाजों की सभी उदारपंथी हरकतें धूल में मिल गयीं। पार्टी केन्द्र से नीचे सैल तक एक सुव्यवस्थित संगठनात्मक पार्टी व्यवस्था बन चली, जनवादी केन्द्रीयता का सिद्धांत स्थापित हुआ, पार्टी-एकता सुदृढ़ हुई और पार्टी की जड़ें आम जनता में गहराई तक पहुंचाने में समर्थ हुईं।

कामरेड किम इल सुंग ने पार्टी को संगठनात्मक और सैद्धांतिक दृष्टि से मजबूत करते हुए आम जनता को उसके इर्द गिर्द एकजुट करने की पूरी कोशिश की।

'नये कोरिया तथा संयुक्त राष्ट्रीय मोर्चे के निर्माण का प्रश्न' सम्बन्धी विषय पर अपने भाषण में कामरेड किम इल सुंग ने, जो उन्होंने १३ अक्तूबर, १९४५ को जिम्मेदार सूबा पार्टी कार्यकर्ताओं के बीच दिया, पार्टी की संयुक्त मोर्चा नीति को विस्तार से स्पष्ट किया।

अपने इस भाषण में कामरेड किम इल सुंग ने कोरियाई क्रांति के चरित्र और कर्तव्यों की वैज्ञानिक व्याख्या करते हुये सिखाया कि जनवादी जन गणतंत्र के निर्माण की

दृष्टि से संयुक्त मोर्चा ऐसा बनना चाहिये जिसमें केवल मजदूर वर्ग और किसान ही शामिल न हों, बल्कि राष्ट्रीय पूंजीपतियों समेत सभी देशभक्त जनवादी शक्तियां भी शामिल हों, और उन्होंने उन बुनियादी सिद्धांतों को निश्चित रूप से स्पष्ट किया जिन पर हमारी पार्टी को संयुक्त मोर्चे में अमल करना चाहिये।

उन्होंने सिखाया कि संयुक्त मोर्चे के अन्तर्गत कम्युनिस्ट पार्टी को अपनी स्वतंत्रता अक्षुण्ण रखनी चाहिये तथा उसे निश्चित रूप से अग्रणी भूमिका अदा करनी चाहिये और संयुक्त मोर्चा हर हालत में मजदूर-किसान मैत्री पर आधारित होना चाहिये, जिसका नेतृत्व मजदूर वर्ग को करना चाहिये और राष्ट्रीय पूंजीपतियों समेत अधिकाधिक व्यापक पैमाने पर देशभक्त जनवादी शक्तियों को एकजुट करना चाहिये, फिर भी राष्ट्रीय पूंजीपतियों के साथ मैत्री में एकता और संघर्ष के सिद्धांत का पालन करना चाहिये। और उन्होंने जोर देकर कहा कि प्रतिक्रियावादी शक्तियों के साथ गैर-समझौतावादी सिद्धान्त के अनुसार संयुक्त मोर्चे का निर्माण होना चाहिये।

संयुक्त मोर्चा आन्दोलन से उत्पन्न कर्त्तव्यों को स्पष्ट करते हुये कामरेड किम इल सुंग ने कहा :

"नये जनवादी कोरिया के निर्माण का प्रश्न इस बात पर निर्भर करता है कि हम कम्युनिस्ट पार्टी को सुदृढ़ बनाने में, संयुक्त राष्ट्रीय मोर्चा बनाने में और कम्युनिस्ट पार्टी के इर्द गिर्द आम जनता को एकजुट करने में सफल होते हैं या नहीं। कम्युनिस्ट पार्टी के हर सदस्य को इस बात के लिये सक्रिय रूप से संघर्ष करना चाहिये कि पार्टी की पांतें निरन्तर विस्तृत और मजबूत हों, सहयोगी पार्टियों के साथ हार्दिक सहयोग बढ़े और आम जनता पार्टी की ओर आकर्षित हो।"

"नये कोरिया का निर्माण तथा संयुक्त राष्ट्रीय मोर्चे के बारे में" इस विषय पर कामरेड किम इल सुंग का भाषण एक ऐसा क्लासिक मार्क्सवादी-लेनिनवादी दस्तावेज़ बन गया जिसमें आम जनता को आकर्षित करने के काम से सम्बन्धित सिद्धांत, खास कर संयुक्त मोर्चा आन्दोलन में पैदा कार्यनीति और रणनीति सम्बन्धी समस्याओं का सटीक उत्तर प्राप्त होता है। वह भाषण एक कार्यक्रम सम्बन्धी पथ-निर्देशक और आम जनता का समर्थन जुटाने के लिये पार्टी के हाथ में सशक्त सैद्धांतिक और असली हथियार सिद्ध हुआ।

पार्टी के इर्द गिर्द आम जनता को एकजुट करने की दृष्टि से कामरेड किम इल सुंग ने पार्टी के इर्द गिर्द ऐसे संगठनों की स्थापना के काम का निर्देश किया जैसे मजदूर संघ, किसान संघ, जनवादी युवा लीग, तथा जनवादी महिला संघ और उन्होंने थोड़े ही समय

में लाखों व्यक्तियों को इन संगठनों में जमा कर लिया ।

कम्युनिस्ट युवा लीग को जनवादी युवा लीग के रूप में फिर से गठित करके, नौजवानों की बहुत बड़ी संख्या को पार्टी के इर्द गिर्द जमा करके क्रांतिकारी शक्तियों को सुदृढ़ बनाने का काम विशेष रूप से महत्वपूर्ण सिद्ध हुआ ।

मुक्ति के तुरन्त बाद युवा आन्दोलन बहुत ही पेचीदा था । देश के प्रतिक्रियावादी तत्वों ने हर तरह के प्रतिक्रियावादी युवा संगठनों की स्थापना करके युवा आन्दोलन को तोड़ने की तमाम कोशिश की और हर पार्टी युवकों को अपने झण्डे के नीचे लाने की कोशिश में लग गई । लेकिन कम्युनिस्ट युवा लीग से सम्बन्धित संगठनों के अन्दर युवकों की संख्या कम थी, वह भी निर्धारित सीमा के अन्दर थी ।

ऐसी हालत यदि रहने दी जाती तो युवक आन्दोलन में फूट पड़ ही जाती और बहुत बड़ी संख्या में युवाजन प्रतिक्रियावादियों के चक्कर में आ जाते ।

कामरेड किम इल सुंग ने इस गंभीर परिस्थिति को भली भांति समझ कर क्रांति में तरुणों की स्थिति और भूमिका को साफ साफ ढंग से बताया और यह विवेकशील दिशा प्रस्तुत की कि कम्युनिस्ट युवा लीग को जनवादी युवालीग में पुनर्गठित कर दिया जाय और उसका नारा हो: "देशभक्त युवको, जनवाद के झण्डे के नीचे एक हो ।"

चूंकि कामरेड किम इल सुंग अपनी क्रांतिकारी गतिविधियों के प्रारम्भिक दिनों से ही युवक आन्दोलन संगठित और संचालित करते रहे हैं, इसलिये उस संचित समृद्ध अनुभव के आधार पर, हमारी क्रांति के चरित्र और कर्तव्य के वैज्ञानिक विश्लेषण के आधार पर तथा मुक्ति के बाद जीवन के हर क्षेत्र के युवकों की वर्ग स्थितियों की रोशनी में, तथा हमारे देश के युवा आन्दोलन के विकास की विशिष्टताओं को देख परख कर उन्होंने जो कार्यनीति तैयार की, वह अत्यन्त सही और मौलिक थी, फिर भी गुटबाजों और कट-मुल्लाओं ने, जिन्हें युवक आन्दोलन के बारे में न तो कुछ समझ थी और न अनुभव, इस कार्यनीति के चरितार्थ होने में बाधा डाली और उन्होंने साफ साफ इसे "पार्टी का दक्षिणपंथी भटकाव" या 'युवक आन्दोलन की अवनति' तक कह डाला ।

लेकिन पार्टी विरोधी गुटबाजों की रोड़े अटकाने वाली लगातार चालों के बावजूद उन युवकों का प्रगति-अभियान रुका नहीं जो कामरेड किम इल सुंग की सही कार्यनीति का अनुसरण करने के लिये उठ खड़े हुये थे । कामरेड किम इल सुंग के व्यक्तिगत नेतृत्व में युवा कम्युनिस्ट लीग को जनवादी युवा लीग में पुनर्गठित करने का काम सफलता पूर्वक आगे बढ़ता गया और पार्टी विरोधी गुटबाजों तथा कठमुल्लों की अवरोधक चालें धूल में मिलती गयीं ।

कामरेड किम इल सुंग के महान विचारों के आलोक में तथा उनके द्वारा स्थापित युवा आन्दोलन की विलक्षण क्रांतिकारी परम्पराओं को आगे बढ़ाते हुये, कोरियाई जन-वादी युवा लीग की स्थापना १७ जनवरी, १९४६ को हुई थी। इस प्रकार देशभक्त युवकों के व्यापक अंग सम्मानित और प्रिय नेता कामरेड किम इल सुंग के इर्द गिर्द और भी दृढ़ता के साथ एकजुट हुये और वे एक नये देश के निर्माण के संघर्ष में और सक्रिय रूप से हिस्सा ले सके।

कामरेड किम इल सुंग द्वारा निर्धारित संयुक्त मोर्चा नीति के अनुसार जनवादी राज-नीतिक पार्टियों के साथ कार्य एकता को मजबूत करने का काम भी तेजी से आगे बढ़ा।

इस प्रकार मजदूर वर्ग के नेतृत्व में मजदूर किसान एकता के आधार पर समाज के सभी अंगों को समेटने वाला संयुक्त राष्ट्रीय मोर्चा सफलतापूर्वक चरितार्थ हुआ।

कामरेड किम इल सुंग ने पार्टी की स्थापना करते हुए तथा क्रांतिकारी शक्तियों का निर्माण करते हुए क्रांति के शक्तिशाली अस्त्र, जन सरकार, की स्थापना करने, उसको मजबूत बनाने तथा विकसित करने के काम को भी संगठित किया और उसका निर्देश किया।

अनिवार्य हो गया था कि जापानी साम्राज्यवाद की पुरानी प्रशासन मशीन को नष्ट कर दिया जाय और एक नयी जन सरकार की स्थापना की जाय ताकि शत्रु के प्रति-रोध को दबाया जा सके, समस्त जनता के कल्याण के लिये उसकी जनवादी आजादी और उसके अधिकारों की गारंटी के लिये सामाजिक-आर्थिक सुधारों को सफलतापूर्वक पूरा किया जा सके तथा उत्तरी आधे भाग को कोरिया की क्रांति का शक्तिशाली आधार बनाया जा सके और क्रांति को निरन्तर आगे बढ़ाया जा सके।

लेकिन मुक्ति के तुरन्त बाद जन सरकार की स्थापना का काम भी आसानी से आगे नहीं बढ़ सका। दक्षिण तथा वामपंथी अवसरवादियों ने सच्ची जन सरकार की स्थापना के मार्ग में पूंजीवादी प्रजातंत्र या सर्वहारा के अधिनायकत्व का शोर मचा कर रोड़े अटकाये।

कामरेड किम इल सुंग न दक्षिण और वामपंथी अवसरवादियों की ये चालें कुचल दीं और जन-क्रांतिकारी सरकार की अपनी पूर्वनिर्धारित नीति तथा जापान-विरोधी सशस्त्र संघर्ष के पिछले काल में उसके अमल के संघर्ष में प्राप्त अनुभवों के आधार पर, और मुक्ति के तुरन्त बाद की आन्तरिक परिस्थितियों के वैज्ञानिक विश्लेषण के आधार पर, उन्होंने जन सरकार की स्थापना की समस्या को रचनात्मक रीति से हल किया।

कामरेड किम इल सुंग ने जापानी साम्राज्यवादियों की पुरानी औपनिवेशिक शासन

मशीन को पूर्णतया नष्ट करने और देश के कोने कोने में जन समितियों की स्थापना करने में जनता का नेतृत्व किया और इस आधार पर उन्होंने फरवरी १९४६ को उत्तर कोरिया अस्थायी जन समिति के रूप में एक नये ढंग की सरकार की स्थापना की।

कामरेड किम इल सुंग उत्तर कोरिया अस्थायी जन समिति के अध्यक्ष चुने गये।

उत्तर कोरियाई अस्थायी जन समिति एक ऐसी सरकार थी जिसने शानदार जापान विरोधी सशस्त्र संघर्ष की परम्पराओं को विरासत में हासिल किया था। यह एक ऐसी सच्ची जन सरकार थी जो उस संयुक्त जनवादी राष्ट्रीय मोर्चे पर भरोसा करती थी जिसमें व्यापक साम्राज्यवाद-विरोधी, सामन्त विरोधी जनवादी शक्तियां शामिल थीं और जिसका आधार मजदूर किसान मैत्री था और जिसका नेतृत्व मजदूर वर्ग के हाथों में था। यह एक ऐसी सरकार थी जिसने जनता के जनवादी अधिनायकत्व का दायित्व पूरा किया। इस सरकार का बुनियादी कर्तव्य था साम्राज्य-विरोधी, सामन्त-विरोधी जनवादी क्रांति को पूरा करना और उत्तरी आधे भाग में क्रांतिकारी जनवादी अड्डे का सृजन करना।

कामरेड किम इल सुंग द्वारा नयी सरकार के रूप में उत्तर कोरियाई अस्थायी जन समिति की स्थापना के फलस्वरूप क्रांति का बुनियादी प्रश्न, सत्ता का प्रश्न, हमारे देश में विलक्षण ढंग से हल हो गया और हमारी जनता सत्ता की गर्वीली स्वामिनी बन गयीं जिसने क्रांति और रचना का शक्तिशाली अस्त्र दृढ़ता से अपने हाथ में ले लिया।

उत्तर कोरियाई अस्थायी जन समिति की स्थापना साम्राज्य-विरोधी, सामन्त विरोधी जनवादी क्रांति के कर्तव्य को पूरा करने के लिये तथा उत्तरी आधे भाग में क्रांति-कारी जनवादी अड्डों की रचना करने के लिये और इस आधार पर बाद में एकताबद्ध अखिल कोरिया सरकार की स्थापना करने और राष्ट्रव्यापी क्रांति को विजयी बनाने के लिये महान महत्व की घटना सिद्ध हुई।

कामरेड किम इल सुंग ने ग्यारह सूत्रीय तात्कालिक कर्तव्य और बीस सूत्रीय राज-नीतिक कार्यक्रम की घोषणा की जिसमें पार्टी की राजनीतिक कार्यनीति को ठोस बनाया गया था और जिसमें जन सरकार के कर्तव्य स्पष्ट किये गये थे।

उन कर्तव्यों और राजनैतिक कार्यक्रम में उन्होंने जापानी साम्राज्यवादी अवशेषों और सामंती रीति रिवाजों का सफाया करने, सामाजिक जीवन के सभी क्षेत्रों में जनवादी अधिकारों और स्वतंत्रताओं की गारंटी करने, जनवादी चुनावों द्वारा सरकारी संस्थाओं का ठोस निर्माण करने, भूमि सुधार तथा उद्योगों के राष्ट्रीयकरण समेत तमाम जनवादी सुधार पूरे करने, जनशिक्षा व्यवस्था लागू करने तथा विज्ञान, संस्कृति, कला, स्वास्थ्य

सेवाओं आदि के विकास की सरकार द्वारा गारंटी करने आदि जैसे कर्तव्य पेश किये।

बीस सूत्री राजनैतिक कार्यक्रम एक दूरगामी साम्राज्य विरोधी, सामन्त विरोधी जनवादी क्रांति का कार्यक्रम था और पितृभूमि पुनर्स्थापना सभा के दस सूत्री कार्यक्रम का अगला विकास क्रम था जिसे उन्होंने खुद जापान विरोधी सशस्त्र संघर्ष के दिनों में तैयार किया था, और वह उत्तर तथा दक्षिण कोरिया के एकीकरण, स्वाधीनता तथा देश के जनवादीकरण के लिये समस्त जनता के संघर्ष का झंडा बन गया था।

पार्टी और जन सरकार का पथ प्रदर्शन करते हुये कामरेड किम इल सुंग ने ऐतिहासिक जनवादी सुधारों को सफलतापूर्वक लागू किया। यह हमारे देश के सामाजिक, आर्थिक विकास का न्यायोचित तकाजा था कि जनवादी सुधार लागू किये जायं।

कामरेड किम इल सुंग ने सिखाया कि जमींदारों और दलाल पूंजीपतियों समेत सभी प्रतिक्रियावादी वर्गों के आर्थिक आधार को तभी मिटाया जा सकता है, सामाजिक प्रगति का मार्ग तभी प्रशस्त किया जा सकता है, जन सत्ता की सामाजिक, आर्थिक नींवें तभी पक्की की जा सकती हैं तथा उत्तरी आधे भाग को तभी शक्तिशाली, क्रांतिकारी जनवादी अड्डे के रूप में बदला जा सकता है जब जनवादी सुधार लागू किये जायं।

कामरेड किम इल सुंग ने बताया कि जनवादी सुधारों को लागू करने के लिये भूमि समस्या का हल सबसे प्रमुख कर्तव्य है।

कामरेड किम इल सुंग ने कहा :

"भूमि का प्रश्न वह ज्वलंत प्रश्न है जिसे जनवादी क्रांति के दौर में सबसे पहले पूरा करना है। ग्रामीण क्षेत्रों में जमी प्रतिक्रियावादी शक्तियों के आर्थिक पंजों को उखाड़ फेंकने के लिये, सामन्ती शोषण की जंजीरों से किसानों की मुक्ति के लिये, उनके राजनीतिक जोश को उभारने के लिये तथा देश में समस्त राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक जीवन को जनवादी बनाने के लिये, सामाजिक-राजनीतिक नींवों को सुदृढ़ करने के लिये भूमि समस्या का हल अनिवार्य है। और केवल भूमि सुधार लागू करके ही यह संभव है कि खेतिहर उत्पादक शक्तियों को सामन्ती जंजीरों से छुटकारा दिलाया जाय, उन्हें तेजी से विकसित किया जाय तथा राष्ट्रीय उद्योग और समस्त राष्ट्रीय अर्थतंत्र को तेजी से अपने पांवों पर खड़ा करके, विकास के पथ पर लाया जाय। भूमि समस्या का हल हमारे देश में खास तौर से महत्वपूर्ण इसलिये बन गया है कि हमारा देश एक पिछड़ा औपनिवेशिक, कृषि प्रधान देश रहा है, जिसकी अधिकांश आबादी किसानों की थी।"

मुक्ति के तुरन्त बाद कामरेड किम इल सुंग का जीवन और भी व्यस्त हो गया

लेकिन भूमि समस्या को सही ढ़ंग से हल करने के लिये उन्होंने खुद कई गांवों में जाकर किसानों से दिल खोल कर बातें करके गांवों की परिस्थिति और किसानों की आवश्यकताओं का पूरी तरह ज्ञान प्राप्त किया और वर्ग शक्तियों के संतुलन, भूमि स्वामित्व के संबंध, भूमि के प्रति किसानों की सदियों पुरानी आकांक्षाओं और भविष्य में होने वाले कृषि के समाजवादी सुधार की समस्या को पूरी तरह ध्यान में रख कर यह निर्धारित किया कि किस की भूमि का अपहरण करना चाहिये। और उन्होंने सब से संपूर्ण भूमि सुधार नीति निर्धारित की जिसका सिद्धांत यह है कि जमींदारों की भूमि की मुफ्त जब्ती करके उन किसानों में मुफ्त बांट दें जिन के पास जमीन नहीं है या कम है।

भूमि सुधार लागू करने से पहले कामरेड किम इल सुंग ने किसानों में राजनीतिक कार्य के द्वारा तथा तीन सात के संबंध को लागू कराने के संघर्ष के द्वारा किसानों में राजनीतिक चेतना जगायी और इस आधार पर नारा दिया "जमीन खेती जोतने वाले को" और इस प्रकार भूमि सुधार को लागू करने के लिये किसानों को आन्दोलित कर दिया।

इन तैयारियों के आधार पर कामरेड किम इल सुंग ने ५ मार्च १९४६ को ऐतिहासिक भूमि सुधार कानून की घोषणा की।

समूचे देश के किसानों ने पूरे जोश के साथ भूमि सुधार कानून का समर्थन किया, जिसमें उनकी सदियों पुरानी आशा–आकांक्षायें प्रतिबिम्बित हो रही थीं।

भूमि सुधार को सफलता पूर्वक लागू करने के लिये कामरेड किम इल सुंग ने समस्त पार्टी और पूरी जनता को संगठित तथा आन्दोलित किया। उन्होंने व्यक्तिगत रूप से पार्टी सदस्यों और मजदूर वर्ग के अच्छे कार्यकर्ताओं को ग्रामीण क्षेत्रों में भेजा और किसानों और गरीब किसानों को लेकर ग्रामीण समितियां संगठित कीं तथा मजदूर वर्ग के समर्थन से उन्हें खुद भूमि सुधार लागू करने के लिये प्रेरित किया।

भूमि सुधार घोर वर्ग संघर्ष के बीच लागू हुआ। दक्षिण कोरिया पर कब्जा करके बैठे अमरीकी साम्राज्यवादियों तथा उनके दलालों ने उत्तरी आधे भाग में अनेक जासूसों, आतंकवादियों, विध्वंसकों और तोड़ फोड़ करने वालों को भेज दिया ताकि वे भूमि सुधार को नष्ट कर दें तथा जमींदार और प्रतिक्रियावादी तत्व भूमि सुधार के विरुद्ध अपनी जहरीली साज़िशों के साथ आ खड़े हुये।

कामरेड किम इल सुंग ने पार्टी तथा जन सरकार का पथ निर्देश करके हर कदम पर दुश्मन की तोड़फोड़ वाली साजिशों को नाकाम कर दिया, भूमि सुधार के दौरान उभरे दक्षिणपंथी और वामपंथी भटकावों को दुरुस्त किया और इस महान सुधार को शानदार विजय की चोटी तक पहुंचा दिया।

कामरेड किम इल सुंग के विवेकशील पथ प्रदर्शन के अंतर्गत भूमि सुधार बीस दिन के बहुत ही थोड़े समय में बड़े ही सुसंगत और सफल ढंग से लागू हो गया। इस प्रकार उत्तरी आधे भाग में सामन्ती भूमि स्वामित्व संबंध और शोषण व्यवस्था को मिटा दिया गया और किसान जमीन के मालिक बन गये, जिसके लिये सदियों से वे इच्छुक थे। भूमि सुधार के फलस्वरूप कृषि उत्पादक शक्तियां सामन्ती जंजीरों से मुक्त हो गईं और खेती में तेजी से उन्नति होने से राष्ट्रीय उद्योग की पुनर्स्थापना हो सकी, उसका विकास हो सका और समस्त राष्ट्रीय अर्थ व्यवस्था को तेजी से आगे बढ़ाया जा सका। इसके अलावा ग्रामीण क्षेत्रों में जमी प्रतिक्रियावादी शक्तियों की जड़ों को उखाड़ फेंका गया, किसानों का राजनीतिक जोश तेजी से बढ़ाया जा सका तथा देश की संपूर्ण राजनीतिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक जिन्दगी के जनवादीकरण के लिये सामाजिक राजनीतिक नीवें मजबूत की गयीं। भूमि सुधारों के द्वारा मजदूर–किसान मैत्री और भी सुदृढ़ हुई और गांवों में पार्टी की वर्ग स्थिति और भी मजबूत हुई।

इसमें कोई संदेह नहीं कि कामरेड किम इल सुंग के नेतृत्व में हमारे देश म जो सुधार लागू हुआ, वह पूर्व में अपने ढंग का पहला कदम था जिसे इतने सुन्दर ढ़ंग से संपन्न बनाया गया और वह एक ऐसा प्रकाश–स्तम्भ सिद्ध हुआ जिसने उन देशों के जनगण का मार्ग आलोकित किया, जो सामन्ती शोषण भुगत रहे थे। इस भूमि सुधार ने साम्राज्यवादी तथा सामन्ती शक्तियों के विरुद्ध उन जनताओं के संघर्ष को प्रेरित किया तथा शक्तिशाली बनाया।

भूमि सुधार के बाद कामरेड किम इल सुंग ने १० अगस्त, १९४६ को उद्योगों के राष्ट्रीयकरण संबंधी कानून की घोषणा की।

यह एक ऐतिहासिक कदम था जिससे यह संभव हुआ कि साम्राज्यवादियों तथा देशी प्रतिक्रियावादियों के राजनीतिक और आर्थिक अड्डों को समाप्त किया जा सका, देश के प्रमुख उत्पादन साधनों को राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था के स्वतंत्र विकास तथा समस्त जनता के कल्याण को आगे बढ़ाने के उपयोग में लाया जा सका तथा समाजवादी अर्थव्यवस्था का आधार प्रस्तुत किया जा सका।

उद्योगों के राष्ट्रीयकरण के फलस्वरूप जापानी साम्राज्यवादियों तथा दलाल पंजीपतियों के सभी उद्योगों का राष्ट्रीयकरण कर लिया गया तथा औद्योगिक क्षेत्रों से मुख्यतः समस्त सामाजिक मुसीबतों की जड़ों का सफाया कर दिया गया, उत्पादन के समाजवादी संबंध अस्तित्व में आ गये, राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था को सुनियोजित विकास का आधार मिल गया, मजदूर वग उत्पादन के साधनों का मालिक बन गया तथा उसकी

नतृत्वकारी स्थिति और भी सुदृढ़ बन गयी।

आर्थिक सुधारों के साथ साथ कामरेड किम इल सुंग ने श्रम कानून, स्त्री–पुरुष की समानता कानून आदि की घोषणा की ताकि मेहनतकश जनता के पूर्ण जनवादी अधिकारों तथा स्वतंत्रताओं की गारंटी हो और न्याय प्रशासन और शिक्षा के जनवादीकरण के सिलसिले में अनेक कदम उठाये।

मुक्ति के तुरन्त बाद कामरेड किम इल सुंग ने कहा कि राष्ट्रीय कार्यकर्ताओं के प्रशिक्षण की समस्या नये देश के निर्माण का बुनियादी प्रश्न है—एक ऐसा प्रश्न जिस पर क्रांति तथा रचनात्मक कार्य की सफलता निर्भर है। उन्होंने इस समस्या पर हमेशा गहरा ध्यान दिया और उस काम में विवेकशील पथ-प्रदर्शन प्रदान किया।

कामरेड किम इल सुंग ने सिखाया :

"हमारे राष्ट्र के पुनरुत्थान और देश को एक स्वाधीन जनवादी राज्य बनाने के लिये संस्कृति, कला, विज्ञान, तकनीक आदि क्षेत्रों में हमारे अपने विशेषज्ञ होने चाहियें। दूसरे शब्दों में, हमें ऐसे स्वदेशीय कार्यकर्ताओं की आवश्यकता है जो राजनीति, अर्थ-व्यवस्था और संस्कृति के हर क्षेत्र में हमारे देश का निर्माण और विकास कर सकें।"

कामरेड किम इल सुंग ने राष्ट्रीय कार्यकर्ताओं के प्रशिक्षण की नीति पेश की। यह एक ऐसी साहसपूर्ण नीति थी जिसमें पुराने बुद्धिजीवियों को शिक्षित करना और उन्हें ऐसे रूप में संवारना था कि वे नये समाज की रचना में सक्रिय रूप से भाग ले सकें और इसी के साथ मेहनतकश जनता में से नये राष्ट्रीय कार्यकर्ताओं के प्रशिक्षण का कार्य भी बड़े पैमाने पर शुरू करना था।

मुक्ति के तुरन्त बाद की मुश्किल परिस्थितियों में भी उन्होंने देश में हर कहीं हर स्तर के स्कूलों की स्थापना की, जिनमें कालेज और विशिष्ट स्कूल भी थे ताकि मजदूर और किसान घरों के युवकों को नये बुद्धिजीवी बनाया जा सके। उन्होंने नियमित शिक्षा व्यवस्था के अलावा ऐसी शिक्षा व्यवस्था स्थापित करने के लिये ठोस कदम उठाये जिससे काम के साथ साथ शिक्षा भी चलती रहे, ताकि राष्ट्रीय कार्यकर्ताओं का प्रशिक्षण और भी तीव्र गति से आगे बढ़े।

मुक्ति के तुरन्त बाद कामरेड किम इल संग की प्रत्यक्ष पहल पर और उनके ध्यान देने से, केन्द्रीय पार्टी स्कूल के अतिरिक्त हर स्तर पर, पार्टी स्कूल खुले। केन्द्रीय पार्टी स्कूल, अनेक सामान्य तथा उच्चतर शिक्षा संस्थायें तथा अनेक प्रशिक्षण केन्द्र खोले गये जिनमें किम इल सुंग विश्वविद्यालय भी शामिल था और बहुत बड़ी संख्या में लोगों को प्रशिक्षण दिया जाने लगा। इसके अलावा अनेक कार्यकर्ताओं को अमली क्रांतिकारी कार्यों

के दौरान प्रशिक्षित किया गया।

विशेषकर कामरेड किम इल सुंग ने व्यक्तिगत रूप से मांग्योन्दै क्रांति स्कूल की स्थापना की ताकि उन क्रांतिकारियों के अनाथ बच्चों को क्रांति के स्तंभ के रूप में प्रशिक्षित किया जाय जो जापान-विरोधी सशस्त्र संघर्ष के दिनों में स्वतंत्रता और स्वाधीनता के लिये लड़ते हुये युद्ध में मारे गये थे और उन्होंने उन बच्चों की शिक्षा के लिये गहरी समवेदना और चिन्ता व्यक्त की।

कामरेड किम इल सुंग के पिता तुल्य प्रेम तथा चिन्ता का सुफल था कि क्रांतिकारियों के अनाथ बच्चे हमारी क्रांति के भरोसे योग्य अधिकारी बन सके।

कामरेड किम इल सुंग ने जनवादी राष्ट्रीय संस्कृति की ओर विशेष रूप से ध्यान दिया और उसके काम का संगठन तथा निर्देशन किया।

कोरिया की जनता को अज्ञान में रखने और कोरिया की राष्ट्रीय संस्कृति को मिटाने की जापानी साम्राज्यवादी नीति के अवशेषों को समाप्त करने के लिये कामरेड किम इल सुंग ने शिक्षा का जनवादीकरण किया और मुक्ति के तुरन्त बाद ८,००० वयस्क स्कूल खुलवाए तथा इस प्रकार इस देश से निरक्षरता का सदा के लिये सफाया करना संभव हुआ।

उन्होंने विज्ञान, साहित्य, कला और शारीरिक व्यायाम को विकसित करने का स्पष्ट मार्ग सुझाया और उनकी प्रगति के लिये अनेक कदम उठाये।

कामरेड किम इल सुंग ने एक नये देश के निर्माण के लिये जनता के राजनीतिक जोश को उभारा। जो जनवादी सुधारों के कारण सजग हो उठा था और उन्होंने इस निर्माण प्रेरणा का स्वयं नेतृत्व किया।

मई १९४६ में उन्होंने बोथोंग-गांग नदी पर तटवर्ती निर्माण कार्य का सुझाव दिया जो देश में प्रकृति पर नियंत्रण करने की पहली दूरगामी योजना थी। उन्होंने निर्माण कार्य के उद्‌घाटन समारोह में भाग लिया और धरती खोदने के लिये पहला फावड़ा उन्होंने खुद चलाया। कामरेड किम इल सुंग का पहला फावड़ा मुक्त जनता के हृदय को आन्दोलित करने का कारण बना और नये देश के निर्माण को सशक्त रूप से आग बढ़ाया।

सम्मानित तथा प्रिय नेता कामरेड किम इल सुंग की पहल तथा उनके उदाहरण से असीम रूप से प्रोत्साहित प्योंग्यांग के नागरिकों ने ५५ दिनों में इस नदी योजना को पूरा करने का चमत्कार कर दिखाया जिसे जापानी साम्राज्यवादी दस साल में भी नहीं पूरा कर सके थे।

सम्मानित तथा प्रिय नेता कामरेड किम इल सुंग की इस अपील को कि 'नये देश

के निर्माण के लिये आगे बढ़ो', माथे से लगाकर मजदूरों ने आत्म निर्भरता की क्रांतिकारी भावना का प्रदर्शन किया और जापानी साम्राज्यवादियों द्वारा नष्ट किये गये कारखानों को फिर से खड़ा कर देने में अपनी समस्त बुद्धि और शक्ति लगा दी। और अकेले १९४६ के वर्ष में ८२२ कारखाने फिर उठ खड़े हुये और चलने लगे। जिनमें ह्वांग्हे लोहा कारखाना और हुंगनाम उर्वरक कारखाना भी शामिल था। नेता की इस अपील को कि "आओ, हम मुक्त कोरिया के पहले वसन्त का स्वागत अधिक उत्पादन से करें, आओ, हम एक-एक इंच भूमि पर खेती करें," को माथे से लगाकर किसानों ने १९४६ के वसन्त की जुताई बुवाई को कामयाब बनाया और सिंचाई तथा नयी भूमि पर खेती करने के काम को एक अखिल जन आन्दोलन में परिवर्तित कर दिया।

उत्तरी आधे भाग में जनवादी सुधारों तथा जनवादी निर्माण कार्य को सफलता-पूर्वक आगे बढ़ाते हुये कामरेड किम इल सुंग ने पार्टी को शक्तिशाली बनाने तथा उसे विकसित करने के काम का संचालन किया।

उस समय उत्तरी आधे भाग की जनता अपने नेता के इर्द गिर्द दृढ़ता से एकताबद्ध-होकर युगान्तरकारी परिवर्तनों को पूरा करने में क्रांतिकारी सफलतायें प्राप्त कर रही थी और दक्षिण कोरिया की जनता उन सफलताओं से प्रेरित होकर क्रांतिकारी आन्दोलन के लिये दृढ़ता से उठ खड़ी हुई। इससे आतंकित होकर अमरीकी साम्राज्यवादियों तथा देश के अन्दर प्रतिक्रियावादियों ने जनवादी शक्तियों में फूट डालने और मेहनतकश जनता के संयुक्त संघर्ष को नाकाम बनाने की हर संभव चालें शुरू कर दीं।

कामरेड किम इल सुंग ने ऐसी राजनीतिक स्थिति को तथा क्रांतिकारी परिवर्तन की आवश्यकताओं को तीव्र अन्तर्दृष्टि से भांप लिया और यह विवेकशील कार्यनीति पेश की कि कम्युनिस्ट पार्टी को मेहनतकशों की अन्य पार्टियों से मिला दिया जाय और एक वर्कर्स पार्टी बनायी जाय, एक ऐसी शक्तिशाली जन राजनीतिक पार्टी बनायी जाय जो समस्त मेहनतकशों को एकताबद्ध निर्देश दे सके।

वर्कर्स पार्टी की स्थापना संबंधी उनकी कार्यनीति एक मात्र ऐसी कार्यनीति थी जिसका आधार था देश में पायी जाने वाली राजनीतिक स्थिति का ठोस मूल्यांकन, क्रांति के विकास की आवश्यकताएं, खुद पार्टी के विकास की न्यायसंगत आवश्यकता तथा मेहनत-कश जनता के रूझान, जो जनवादी सुधारों के दौरान बहुत बदल चुके थे। सबसे बढ़ कर बात यह थी कि यह एक ऐसी विवेकशील कार्यनीति थी जिससे क्रांतिकारी शक्तियों में फूट डालने की शत्रु की चाल नाकाम हो सकती थी और जो आम मेहनतकश जनता को एकजुट कर सकती थी, उसे क्रांतिकारी संघर्ष के लिये पूरे जोश के साथ संगठित और आन्दोलित

कर सकती थी। यह अपने आप में एक मौलिक कार्यनीति भी थी जो हमारे देश की वास्तविक परिस्थितियों के अनुरूप पार्टी के निर्माण के विषय में मार्क्सवादी-लेनिनवादी सिद्धांत का एक नया विकसित रूप था।

खासतौर से कामरेड किम इल सुंग ने केन्द्र रूप में काम कर सकने वाले पार्टी सदस्यों के निर्माण की नीति प्रस्तुत की और जनपार्टी के निर्माण के सिलसिले में ऐसे सदस्यों की पांतों के विस्तार की योजना बनायी।

मंजे हुये पार्टी सदस्यों को विकसित करने और उनकी संख्या बढ़ाने से संबंधित उनकी नीति इस दृष्टि से बहुत ही विवेकशील थी कि चूंकि हमारी पार्टी एक जन पार्टी के रूप में विकसित हो रही थी, इसलिये थोड़े ही समय में इस नीति की सहायता से पार्टी की बातों को गुणात्मक रूप से मजबूत बनाया जा सकता था और यह संगठन संबंधी एक मौलिक नीति थी जिसमें जन पार्टी के निर्माण की न्यायोचित आवश्यकताओं का ठीक ठीक प्रतिबिम्ब मिलता था।

इस प्रकार अगस्त १९४६ में कम्युनिस्ट पार्टी न्यू डेमोक्रैटिक पार्टी के साथ मिल गई और कामरेड किम इल सुंग के प्रत्यक्ष पथ-प्रदर्शन में वर्कर्स पार्टी के रूप में विकसित हुई।

हमारी पार्टी के वर्कर्स पार्टी यानी मेहनतकशों की एकतावद्ध पार्टी के रूप में विकसित होने का महत्व युगान्तरकारी घटना सिद्ध हुआ जिसमें हमारी क्रांतिकारी शक्तियों का विस्तार हुआ और उनकी शक्ति बढ़ी।

कामरेड किम इल सुंग ने कहा:—

"कम्युनिस्ट पार्टी के न्यू डेमोक्रैटिक पार्टी के साथ विलयन से पार्टी शक्तियों के सुदृढ़ होने, क्रांतिकारियों की संख्या और बढ़ने तथा पार्टी की जड़ें जनता में गहराई तक पहुंचाने में सहायता मिली है। इससे यह भय भी दूर हुआ कि मेहनतकशों की दो पार्टियों के अलग अलग अस्तित्व से क्रांतिकारी शक्तियों में फूट पड़ेगी, और इस विलयन की वजह से मजदूर वर्ग के नेतृत्व में मजदूरों, किसानों और श्रमजीवी बुद्धिजीवियों की मैत्री सुदृढ़ हुई और जीवन की सभी जनवादी शक्तियों का संयुक्त मोर्चा और भी मजबूत हुआ।"

कामरेड किम इल सुंग के विवेकशील पथ प्रदर्शन में कम्युनिस्ट पार्टी का वर्कर्स पार्टी, जन राजनीतिक पार्टी के रूप में विकास से यह संभव हुआ कि मेहनतकश जनता और भी मजबूती के साथ हमारी पार्टी के गिर्द जमा हुई, पार्टी की संघर्ष क्षमता और अग्रणी भूमिका आगे बढ़ी, तथा क्रांति तथा निर्माण की ओर प्रगति और भी सफल बनी।

कामरेड किम इल सुंग के विवेकशील नेतृत्व का सुफल था कि उत्तरी आधे भाग में एक-डेढ़ वर्ष के अल्प समय में साम्राज्य-विरोधी, सामन्त-विरोधी जनवादी क्रांति विजयी हुई, देश के उत्तरी आधे भाग में साम्राज्य-विरोधी सामन्त विरोधी जनवादी क्रांति की सफलता के बाद नये सामाजिक-आर्थिक संबंधों ने जन्म लिया, जनता के जनवाद की व्यवस्था दृढ़ रूप से स्थापित हुई। और देश को फिर से एक करने के लिये एक भरोसे वाली गारंटी का अर्थात् एक क्रांतिकारी जनवादी केन्द्र का जन्म हुआ।

कामरेड किम इल सुंग ने कहा :

"जनवादी क्रांति के कर्तव्यों की सफलता से सामाजिक आर्थिक व्यवस्था अपने औपनिवेशिक तथा अर्ध सामन्ती चरित्र से पूरी तरह मुक्त हो गई और उत्तरी आधे भाग में सामाजिक-आर्थिक संबंधों में बुनियादी परिवर्तन आ गये। गणतंत्र के उत्तरी आधे भाग की राष्ट्रीय अर्थ व्यवस्था में राजकीय तथा सहकारी अर्थ व्यवस्थाओं से निर्मित समाजवादी स्वरूप के अर्थतंत्र की नेतृत्वकारी भमिका बन गई तथा, इसके साथ–साथ, व्यक्तिगत खेती और शहरी दस्तकारी की छोटे पैमाने की उपज की अर्थ व्यवस्थायें, और शहरों में निजी पूंजीवादी व्यापार तथा उद्योग के रूप में अर्थ व्यवस्था के महत्वहीन पूंजीवादी स्वरूप तथा गांवों में धनी किसानों की अर्थ व्यवस्था ही शेष रह गयीं।

"ऐसे नये आर्थिक संबंधों के आधार पर हमारे समाज के वर्ग संबंधों में उग्र परिवर्तन हुये। उत्तरी आधे भाग में जमींदारों, दलाल पूंजीपतियों, जापान समर्थक तत्वों तथा राष्ट्रद्रोहियों का सफाया कर दिया गया, मेहनतकश जनता देश की मालिक बन गयी, मजदूर वर्ग की अग्रणी भूमिका बढ़ गयी तथा किसान-मजदूर मैत्री और भी मजबूत हो गयी।"

"फलतः उत्तरी आधे भाग में जनता की जनवादी व्यवस्था मजबती से जम गयी और एक शक्तिशाली क्रांतिकारी जनवादी अड्डा कायम हो गया जिससे राष्ट्रीयकरण की भरोसे की गारंटी पैदा हुई।"

उत्तरी आधे भाग में साम्राज्य विरोधी और सामन्त विरोधी जनवादी क्रांति के कर्तव्यों को पूरा करने के साथ कामरेड किम इल सुंग ने समाजवाद तक संक्रमण के कर्तव्यों को पूरा करने के लिये आम जनता को निरन्तर संगठित और आन्दोलित किया।

उत्तरी आधे भाग में जहां जनवादी क्रांति के कर्तव्य पूरे किये गये, समाजवाद की ओर संक्रमण के काल में कदम बढ़ाना सामाजिक-आर्थिक विकास के नियमानुकूल अभिव्यक्ति थी।

कामरेड किम इल सुंग ने सिखाया कि संक्रमण काल में जिन महत्वपूर्ण प्रश्नों को
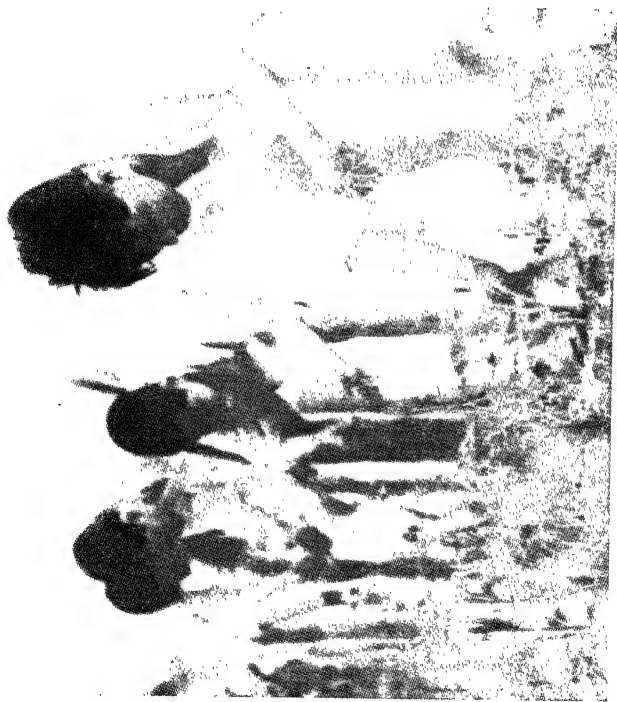
कामरेड किम इल सुंग किसानों के साथ धान के पौधे रोप रहे हैं

हल करना है, वे हैं पुरानें उत्पादन साधनों को समाजवादी रीति-नीति के अनुसार पुनर्गंठित करना और समाजवादी व्यवस्था की स्थापना के बाद भी क्रांति को जारी रखकर, समाजवाद की पूर्ण विजय उपलब्ध करना, और इस प्रकार एक ओर सभी शत्रु तत्वों को पूर्णतः समाप्त करना तथा दूसरी ओर समस्त मेहनतकश जनता को शिक्षित करके और उसका पुनर्संस्कार करके समस्त समाज को क्रांतिकारी और मजदूर वर्गीय बनाना, तथा शहरों और गांवों का अन्तर मिटाना अर्थात मजदूर वर्ग तथा किसान वर्ग का अन्तर मिटाना तथा उत्पादन शक्तियों के विकास के जरिये समाजवाद का भौतिक और तकनीकी आधार प्रस्तुत करना ।

संक्रमणकालीन कर्तव्यों के सफल समापन के लिये कामरेड किम इल सुंग नें समाजवादी क्रांति के कर्तव्यों को पूरा करने के काम के अनुरूप वर्तमान जन सरकार को और अधिक विकसित करने की पद्धति द्वारा सबसे पहलें सर्वहारा के अधिनायकत्व की सरकार की स्थापना का प्रश्न मौलिक ढंग से हल किया ।

कामरेड किम इल सुंग ने सिखाया कि जन सरकार को शक्तिशाली बनाने और उसके विकास के साधन के रूप में सर्वांग लोक व्यापी जनवादी चुनाव किया जाना चाहिये ।

उत्तर कोरिया में स्वयं उनकी निगरानी में प्रथम ऐतिहासिक जनवादी चुनाव महान विजय के साथ सम्पन्न हुआ । इस ऐतिहासिक चुनाव के आधार पर फरवरी १९४७ में उत्तर कोरिया जन समिति की स्थापना हुई ।

कामरेड किम इल सुंग उत्तर कोरियाई जन समिति के अध्यक्ष चुनें गयें ।

उत्तर कोरियाई जन समिति हमारे देश में सर्वहारा अधिनायकत्व की प्रथम सरकार थी ।

कामरेड किम इल सुंग ने कहाः—

"...हमारी पार्टी ने हमारी क्रांति के अस्त्र यानी जन सरकार को और विकसित करने का कर्तव्य प्रस्तुत किया ताकि समाजवादी क्रांति के कर्तव्य पूरे किये जा सकें । इस प्रकार, प्रथम ऐतिहासिक जनवादी चुनाव हुये और उत्तर कोरियाई जन समिति की स्थापना हुई । यह हमारे देश में सर्वहारा अधिनायकत्व की प्रथम सरकार थी । समाजवादी क्रांति तथा समाजवादी निर्माण के सशक्त अस्त्र के रूप में उत्तर कोरियाई जन समिति ने लगातार समाजवाद की ओर जाने के संक्रमण काल के कर्तव्य को पूरा किया और राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था को नियोजित ढंग से विकसित करने का संघर्ष किया ।"

कामरेड किम इल सुंग ने सबसे पहले सर्वहारा अधिनायकत्व की नवजात सरकार

को मजबूत बनानें तथा उसका कार्यक्षेत्र और उसकी भूमिका को बढ़ाने के लिय अपनी शक्ति केन्द्रित की ।

नवम्बर १९४६ में कामरेड किम इल सुंग नें 'जनवादी चुनाव के फल और जन समिति के तात्कालिक कर्तव्य' पर जो भाषण दिया वह भाषण उस समय न केवल सरकार के कार्य तथा उसकी भूमिका को समृद्ध करने के लिये संकेत पथ सिद्ध हुआ, बल्कि नवजात सर्वहारा अधिनायकत्व की सरकार को सुदृढ़ करने की कार्यक्रम-संबंधी दिशा भी बना ।

अपने भाषण में उन्होंने सभी वर्ग शत्रुओं के प्रतिरोध को पूरी तरह खत्म कर डालने की बात सिखा दी और कहा कि हमारी विजय जितनी अधिक आगे बढ़ेगी, प्रतिक्रियावादी उतनी ही क्रूरता से हम पर वार करना चाहेंगे ।

सर्वहारा के अधिनायकत्व की सरकार के कार्य और उसकी भूमिका को बढ़ाते हुये कामरेड किम इल सुंग ने विचारात्मक क्रांति को तेजी से आगे बढ़ाया ताकि मेहनतकश जनता के विचार और उसकी चेतना को इस तरह मोड़ा जा सके कि संक्रमण काल के प्रारंभिक दौर के कर्तव्य सफलतापूर्वक पूरे किये जा सकें ।

यहां, उस राष्ट्रीय निर्माण के लिये आम विचारात्मक आन्दोलन का महत्व बहुत बढ़ गया जिसे उन्होंने नवम्बर १९४६ में शुरु किया था ।

राष्ट्रीय निर्माण के लिये आम विचारात्मक आंदोलन छेड़ने का प्रस्ताव करके कामरेड किम इल सुंग ने सिखाया :

"....हमें ऐसी विचारधारात्मक क्रांति करनी है जो हमारे अन्दर नये जनवादी कोरिया के कार्यकर्ताओं के यथायोग्य नयी भावना, चरित्र, नैतिकता और संघर्ष क्षमता पैदा कर सके । हमें एक महान विचाराधारात्मक पुनर्निर्माण कार्य चलाना है ताकि पुराने दिनों में जापानी साम्राज्यवादियों द्वारा छोड़े गये पतित और भ्रष्ट रीति रिवाजों से छुटकारा मिल सके और स्वस्थ, तेजस्वी, नये जनवादी कोरिया का राष्ट्रीय चरित्र हम में पैदा हो सके ।"

पुरानी विचारधारा और जीवन की पुरानी आदतों के अवशेषों से छुटकारा पाने के लिये जोरदार विचारधारात्मक संघर्ष में समस्त पार्टी सदस्यों और मेहनतकश जनता का नेतृत्व करते हुये कामरेड किम इल सुंग ने इस बात के लिये भी उनका पथ-प्रदर्शन किया कि वे आर्थिक निर्माण के साथ साथ राष्ट्रीय निर्माण के लिये आम विचारधारात्मक आन्दोलन चलायें ।

उन्होंने सिखाया कि यह आन्दोलन उस जन संघर्ष के साथ चलाया जाय जिसका

उद्देश्य है कि सरकारी सम्पत्ति की रक्षा और कमखर्ची की जाय, श्रम अनुशासन को पक्का बनाया जाय, श्रम उत्पादकता को बढ़ाया जाय, उत्पादन व्यय को कम किया जाय और तकनीकी कौशल हासिल किया जाय। और उन्होंने निर्देश दिया कि इस आन्दोलन के माध्यम से चेतना के साथ जिम्मेदारी निभाने, एक दूसरे की मदद करने, एकता स्थापित करने तथा नये समाज को बनाने में सभी तरह की मुश्किलों को साहस के साथ दूर कर सकने में क्रांतिकारी चरित्र उपलब्ध किया जाय।

उनके निर्देश का पालन करते हुये समस्त पार्टी सदस्यों और मेहनतकश जनता ने क्रांतिकारी कर्तव्यों की पूर्ति के व्यावहारिक संघर्ष के साथ-साथ इस आन्दोलन को फैलाया। और एक ओर प्राचीन मतवाद के अवशेषों को मिटाने का जोरदार सैद्धांतिक संघर्ष चलाया तथा दूसरी ओर अपने आप को नयी विचारधारा से लैस किया। इस दौरान स्वार्थ, भ्रष्टाचार की प्रवृत्ति और आलस्य, नौकरशाहियत, अनुत्तरदायित्व और दास भावना की आलोचना की गई तथा उन पर विजय हासिल की गई और क्रांतिकारी शिविर में घुस आये विरोधी तथा बाहरी तत्वों, पद लोलुपों और लफंगों को बीन-बीन कर निकाल दिया गया तथा जनता की राष्ट्रीय तथा वर्ग चेतना असाधारण ढंग से आगे बढ़ गयी। और क्रांति तथा निर्माण में आम जनता की रचनात्मक पहल और सक्रियता उच्च स्तर तक पहुंच गयी।

वास्तव में, राष्ट्रीय निर्माण के लिये आयोजित आम विचारधारात्मक गोलबन्दी आन्दोलन, जो कामरेड किम इल सुंग के व्यक्तित्व के सुझाव पर संगठित और संचालित किया गया, एक नये समाज और नये देश के निर्माण के लिये एक महान विचारधारात्मक पुनर्संस्कार आन्दोलन था और साथ ही, वह समस्त जनता का देशभक्तिपूर्ण आन्दोलन था जो आर्थिक निर्माण से जुड़ा हुआ था।

सर्वहारा अधिनायकत्व को सशक्त बनाकर अपदस्थ शोषक वर्ग के प्रतिरोध को कुचलते हुये तथा इस प्रकार मेहनतकश जनता में विचाराधारात्मक क्रांति को आगे बढ़ाते हुये कामरेड किम इल सुंग ने पूरे जोश के साथ आर्थिक निर्माण को भी आगे बढ़ाया।

इन परिस्थितियों में जब कि उत्तरी आधे भाग में जनवादी सुधार लागू किये गये और राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था के स्वतंत्र विकास के लिये सामाजिक आर्थिक नींव रखी गयीं, तब आर्थिक निर्माण कार्य तेजी से करना जनवादी आधार को मजबूती के साथ निर्मित करने के लिये तथा देश की स्वाधीनता की सुदृढ़ गारंटी करने के लिये आवश्यक था।

कामरेड किम इल सुंग ने संक्रमण काल के प्रारम्भिक दौर के लिये पार्टी की आर्थिक नीति को सफाई से पेश किया।

उन्होंने सिखाया कि संक्रमण काल के प्रारंभिक दौर में पार्टी की आर्थिक नीति का

बुनियादी सिद्धांत यह है कि राज्य प्रमुख औद्योगिक शाखाओं, रेलवें, संचार व्यवस्था, विदेश-व्यापार तथा बैंक संगठनों का प्रत्यक्ष सुनियोजित प्रबन्ध चलाये तथा राष्ट्रीय अर्थ व्यवस्था के विकास में राज्य की नेतृत्वकारी भूमिका को निरन्तर बढ़ाते जानें के आधार पर सरकारी, सहकारी तथा निजी आर्थिक क्षेत्रों का समुचित तालमेल बैठाये। उन्होंने निर्देश दिया कि जहां एक ओर इस बुनियादी सिद्धांत का सख्ती से पालन होना चाहिये, वहीं उत्पादन संबन्धों के समाजवादी रूपांतर को आंशिक रूप से पूरा करते रहना चाहिये और साथ ही, समाजवादी रूपातर को विस्तृत रूप से आगें बढ़ाने के लिये पूरी तैयारी करनी चाहिये।

कामरेड किम इल सुंग ने आर्थिक निर्माण की बुनियादी दिशा की ओर भी साफ साफ संकेत किया।

उन्होंने हमें सिखाया कि नष्ट अर्थ व्यवस्था को तेजी से ठीक किया जाय, विशेषकर दैनिक इस्तेमाल की चीजों के उत्पादन और खाद्य समस्या के हल पर सबसे अधिक ध्यान दिया जाय, जनता के रहन सहन का स्तर बढ़ाया जाय, अर्थ व्यवस्था के पिछड़ेपन और औपनिवैशिक एकांगीपन को दूर किया जाय और एक स्वतंत्र राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था की नींव रखी जाय।

आर्थिक निर्माण के प्रारंभिक दिनों में कामरेड किम इल सुंग ने जापान-विरोधी सशस्त्र संघर्ष के दौरान पितृभूमि पुनर्स्थापना सभा के दस-सूत्री कार्यक्रम के आधार पर इतिहास में पहली बार स्वतंत्र राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था की रचना की महान कार्यनीति सामने रखी।

उत्तर कोरिया की सूबा, नगर और काउन्टी जन समितियों की कांग्रेस में २० फरवरी, १९४७ को अपने निष्कर्ष में कामरेड किम इल सुंग ने सिखाया :

"स्वतंत्र जनवादी राज्य की स्थापना करने के लिये स्वयं अपने राष्ट्र की स्वतंत्र अर्थ व्यवस्था की नींव मजबूती से डालनी चाहिये और स्वतंत्र अर्थ व्यवस्था के दृढ़ आधार के लिये राष्ट्रीय अर्थ व्यवस्था को तेजी से विकसित करना चाहिये। स्वतंत्र अर्थ व्यवस्था के आधार के बगैर हमें न तो स्वतंत्रता हासिल हो सकती है, न हम राज्य का निर्माण कर सकते हैं और न अपना अस्तित्व ही कायम रख सकते हैं।"

आगे चल कर कामरेड किम इल सुंग ने बताया कि स्वतंत्र राष्ट्रीय अर्थ व्यवस्था की रचना का अर्थ क्या होता है :

"स्वतंत्र राष्ट्रीय अर्थ व्यवस्था की रचना का अर्थ यह है कि अर्थ व्यवस्था को बहुमुखी रूप में विकसित किया जाय, उसे आधुनिक तकनीक से लैस किया जाय तथा

कच्चे माल के लिये स्वयं अपना दृढ़ आधार बनाया जाय और इस प्रकार एक ऐसी व्यापक आर्थिक व्यवस्था बनायी जाय जिसमें सभी शाखायें आंगिक रूप से एक दूसरे से संबद्ध हों, ताकि मुख्य रूप से भारी और हल्की औद्योगिक उपज और देश को समृद्ध बनाने के लिये आवश्यक कृषि उपज देश के अन्दर ही पैदा हो सके तथा जनता का जीवनस्तर सुधर सके ।"

स्वतंत्र राष्ट्रीय अर्थ व्यवस्था की रचना की कार्यनीति जो कामरेड किम इल सुंग के जुछे नामक महान विचार की प्रतीक है, एक ऐसी मौलिक कार्यनीति है जिसको इतिहास में अभी तक किसी ने प्रस्तुत नहीं किया था। आर्थिक निर्माण की यह सबसे सही कार्यनीति है जिससे राजनीतिक स्वतंत्रता, समृद्धि और देश का विकास सुनिश्चित होता है, राष्ट्रों के बीच असमानता मिटती है, राष्ट्रीय समृद्धि प्राप्त होती है तथा समाजवाद और साम्यवाद की सफल रचना संभव होती है।

कामरेड किम इल सुंग ने स्वतंत्र राष्ट्रीय अर्थ व्यवस्था के निर्माण की जो कार्यनीति प्रस्तुत की, वह सचमुच आर्थिक निर्माण की क्रांतिकारी नीति है और उसमें राष्ट्रीय स्वाधीनता तथा समाजवादी और साम्यवादी निर्माण की नियमानुकूल आवश्यकतायें प्रतिबिम्बित होती हैं।

संक्रमण काल के प्रारम्भिक दौर के लिये निश्चित पार्टी की आर्थिक नीति और स्वतंत्र राष्ट्रीय व्यवस्था के निर्माण की कार्यनीति, जिन्हें कामरेड किम इल सुंग ने प्रस्तुत किया था, के आधार पर पहली बार हमारे देश के इतिहास में एक राष्ट्रीय आर्थिक योजना तैयार की गयी।

कामरेड किम इल सुंग ने स्वतंत्र राष्ट्रीय अर्थ व्यवस्था की नींव डालने के लिये समूची पार्टी और जनता का आवाहन किया कि १९४७ और १९४८ की राष्ट्रीय आर्थिक योजना को पूरा किया जाय।

नेता के आवाहन पर समस्त मेहनतकश जनता राष्ट्रीय आर्थिक योजनाओं को अवधि से पहले पूरा करने के लिये कमर कस कर आगे आ गयी।

लेकिन राष्ट्रीय आर्थिक योजनाओं को पूरा करने के रास्ते में अनेक मुश्किलें थीं।

जापानी साम्राज्यवादियों के औपनिवेशिक कुशासन के कारण हमारे देश का उद्योग औपनिवेशिक एकांगीपन और विरूपता से पीड़ित था और उसे भी जापानी साम्राज्यवादियों ने बुरी तरह नष्ट भ्रष्ट कर दिया था।

हमारे पास आर्थिक तथा तकनीकी कार्यकर्ताओं और प्रशासकीय संवर्ग की भी कमी थी।

अमरीकी साम्राज्यवादियों तथा देशी प्रतिक्रियावादियों ने हमारी प्रथम राष्ट्रीय आर्थिक योजना की पूर्ति के मार्ग में बाधा डालने के लिये हर संभव चालें चलीं और गुट-बाज उस योजना को 'हवाई' या 'नितान्त अव्यावहारिक' बता कर नियोजित अर्थ व्यवस्था के संचालन कार्य में हर प्रकार से दोष खोजने लग गये ।

लेकिन कामरेड किम इल सुंग ने इस विश्वास के साथ कि राष्ट्रीय आर्थिक योजनायें निश्चय ही पूरी होंगी, सभी मुश्किलों और मुसीबतों पर विजय पाई, तथा अडिग लड़ाकू भावना और असाधारण क्रांतिकारी गतिशीलता के साथ समूची पार्टी और जनता को राष्ट्रीय आर्थिक योजनायें पूरी करने के लिये सक्रिय रूप से संगठित और आन्दोलित किया ।

कामरेड किम इल सुंग ने सिखाया कि पार्टी के सामने प्रस्तुत कर्तव्यों को सफलता पूर्वक पूरा करने के लिये जरूरी है कि सबसे पहले पार्टी की अग्रणी भूमिका को बढ़ाया जाय तथा पार्टी कार्यों में सुधार किया जाय और सुदृढ़ता लाई जाय ।

मार्च १९४७ में आयोजित पार्टी की केन्द्रीय कमेटी के छठे अधिवेशन में उनके निर्देश में इस समस्या पर विचार-विमर्श किया गया कि नयी परिस्थितियों के अनुरूप पार्टी कार्य को किस प्रकार सुधारा जाय तथा उसमें सुदृढ़ता लायी जाय । और राष्ट्रीय आर्थिक योजनाओं को पूरा करने के लिये पार्टी के निर्देशन कार्य को मजबूत बनाने के लिय ठोस कदम उठाया ।

कामरेड किम इल सुंग की **'उत्तर कोरियाई वर्कर्स पार्टी द्वारा अपनी पहली सालगिरह की बधाई'** नामक लेख और **'हमारे पार्टी संगठनों के कर्त्तव्य' पर भाषण**, जो उन्होंने उत्तर कोरियाई वर्कर्स पार्टी के दक्षिण प्योंगआन सूबे में सुन्छन काउन्टी के पार्टी प्रतिनिधियों के सम्मेलन में दिया, पार्टी को संगठनात्मक और विचारधारात्मक रीति से सुदृढ़ करने के लिय और पार्टी सदस्यों की हिरावल भूमिका को ऊंचा उठाने में बड़े ही महत्व पूर्ण सिद्ध हुयें ।

आर्थिक निर्माण में पार्टी की अग्रणी भूमिका को ऊंचा उठान के कार्य के साथ साथ कामरेड किम इल सुंग नें इस पर भी ध्यान दिया कि सर्वहारा अधिनायकत्व की नवजात सरकार की गतिविधियां सुदृढ़ हों तथा आर्थिक संगठनकर्ता के रूप में उसकी भूमिका आगे बढ़े । उन्होंने राष्ट्रीय निर्माण के आम विचारधारात्मक गोलबन्दी आन्दोलन को तेजी से आगे बढ़ाया ताकि आम जनता नयें देश के निर्माण के आंदोलन में उठ खड़ी हो ।

राष्ट्रीय निर्माण के आम विचारधारात्मक गोलबंदी आन्दोलन के जरिये कामरेड

किम इल सुंग ने आम जनता के सोचन के ढंग और उसकी चेतना का परिष्कार करत हुये तथा उसकी देशभक्ति की भावना को जगाते हुये समस्त जनता से अपील की कि वह अगणित कठिनाइयों और मुसीबतों पर विजय पाते हुये आर्थिक निर्माण कार्य सफलता-पूर्वक पूरा करने के लिय आत्म निर्भरता की क्रांतिकारी भावना प्रदर्शित करे।

कामरेड किम इल सुंग ने सिखाया:

"...नष्ट भ्रष्ट कारखाने, छिन्न भिन्न यातायात सुविधायें, ध्वस्त खेती और खजाने जहां बहियों के अलावा कुछ भी न था, यही था जो हमें जापानी साम्राज्यवादियों से मिला था। हमारे पास बहुत सी चीजों का अभाव है और सामने भारी मुश्किलें हैं। इस समय अपने कंधों पर समूचे राष्ट्र का भविष्य रखे हुये हम बहुत ही कठिन परि-स्थितियों में एक नये देश की रचना के लिये संघर्ष कर रहे हैं। इसलिये हमें ऐसी सभी चीजें पैदा करनी हैं जो हमारे पास नहीं हैं और अभावों को सहना है तथा दांत पीस कर सभी मुश्किलों को दूर करना है।"

आत्म निर्भरता का सिद्धांत, जिसके क्रांतिकारी सिद्धांत होने के कारण वे क्रांति-कारी संघर्ष के अपने प्रारम्भिक दिनों से ही उस सिद्धांत पर अडिग रहे हैं, महान शक्ति और अमूल्य आध्यात्मिक निधि का स्रोत रहा है। और उसके बल पर ही समस्त मुश्किलों और परीक्षाओं को पार करने की तथा हमारी क्रांति की विजय की संभावना बढ़ी है।

आगे चल कर कामरेड किम इल सुंग ने सिखाया :

"आत्म निर्भरता एक ऐसा सर्वांग सम्पन्न क्रांतिकारी रुख है जिसके सहारे जनता अपने देश में मुख्यतः अपने घरेलू साधनों के जरिये क्रांति को सफल बनाती है। यह अपने ही श्रम और अपने ही घरेलू साधनों से अपने देश का निर्माण कर लेने का स्वतंत्र रुख है।"

उन्होंने सिखाया कि जब आत्म निर्भरता की क्रांतिकारी रीति नीति का पालन किया जाता है, तभी यह संभव होता है कि पेचीदा हालतों में भी क्रांतिकारी सुसंगति खोये बिना संघर्ष जारी रखा जा सके, तमाम मुश्किलों और अड़चनों को साहस-पूर्वक पार करके क्रांतिकारी संघर्ष में विजय की गारंटी की जा सके तथा अपनी जनता की शक्ति और अपने देश के घरेलू साधनों का अधिकतम लाभ उठाया जा सके।

कामरेड किम इल सुंग की अपील को पूरे दिल से स्वीकार करते हुये समस्त मेहनतकश जनता ने राष्ट्रीय अर्थ व्यवस्था की पुनर्स्थापना और उसके विकास के लिये संघर्ष में अपनी समस्त बुद्धि और शक्ति लगा दी।

कामरेड किम इल सुंग ने हुआंगहै लौह कारखाने, कांगसन इस्पात कारखाने, तथा

दूसरे कल-कारखानों और उद्योगों को खुद यथास्थल जाकर निर्देशित किया, कर्मचारियों को काम का तरीका सिखाया, अमली कदमों के बारे में मजदूरों से सलाह-मशविरा किया, पेचीदा समस्याओं को हल किया और इस बात पर ध्यान दिया कि आम मेहनतकश जनता में उत्पादन-वृद्धि के लिये प्रतियोगिता संगठित की जाय और व्यापक पैमाने पर चलाई जाय ।

कामरेड किम इल सुंग की अपील तथा यथास्थल उनके पथ प्रदर्शन से बेहद प्ररित होकर समस्त मेहनतकश जनता नें ऐसी शानदार सफलतायें प्राप्त कीं कि उसने दोनों वार्षिक योजनाओं (१९४७ और १९४८) को समय से पहले पूरा कर लिया और १९४९-१९५० की दो वर्षीय योजना को मुख्यत: १९५० के प्रथमार्द्ध में ही पूरा कर लिया। फलत: गणतंत्र के उत्तरी आधे भाग में राष्ट्रीय अर्थ-व्यवस्था कुल मिला कर पुनर्जीवित हो गयी और उत्पादन की अनेक शाखाओं में मुक्ति के पहले का स्तर पार हो गया ।

उद्योग में सरकारी क्षेत्र का हिस्सा ९० फीसदी से भी अधिक बढ़ गया तथा इंजीनियरिंग उद्योग और हल्के उद्योग शुरू किये गये । जैसे जैसे कृषि उत्पादन बढ़ने लगा, उत्तरी आधा भाग खाद्यान्न में कमी के क्षत्र से बदल कर आत्म निर्भर बन गया । कुछ क्षेत्रों में खेती के लिये किराय पर मशीनें देने वाले स्टेशन बना दिये गये और राजकीय कृषि-पशु-पालन फार्मों की स्थापना की गयी । इस प्रकार भविष्य में खेती की उत्पादक शक्तियों के और आगे विकास की परिस्थितियों का निर्माण हो गया । फलत: स्वतंत्र राष्ट्रीय अर्थ व्यवस्था की नींवें डालने में भारी सफलतायें मिलीं और जनता के जीवन-स्तर में स्पष्टत: तेजी से सुधार हुआ ।

उत्तरी आधे भाग के क्रांतिकारी जनवादी अड्डे को राजनीतिक और आर्थिक दृष्टि से मजबूत बनाते हुये कामरेड किम इल सुंग ने जनता की जनवादी व्यवस्था की सुरक्षा के लिये और शस्त्रों के बल पर क्रांति को विजय की गारंटी करने के लिय जनता की सशस्त्र सेनाओं को भी संगठित और निर्देशित किया ।

तत्कालीन परिस्थितियों में जब कि हमारे देश को विश्व प्रतिक्रियावाद के सरगना अमरीकी साम्राज्यवादियों का सामना करना पड़ रहा था और विशेषकर, जबकि अमरीकी साम्राज्यवादी समूचे कोरिया को अपना उपवेनिश बना लेने के लिये चालें चल रहे थे, कामरेड किम इल सुंग ने भविष्यदृष्टा की भांति क्रांति के विकास के अगले आयामों को देखते हुये, जापान विरोधी सशस्त्र संघर्ष के काल में सशस्त्र क्रांतिकारी सेनाओं के निर्माण सम्बन्धी अपने व्यक्तिगत अनुभवों के आधार पर, मुक्ति के तुरन्त बाद से ही, जन सेनाओं की नींव डालने का काम शुरू कर दिया ।

पार्टी विरोधी तत्वों के इस कुप्रचार को कि "जब देश का एकीकरण नहीं हो सका तो सशस्त्र जनसेना की क्या आवश्यकता है?" तथा उनके द्वारा प्रस्तुत सारे अवरोधों को दृढ़तापूर्वक परास्त करते हुये उन्होंने क्रांति के तुरन्त बाद प्योंग्यांग स्कूल, केन्द्रीय सुरक्षा कैडर स्कूल तथा सुरक्षा कैडर ट्रेनिंग की स्थापना की और सैनिक तथा राजनीतिक कार्यकर्ताओं को ट्रेनिंग दी ।

ऐसी तैयारियों के आधार पर कामरेड किम इल सुंग ने फरवरी, १९४८ में उन क्रांतिकारी योद्धाओं को रीढ़ मान कर, जो जापान विरोधी सशस्त्र संघर्ष की अग्नि परीक्षा में खरे उतरे, तथा मजदूरों और किसानों के सर्वोत्तम पुत्र पुत्रियों को शामिल कर कोरियाई जन-सेना का निर्माण किया ।

कोरियाई जन सेवा के रूप में एक आधुनिक नियमित सशस्त्र सेना की स्थापना के साथ, जो कि शानदार जापान विरोधी सशस्त्र संघर्ष की विलक्षण क्रांतिकारी परंपराओं की प्रत्यक्ष वारिस और उसे आगे बढ़ाने वाली थी, कोरिया की जनता को अपनी ऐसी क्रांतिकारी सशस्त्र सेना मिल गई जो विश्वसनीय रीति से क्रांतिकारी उपलब्धियों को शत्रु के पंजों से बचायेगी तथा कोरियाई क्रांति की अंतिम विजय की गारंटी करेगी ।

वह कामरेड किम इल सुंग की आत्म रक्षा के सिद्धांत का और नये देश के निर्माण में कोरिया की जनता की महान विजय का शानदार प्रतीक बनी ।

जन सशस्त्र सेनाओं की स्थापना के बाद कामरेड किम इल सुंग न उन्हें राजनीतिक, सैद्धांतिक तथा सैनिक तकनीक में सुदृढ़ बनाने तथा एक को सौ के बराबर बनाने की दृष्टि से सेनाओं में अनेक प्रतिभाशाली कैडर भेजे ताकि सैनिक और राजनीतिक प्रशिक्षण को तीव्र किया जा सके और युद्ध की सन्नद्धता में वृद्धि लाई जाय और साथ ही उन्होंने जन सेना को सहायता देने के लिये एक अखिल जन आन्दोलन संगठित और निर्देशित किया । फलतः जन सेना सुदृढ़ हुई और वह अफसरों तथा सैनिकों के बीच तथा जनता और सेना के बीच एकता की परम्परागत विशेषता से लैस एक अजेय क्रांतिकारी सशस्त्र सेना के रूप में तथा कामरेड किम इल सुंग के महान क्रांतिकारी विचारों से दृढ़तापूर्वक प्रतिबद्ध, अपने नेता के प्रति वफादार और शत्रु के प्रति घृणा से दहकते हुये कोरिया की वर्कर्स पार्टी की सेना के रूप में विकसित हुई ।

मार्च, १९४८ में उत्तर कोरियाई वर्कर्स पार्टी की दूसरी कांग्रेस में कामरेड किम इल सुंग ने पहली कांग्रेस के बाद पार्टी की गतिविधियों का सिंहावलोकन किया, देश को फिर से स्वतंत्रतापूर्वक एक करने की नीति प्रस्तुत की, उत्तरी आधे भाग में क्रांतिकारी जनवादी अड्डे को और सुदृढ़ करने का कर्त्तव्य प्रस्तुत किया, पार्टी कार्यकर्ताओं में गुणात्मक

ढ़ग मे एकता मजबूत करने का कार्यक्रम रखा और इस प्रकार हमारी पार्टी और जनता के आगे बढ़ने का रास्ता दिखाया।

कांग्रेस में अपनी रिपोर्ट पेश करते हुये कामरेड किम इल सुंग ने सर्वोपरि यह कार्य-नीति प्रस्तुत की कि देश का स्वतंत्र, जनवादी सिद्धांत के आधार पर एकीकरण करना चाहिए ताकि उस स्थिति का सामना किया जा सके जिसमें अमरीकी साम्राज्यवादियों की चालों के कारण राष्ट्रीय विभाजन का खतरा पैदा हो गया था।

कामरेड किम इल सुंग ने देश के एकीकरण की भौतिक गारंटी के रूप में उत्तरी आधे भाग के क्रांतिकारी जनवादी अड्डे को और भी शक्तिशाली बनाने का कर्तव्य प्रस्तुत किया। आर्थिक निर्माण पर पार्टी के सारे प्रयासों को केंद्रित कर देने की आवश्यकता पर बल दिया।

कामरेड किम इल सुंग ने कहा :

"हमारे देश की मौजूदा परिस्थिति की मांग है कि हमारी पार्टी न केवल आम जनता को संगठित करने तथा राजनीतिक दृष्टि से जनता का नेतृत्व करने के योग्य बने बल्कि वह ऐसे निर्माताओं की पार्टी बने जो अर्थ व्यवस्था का निर्माण कर सकें, उद्योगों का प्रबंध कर सकें तथा अर्थशास्त्र तथा तकनीक शास्त्र के ज्ञाता हों।"

कामरेड किम इल सुंग ने यह भी सिखाया कि पार्टी कार्यकर्ताओं को गुणात्मक दृष्टि से एकजुट करने के लिये यह जरूरी है कि पार्टी के बुनियादी संगठनों, पार्टी सेलों, को मजबूत किया जाय, सेल के नेतृत्वकारी कार्यकर्ताओं की टीम का समुचित विकास किया जाय, कर्मचारी प्रशासन को सुधारा जाय, पार्टी सदस्यों की सैद्धांतिक शिक्षा को तेज किया जाय तथा खास तौर से गुटबाजी के विरुद्ध जम कर संघर्ष किया जाय।

उत्तरी कोरिया की वर्कर्स पार्टी की दूसरी कांग्रेस में प्रस्तुत कामरेड किम इल सुंग की रिपोर्ट समूचे पार्टी सदस्यों तथा जनता के लिये संघर्ष का कार्यक्रम बन गयी जिस के सहारे देश को एक किया जा सकता था, गणतंत्र के उत्तरी आधे भाग के क्रांतिकारी जनवादी अड्डे को मजबूत किया जा सकता था और पार्टी को गुणात्मक स्तर पर सुदृढ़ किया जा सकता था।

उत्तरी आधे भाग के क्रांतिकारी जनवादी आधार को राजनीतिक, आर्थिक तथा सैनिक दृष्टि से सुदृढ़ करते हुये कामरेड किम इल सुंग ने कोरियाई क्रांति तथा देश के एकीकरण के प्रमुख अंग के रूप में दक्षिण कोरियाई क्रांति उपलब्ध करने के लिये कोरियाई जनता के संघर्ष का पथ-निर्देश किया।

उन्होंने राष्ट्र का सर्वोच्च कर्तव्य यह बताया कि अमरीकी साम्राज्यवादियों को दक्षिण

कोरिया से निकाल भगाया जाय, राष्ट्रीय मुक्ति सम्पन्न जनवादी क्रांति को राष्ट्रव्यापी स्तर पर पूरा किया जाय तथा देश की एकता हासिल की जाय। और उन्होंने इस कर्तव्य को पूरा करने के लिये समस्त कोरियाई जनता को संगठित किया।

इस समय कुछ लोगों का ख्याल था कि कोरिया के एकीकरण की समस्या केवल बाहरी सहायता से ही संभव है। कामरेड किम इल सुंग ने इस गलत धारणा को जम कर ठुकराया और देश का स्वतंत्र रीति से एकीकरण करने की दिशा स्पष्ट की।

कामरेड किम इल सुंग ने सिखाया :

"आज कोरिया की समस्या खुद कोरियावासी ही हल कर सकते हैं। इस काम के लिये कोरियावासियों के अलावा न तो और किसी में क्षमता है और न इसका किसी और को अधिकार है। ... कोरिया के प्रश्न का हल केवल हम कोरियावासियों को करना है। इसे हल करने के लिये केवल हम ही पूर्णतः योग्य हैं।"

कामरेड किम इल सुंग ने दक्षिण कोरिया की जनता के क्रांतिकारी संघर्ष की कार्य-नीति और रणनीति भी स्पष्ट रूप से सामने रखी।

उन्होंने सिखाया कि दक्षिणी आधे भाग की जनता को चाहिये कि वह अमरीकी साम्राज्यवादियों तथा उनके सहयोगी, जमींदारों, दलाल पूंजीपतियों तथा प्रतिक्रियावादी नौकरशाहों के विरुद्ध जोरदार जन आन्दोलन चलाये। उसे चाहिये कि वह शत्रु के तीव्र दमन की परिस्थितियों में मूर्खतापूर्ण और खतरनाक संघर्षों से बचे, अनेक तरह के संघर्षों को उचित रीति से जोड़ कर क्रांतिकारी शक्तियों को सुरक्षित करे और उनका विस्तार करे, तथा हर साधन जुटा कर ऐसे संयुक्त मोर्चे का संगठन करे जिसमें मजदूर वर्ग तथा किसान जनता को आधार मान कर समस्त देशभक्त एकजुट हों। उन्होंने यह भी सिखाया कि अमरीकी साम्राज्यवादियों के आक्रामक चरित्र का पर्दाफाश करना चाहिये, दक्षिण के आधे भाग में अमरीकी साम्राज्यवाद के बारे में फैले भ्रम को दूर करना चाहिये, तथा राजनीतिक कार्य को तीव्रता से फैला कर उत्तर के आधे भाग में क्रांति की सफलताओं को जनता के दिल में बिठाना चाहिये।

अमरीकी साम्राज्यवादियों के किराये के जासूसों की तोड़ फोड़ और विध्वंसात्मक कार्यों और उन गुटबाजों के बावजूद जो क्रांतिकारी शिविर में चुपके से घुस आये थे, दक्षिणी आधे भाग की जनता राष्ट्र के महान नेता कामरेड किम इल सुंग की ओर देखती हुई तथा उनके पथ प्रदर्शन में उत्तरी आधे भाग में जनवादी सुधारों के सुफल से प्रोत्साहित होकर अमरीका विरोधी राष्ट्रीय मुक्ति संघर्ष में उठ खड़ी हुई। जनता के उस संघर्ष में सितम्बर की आम हड़ताल और १९४६ का अक्तूबर का व्यापक जनप्रतिरोध

भी शामिल है । इस प्रकार जनता ने शत्रु की ओर जोरदार चोट पहुंचाई।

अमरीकी साम्राज्यवादियों ने कोरिया के प्रश्न को गैर कानूनी ढंग से अक्तूबर १९४७ में राष्ट्र संघ की कार्यवाही में शामिल कर दिया और उसके नाम के पीछे दक्षिण कोरिया में एक अलग कठपुतली "सरकार" कायम करने का कुप्रयत्न किया । ऐसा करते हुये वे दक्षिण कोरिया पर अपने कब्ज को न्यायोचित ठहराने के घृणित तथ्य की पूर्ति करना चाहते थे और कोरिया के राष्ट्रीय विभाजन को सदा बनाये रखना चाहते थे ।

हमारे राष्ट्र को विभाजित करने के अमरीकी साम्राज्यवादी हथकंडे पर चोट लगा कर कामरेड किम इल सुंग नें जनवादी गणतंत्र की स्थापना से सम्बन्धित पार्टी की राज-नीतिक नीति को अविलम्ब लागू करने का कदम उठाया ।

१९४८ के नव वर्ष के अपने संदेश में तथा उसी वर्ष मार्च में संयुक्त जनवादी राष्ट्रीय मोर्चे की केन्द्रीय कमेटी के २५ वें अधिवेशन में अपने भाषण में कामरेड किम इल सुंग ने उत्तर और दक्षिण कोरिया की समस्त जनता से अपील की कि वह कोरियाई जनता की इच्छा का प्रतिनिधित्व करने वाली एक सर्वोच्च विधान सभा चुने और एक संयुक्त अखिल कोरिया केन्द्रीय सरकार की स्थापना करे ताकि राष्ट्रीय विभाजन का खतरा मिट जाय ।

उन्होंने कोरिया के जनवादी जन गणतंत्र के संविधान का मसौदा तैयार किया । और राष्ट्रव्यापी विचार विमर्श के लिये उसे पेश कर दिया ।

संयुक्त केन्द्रीय सरकार की स्थापना सम्बन्धी कामरेड किम इल सुंग की कार्यनीति और जनवादी जन गणतंत्र के संविधान के मसौदे को कोरिया की समस्त जनता का एकमत से समर्थन प्राप्त हुआ ।

कामरेड किम इल सुंग के व्यक्तिगत सुझाव पर अप्रैल १९४८ में उत्तर और दक्षिण कोरिया की राजनीतिक पार्टियों और जन संगठनों के प्रतिनिधियों का जो संयुक्त सम्मे-लन हुआ, उसमें कामरेड किम इल सुंग की यह नीति पूर्णतया समर्थित तथा स्वीकृत हुई कि दक्षिण कोरिया में पृथक चुनाव की चाल को नाकाम करना चाहिये और स्वतंत्र तथा जनवादी आधार पर संयुक्त केन्द्रीय सरकार की स्थापना होनी चाहिये । सम्मेलन में भाग लेने वालों ने इसे मूर्त रूप देने के लिये लड़ने का एकमत से फैसला किया ।

यहां तक कि दक्षिण कोरिया के घोर राष्ट्रवादियों और दक्षिणपंथी राजनीतिक पार्टियों के नेताओं ने, जिनके प्रतिनिधि उस सम्मेलन में मौजूद थे, कामरेड किम इल सुंग की कार्यनीति की सच्चाई से, और उत्तरी आधे भाग में उनके नेतृत्व में उपलब्ध समस्त सफलताओं से प्रभावित होकर, तथा जनता और देश के प्रति उनके गहरे प्रेम से, तथा

उनके उदात्त गुणों से प्रेरित होकर, एकमत से उनके नेतृत्व में लड़ने का फैसला किया।

इस ऐतिहासिक सम्मेलन की सफलता का श्रेय कामरेड किम इल सुंग द्वारा प्रस्तुत कार्यनीति के सही होने को है, उनके नेतृत्व की महानता को है, उनकी महान प्रतिष्ठा को है और उनके महान सद्गुणों को है।

कोरिया के जनवादी जन गणतंत्र की स्थापना से सम्बन्धित कामरेड किम इल सुंग की कार्यनीति को लागू करना उत्तर तथा दक्षिण कोरिया की समस्त जनता का सबसे महान राष्ट्रीय कर्तव्य था। जनवादी जन गणतंत्र कोरिया की स्थापना से ही यह संभव हुआ कि ऐसी संयुक्त केन्द्रीय सरकार की स्थापना हुई, जो उत्तर और दक्षिण कोरिया की समस्त जनता के हितों और आकांक्षाओं का प्रतिनिधित्व करती थी। अमरीकी साम्राज्यवादियों द्वारा निर्मित दक्षिण कोरिया की कठपुतली "सरकार" के गैरकानूनी तथा प्रतिक्रियावादी चरित्र को बेनकाब किया गया तथा गणतंत्र के झंडे के नीचे देश के एकीकरण के लिये समस्त कोरियाई जनता के संघर्ष को ऊंचे स्तर पर खड़ा किया जा सका।

इसके अलावा कोरिया के जन गणतंत्र की स्थापना से ही ऐसी अनुकूल परिस्थितियां बन सकती थीं जिनसे संघर्ष के जरिये दक्षिण कोरिया से अमरीकी साम्राज्यवादी आक्रमणकारियों को भगा कर, देश का स्वतंत्र एकीकरण संभव बनाया जा सकता था, बाह्य गति-विधियां चलाई जा सकती थीं, और अन्तर्राष्ट्रीय क्रांतिकारी शक्तियों के साथ हमारी एकता को और भी सुदृढ़ बनाया जा सकता था।

अगस्त १९४८ में समस्त कोरियाई जनता के महान राजनीतिक जोश के बीच उत्तर और दक्षिण कोरिया में सर्वोच्च जन सभा के सदस्यों का चुनाव विजयपूर्वक सम्पन्न हुआ।

कामरेड किम इल सुंग समस्त जनता के पूर्ण समर्थन से सर्वोच्च जन विधान सभा के सदस्य चुने गये।

उत्तर तथा दक्षिण कोरिया के आम चुनावों के आधार पर सितम्बर १९४८ में सर्वोच्च जन सभा बुलायी गयी, जिसने कोरिया के जनवादी जन गणतंत्र कोरिया का संविधान स्वीकार किया, जनवादी जन गणतंत्र कोरिया की सरकार बनायी और कोरिया के सम्मानित तथा परमप्रिय नेता कामरेड किम इल सुंग को मंत्रिमण्डल का प्रधान मंत्री नियुक्त किया।

कामरेड किम इल सुंग को प्रधान मान कर, जनवादी जन गणतंत्र कोरिया की स्थापना देश की स्वतंत्रता और स्वाधीनता की प्राप्ति के लिये हमारी जनता की एकमत

इच्छा की प्रतीक थी, कोरियाई जनता के प्रभुता सम्पन्न और स्वाधीन राष्ट्र के निर्माण के संघर्ष की शानदार जीत थी, समाजवाद और साम्यवाद के सुन्दर भविष्य की ओर गतिशील हमारी जनता के क्रांतिकारी संघर्ष में युगान्तकारी महत्व की ऐतिहासिक घटना थी।

कामरेड किम इल सुंग ने कहा :

"जनवादी जन गणतंत्र कोरिया की स्थापना के साथ हमारी जनता एक ऐसे राष्ट्र से बदल कर, जो विदेशी साम्राज्यवादियों द्वारा अपने देश से वंचित था, और जो सभी तरह के अपमान और असम्मान को सहन करता था, एक ऐसे महान शक्तिशाली तथा सम्मानित राष्ट्र का रूप पा चुकी है जिसकी अवमानना करने का किसी में साहस नहीं। वह एक ऐसा प्रभुसत्ता सम्पन्न स्वाधीन राज्य बन चुका है, जहां जनता सत्ता को अपने हाथों में मजबूती से लेकर अपने प्रयासों से अपने देश का निर्माण करती है। गणतंत्र की स्थापना से कोरिया की जनता ने नष्ट राष्ट्र जैसे दुर्भाग्य को हमेशा के लिये तिलांजलि दी और पूर्ण स्वतंत्र राज्य के झंडे के नीचे इतिहास के नये क्षेत्र में प्रवेश किया। गणतंत्र की स्थापना से वह देश, जो बहुत दिनों तक संसार के नक्शे से गायब था, संसार के छोटे-बड़े देशों बीच समानता के साथ अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में आ खड़ा हुआ।'

जनवादी जन गणतंत्र कोरिया कोरियाई जनता की स्वतंत्रता और स्वाधीनता का झंडा बन गया और समाजवाद तथा साम्यवाद के निर्माण का शक्तिशाली हथियार बन गया।

जनवादी जन गणतंत्र कोरिया की स्थापना के फलस्वरूप पूर्व में समाजवाद का एक शक्तिशाली दुर्ग उठ खड़ा हुआ, जिसे बहुत दिनों तक साम्राज्यवादी जंजीरों में बांध रखा गया था। गणतंत्र की स्थापना से राष्ट्रीय स्वतंत्रता, जनवाद और समाजवाद के लिये लड़ने वाली विश्व-जनता के क्रांतिकारी संघर्ष को वेग और बल मिला और औपनिवेशिक दासता की अमरीकी साम्राज्यवादी नीति को जोरदार ठोकर लगी।

उस समय उत्तरी आधे भाग के विरुद्ध अमरीकी साम्राज्यवादियों ने और खुल कर भड़काने की सैनिक चालें शुरू कर दीं, और वे एक दूसरा युद्ध छेड़ने के लिये पागल हो उठे। उसी बीच अमरीकी साम्राज्यवादियों ने दक्षिण कोरिया की जनता का कत्ले-आम जारी रखते हुये वहां की क्रांतिकारी शक्तियों को दबाने और कुचलने की बदहवास कोशिशें की। इसके अलावा, जासूसों के गुट ने, जो बड़ी चालाकी से अपने चेहरों पर नकाब लगाकर हमारे क्रांतिकारी शिविर में घुस आया था, अमरीकी साम्राज्यवादियों के इशारों पर हमारी क्रांतिकारी शक्तियों में फूट डालने और उसे नष्ट करने की घृणित साजिशें शुरू कर दीं।

शत्रु के इन हथकंडों का सामना करने के लिये देश की प्रतिरक्षा शक्ति को और बढ़ाते हुये कामरेड किम इल सुंग ने उत्तर तथा दक्षिण कोरिया की पार्टियों को मिलाकर कोरिया की वर्कर्स पार्टी बनाने का ऐतिहासिक फैसला जून १६४६ में कर लिया, ताकि दक्षिण कोरिया में पार्टी का काम, जो लगभग समाप्त हो चुका था, ठीक ढंग से चलने लगे और उत्तर तथा दक्षिण कोरिया की वर्कर्स पार्टियों के संयुक्त नेतृत्व को मजबूत किया जा सके।

पार्टी के गिर्द व्यापक क्रांतिकारी शक्तियों को एकजुट करने के लिये कामरेड किम इल सुंग ने उत्तर और दक्षिण के संयुक्त जनवादी राष्ट्रीय मोर्चों को भी, जिनमें सत्तर से अधिक राजनीतिक दल और जन संगठन शामिल थे, एक में मिला दिया और उसे पितृभूमि एकीकरण जनवादी मोर्चे के रूप में एक संगठन बना दिया।

जून १९५० में, जब कि युद्ध की आग भड़काने के लिये अमरीकी साम्राज्यवादियों की चालें गंभीर स्तर तक पहुंच गयीं, कामरेड किम इल सुंग ने अनेक नये तथा तर्कसंगत सुझाव पेश किये, जिनके अनुसार कोरिया में युद्ध रोका जा सकता था और देश को शांतिपूर्ण ढंग से एक किया जा सकता था।

उन प्रस्तावों को न सिर्फ कोरिया की जनता का, बल्कि सारे संसार की प्रगतिशील जनता का पूर्ण समर्थन प्राप्त था।

कामरेड किम इल सुंग ने कोरियाई क्रांति का विजयपूर्वक नेतृत्व करते हुये, अन्तर्राष्ट्रीय क्रांतिकारी शक्तियों को मजबूत बनाने के लिये और विश्व क्रांति की विजय समीप लाने के लिये तेजी से संघर्ष किया।

कामरेड किम इल सुंग ने पार्टी और सरकार की यह सुसंगत नीति बनायी कि विश्व क्रांति की प्रगति के लिये संघर्ष जारी रहे, जो कि कोरियाई क्रांति से अभिन्न रूप में जुड़ा हुआ है और उन्होंने इस नीति को सफल बनाने के लिये प्रयास किया।

अमरीकी साम्राज्यवादियों द्वारा दुनिया के हर कोने में चलायी जा रही आक्रामक और युद्ध-नीति के विरुद्ध लड़ने में उन्होंने पार्टी और जनता का नेतृत्व किया, दूसरे देशों की जनता के क्रांतिकारी संघर्ष को सक्रिय समर्थन तथा प्रोत्साहन दिया और यह सिखाया कि समस्त साम्राज्य-विरोधी, अमरीका विरोधी शक्तियां एकजुट होकर साम्राज्यवाद के विरुद्ध संघर्ष करें, जिसकी अगुवाई अमरीकी साम्राज्यवाद कर रहा है।

उन्होंने संसार की दमित जनता के साम्राज्य विरोधी राष्ट्रीय मुक्ति संघर्ष को सक्रिय समर्थन तथा प्रोत्साहन देने के लिये और समाजवादी शिविर तथा अन्तर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट आन्दोलन की एकता की गारंटी करने की दिशा में पूर्ण प्रयास किये।

दिसम्बर १९४९ में जिस समय एक ओर अमरीकी साम्राज्यवादियों ने एक नये युद्ध की तैयारियां तेज करते हुये सर्वतोमुखी "कम्युनिस्ट विरोधी अभियान" छेड़ा, और दूसरी ओर संशोधनवादियों नें साम्राज्यवादियों के साथ कंधे से कंधा मिला कर अन्तर्राष्ट्रीय क्रांतिकारी शक्तियों में फूट डालने की खुली साजिश की, तब कामरेड किम इल सुंग ने पार्टी की केन्द्रीय कमेटी की दूसरी विस्तृत बैठक बुलायी, जिसमें उन्होंने अमरीकी साम्राज्यवादियों, टीटो गुट तथा दूसरे संशोधनवादियों की घृणित चालों का पर्दाफाश किया, उनकी निन्दा की और युद्ध रोकने तथा शांति कायम रखने के संघर्ष में कम्युनिस्टों को जो सिद्धांत सम्मत नीति अपनानी चाहिये, उसको स्पष्ट किया ।

कामरेड किम इल सुंग ने सिखाया :

"ऐतिहासिक अनुभवों से पता चलता है कि साम्राज्यवादियों कीं स्थिति जितनीं ही दुर्बल होती है और दलदल से निकल पाने की आशा जितनी ही क्षीण होती है, उतनी ही बदहवासी से उनका छल कपट तथा दुस्साहसिकता और अधिक बढ़ जाती है । यह नतीजा निकालना बहुत बड़ी गलती होगी और शांति के लक्ष्य के लिये हानिप्रद होगा कि युद्ध का खतरा इसलिये कम हो चुका है कि साम्राज्यवादी शिविर दुर्बल हो चुका है और जनवादी शिविर सुदृढ़ बन चुका है ।

"जनवादी शिविर चाहे जितना मजबूत हो, और दुनिया की स्वतंत्रताप्रिय जनता चाहे जितनी ईमानदारी से शांति की कामना करती हो, शांति की सुरक्षा तब तक नहीं हो सकती, जब तक कि युद्ध की आग लगाने वालों के खिलाफ संघर्ष को संगठित और प्रभावशाली ढंग से संचालित नहीं किया जाता । युद्ध रोकने और शांति जीतने के लिये जरूरी है कि युद्ध की आग लगाने वालों और हत्यारों को बेनकाब और अमान्य किया जाय तथा दुनिया के सभी भागों में उनके विरुद्ध जोरदार संघर्ष छड़ा जाय ।"

युद्ध और शांति पर क्रांतिकारी मार्क्सवादी लेनिनवादी रुख का स्पष्टीकरण कर चुकने के बाद कामरेड किम इल सुंग ने इस जरूरत पर जोर दिया कि दुनिया भर की साम्राज्यवाद विरोधी शक्तियां एकजुट हों और साम्राज्यवाद विरोधी, अमरीका विरोधी संघर्ष तेज करें ।

मुक्ति के बाद शांतिपूर्ण निर्माण के दौर में कामरेड किम इल सुंग ने कोरियाई जनता का नेतृत्व करके, उत्तरी आधे भाग में क्रांतिकारी जनवादी अड्डे का निर्माण करके उसे राजनीतिक, आर्थिक तथा सैनिक दृष्टि से सुदृढ़ किया और इस प्रकार उन्होंने अमरीकी साम्राज्यवाद के सशस्त्र आक्रमण को कुचल कर, देश की स्वाधीनता की रक्षा करने और कोरियाई क्रांति को सक्रिय रूप से आगे बढ़ाने की सुदृढ़ गारंटी प्रस्तुत की ।

कामरेड किम इल सुंग ने दक्षिण कोरिया की क्रांति और मातृभूमि के एकीकरण के लिये भी सही दिशा और नीति प्रस्तुत की और उस दिशा और नीति को चरितार्थ करने के लिये सब से सही रास्ते पर आगे बढ़ने के संघर्ष में कोरियाई जनता का नेतृत्व किया, और इस प्रकार उन्होंने दक्षिण कोरिया में अमरीकी साम्राज्यवादियों की औपनिवेशिक गुलामी की नीति को तथा हमारे राष्ट्र के टुकड़े करने की उनकी साजिश को भी भारी आघात पहुंचाया ।

यह कामरेड किम इल सुंग के विवेकशील नेतृत्व और अडिग संघर्ष का ही सुपरिणाम था कि कोरियाई जनता अपनी क्रांतिकारी पार्टी, जन सरकार तथा अजेय जन-सेना के साथ ऐसा सफल संघर्ष चला सकी कि उत्तरी आधे भाग में, इतिहास में पहली बार जनता की जनवादी व्यवस्था के अन्तर्गत एक नये जीवन की रचना हो सकी और उत्तरी आधे भाग के क्रांतिकारी जनवादी अड्डे के सहारे क्रांति की राष्ट्रव्यापी विजय के लिये संघर्ष छिड़ सका ।

इन ऐतिहासिक परिवर्तनों और अपने वास्तविक जीवन के माध्यम से कोरिया की समस्त जनता ने कामरेड किम इल सुंग के क्रांतिकारी विचारों और उनके नेतृत्व के विवेक को गहराई से महसूस किया तथा आगे बढ़ते हुए उनके इर्द गिर्द इस विश्वास के साथ मजबूती से एकजुट हो गयी कि यदि वह उनके द्वारा बताये रास्ते पर आगे बढ़ती रही तो उसकी विजय निश्चित है ।

: ५ :

देश का शांतिपूर्ण ढंग से एकीकरण करने के संबंध में गणतंत्र की सरकार के न्यायोचित प्रस्तावों को अमरीकी–साम्राज्यवादी आक्रामकों तथा उनके दलाल सिंगमन री के कठपुतली गुट ने ठुकरा दिया और अन्ततः २५ जून १९५० को उत्तरी आधे भाग पर, कोरिया की जनता के खिलाफ अचानक सशस्त्र हमला करके आक्रामक युद्ध छेड़ दिया।

अमरीकी साम्राज्यवादियों के सशस्त्र हमले ने हमारी जनता को शांतिपूर्ण निर्माण को स्थगित करने और युद्ध की कठिन अग्नि परीक्षा में उतरने के लिये विवश कर दिया।

अमरीकी साम्राज्यवादियों द्वारा थोपा गया युद्ध हमारे लिये जीवन मरण का युद्ध था, जिसमें हमें यह तय करना था कि हम या तो पितृभूमि की स्वाधीनता की रक्षा करें, राष्ट्र के सम्मान की रक्षा करें या अमरीकी साम्राज्यवादियों की औपनिवेशिक गुलामी में जा गिरें।

अमरीकी साम्राज्यवादियों तथा उनके गुर्गों के सशस्त्र आक्रमण के विरुद्ध कोरिया की जनता का संघर्ष एक न्यायसंगत राष्ट्रीय मुक्ति युद्ध था, जिसके जरिये अमरीकी साम्राज्यवादियों को ठोकर मार कर देश की स्वतंत्रता और स्वाधीनता को बचाना था। यह अमरीकी साम्राज्यवादियों, उनके गुर्गों तथा देशी प्रतिक्रियावाद के विरुद्ध भयानक वर्ग संघर्ष था। यह अमरीकी साम्राज्यवाद के नेतृत्व में विश्व प्रतिक्रियावाद के घातक मोर्चे के विरुद्ध साम्राज्यवाद विरोधी, अमरीका विरोधी तीव्र संघर्ष था। साथ ही यह एक महान क्रांतिकारी युद्ध था, जिसके जरिये अमरीकी साम्राज्यवादियों की उन चालों को नष्ट करना था, जिनके अनुसार वे कोरिया के युद्ध को फैला कर उसे नये विश्वयुद्ध में तबदील कर देना चाहते थे। यह समाजवादी शिविर तथा विश्वशांति की सुरक्षा का तथा क्रांतिकारी आन्दोलन को और आगे विकसित करने का संघर्ष था।

जनवादी जन गणतंत्र कोरिया की सर्वोच्च जन सभा की स्थायी कमेटी तथा जनवादी जन गणतंत्र कोरिया की सरकार ने चिरविजयी, दृढ़ इच्छा शक्ति वाले, विलक्षण

कमांडर और सैनिक रणनीति की महान प्रतिभा से संपन्न कामरेड किम इल सुंग को कोरिया की जनसेना के सैनिक आयोग के अध्यक्ष तथा सर्वोच्च कमांडर के पद पर नियुक्त किया।

पार्टी, सरकार तथा सेना का समस्त कार्य, युद्ध मोर्चे और पिछले मोर्चों का सारा काम अपने कंधों पर संभालते हुये कामरेड किम इल सुंग ने युद्ध में विजयी संघर्ष के लिये समस्त कोरिया की जनता को संगठित और लामबन्द किया।

"पूरी शक्ति युद्ध की विजय के लिये" शीर्षक वाले अपने रेडियो भाषण में कामरेड किम इल सुंग ने २६ जून, १९५० को युद्ध में विजय के लिये लड़ाकू कर्तव्य प्रस्तुत किये। समस्त कोरियावासियों तथा जन सेना के सैनिकों और अफसरों का आवाहन किया कि वे सशस्त्र अमरीकी साम्राज्यवादी आक्रामकों तथा उनके गुर्गों का हमारे देश की भूमि से सफाया करने के पवित्र संघर्ष में एक होकर जुट जायं।

कामरेड किम इल सुंग ने अपने भाषण में सिखाया कि अमरीकी साम्राज्यवादियों और सिगमन री गुट के विरुद्ध पितृभूमि—मुक्ति—युद्ध में कोरिया की जनता को अपनी जान की बाजी लगा कर जनवादी जन गणतंत्र कोरिया तथा उसके संविधान की रक्षा करनी चाहिये। आधे दक्षिणी भाग में गद्दार कठपुतली हुकूमत का तख्ता पलट देना चाहिये। हमारे देश के आधे दक्षिणी भाग को अमरीकी साम्राज्यवादियों के औपनिवेशिक शासन से मुक्त करा देना चाहिये, आधे दक्षिणी भाग में जन समितियों—असली जन सत्ता—के संगठनों की पुनर्स्थापना कर देनी चाहिये, और जनवादी जन गणतंत्र कोरिया के झंडे के नीचे राष्ट्रीय एकीकरण के लक्ष्य को पूरा कर देना चाहिये।

कामरेड किम इल सुंग ने नारा दिया "पूरी शक्ति युद्ध की विजय के लिये" और उन्होंने अगले पिछले—दोनों मोर्चों को अडिग युद्ध पांतों में तबदील कर दिया।

कामरेड किम इल सुंग ने संकटकालीन कदम उठा कर जन सेना को मजबूत किया, देश की अर्थ व्यवस्था को युद्ध-स्तर पर खड़ा किया और पिछले मोर्चों को सुदृढ़ बनाया।

अमरीकी साम्राज्यवादियों द्वारा कोरिया की जनता पर जो युद्ध लादा गया, वह कोरियाई जनता के लिये कठिन अग्नि परीक्षा सिद्ध हुआ।

उस समय हमारा गणतंत्र नया था। सिर्फ पांच साल पहले हमारी जनता जापानी गुलामी से मुक्त हुई थी और जन सेना को संगठित हुये सिर्फ दो साल गुजरे थे। हमारी आर्थिक शक्ति भी अभी दुर्बल थी।

इन्हीं परिस्थितियों में कोरिया की जनता को उन अमरीकी साम्राज्यवादियों से लोहा लेना पड़ा, जिनके पास पूंजीवादी संसार में सबसे अधिक शक्तिशाली सेना थी,

जिनकी आर्थिक शक्ति सबसे बड़ी थी, जिनका आक्रामक इतिहास बहुत लम्बा था और जो १६ देशों के सशस्त्र आक्रामकों तथा गद्दार सिंगमन री गुट का नेतृत्व कर रहे थे।

यह घटना हमारी जनता की सबसे बड़ी अग्नि परीक्षा थी। लौह इच्छा शक्ति वाले, विलक्षण कमांडर, सैनिक रणनीति की प्रतिभा के धनी और क्रांति के महान नेता कामरेड किम इल सुंग, जिन्होंने जापान विरोधी सशस्त्र संघर्ष के पूरे दिनों में क्रांतिकारी जनता के अलावा और किसी की सहायता लिये बगैर, जापानी साम्राज्यवादियों को धूल में मिला दिया था और जापान–विरोधी सशस्त्र संघर्ष को विजयी बना दिया था, हमारी जनता का नेतृत्व कर रहे थे, अतः हमारी जनता को पूर्ण विश्वास था कि वह अमरीकी साम्राज्यवादियों को जरूर परास्त करेगी।

कामरेड किम इल सुंग ने अमरीकी साम्राज्यवादी आक्रामकों के आक्रामक युद्ध के अन्यायपूर्ण चरित्र, उनकी दुर्बलता, उनकी रणनीति की दुस्साहसिक प्रकृति, साम्राज्यवादी मोर्चे की अस्थिरता आदि का सूक्ष्म विवेचन किया। उन्होंने युद्ध में विजय के सारे तत्वों का भी पूर्ण विश्लेषण किया–कोरिया की जनता जो युद्ध चला रही थी, उसकी न्यायपरकता, जापान विरोधी सशस्त्र संघर्ष की क्रांतिकारी परम्पराओं की वारिस जन सेना की राजनीतिक तथा नैतिक दृष्टि से श्रेष्ठता, पार्टी तथा नेता के इर्द गिर्द एकजुट जनता की अनन्त शक्ति, जनता की जनवादी व्यवस्था की अक्षय जीवन-शक्ति, अंतर्राष्ट्रीय समर्थन और सारी दुनिया की जनता से इस संघर्ष के प्रति प्रोत्साहन। इसके बाद उन्होंने युद्ध के हर काल और दौर में विलक्षण रणनीति और कार्यनीति की दिशायें प्रस्तुत कीं और समस्त जनता और जन सेना का विजय की ओर पथ प्रदर्शन किया।

युद्ध के प्रथम दौर में कामरेड किम इल सुंग ने रणनीति संबंधी यह दिशा प्रस्तुत की कि शत्रु के सशस्त्र आक्रमण को नाकाम बना कर उस पर उतने जोर का प्रत्याक्रमण किया जाय कि शत्रु की मुख्य सेनाओं का तेजी से सफाया हो जाय और एक के बाद एक ऐसे हमले किये जाते रहें कि अमरीकी साम्राज्यवादियों को नयी टुकड़ियां लाने का मौका ही न मिल सके और इस प्रकार दक्षिणी आधे भाग की जनता को भी मुक्त कर दिया जाय।

यह कामरेड किम इल सुंग की श्रेष्ठ रणनीति और कार्यनीति तथा नेतृत्व कला का जौहर था कि जन सेना ने शत्रु के अचानक हमले को नाकाम कर दिया, प्रत्याक्रमण शुरू कर दिया और शत्रु पर जोरदार चोटें करती हुई दक्षिण की ओर बढ़ने लगी।

प्रत्याक्रमण के प्रारंभ में ही कामरेड किम इल सुंग ने शत्रु के इरादों का, सेना संभाजन के उसके तरीकों आदि का वैज्ञानिक विश्लेषण किया और इस आधार पर जन

सेना के लिये विस्तार से कार्यवाही सम्बंधी नीति प्रस्तुत की और युद्धों में जनसेना के दस्तों का कौशल के साथ नेतृत्व किया।

इससे जन सेना के हाथ में युद्ध के प्रारम्भ से ही अभियान की पहल आ गयी। और उसने शत्रु को नये क्षेत्रों में अपनी सुरक्षा को मजबूत करने के लिये सांस तक लेने का मौका न देते हुये, उस पर अपने आघात जारी रखे।

तूफानी लहरों की तरह बढ़ती हुई जनसेना ने सियोल क्षेत्र को, जहां शत्रु की प्रमुख सेनायें केन्द्रित थीं, युद्ध शुरू होने के तीन दिन के भीतर मुक्त कर दिया, और शत्रु की सुरक्षा पंक्ति को तोड़ती हुई वह दैजन की ओर बढ़ने लगी।

अमरीकी साम्राज्यवादियों ने बदहवास होकर अपनी आक्रामक शक्तियों को बहुत बड़े पैमाने पर बढा कर हमारी जनसेना की प्रगति को रोकने का प्रयास किया।

इस सिलसिले में कामरेड किम इल सुंग ने ८ जुलाई १९५० को अपने रेडियो भाषण में जोर देकर कहा कि समस्त कोरियाई जनता और जनसेना के सैनिकों और अफसरों को चाहिये कि वे सशस्त्र आक्रामकों को निर्णयकारी रूप से परास्त करें और अपनी धरती से मार भगायें तथा पितृभूमि के मुक्ति युद्ध में अन्तिम विजय हासिल करें। उन्होंने अपनी अपील में कहा :

"आइये हम आगे बढ़ें और अमरीकी साम्राज्यवादियों को अपने इस देश की भूमि से मार भगायें, जहां पीढ़ियों से हमारे पूर्वज कब्रों में विश्राम कर रहे हैं और जहां हमारी प्रिय नयी पीढ़ी बढ़ रही है। आइये, हम अपने पवित्र मुक्ति संघर्ष को विजयी बनायें, ताकि जनवादी जन गणतंत्र कोरिया का शानदार झंडा बुसान, मोकफो और जेजु दो द्वीप की हालासान पहाड़ी पर लहराये।"

नेता के लड़ाकू आवाहन पर जन सेना दक्षिण की ओर निरन्तर बढ़ती गयी और हर कदम पर शत्रु को गहरी चोट पहुंचाती रही।

अमरीकी साम्राज्यवादी आक्रामक भारी पैमाने पर अपनी कुमुक बढ़ा कर भी मोर्चे की स्थिति में कोई तबदीली न कर सके।

दैजन नामक स्थान को, जो शत्रु के लिये रणनीति और सैनिक गतिविधियों की दृष्टि से महत्वपूर्ण था, जन सेना के मिले जुले दस्तों ने घेरते हुये हमले के कई तरीके अपनाये। आगे से हमला किया, घेर कर शत्रु का सफाया किया, तेजी से अपनी स्थिति बदली और चक्कर डाला, घात लगाकर हमला किया और इस प्रकार अमरीकी साम्राज्यवादी आक्रमकों की उस २४ वीं डिवीजन का सफाया करके शानदार जीत हासिल कर ली, जिसके बारे में अमरीकी साम्राज्यवादी आक्रामकों का दावा था कि वह उनकी "चिर विजयी

टुकड़ी" है। जनसेना ने साथ ही कठपुतली सेनाओं का भी सफाया कर दिया और इस प्रकार दैजन को मुक्त कर दिया।

दैजन की मुक्ति के अभियान ने, जो खुद कामरेड किम इल सुंग के व्यक्तिगत नेतृत्व में चलाया गया, अमरीकी साम्राज्यवादी आक्रामक सेनाओं पर घातक पराजय थोप दी। इससे एक बार फिर उनकी कार्यनीति और रणनीति की अजेय शक्ति सिद्ध हो गयी।

घनघोर युद्धों के उन दिनों में सर्वोच्च कमांडर कामरेड किम इल सुंग गोलों की बौछार के बीच मोर्चे पर गये, उन्होंने स्वयं युद्ध का संचालन किया और खाइयों में लड़ते हुये सैनिकों और अफसरों को प्रोत्साहित किया।

सम्मानित तथा प्रिय नेता के श्रेष्ठ नेतृत्व में जन सेना के सैनिकों और अफसरों ने अद्वितीय वीरता और पराक्रम दिखाते हुये अमरीकी साम्राज्यवादी आक्रामकों के पैर उखाड़ दिये और डेढ़ महीने में दक्षिणी आधे भाग का ९० प्रतिशत क्षेत्र और उसकी ९२ फीसदी आबादी को मुक्त कर दिया तथा शत्रु को उत्तरी और दक्षिणी क्योंसांगसांग सूबों की पट्टी में खदेड़ कर पहुंचा दिया। इस प्रकार उन्होंने युद्ध के शानदार नतीजे पेश कर दिये।

मोर्चे पर जन सेना के दस्तों का नेतृत्व करते हुये कामरेड किम इल सुंग ने विजय को निश्चित बनाने के लिये पिछले मोर्चे पर समस्त जनता को संगठित और आंदोलित करने में सारी शक्ति लगाई।

नेता के लड़ाकू आवाहन का हार्दिक उत्तर देते हुये सारी जनता एकजुट होकर शत्रु का सफाया करने के लिये पवित्र युद्ध में कूद पड़ी। युद्ध प्रारंभ होने के कुछ ही हफ्तों के अन्दर लगभग ८५०,००० तरुणों और छात्रों ने मोर्चे पर जाने के लिये अपने को अर्पित किया।

हमारे मजदूर वर्ग ने हर कहीं मजदूर रेजीमेंट बना कर मोर्चे पर जाने के साथ ही स्वेच्छा से काम के घंटे बढ़ाये तथा 'तूफानी दस्ता आन्दोलन', 'युवक वर्कटीम आंदोलन' तथा दूसरे अनेक ढंग के आन्दोलन चलाये, ताकि मोर्चे पर मदद पहुंचाने के लिये उत्पादन में वृद्धि हो। किसानों ने युद्धकालीन खाद्य उत्पादन में अपना समस्त देशभक्ति पूर्ण उत्साह लगा दिया, और हमारे परिवहन वीरों ने अपने काम में हर मिनट सुधार करते हुये युद्ध कालीन परिवहन की गारंटी की।

दक्षिणी आधे भाग के उन क्षेत्रों में, जिन्हें जन सेना ने मुक्त कर दिया था, कामरेड किम इल सुंग ने पार्टी, सरकार और जन संस्थाओं की स्थापना कार्यों का निर्देशन किया और भूमि सुधार तथा दूसरे जनवादी सुधार किये, और इस प्रकार वहां जनता की जनवादी

स्वतंत्रता और उसके अधिकारों की गारंटी की। दक्षिणी आधे भाग के विशाल क्षेत्रों में अमरीकी साम्राज्यवादियों तथा उनके गुर्गों की राजनीतिक तथा आर्थिक जड़ें खत्म हो गयीं और सामाजिक जीवन के सभी क्षेत्रों में एक नयी जनवादी व्यवस्था और प्रशासन स्थापित हो गया।

दक्षिणी आधे भाग की मुक्त जनता नये जीवन के कारण पूर्ण आनन्दित होकर महान नेता कामरेड किम इल सुंग के इर्द गिर्द मजबूती से जमा हुई और उसने जन सेना को दक्षिण की ओर आगे बढ़ने में हर तरह की मदद दी।

दक्षिणी आधे भाग के देशभक्त तरुण और छात्र बहुत बड़ी संख्या में स्वेच्छा से स्वयंसेवक दलों में शामिल हुये और उन्होंने शत्रु के विनाश के पवित्र युद्ध में भाग लिया। जनसेना द्वारा मुक्त किये जाने के कुछ ही हफ्तों के अन्दर उनकी संख्या ४ लाख से भी अधिक बढ़ गयी।

पराजय सामने देख कर अमरीकी साम्राज्यवादी बदहवास कोशिशें करने लगे। हमारे देश पर एक झपट्टे में ही अधिकार करने का व्यर्थ प्रयत्न करने के लिये अमरीकी साम्राज्यवादियों ने अपनी प्रशांत सागर स्थित समस्त थल, जल और वायु सेनाओं और भूमध्यसागर स्थित बेड़े के एक भाग को भी ला जुटाया और "संयुक्त राष्ट्र" के झण्डे का दुरुपयोग करके अपने कठपुतली राष्ट्रों की सेनाओं तक को कोरियाई मोर्चे पर ले आये।

दुश्मनों ने हजारों नये सैनिक मोर्चे पर झौंकते हुए सितम्बर १९५० में ३०० से अधिक युद्धपोत, १००० से ज्यादा हवाई जहाज और ५०,००० सैनिक जुटा कर इन्छन क्षेत्र में फौज उतारने की कार्यवाही बड़े पैमाने पर की।

इस नयी सैनिक और राजनीतिक परिस्थिति में कामरेड किम इल सुंग ने रणनीति संबंधी यह दिशा पेश की कि एक ओर शत्रु की प्रगति को रोकते हुये जन सेना पीछे हटे, ताकि उसे एक ओर तैयारी का समय मिले तो दूसरी ओर नयी रिजर्व टुकड़ियां बनायी जायं और प्रत्याक्रमण के जोरदार दल तैयार किये जायं, ताकि शत्रु पर नये घातक हमले की तैयारी की जा सके और युद्ध की आम परिस्थिति को अपने अनुकूल बनाया जा सके।

कामरेड किम इल सुंग ने जो रणनीति संबधी दिशा प्रस्तुत की, वह सबसे अधिक सकारात्मक और विवेकशील दिशा थी, जिसका उद्देश्य ऐसे शत्रु को दुर्बल बना कर उसे पराजित करना था, जिसने अस्थायी रूप से प्रवरता हासिल कर ली थी, और साथ ही इसका उद्देश्य यह भी था कि हमारी सेना की शक्ति सुरक्षित और सुदृढ़ हो तथा उसे फिर से संगठित करके शत्रु पर निर्णायक हमला किया जाय।

११ अक्तूबर, १९५० के अपने रेडियो भाषण में कामरेड किम इल सुंग ने जन

सेना के समस्त सैनिकों, अफसरों और आम जनता का आवाहन किया कि वह अपने खून से देश की एक एक इंच भूमि की रक्षा करे, शत्रु पर निर्णायक वार करने के लिये सभी शक्तियों को एकजुट करे और हमारे देश से अमरीकी साम्राज्यवादियों तथा उनके गुर्गों का सफाया करने के लिये हमला करे।

कामरेड किम इल सुंग की अपील के हार्दिक उत्तरस्वरूप उन कठिन परिस्थितियों में भी, जब हमारी सेना को कुछ समय के लिये पीछे हटना पड़ा, समस्त जनता ने बहादुरी से संघर्ष किया, इस विश्वास के साथ कि यदि वह बहादुरी से लड़ी और नेता के गिर्द मजबूती से जमा हुई तो उसे अंतिम विजय निश्चित ही मिलेगी।

कामरेड किम इल सुंग ने सिओल-इन्छन क्षेत्र को, जहां शत्रु ने बड़े पैमाने पर सेना उतारी थी, बचाने के लिये जम कर युद्ध का संचालन किया, शत्रु की योजना को विफल कर दिया, और उस बात की गारंटी कर दी कि मोर्चे से मुख्य सेनायें संगठित रूप से पीछे आ सकें। जन सेना की मुख्य टुकड़ियों ने, हर जगह शत्रु पर भारी आघात करते हुये, बहुत ही थोड़े समय में पीछे हटने की कार्यवाही सफलता से पूरी कर ली।

कामरेड किम इल सुंग ने इसका ध्यान रखा कि पीछे हटते समय कुछ टुकड़ियां शत्रु पंक्ति के पीछे दूसरा मोर्चा बना लें, ताकि शत्रु के सैनिकों तथा सामान को गहरी क्षति पहुंचायी जा सके, अनेक शत्रु अधिकृत क्षेत्रों को मुक्त किया जा सके और अपनी तैयारी कर सकें कि आगे चल कर वे जन सेना के नये आक्रमण में शामिल हो सकें। इस योजना को ही श्रेय है कि शत्रु प्रतिरक्षा की स्थिति में पड़ गया तथा आगे–पीछे दोनों तरफ से उसे मार खानी पड़ी।

नेता की इस अपील पर कि अमरीकी साम्राज्यवादी आक्रामकों पर प्रहार करने के लिये छापामार दस्ते संगठित किये जायं, शत्रु को एक दाना चावल न मिल सके और उस के विरुद्ध हर तरह से लड़ा जाय, शत्रु पंक्ति के पीछे पार्टी सदस्यों और जनता ने जन छापामार दस्तों का संगठन किया, अचानक हमलों का तांता लगा दिया और शत्रु का अनेक स्थानों पर सफाया कर दिया। छोटे लड़कों तक ने छापामार दस्ते बनाये, शत्रु को पछाड़ा और इस तरह उसे भय और परेशानी के दलदल में झोंक दिया।

युद्ध के पहले ही दिन से अमरीकी साम्राज्यवादियों ने युद्ध के सभी तरह के ऐसे बर्बर तरीके अपनाने शुरू किये, जिनकी मिसाल शुद्ध इतिहास में ढूंढ़े भी नहीं मिल सकती। अमरीकी साम्राज्यवादियों ने स्कूलों, अस्पतालों, सांस्कृतिक संस्थानों, घनी आबादी वाली बस्तियों पर अंधाधुंध बमबारी करके बर्बरतापूर्वक शांतिपूर्ण नागरिकों की हत्या की और

खासतौर से उस समय, जबकि हम अस्थायी रूप से पीछे हट रहे थे, उन्होंने देश के सभी भागों में राक्षसी हत्याकाण्ड और अत्याचार किये।

अमरीकी साम्राज्यवादी आक्रामकों के इन पाशविक अत्याचारों का जिक्र करते हुये कामरेड किम इल सुंग ने कहा :

"एंगेल्स ने एक बार ब्रिटिश फौज को सबसे बर्बर फौज बताया था। दूसरे विश्व युद्ध के दौरान जर्मन फासिस्टों ने अपनी बर्बरता में अंग्रेजों को मात कर दिया। उस समय हिटलरी दरिन्दों ने जैसी दानवी और भयानक बर्बरता बरती, उससे अधिक की कल्पना कोई मानव मस्तिष्क नहीं कर सकता था।

"लेकिन कोरिया में यान्की लोगों ने हिटलरी दरिन्दों को भी मात कर दिया।"

किंतु अमरीकी साम्राज्यवादी आक्रमणकारियों की हद दर्जे की बर्बरतायें भी कोरिया की जनता को कभी नहीं झुका सकती थी।

पीछे हटने के कठिन दिनों में भी हमारी जनता अपने नेता की अपील के प्रति वफादार बनी रही और उन जापान-विरोधी छापामारों के उदाहरण का अनुसरण करती हुई वीरतापूर्वक लड़ती रही, जो हर मुश्किल में सदा उनके विचारों तथा संकल्पों के अनुसार चले और कार्य किया तथा उनके आदेशों और निर्देशों का पालन करने में अपनी जान की बाजी लगाने में भी पीछे नहीं हटे।

एक ही सांस में हमारे देश की समूची धरती पर कब्जा कर लेने की शत्रु की योजना पूर्णतः विफल हो गयी।

१९५० में अक्तूबर के अंतिम दिनों में जन सेना के पीछे हटने का काम कामरेड किम इल सुंग के श्रेष्ठ नेतृत्व में समाप्त हुआ और युद्ध तीसरे चरण में पहुंचा।

कामरेड किम इल सुंग ने यह स्पष्ट कर दिया कि नये दौर में, जबकि प्रत्याक्रमण किया जायेगा, रणनीति संबंधी दिशा शत्रु को भगाने की होगी, जो उत्तरी आधे भाग में घुस चुका था, और उसे भगा कर ३८वें अक्षांश के दक्षिण तक पहुंचाना होगा तथा युद्ध में विजय के लिये सभी तैयारियां करते हुये, शत्रु को थकाने का युद्ध बराबर जारी रख कर, उसकी शक्ति क्षीण करनी होगी।

कामरेड किम इल सुंग द्वारा प्रस्तुत रणनीति संबंधी दिशा के अनुसार साहसपूर्ण युद्ध करके, जन सेना की टुकड़ियों ने दिसम्बर १९५० के अन्त तक गणतंत्र के उत्तरी आधे भाग में शत्रु अधिकृत क्षेत्रों को पूर्णतः मुक्त कर दिया और शत्रु के बहु प्रचारित 'बड़े दिन वाले आम अभियान' को विफल कर दिया। इस बीच, कामरेड किम इल सुंग द्वारा पूर्व निर्धारित और ठोस रणनीति संबंधी योजना के अनुसार शत्रु पंक्ति के पीछे दूसरे मोर्चे

पर सक्रिय दस्तों ने अगले मोर्चे के दस्तों के प्रत्याक्रमण से तालमेल बैठाते हुये, अमरीकी साम्राज्यवादियों की ८ वीं फील्ड आर्मी के कमांडर समेत शत्रु की अनेक टुकड़ियों का सफाया कर दिया और लड़ाई का बहुत सा सामान और तकनीकी साज सामान अपने कब्जे में ले लिया।

इस पराजय से अपनी कमर सीधी करने के लिये अमरीकी साम्राज्यवादियों ने बहुत बड़ी कुमुक मंगवायी और एक नया सैनिक दुस्साहस शुरू कर दिया। इस प्रकार युद्ध का स्वरूप लम्बा खिचने वाला बन गया।

युद्ध के लम्बे खिंचने की स्थिति पर विचार करने के लिये दिसम्बर १९५० में कामरेड किम इल सुंग ने पार्टी की केन्द्रीय कमेटी का तीसरा विस्तृत अधिवेशन बुलाया, ताकि अगले और पिछले मोर्चों को और मजबूत किया जाय, और शत्रु के विरुद्ध निर्णायक आक्रमण किया जा सके, पीछे हटने के समय अस्थायी ढंग से पैदा हुये मतिभ्रम को दूर किया जाय तथा पार्टी, राज्य तथा सेना के संगठनों के कामों को सुधारा और सुदृढ़ बनाया जाय।

उस सम्मेलन में कामरेड किम इल सुंग ने जो रिपोर्ट प्रस्तुत की, उसका शीर्षक था : **"वर्तमान परिस्थिति और तात्कालिक कर्तव्य।"**

इस रिपोर्ट में कामरेड किम इल सुंग ने पीछे हटने के समय उद्घाटित कुछ अनुशासन हीन कामों की आलोचना की और कहा कि हमारा सबसे पहला और सबसे महत्वपूर्ण कर्तव्य यह है कि हम पार्टी और राज्य के संगठनों तथा सेना में क्रांतिकारी अनुशासन पैदा करें।

कामरेड किम इल सुंग ने सिखाया कि पार्टी और क्रांति के सामने जितनी अधिक मुश्किलें पैदा हों, पार्टी अनुशासन को उतना ही अधिक मजबूत बनाना होगा, पार्टी सदस्यों की एकता और एकरूपता को उतना ही संजो कर रखना होगा, तथा केवल इसी तरह युद्ध में अंतिम विजय हासिल की जा सकेगी।

कामरेड किम इल सुंग ने सिखाया :

"बर्बर शत्रु को पराजित करने और शानदार विजय प्राप्त करने की एक जरूरी शर्त यह है कि हमारी पार्टी पहले से कहीं अधिक अनुशासन मजबूत करे, और पार्टी की केन्द्रीय कमेटी के इर्द गिर्द उसके सदस्य पहले से कहीं अधिक दृढ़ता के साथ एकताबद्ध हों. . . . . .ध्यान रखना होगा कि पार्टी के आदेशों को आग और पानी में भी सही ढंग से और तुरन्त पूरा करने की सुदृढ़ कार्यशैली समूची पार्टी में पायी जाय।"

सैनिक गतिविधियों में कठमुल्लापन को ठुकराने और जूछे की स्थापना पर जोर

देते हुये उन्होंने यह भी सिखाया कि सेना की साज सज्जा में सुधार करना होगा, उसमें वृद्धि करनी होगी, ताकि वह हमारे पहाड़ी देश के भौगोलिक चरित्र के अनुकूल पड़े और उससे आधुनिक युद्ध-संचालन की आवश्यकतायें पूरी हों। और पहाड़ों में तथा रात के अंधेरे में होने वाले युद्ध की कला में भी पूर्ण पारंगत होना पड़ेगा।

उस रिपोर्ट में कामरेड किम इल सुंग ने यह कर्तव्य भी बताया कि अस्थायी रूप से पीछे हटने की प्रक्रिया में हमें जो घाव लगे, उन्हें भरना होगा और पिछले मोर्चे को मजबूत बनाना होगा। उन्होंने ऐसे कदम सुझाये जिनकी मदद से पार्टी तथा सरकार के संगठनों को अल्पमत अवधि में फिर से सुस्थापित और समायोजित किया जा सके, नष्ट अर्थ व्यवस्था का पुनर्वास किया जा सके और मुक्त क्षेत्रों की जनता के रहन-सहन को कम से कम समय में सुस्थिर बनाया जा सके। और उन्होंने बताया कि जिन्होंने शत्रु के अस्थायी कब्जे के दौरान प्रतिक्रियावादी संगठनों में शिरकत कर ली है, उनके साथ उचित रीति से पेश आया जाय तथा प्रति-क्रांतिकारियों के विरुद्ध चौतरफा अभियान चालू कर दिया जाय।

युद्ध में आत्म–निर्भरता की क्रांतिकारी भावना को अधिक से अधिक बढ़ाने की जरूरत पर बोलते हुये कामरेड किम इल सुंग ने सिखाया :

"हमारी सहायता कोई भी करे, किसी भी तरीके से करे, फिर भी हमारी समस्यायें हमारे जरिये ही हल होनी चाहियें। हम, कोरियावासी अपने मालिक हैं, मालिकों को सबसे ज्यादा प्रयास करना चाहिये। हमारी जनता की प्रेरक और उसको संगठित करने वाली है हमारी वर्कर्स पार्टी। वर्कर्स पार्टी के सदस्य मेहनतकश जनता की धुरी हैं, सक्रिय हिरावल हैं और मेहनतकश जनता के अगुवा हैं।

"हमारा राष्ट्र अपनी शक्ति पर रह सकता है या नहीं, यह इस बात पर निर्भर करता है कि हमारी पार्टी कैसे काम करती है और हमारी जन सेना कैसे युद्ध करती है।"

विस्तृत अधिवेशन में दी गयी कामरेड किम इल सुंग की सीखों के अनुसार पार्टी ने सभी क्षेत्रों में क्रांतिकारी अनुशासन कायम करने का जोरदार संघर्ष छेड़ दिया और युद्ध में अंतिम विजय के लिये जनता और जन सेना के सैनिकों को संगठित और लामबंद किया।

युद्ध के भीषणतम दिनों में पार्टी की केन्द्रीय कमेटी का जो तीसरा विस्तृत अधिवेशन हुआ, वह अपने नेता के आदेशों और निर्देशों का बिना शर्त्त समर्थन और पालन करने, क्रांतिकारी अनुशासन सुदृढ़ करने की भावना से सभी सदस्यों को लैस करने की दृष्टि से, और इस प्रकार पूरी पार्टी में एकात्म वैचारिक व्यवस्था पूर्णतया स्थापित करने, पार्टी की लड़ाकू शक्ति और बढ़ाने, सैनिक मामलों में कठमुल्लापन को दूर करने, जन सेना की

युद्ध क्षमता में वृद्धि करने, पिछले मोर्चे को सुदृढ़ करने और मोर्चे पर नयी जीतें हासिल करने की दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण सिद्ध हुआ।

जून १९५१ से मोर्चा मुख्यतः ३८ अक्षांश पर जाकर स्थिर हो गया और युद्ध एक नये चरण में जा पहुंचा।

नयी परिस्थिति को देखते हुये कामरेड किम इल सुंग ने रणनीति संबंधी यह दिशा प्रस्तुत की कि सशक्त प्रतिरक्षात्मक स्थितियां खड़ी करके सक्रिय रूप से अड्डे की रक्षात्मक लड़ाई चलाई जाय, अपने कब्जे की विभाजित रेखा की सुरक्षा करते हुए लगातार शत्रु पर हमले करके उसे नाकाम बनाते रहा जाय, दूसरी ओर समय लेकर जनसेना की युद्ध क्षमता और भी बढ़ायी जाय तथा पिछले मोर्चे को सुदृढ़ किया जाय, ताकि युद्ध में अंतिम विजय हासिल करने के लिये हर अनुकूल परिस्थिति की रचना की जा सके।

नेता द्वारा प्रस्तुत कार्यनीति का पूरे दिल से पालन करते हुये जनसेना के अफसरों और सैनिकों ने सुरंगें खोदीं, और उन पर भरोसा करके प्रतिरक्षा की लड़ाई की सक्रिय स्थिति में उतर पड़े। इस प्रकार उन्होंने पैदल सेना और तोप सेना में घनिष्ठ सहयोग स्थापित कर शत्रु पर निरन्तर भारी प्रहार किये।

एक के बाद एक पराजय के बाद शत्रु को विवश होकर युद्ध विराम वार्ता का प्रस्ताव रखना पड़ा।

युद्ध विराम वार्ता के प्रस्ताव के पीछे शत्रु ने सांस लेने का मौका ढूंढ़ा और उसने चालाकी से भरे कूटनीतिक तरीकों से अपनी सैनिक पराजय को कम करने की चेष्टा की।

शत्रु की चाल पहले से ही समझ कर कामरेड किम इल सुंग ने उस स्थिति का सामना करने के लिये हमारे दृष्टिकोण और रुख को स्पष्ट किया। उन्होंने कहा कि अमरीकी साम्राज्यवादी आक्रामकों के बारे में किसी को कोई भ्रम नहीं रखना चाहिये और सिखाया कि हमारी सेनाओं को और भी सुदृढ़ बनाना चाहिये, शत्रु पर सैनिक प्रहार बराबर जारी रहना चाहिये और युद्ध विराम वार्ता के पीछे छिपी साम्राज्यवादियों की घृणित चालों को नाकाम कर देना चाहिये।

युद्ध विराम वार्ता १० जुलाई, १९५१ को शुरू हुई। शत्रु ने युद्ध–विराम वार्ता में हर तरह के ऊल जलूल तर्कों और चालाकी का इस्तेमाल किया। किन्तु हर बार शत्रु की मूर्खतापूर्ण तथा घृणित साजिशें हमारे पक्ष के अडिग और समझौताहीन रुख से विफल कर दी गयीं।

जब अमरीकी साम्राज्यवादियों को युद्ध विराम वार्ता में अपना उल्लू सीधा करने में कामयाबी न मिली तो उन्होंने समुद्री तटों पर सेना उतारने के साथ साथ व्यापक पैमाने

पर हमले शुरू कर दिये और दूसरी ओर वे मोर्चे पर अपनी शक्ति बढ़ाने लगे और हमें आणविक अस्त्रों की धमकी देने लगे।

लेकिन नेता के इर्द गिर्द चट्टानी एकता में बंधी कोरिया की जनता को शत्रु का कोई सैनिक अभियान या धमकी भयभीत न कर सकी।

कामरेड किम इल सुंग ने कहा :

"अमरीकी साम्राज्यवादी चाहे आणविक अस्त्रों की धमकी दें और अपने सैनिक तकनीक की शक्ति का प्रदर्शन करके डराने दबाने का प्रयत्न करें, किन्तु उनकी जंगली महत्वांकांक्षा अनिवार्यतः धूल में मिलेगी. . . .

"कोरिया की जनता के वीरतापूर्ण संघर्ष ने समस्त संसार की स्वाधीनता प्रेमी जनता के समक्ष यह सिद्ध कर दिया है कि देश की स्वाधीनता और आजादी के लिये जनता के संघर्ष पर आणविक ब्लैकमेल का कोई असर नहीं पड़ सकता। अतः हम लोग जो युद्ध छेड़े हुये हैं, उससे साम्राज्यवादी हत्यारों को अमली सबक मिलेगा, औपनिवेशिक और गुलाम देशों में जनता को महान प्रोत्साहन मिलेगा तथा यह युद्ध दबे हुए राष्ट्रों के मुक्ति आंदोलन का झंडा बनेगा।"

१९५१ में मध्य-अगस्त से नवंबर के शुरू तक के बीच शत्रु ने बड़ी सेना जमा करके 'ग्रीष्म और हेमन्त अभियान' छेड़ दिया और इस बात का व्यर्थ प्रयास किया कि उत्तरी आधे भाग के इलाकों पर फिर से कब्जा कर लिया जाय और राजनीति की दृष्टि से हमारे ऊपर सैनिक दबाव डाल कर तथाकथित 'सम्मानपूर्ण युद्ध विराम' भी हासिल कर लिया जाय।

कामरेड किम इल सुंग की विशिष्ट रणनीति और कार्य-नीति के फलस्वरूप शत्रु बड़े पैमाने के अपने पहले 'ग्रीष्म अभियान' में जैसी पराजय भोग चुका था, उसके बाद उसने मोर्चे के पश्चिमी क्षेत्र पर आक्रमण करने का स्वांग रचकर, मोर्चे के पूर्वी क्षेत्र पर भारी सेनायें जमा कीं, और पूर्वी तट पर जो सैनिक टुकड़ियां उतारी जाने वाली थीं, उनके सहयोग से छलपूर्वक, एक ही झटके में गणतंत्र के उत्तरी आधे भाग पर कब्जा करने के लिये 'हेमन्त आक्रमण' शुरू किया।

शत्रु की चालाकी भरी चाल को समय रहते पहचान कर कामरेड किम इल सुंग ने सिखाया कि पश्चिमी तट पर जमा हमारी कुछ टुकड़ियों को मोर्चे के पूर्वी क्षेत्र पर शीघ्रता पूर्वक भेज कर शत्रु के आक्रमण को कुचलना होगा और इस बीच पहाड़ी १२११ चोटी के क्षेत्र में अभेद्य सुरक्षा व्यवस्था खड़ी करनी होगी, जहां शत्रु के व्यापक हमले की आशंका थी। और इस तरह शत्रु के सफाये का बहुत बड़ा अभियान चलाना होगा।

में कमांडिग अफसरों तथा राजनीतिक कार्यकर्ताओं के प्रशिक्षण और शिक्षण के काम को संगठित किया और उनका निर्देशन किया, ताकि मोर्चे की जरूरत के अनुसार जनसेना में विस्तार हो सके, सैनिकों को गुणात्मक दृष्टि से शक्तिशाली बनाया जा सके और खास तौर से कमांडिग अफसरों तथा कर्मचारियों की, संगठनकर्ताओं के रूप में, योग्यता बढ़ायी जा सके। इस प्रकार युद्ध की परिस्थितियों में भी अनेक स्तरों पर अफसरों के स्कूलों तथा विभिन्न प्रशिक्षण केन्द्रों की स्थापना की गयी तथा पुराने स्कूलों का विस्तार किया गया और अनेक नये कमांडिग अफसरों और राजनीतिक कार्यकर्ताओं को प्रशिक्षण दिया गया।

कामरेड किम इल सुंग ने इस पक्ष की ओर भी ध्यान दिया कि हर सैनिक विभाग की अस्त्र व्यवस्था में सुधार किया जाय, ताकि आधुनिक युद्ध की विशेष आवश्यकतायें पूरी की जा सकें और वे हमारे देश की प्राकृतिक-आर्थिक तथा सैनिक-भौगोलिक परिस्थितियों के अनुकूल सिद्ध हो सकें। फलतः घनघोर युद्ध के दौरान भी जन सेना की युद्ध क्षमता निरन्तर बढ़ती रही और हमारी जन सेना आधुनिक सैनिक तकनीक से भलीभांति लैस हुई।

सर्वोच्च कमांडर कामरेड किम इल सुंग की पहल पर १९५२ में जन सेना की युद्ध क्षमता की वृद्धि के लिये फिर जो आदर्श कंपनी आन्दोलन संचालित किया गया, उसने जनसेना के सारे दस्तों को राजनीतिक, सैद्धांतिक और सैनिक दृष्टि से शक्तिशाली बनाने तथा उन्हें विकसित करने की दिशा में और मोर्चे पर सैनिकों का पराक्रम उजागर करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की।

विशेषकर, कामरेड किम इल सुंग ने दिसम्बर १९५२ में जो ऐतिहासिक भाषण दिया, जिसका विषय था **'आइये, हम जन सेना को सुदृढ़ करें'**, वह युद्ध के चरित्र के प्रश्न, युद्ध में विजय के स्थायी तत्वों तथा अन्य सैनिक मसलों पर और युद्ध में विजय की गारंटी करने के लिये सेना के अफसरों, सैनिकों तथा जनता को वैज्ञानिक ज्ञान से सुसज्जित करने तथा जन सेना को एक कार्यकर्ता सेना के रूप में प्रशिक्षित करने तथा उसका आधुनिकीकरण करने के प्रश्नों पर मार्क्सवादी-लेनिनवादी सिद्धांत को रचनात्मक ढंग से विकसित करने के लिये अपार महत्वपूर्ण सिद्ध हुआ।

मोर्चे के हर क्षेत्र में युद्ध संचालन करके विजय की गारंटी करते हुये कामरेड किम इल सुंग ने पिछले मोर्चे पर पार्टी तथा सरकार के संगठनों को सुदृढ़ करने, उनकी अग्रणी भूमिका बढ़ाने और जनता को युद्ध में संगठित और लामबंद करने के काम का तेजी से संगठन और निर्देशन किया।

उन्होंने सिखाया कि युद्ध की पेचीदा और मुश्किल परिस्थितियों में पार्टी के भीतर

कमजोरी को, चाहे वह कितनी ही छोटी क्यों न हो, दूर करने में विलम्ब नहीं करना चाहिये, ताकि पार्टी संगठनात्मक और सैद्धांतिक दृष्टि से निरन्तर सुदृढ़ बनती रहे।

कामरेड किम इल सुंग ने नवम्बर १९५१ में पार्टी की केन्द्रीय कमेटी का चौथा विस्तृत सम्मेलन बुलाया, जिसमें उन्होंने पार्टी में वामपंथी भटकाव को दूर करने, और जनता तथा पार्टी के बीच रिश्तों को मजबूत करने की दिशा में कदम उठाये।

पार्टी में तोड़फोड़ करने के लिये विघटनकारियों ने जो पार्टी के द्वार बन्द रखने तथा दण्ड लादने की गलतियां की थीं, उनकी उन्होंने कड़ी आलोचना की और पार्टी कार्यकर्ताओं की पांतों में तेजी से विस्तार करने तथा गुणात्मक रूप से उन्हें एकजुट करने के लिये ठोस कर्तव्य पेश किये। फिर उन्होंने सिखाया कि पार्टी और जनता के बीच संबंधों को मजबूत बनाने के लिये संयुक्त मोर्चे के काम को सुधारा और सुदृढ़ किया जाना चाहिये। नौकरशाही को ठुकराना चाहिये और कार्यकर्ताओं की कार्यपद्धति तथा कार्य शैली में सुधार लाना चाहिये।

कामरेड किम इल सुंग ने जो कर्तव्य बताये, उन्हें पूरा करने के संघर्ष के लिये समूची पार्टी गोलबन्द की गयी।

इस प्रकार पार्टी के काम में वामपंथी भटकाव दूर किये गये, और थोड़े ही समय में मजदूरों, किसानों, सैनिकों और श्रमजीवी बुद्धिजीवियों में से अग्रणी तत्वों को, जो अगले या पिछले मोर्चे पर तन-मन से लड़ चुके थे, हजारों की संख्या में पार्टी में शामिल कर लिया गया और पार्टी सदस्यों की संख्या दस लाख तक पहुंच गयी। इसके अलावा हर स्तर पर पार्टी संगठनों ने अपनी रहनुमाई की क्षमता बढ़ायी और नौकरशाही गलतियों को दूर किया तथा इस प्रकार पार्टी सदस्यों की सक्रियता और हिरावल भूमिका पूर्ण रूप से विकसित हुई।

फलतः हमारी पार्टी का तेजी से विस्तार हुआ, वह सुदृढ़ हुई, उसकी युद्ध क्षमता और आगे बढ़ी और आम जनता और पार्टी के बीच संबंध और मजबूत हुये।

चौथे विस्तृत सम्मेलन के बाद कामरेड किम इल सुंग ने नौकरशाही के विरुद्ध जोरदार संघर्ष छेड़ा। कामरेड किम इल सुंग ने फरवरी १९५२ में "**मौजूदा दौर में स्थानीय सत्ता संगठनों के कर्तव्य और उनकी भूमिका**" शीर्षक से जो ऐतिहासिक भाषण दिया, वह नौकरशाहियत का विरोध करने, कार्यकर्ताओं में जनप्रिय कार्यपद्धति तथा कार्यशैली की स्थापना करने और जनता को पार्टी के गिर्द एकजुट करने में विशेष महत्व का सिद्ध हुआ।

अपने भाषण में कामरेड किम इल सुंग ने काम के नौकरशाही तरीकों के विरुद्ध

जोरदार संघर्ष चलाने की अपील करते हुये कार्यकर्ताओं से कहा :

"जन सत्ता के संगठनों के कार्यकर्ताओं को जनता का ऐसा सच्चा सेवक बनाना चाहिये जो अपने काम में जनता पर भरोसा करें, उसके हितों का सम्मान करें, उस पर हुक्म चलाने के बदले उसे समझायें बुझायें और शिक्षित करें, हर समय जनता से सीखें और पूरे दिल से उसकी सेवा करें।"

कामरेड किम इल सुंग का भाषण पार्टी तथा सरकार के संगठनों में काम करने वालों की कार्य पद्धति तथा कार्यशैली में सुधार करने और जनता के साथ उनके संबंध सुदृढ़ करने में कार्यक्रमपरक निर्देशक सिद्ध हुआ। भाषण में बताये गये कर्तव्यों पर अमल करने के संघर्ष के द्वारा काम के नौकरशाही तरीकों की कड़ी आलोचना की गयी, जो पार्टी और सरकार के संगठनों के कुछ उन कार्यकर्ताओं में परिलक्षित हुये थे, जो युद्धकालीन परिस्थितियों में प्रशासनिक तरीकों से तथा हुक्म चला कर काम करना बिलकुल स्वाभाविक समझते थे। और इसके साथ ही, पार्टी और राज्य की प्रगति में बाधक सारे तौरतरीकों का पर्दाफाश किया गया तथा उनकी आलोचना की गयी और उन खामियों को सुधारा गया। फलतः पार्टी तथा सरकार के संगठनों और आम जनता के बीच रिश्ता और अधिक मजबूत हुआ तथा जनता का रचनात्मक जोश बहुत तेजी से आगे बढ़ा।

पार्टी की केन्द्रीय कमेटी का पांचवां विस्तृत सम्मेलन, जो कामरेड किम इल सुंग के नेतृत्व में दिसम्बर, १९५२ में हुआ, हमारी पार्टी के विकास और शक्तिवर्धन में एक महान घटना सिद्ध हुआ।

विस्तृत सम्मेलन में कामरेड किम इल सुंग ने अपनी ऐतिहासिक रिपोर्ट पेश की। जिसका शीर्षक था : **"पार्टी का संगठनात्मक तथा सैद्धांतिक शक्तिवर्धन हमारी विजय का आधार है।"**

इस रिपोर्ट में कामरेड किम इल सुंग कार्यक्रम संबंधी कर्तव्य बताते हुये कहा कि पार्टी सदस्यों को पार्टी भावना की अग्नि-दीक्षा दी जानी चाहिये। पार्टी सदस्यों की एकता तथा एकरूपता सुदृढ़ होनी चाहिये। तथा सैद्धांतिक काम में कठमुल्लापन और औपचारिकतावाद पर विजय पानी चाहिये, ताकि पार्टी को संगठन और विचारधारा की दृष्टि से सुदृढ़ किया जा सके।

उन्होंने पार्टी सदस्यों में पार्टी भावना की अग्नि–दीक्षा को निर्माण का बुनियादी सवाल बताया और पार्टी भावना की वैज्ञानिक परिभाषा की।

कामरेड किम इल सुंग ने कहा :

"पार्टी भावना बढ़ाने का अर्थ है कि वर्कर्स पार्टी का हर सदस्य पार्टी में अनन्य

भाव से आस्था रखता हो और पार्टी कार्य में सक्रिय हो, क्रांति और पार्टी के हितों को अपना तन मन समझता हो, तथा अपने व्यक्तिगत हितों को उनके सामने गौण समझता हो, जहां और जैसे भी हो, और जिन परिस्थितियों में हो, पार्टी के हितों और सिद्धांतों की सुरक्षा करता हो, हर रंग के पार्टी विरोधी, प्रति–क्रांतिकारी विचारों के विरुद्ध अडिग भाव से लड़ता हो, पार्टी के संगठनात्मक जीवन को अन्तः विवेक से जीता हो तथा पार्टी अनुशासन का सख्ती से पालन करता हो, और हर समय पार्टी और जनता के बीच संबंधों को मजबूत करने की चेष्टा में लगा रहता हो।"

कामरेड किम इल सुंग ने सभी पार्टी सदस्यों का इसलिये भी आवाहन किया कि वे उन गुटबाज और उदार प्रवृतियों के विरुद्ध जम कर संघर्ष करें, जो पार्टी की एकता और एकरूपता में बाधा डालती हैं।

कामरेड किम इल सुंग ने अपनी रिपोर्ट में सिखाया कि पार्टी के विचारात्मक कार्य में उपस्थित कठमुल्लापन, औपचारिकता और राष्ट्रीय नास्तिवाद को पूर्णतया समाप्त करके, जूछे के अडिग दृष्टिकोण के अनुसार हमारी क्रांति की व्यावहारिक समस्याओं को हल करना पार्टी के विचारधारात्मक कार्यों में मुख्य कर्तव्य बनाया जाना चाहिये।

रिपोर्ट के अंतिम भाग में उन्होंने इस बात पर जोर देते हुये कि अमरीकी साम्राज्यवादियों और उनके गुर्गों का सफाया करके स्वाधीनता जीतने तथा देश को एकताबद्ध करने के लिये सबसे पहले अपनी पार्टी को और सुदृढ़ करना चाहिये, कामरेड किम इल सुंग ने कहा :

"हमारी पार्टी को एकजुट करने का क्या अर्थ है?

"इसका अर्थ है कि हमारी पार्टी उस सर्वजयी क्रांतिकारी सिद्धांत, मार्क्सवाद–लेनिनवाद, से लैस हो, जो पूंजीवाद का तख्ता पलटने और मेहनतकश जनता की मुक्ति का मार्ग बताता है।

"पार्टी को एकजुट करने का अर्थ यह है कि पार्टी में लौह अनुशासन स्थापित हो, पांतों की एकता की रक्षा की जाय, गुटबाज की हलकोली प्रवृत्ति तक को सहन न किया जाय, पूंजीवादी विचारों की घुसपैठ से पार्टी की जम कर रक्षा की जाय और पार्टी की राजनीतिक तथा सैद्धांतिक दृष्टि से अग्नि दीक्षा की जाय।

"पार्टी की मजबूती का यह भी अर्थ है कि पार्टी सदस्यों को ऐसी शिक्षा दी जाय कि वे पूरी आस्था से पार्टी, देश और जनता की सेवा करें, श्रमजीवी जनता की मुक्ति के लक्ष्य को पूरा करने में अपने को लगा दें, सर्वहारा के अंतर्राष्ट्रीयवाद के सिद्धांत के प्रति

वफादार रहें, वर्ग शत्रुओं से घृणा करें, क्रांतिकारी जागरूकता को तीव्र बनाये रखें और पूंजीवादी विचारों की हलकी सी अभिव्यक्ति तक के विरुद्ध समझौताहीन संघर्ष करें।

"पार्टी के सुदृढ़ीकरण का अर्थ है कि पार्टी और आम जनता के बीच संबंध मजबूत हों, नौकरशाहियत और औपचारिक कार्यशैली के विरुद्ध अडिग संघर्ष किया जाय, जो पार्टी को जनता से दूर करती है, और पार्टी के भीतर क्रांतिकारी कार्यशैली की स्थापना की जाय।

"पार्टी के सुदृढ़ीकरण का अर्थ है कि पार्टी के भीतर अनुदारतावाद, ठहराव और आत्मश्लाघा को जगह न दी जाय, पार्टी सदस्यों में ऐसी युद्ध–भावना पैदा की जाय कि वे सभी मुश्किलों को हल करते हुये और उल्लासपूर्ण रचनात्मक भाव से पूरी आस्था के साथ संघर्ष करते हुये विजय प्राप्त करें।"

कामरेड किम इल सुंग की रिपोर्ट पार्टी को संगठनात्मक तथा विचाराधारात्मक रूप से मजबूत करने के लिये कार्यक्रम संबंधी कुंजी सिद्ध हुई और उसने पार्टी निर्माण के बारे में मार्क्सवादी–लेनिनवादी सिद्धांत को आगे बढ़ाने और उसे समृद्ध करने में बहुत बड़ी भूमिका अदा की।

कामरेड किम इल सुंग के नेतृत्व में संपन्न पांचवां विस्तृत पार्टी सम्मेलन इस अर्थ में बहुत महत्वपूर्ण सिद्ध हुआ कि उसने हमारी पार्टी को संगठन और विचारधारा की दृष्टि से सुदृढ़ बनाया और पितृभूमि के मुक्तियुद्ध में विजय को निकट ला दिया, क्योंकि उस सम्मेलन ने पार्टी को एकता और एकरूपता को सुदृढ करने के संघर्ष के लिये प्रेरित किया, पार्टी सदस्यों की पार्टी भावना तथा उनकी हिरावल भूमिका को ऊंचे स्तर पर पहुंचाया, पार्टी कार्य में कठमुल्लापन तथा औपचारिकता के विरुद्ध जूझे की भावना को प्रतिष्ठित किया।

पांचवें पार्टी सम्मेलन में स्वीकृत दस्तावेजों पर विचार विमर्श के जरिये पार्टी सदस्यों की पार्टी भावना स्पष्टतर रूप से उच्च स्तर पर पहुंची और पार्टी की युद्ध क्षमता आगे बढी। दस्तावेजों पर बहस के दौरान एक पार्टी विरोधी, प्रतिक्रांतिकारी जासूस गुट का, जो काफी दिनों से पार्टी में घुसा हुआ था, पर्दाफाश हुआ और उस गुट को पार्टी से निकाल दिया गया और उस गुटबाजी की जड़ें उखाड़ने का संघर्ष शुरू हुआ, जो हमारे देश के कम्युनिस्ट आन्दोलन का ऐतिहासिक रोग बन चुकी थी।

युद्ध की कठिन परिस्थितियों में भी कामरेड किम इल सुंग ने इस बात की अथक कोशिश की कि युद्धकालीन उत्पादन समुचित रूप से हो और जनता का जीवन-यापन सुस्थिर बने तथा उन्होंने ऐसी व्यवस्था की कि जिससे युद्ध के बाद पुनर्स्थापन और देश

की चिरन्तन समृद्धि की प्रगति की जो दूरदर्शी योजनायें उन्होंने बनायीं थीं, वे पूरी की जा सकें।

हालांकि वे युद्ध की गतिविधियों के संचालन और संगठन में बहुत व्यस्त रहते थे, उनके कंधों पर देश और राष्ट्र का भार था, फिर भी वे पार्टी सेल की मीटिंगों का नेतृत्व करने के लिये देश के अनेक भागों में स्थित कारखानों और गांवों में गये और परिस्थिति के बारे में सीधे मजदूरों और किसानों से सलाह की और उनमें युद्ध की विजय के प्रति आस्था और विश्वास पैदा किया।

कहने की आवश्यकता नहीं कि युद्ध की लपटों में हमारे नेता हर कहीं, हर अवसर पर जनता के साथ रहे, उसके सुख-दुख के हिस्सेदार बने रहे।

जब जनता युद्धकालीन उत्पादन का मुश्किल दायित्व पूरा करने में जुटी, तो वे खुद खेतों में जाते और किसानों की मदद करते। इसके अलावा वे खुद फल और सब्जी उगाते। उन्होंने जनता के जीवन-यापन को स्थिर बनाने के लिये समय रहते सभी संभव कदम उठाये। मसलन, युद्ध–पीड़ितों को मुफ्त दवायें देना, किसानों को गल्ले की तकावी की वसूली से छुटकारा दिलाना, किसानों को गल्ले के रूप में लगान वसूली से मुक्त रखना, ताकि उन्हें भयानक युद्ध के दिनों में भी अपने जीवन की चिन्ता न करनी पड़े।

कामरेड किम इल सुंग ने इस बात पर ध्यान दिया कि जन सेना के सैनिकों तथा अफसरों और उन राजनीतिक शहीदों के अनाथ बच्चों के लिये नर्सरी स्कूल और शिक्षा संस्थायें जगह जगह पर खोली जायं, जो अमरीकी साम्राज्यवाद के विरुद्ध वीरतापूर्ण युद्ध में मारे गये और उन्होंने ऐसी शिक्षा संस्थाओं के प्रबंध की और अनाथ बच्चों के जीवन-यापन तथा शिक्षण की देख भाल की।

इसके अलावा उन्होंने जगह जगह प्राथमिक संस्थान खुलवाये, ताकि उन अनाथ बच्चों की देख भाल की जा सके, जिन्हें शत्रु की बर्बर बमबारी और हत्याकाण्डों के कारण अपने घर बार तथा माता–पिता से हाथ धोना पड़ा और ऐसे बच्चों की शिक्षा और प्रशिक्षण का प्रबंध सुरक्षित स्थानों पर किया।

इसके अलावा उन्होंने जन सेना के उन सैनिकों तथा अफसरों और देशभक्तों के लिये सम्मानित घायल सैनिक स्कूलों की स्थापना करायी, जो अगले या पिछले मोर्चे पर वीरतापूर्वक लड़ते हुये घायल हुये थे, ताकि वे अपनी आशाओं और अपनी शारीरिक स्थिति के अनुसार, अपनी इच्छानुसार विज्ञान और तकनीक का अध्ययन कर सकें।

कामरेड किम इल सुंग ने इस बात का भी प्रबंध किया कि सम्मानित घायल सैनिकों के लिये विशेष रूप से सामाजिक सेवाओं का प्रबंध हो तथा उनके लिये उच्चतर शिक्षा

संस्थाओं और राजनीतिक स्कूलों में विशेष पाठ्यक्रम का इंतजाम किया, ताकि उन्हें सुयोग्य राष्ट्रीय कार्यकर्ता के रूप में प्रशिक्षित किया जा सके।

नेता के इस तरह के लग्नशील पथ-प्रदर्शन तथा हार्दिक देखभाल से प्रेरित होकर हमारे देश के मजदूरों, किसानों तथा दूसरे सभी लोगों ने युद्धकालीन उत्पादन की गारंटी के लिये ओजस्वी देशभक्ति का परिचय दिया और मोर्चे की सहायता की।

पिछले मोर्चे को मजबूत करने का उत्तरदायित्व पूरा करते हुये कामरेड किम इल सुंग ने युद्धोत्तर कालीन पुनर्स्थापन, निर्माण और समाजवादी निर्माण की तैयारी को साहस-पूर्वक आगे बढ़ाया। यहां तक कि भयानक युद्ध के संकटपूर्ण दिनों में भी उन्होंने देश के भविष्य का आकलन किया और मशीन उद्योग के शक्तिशाली आधार का निर्माण करने का काम सक्रिय रूप से आगे बढ़ाया। इसी बीच उन्होंने युद्धोत्तर कालीन पुनर्स्थापन तथा निर्माण के लिये योजना बनायी, ध्वस्त कारखानों और उद्योगों की असली हालत जानने के लिये सर्वेक्षण कराया तथा शहरों और कारखानों के पुर्ननिर्माण की योजना का मसौदा बनाने तथा उनकी रूपरेखा तैयार करने के काम का व्यक्तिगत रूप से निर्देशन किया। और उन्होंने इसका ध्यान रखा कि ऐसे बड़े बड़े सरकारी कृषि फार्म और खेती के लिये किराये पर दी जाने वाली मशीनों के स्टेशन स्थापित किये जायें, जो ग्रामीण क्षेत्रों का समाजवादी रूपांतर करने में सहायक हों, और इसी के साथ उन्होंने देश के प्राकृतिक साधनों की खोज के काम का संगठन और संचालन किया और प्राकृतिक साधनों से तैयार होने वाली परियोजनाओं से संबंधित स्थलों का सर्वेक्षण कराया। युद्धोत्तर कालीन पुनर्वास, निर्माण तथा समाजवादी निर्माण कार्यों के लिये आवश्यक कार्यकर्ताओं को तैयार करने की दृष्टि से उन्होंने आदेश दिया कि उच्चतर शिक्षा की सभी संस्थायें खोल दी जायं और उनमें अध्ययन के लिये मोर्चे से सैनिकों को बुलाया जाय, इसके अलावा उन्होंने खुद ऊबड़ खाबड़ पहाड़ियों को पार करके विश्वविद्यालय, दूसरे उच्चतर शिक्षा संस्थानों तथा पार्टी स्कूलों का निरीक्षण किया और अध्यापकों तथा छात्रों को शिक्षा तथा शोध संबंधी विशेष दिशा दी। अप्रैल १९५२ में उन्होंने वैज्ञानिकों का एक सम्मेलन बुलाया और उन्हें वैज्ञानिक विकास की नयी दिशा से परिचित कराया। इसके बाद उन्होंने न सिर्फ विज्ञान अकादेमी की स्थापना की, बल्कि व्यक्तिगत वैज्ञानिकों के शोध कार्य पर सूक्ष्म रूप से ध्यान दिया, और उन्हें सहायता पहुंचाई।

इस सबसे न केवल पिछले मोर्चे को विश्वसनीय रूप से सुदृढ़ करने तथा सेना और जनता में क्रांतिकारी आशावाद भरने में महत्वपूर्ण सहायता मिली, ताकि जनता और सेना और भी वीरता से लड़े, बल्कि इससे युद्ध के घाव जल्दी भरने तथा युद्ध के बाद समाजवादी

क्रांति और समाजवादी निर्माण विजयपूर्वक पूरा करने में भी बहुत महत्वपूर्ण सहायता मिली ।

१९५२ के प्रारंभ होते ही शत्रु ने कोरिया के मोर्चों पर सैनिक शक्ति में लगातार वृद्धि करते हुए, अगले और पिछले–दोनों मोर्चों पर कीटाणु तथा रासायनिक अस्त्रों का प्रयोग करते हुये जबरदस्त हमले किये । लेकिन जन सेना के अडिग प्रतिरक्षात्मक युद्धों और कुशल प्रत्याक्रमणों के सामने शत्रु को हर बार सैनिक और सामान–दोनों की भारी क्षति उठानी पड़ी ।

चूंकि जनता नेता के इर्द गिर्द चट्टानी एकता में बंधी थी, अगले और पिछले मोर्चे अभेद्य दुर्ग बन चुके थे, और जन सेना की युद्ध कार्यवाहियां तेज होती गयीं, इसलिये शत्रु दिन-दिन दलदल में फंसता चला गया । इससे निराश होकर १९५३ के शुरू में अमरीकी साम्राज्यवादी आक्रामकों ने आखिरी कोशिश के रूप में एक विशाल अभियान शुरू कर दिया ।

अमरीकी साम्राज्यवादियों के युद्ध लोलुप चौधरी आइजनहावर ने, जो १९५३ के अन्त में कोरिया के मोर्चे पर खुद आया, जबान चलायी कि "वार्ता से बेहतर है युद्ध", और उसने एक बड़े पैमाने पर "नया अभियान" करने की तैयारी करने का आदेश दे दिया । और उन्मत्त होकर यह सपना देखने लगा कि पूर्वी और पश्चिमी तटों पर सेना उतार कर हमारे अगले और पिछले मोर्चे के बीच संबंध तोड़ दिया जायेगा । और इस प्रकार अगले मोर्चे पर हमलों के साथ तालमेल बैठा कर हमारे प्रमुख दस्तों को 'घेर कर उनका सफाया' कर दिया जायेगा ।

लेकिन चिरविजयी, लौह इच्छाशक्ति वाले विलक्षण कमांडर कामरेड किम इल सुंग की महान रणनीति और कार्यनीति के अनुसार और उनके व्यक्तिगत निर्देशन में जन सेना तथा जनता ने पूर्वी और पश्चिमी तटों पर और मोर्चे पर अभेद्य किलेबंदियां बना लीं और महान संकल्प के साथ वीरतापूर्वक संघर्ष छेड़ कर शत्रु के तथाकथित "नया अभियान" को पूरी तरह कुचल दिया ।

इस बीच मई १९५३ के मध्य जन सेना के दस्तों ने अगले मोर्चे के प्रमुख क्षेत्रों पर शत्रु के विरुद्ध एक के बाद एक शक्तिशाली प्रत्याक्रमण किये और इस प्रकार शत्रु पर घातक प्रहार किये तथा विशाल क्षेत्र को मुक्त कर लिया ।

यह युद्ध जितना लम्बा खिंचता गया, उतना ही अधिक अमरीकी साम्राज्यवादियों को एक के बाद एक सैनिकों और राजनीतिक पराजयों का सामना करना पड़ा । तीन साल के कोरियाई युद्ध में शत्रु के १०,६३,८०० से भी अधिक सैनिक मारे गये जिनमें ३,९७,०००

से अधिक अमरीकी साम्राज्यवादी आक्रामक सैनिक थे, और साथ ही उसे १२,२०० हवाई जहाजों, २५० के लगभग तरह–तरह के जल जहाजों और बहुत बड़ी संख्या में तकनीकी साधनों से हाथ धोना पड़ा।

तीन साल के कोरियाई युद्ध में अमरीकी साम्राज्यवादियों को सैनिकों और तकनीकी साधनों की दृष्टि से जो क्षति उठानी पड़ी, वह दूसरे विश्व युद्ध के दौरान प्रशान्त युद्ध के चार वर्षों की क्षति से २.३ गुना अधिक थी।

अपूर्णीय सैनिक, राजनीतिक तथा नैतिक पराजयें भोगने के बाद अमरीकी साम्राज्यवादियों को यह लगा कि वे अब अधिक दिन तक युद्ध नहीं कर सकते तथा वे कोरिया की जनता के सामने घुटने टेकने के लिये विवश हुये और उन्हें युद्ध विराम समझौते पर हस्ताक्षर करना पड़ा।

२७ जुलाई, १९५३ को न्यायोचित पितृभूमि-मुक्ति युद्ध का अन्त कोरिया की जनता की विजय के साथ हुआ। जिसका श्रेय कामरेड किम इल सुंग की विशिष्ट रणनीति तथा कार्यनीति और उनके विवेकपूर्ण नेतृत्व को है।

पितृभूमि मुक्ति युद्ध में कोरिया की जनता की गौरवशाली विजय कामरेड किम इल सुंग के महान सैनिक विचार तथा विलक्षण सैनिक कला की शानदार विजय थी। अपने अनेक अमर लेखों तथा युद्धकालीन अमली गतिविधियों के जरिये कामरेड किम इल सुंग ने कठमुल्लापन को निर्मूल कर दिया, सैनिक तथा दूसरे क्षेत्रों में जूछे की पूर्णतया स्थापना कर दी और रचनात्मक ढंग से मार्क्सवादी–लेनिनवादी सैनिक विज्ञान को नये सिरे से विकसित किया।

अपने अनेक लेखों, भाषणों और आदेशों में कामरेड किम इल सुंग ने पूंजीवादी सैनिक सिद्धांतों की प्रतिक्रियावादी प्रकृति का पूर्णतया पर्दाफाश किया और सशस्त्र संघर्ष में मनुष्य और सैनिक तकनीक के परस्पर संबंध के प्रश्न का अभूतपूर्व उत्तर दिया।

कामरेड किम इल सुंग ने कहा कि युद्ध में निर्णायिक भूमिका आदमी की होती है, तकनीक की नही। तकनीक तभी शक्तिशाली बनती है, जब लोग उसमें पारंगत हो जाते हैं और जब वे न्यायोचित संघर्ष चलाते हैं। उन्होंने यह भी सिखाया कि जन सेना जैसी एक क्रांतिकारी सेना की शक्ति बढ़ाने के लिये बुनियादी आवश्यकता है कि उसे राजनीतिक तथा सैद्धांतिक दृष्टि से सुसज्जित किया जाय।

समूचे युद्ध के दौरान कामरेड किम इल सुंग हमारी जन सेना और जनता को हमारी पार्टी की विचारधारा और अडिग क्रांतिकारी भावना से लैस करते रहे। जन सेना तथा जनता ने, जिन्हें हमारे नेता ने शिक्षित किया, उनके नेतृत्व में न्याय के लिये अद्वितीय

कामरेड किम इल सुंग वीर जनसेना के उन सैनिकों और अफसरों तथा जनता के उत्साहपूर्ण हर्षोल्लास का उत्तर देते हुए, जो महान पितृभूमि मुक्ति युद्ध में विजयी हुए ।

वीरता का प्रदर्शन किया और अमरीकी साम्राज्यवादी आक्रामकों को पराजित किया तथा शत्रु के संख्या बल और तकनीकी श्रेष्ठता के बावजूद उस पर विजय प्राप्त की ।

कामरेड किम इल सुंग ने कहा :

"इस महान युद्ध में हमारी जनता ने पार्टी और गणतंत्र की सरकार के सही नेतृत्व में तन-मन से एकाग्र होकर संकल्पपूर्वक महान संघर्ष किया और इस प्रकार जनता युद्ध की कठिन अग्निपरीक्षा में सम्मानपूर्वक उत्तीर्ण हुई तथा उसने अमरीकी साम्राज्यवाद तथा उसके पालतू कुत्तों को बुरी तरह से पराजित कर ऐतिहासिक विजय प्राप्त की ।"

कामरेड किम इल सुंग ने सिखाया कि जब किसी क्रांतिकारी सेना की राजनीतिक तथा विचारधारात्मक श्रेष्ठता को आधुनिक सैनिक तकनीक के साथ जोड़ा जाता है, तब वह सेना सचमुच महान शक्तिशाली बन जाती है । युद्ध की दुस्साहस परिस्थितियों में भी उन्होंने जनसेना के तकनीकी प्रसाधनों के निरन्तर सुधार की गारंटी की और उसके सैनिकों तथा अफसरों को सैनिक विज्ञान और तकनीक में कौशल प्राप्त करने का निर्देश दिया ।

फलतः युद्ध के दौरान हमारी जन सेना की शक्ति राजनीतिक, सैद्धांतिक और सैनिक तकनीक की दृष्टि से और बढ़ी, तथा वह एक क्रांतिकारी सेना के रूप में विकसित हुई और उसका एक-एक सैनिक शत्रु के सौ सौ सैनिकों के बराबर सिद्ध हुआ ।

पितृभूमि मुक्ति युद्ध के दौरान कामरेड किम इल सुंग ने न सिर्फ अनेक महत्वपूर्ण सैनिक समस्याओं का नया, सैद्धांतिक विवेचन किया, मसलन, आधुनिक युद्ध में राजनीतिक और नैतिक तत्व की निर्णायक भूमिका, देश की वास्तविक परिस्थिति के अनुकूल सभी सेवाओं और शाखाओं का समन्वित विकास, और युद्ध में नियमित और छापामार लड़ाइयों का तालमेल, बल्कि कामरेड किम इल सुंग ने इन सिद्धांतों पर अमल द्वारा उनकी सत्यता भी सिद्ध कर दी । इसके अलावा उन्होंने अनेक सैनिक कलाओं को जन्म दिया, मसलन, शत्रु के अचानक हमले के विरुद्ध तुरन्त प्रत्याक्रमण, निरन्तर हमले की कार्यवाहियां, शत्रु के पीछे दूसरा मोर्चा बनाना, सुरंग युद्ध, युद्ध के मैदान में मुख्यतः सुरंगें बना कर मोर्चाबंदी करना, प्रतिरक्षा युद्ध की सक्रिय स्थिति के अनेक रूप, सुरंगों की मोर्चाबन्दी पर आधारित हमले करना, गुप्त स्थानों से हमला, तोपों की गोलाबारी का गहन उपयोग, पहाड़ी क्षेत्रों में सचल तोपों की सशक्त कार्यवाही, हवाई जहाजों का शिकार करने वाली टीमों का आन्दोलन, टैंकों का शिकार करने का आन्दोलन आदि ।

वास्तव में कामरेड किम इल सुंग ने अपनी राजनीतिक विचारधारात्मक, रणनीनीतिक तथा कार्यनीतिक श्रेष्ठता के बल पर शत्रु के संख्याबल और तकनीकी श्रेष्ठता को पराजित करके पितृभूमि मुक्ति युद्ध में विजय प्राप्त करायी ।

तीन वर्षीय पितृभूमि मुक्ति युद्ध में हमारी विजय ने सारे संसार को दिखा दिया कि क्रांति के महान नेता कामरेड किम इल सुंग के नेतृत्व में हमारी जनता और जन सेना अजेय है और यह भी स्पष्ट दिखा दिया कि जो जनता अपने देश की आजादी और स्वाधीनता के लिये शस्त्र लेकर उठती है, वह किसी भी शत्रु को पराजित कर सकती है।

कामरेड किम इल सुंग की रहनुमाई में कोरिया की जनता ने अमरीकी साम्राज्यवाद के सशस्त्र आक्रामकों को कुचल दिया और इस प्रकार न सिर्फ देश की आजादी और स्वाधीनता की तथा देश के सम्मान की सुदृढता से रक्षा की, बल्कि युद्ध-विस्तार संबंधी अमरीकी साम्राज्यवादी योजना को नाकाम किया और समाजवादी शिविर की सुरक्षा और एशिया तथा दुनिया में शांति की रक्षा की।

साथ ही, हमारी जनता ने अमरीकी साम्राज्यवाद की "महान शक्ति" के अंधविश्वास को भी धूल में मिला दिया और इस प्रकार संसार भर में उन लाखों-करोड़ों लोगों को महान प्रेरणा दी, जो राष्ट्रीय स्वाधीनता और आजादी के लिये लड़ रहे थे, और अमरीकी साम्राज्यवादी आक्रामकों के पतन का श्रीगणेश कर दिया, तथा इस प्रकार कोरिया की जनता ने साम्राज्य-विरोधी, अमरीका-विरोधी संघर्ष को एक नये दौर में पहुंचा दिया।

अमरीकी साम्राज्यवादी आक्रामक अपनी जिस सेना के दुनिया में सबसे अधिक शक्तिशाली होने का घमण्ड किया करते थे, उसके समेत १६ अन्य देशों की २० लाख आक्रमणकारी सेनाओं तथा दक्षिण कोरियाई कठपुतलियों के विरुद्ध अपने जीवन-मरण के संघर्ष में कोरियाई जनता ने जो जीत हासिल की, उसकी कामरेड किम इल सुंग के विवेकपूर्ण नेतृत्व, उनकी विलक्षण रणनीति तथा कार्यनीति के बिना कल्पना भी नहीं की जा सकती।

कोरियाई जनता अमरीकी साम्राज्यवादी आक्रामकों को पराजित कर सकी और एक महान विजय हासिल कर सकी, इसका एकमात्र श्रेय महान नेता कामरेड किम इल सुंग के सर्वजयी और विवेकशील नेतृत्व को है, जिन्होंने जापान–विरोधी सशस्त्र संघर्ष की अग्नि परीक्षा द्वारा महान अनुभव संचित किये थे और जिनमें महान क्रांतिकारी विचार, गहन क्रांतिकारी सिद्धांत, नेतृत्व की विशिष्ट शक्ति, विलक्षण सैनिक रणनीति, अडिग संकल्प, असाधारण क्रांतिकारी गतिशीलता और महान सद्गुण मौजूद हैं।

जनवादी जन गणतंत्र कोरिया की सर्वोच्च जन सभा ने समस्त जनता की इच्छा व्यक्त करते हुये चिर विजयी, लौह–संकल्प, विलक्षण कमांडर, सैनिक रणनीतिक प्रतिभा के धनी, कोरिया की जनता के सम्मानित तथा प्रिय नेता कामरेड किम इल सुंग को, जिन्होंने

पितृभूमि–मुक्ति युद्ध को महान विजय की मंजिल तक पहुचा कर अमर कौशल दिखाया, ७ फरवरी, १९५३ को "जनवादी जन गणतंत्र कोरिया के मार्शल" की उपाधि दी और २८ जुलाई १९५३ को "जनवादी जन गणतंत्र कोरिया के वीर" की उपाधि से विभूषित किया।

कोरिया की जनता के महान पितृभूमि मुक्ति युद्ध को विजय तक पहुंचा कर कामरेड किम इल सुंग ने हमारी क्रांति और विश्व क्रांति के विकास में सचमुच अमर उपलब्धि अर्जित की।

६

जब युद्ध समाप्त हो गया तो कामरेड किम इल सुंग ने युद्धोत्तर पुनर्वास और राष्ट्रीय अर्थ व्यवस्था के निर्माण के संघर्ष के लिये समूची पार्टी और सारी जनता को संगठित और गोलबन्द करने में कोई देरी न की।

युद्ध विराम के बाद हमारी जनता और पार्टी के समक्ष नये और भारी कर्तव्य प्रस्तुत हो गये।

युद्धविराम का अर्थ पूर्ण शांति नहीं था। अपनी कलंकित हार से उचित सबक सीखे बिना अमरीकी साम्राज्यवादियों ने इस ताक में रहना शुरू किया कि उन्हें मौका मिले और वे उत्तरी आधे भाग पर हमला कर दें। हमारी जनता के सामने अभी यह सर्वोच्च कर्तव्य शेष था कि दक्षिणी कोरिया से अमरीकी साम्राज्यवादियों को भगाया जाय और राष्ट्रीय एकता के लक्ष्य को पूरा किया जाय।

अमरीकी साम्राज्यवादी आक्रामकों की कपटपूर्ण चालों के विरुद्ध सजग रह कर हमारी पार्टी और हमारी जनता को सबसे पहले युद्ध में पूर्ण रूप से ध्वस्त राष्ट्रीय अर्थ व्यवस्था को फिर से ठीक करना था। जनता के बरबाद जीवन स्तर को सुधारना और सुस्थिर करना था। तथा उत्तरी आधे भाग के क्रांतिकारी अड्डे को राजनीतिक, आर्थिक तथा सैनिक दृष्टि से सुदृढ़ करना था, ताकि क्रांति की राष्ट्रव्यापी विजय संभव हो सके।

हमारे देश की युद्धोत्तरकालीन परिस्थितियों में, जहां हर चीज बरबाद हो चुकी थी और धूल में मिल चुकी थी, इन सारे कर्तव्यों को पूरा करना बहुत कठिन था।

शत्रु अमरीकी साम्राज्यवादी गाल बजा रहे थे कि कोरिया अगले १०० वर्षों में भी अपने पांवों पर नहीं खड़ा हो सकता। हम से हमदर्दी रखने वाले हमारे कुछ मित्रों ने भी युद्धोत्तरकालीन पुनर्वास और निर्माण में उत्पन्न कठिनाइयों के प्रति चिन्ता व्यक्त की, क्योंकि ध्वंस बहुत ही भयानक था।

करने को इतना काम था, परिस्थिति इतनी मुश्किल थी कि हमारी समझ में यह नहीं आ रहा था कि कहां से शुरू करें और कैसे पुनर्वास और निर्माण करें!

लेकिन हमारी जनता गंभीर मुश्किलों के सामने जरा भी नहीं घबरायी, न उसने साहस छोड़ा। जनता को नेता में विश्वास था और नेता को जनता में विश्वास था।

इस पूर्ण विश्वास के साथ कि ध्वंस चाहे जितना गंभीर हो, परिस्थिति चाहे जितनी मुश्किल हो, जब तक जनता, देश, पार्टी और जन सरकार का अस्तित्व है, तब तक नये जीवन का निर्माण होकर रहेगा, कामरेड किम इल सुंग ने समूची पार्टी और समूची जनता को युद्धोत्तरकालीन पुनर्वास और निर्माण के गौरवशाली संघर्ष में कूद पड़ने के लिये प्रोत्साहित किया।

कामरेड किम इल सुंग ने युद्ध विराम के कुछ ही दिन बाद, ५ अगस्त, १९५३ को, पार्टी की केन्द्रीय कमेटी का छठा विस्तृत सम्मेलन बुलाया और युद्धोत्तरकालीन पुनर्वास और निर्माण की दिशा की ओर स्पष्ट संकेत किया और इस प्रकार उस रास्ते को आलोकित किया, जिस पर जनता को चलना था। देश में युद्धोत्तरकालीन परिस्थिति तथा हमारी क्रांति के भविष्य के बारे में उनकी गहन दृष्टि थी और इसी आधार पर उन्होंने आर्थिक निर्माण की मौलिक दिशा प्रस्तुत की, यानी युद्धोत्तरकालीन आर्थिक निर्माण की ऐसी बुनियादी दिशा प्रस्तुत की, जिसमें भारी उद्योग के विकास को प्राथमिकता देते हुए हलके उद्योग और कृषि का साथ–साथ विकास करने की व्यवस्था थी, जिस पर अभी तक किसी को भी अमल करने का अनुभव नहीं था।

कामरेड किम इल सुंग ने सिखाया :

"युद्धोत्तरकालीन आर्थिक निर्माण में हमें भारी उद्योग के विकास को प्राथमिकता देते हुए हलके उद्योग और कृषि का साथ साथ विकास करना चाहिए। केवल इसी तरह हमारे देश की आर्थिक नीवें मजबूत हो सकती हैं और अल्प काल में जनता का जीवन स्तर सुधर सकता है।"

कामरेड किम इल सुंग ने युद्धोतरकालीन आर्थिक निर्माण की जो बुनियादी कार्य-नीति प्रस्तुत की, वह सबसे विवेकपूर्ण कार्यनीति थी, जिससे राष्ट्रीय अर्थ व्यवस्था के पुनर्वास और निर्माण की दिशा और उसमें प्राथमिकता क्रम संगत रूप से निर्धारित करना, कामों की श्रृंखला में मुख्य कड़ी को पकड़ना और उस पर प्रयत्न केन्द्रित करना संभव हुआ।

युद्ध के बाद हमारे देश में भारी उद्योग के विकास को प्राथमिकता दिये बिना न तो युद्ध में भीषण ढंग से ध्वस्त हलके उद्योग और खेती को सफलतापूर्वक पुनर्वासित करना और विकसित करना संभव होता और न जनता के जीवन यापन को सुधारने के योग्य सुदृढ़ आधार प्रस्तुत करना संभव होता। राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था के औपनिवेशिक

असंतुलन और तकनीकी पिछड़ेपन को दूर करने और स्वतंत्र राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था का आधार प्रस्तुत करने की समस्या का हल भी भारी उद्योग को प्राथमिकता देने पर पूर्णत: निर्भर था।

फिर भी हलके उद्योग और खेती के विकास को आगे के लिये नहीं टाला जा सकता था।

हलके उद्योग और खेती को भी तेजी से विकसित करना जरूरी था, ताकि जनता का जीवन स्तर तेजी से सुधरे, जो कि युद्ध से बुरी तरह बिगड़ चुका था। और भारी उद्योग के साथ हलके उद्योग तथा खेती को तेजी से विकसित करना इसलिये जरूरी था कि हमारें देश में, जहां खेती और हलका उद्योग पहले ही बहुत पिछड़े हुए थे, स्वतंत्र राष्ट्रीय अर्थ व्यवस्था निर्मित करनी थी।

जैसा कि कामरेड किम इल सुंग ने सिखाया, आर्थिक निर्माण की यह बुनियादी दिशा ही हमारे देश में आर्थिक विकास की नियमानुसार आवश्यकताओं तथा देश की वास्तविक संभावनाओं के उचित आकलन पर आधारित सही दिशा है, और यही एक रचनात्मक दिशा है, जो हमारे देश की विशिष्ट यथार्थ स्थिति पर मार्क्सवादी–लेनिनवादी विस्तार पुनरुत्पादन के सिद्धांत को उचित रीति से लागू किये जाने से निसृत है, और यही एक क्रांतिकारी दिशा है, जिसमें आत्म निर्भरता की क्रांतिकारी भावना से स्वतंत्र राष्ट्रीय अर्थ–व्यवस्था के तीव्र निर्माण के लिये पार्टी की अडिग स्थिति अभिव्यक्त होती है। यह दिशा ही एक मात्र उस मार्ग का प्रतिनिधित्व करती थी, जिससे इस बात की मजबूत गारंटी की संभावना पैदा होती है कि देश की स्वाधीनता और प्रभुसत्ता की रक्षा की जा सकती है तथा समाजवाद का शीघ्र से शीघ्र, और वह भी पिछड़ी हुई आर्थिक परिस्थितियों में, बेहतर ढंग से निर्माण हो सकता है।

सच बात तो यह है कि यह क्रांतिकारी दिशा, जो समाजवादी आर्थिक निर्माण के क्षेत्र में कामरेड किम इल सुंग के जुछे विचार का प्रतिरूप है, समाजवादी निर्माण में मार्क्सवाद–लेनिनवाद के रचनात्मक अमल और विकास का विलक्षण उदाहरण है।

हमारे देश में युद्धोत्तर परिस्थितियों के अंतर्गत, जहां हर चीज बर्बाद हो चुकी थी और हर चीज की कमी थी, भारी उद्योग को प्राथमिकता देते हुए हल्के उद्योग तथा खेती के साथसाथ विकास करना बहुत ही पेचीदा और कठिन कार्य था।

महान शक्तियों के प्रति अनुचरता और कठमुल्लेपन के रोग के शिकार पार्टी-विरोधी गुटबाजों ने इस दिशा को बदनाम किया, उन्होंने आरोप लगाया कि "मशीनों से हमें भोजन नहीं मिलता," या यह कि "भारी उद्योग के निर्माण पर बहुत अधिक जोर

दिया जा रहा है जब कि जनता का जीवन कठिनाइयों में बीत रहा है।"

कामरेड किम इल सुंग ने पार्टी विरोधी गुटबाजों की बकवास का और अवरोध डालने वाली तिकड़मों का जम कर खंडन किया और समूची पार्टी और जनता को उस दिशा पर अमल के लिये जोरदार तरीके से संगठित और आन्दोलित किया।

युद्धोत्तर कालीन पुनर्वास और निर्माण कार्य को तीन बुनियादी चरणों में पूरा करने की दिशा प्रस्तुत की—सर्वांग पुनर्वास और निर्माण की तैयारी का चरण, जो छः महीने से साल भर तक चले, राष्ट्रीय अर्थ व्यवस्था के सभी क्षेत्रों में युद्ध पूर्व का स्तर प्राप्त करने के लिये तीन वर्षीय योजना की पूर्ति का चरण तथा समाजवादी औद्योगीकरण की नींव डालने के लिये पंचवर्षीय योजना को संपन्न बनाने का चरण।

कामरेड किम इल सुंग द्वारा प्रस्तुत आर्थिक निर्माण की दिशा को स्वीकार करते हुये समस्त मेहनतकश जनता ने तमाम मुश्किलों के बीच युद्धोत्तर कालीन पुनर्वास और विकास के लिये राष्ट्रीय आर्थिक योजना को सफल बनाने का जोरदार संघर्ष चलाया।

हमारी जनता मलबे पर एक सशक्त, स्वाधीन राष्ट्रीय अर्थ व्यवस्था का निर्माण कर सकी और युद्ध के बाद थोड़े ही समय में अपना जीवन स्तर तेजी से सुधार सकी तो इसका एकमात्र कारण यह है कि कामरेड किम इल सुंग ने आर्थिक निर्माण की एक ऐसी मौलिक कार्यनीति प्रस्तुत की, जो न सिर्फ देश और जनता के तात्कालिक हितों के पूर्णतया अनुरूप थी, बल्कि उनके महत्वपूर्ण भावी हितों के भी अनुरूप थी और उन्होंने उस कार्यनीति पर अमल के लिये अडिग भाव से पार्टी और जनता का नेतृत्व किया।

कामरेड किम इल सुंग ने युद्धोत्तर कालीन आर्थिक निर्माण कार्य के साथ-साथ उत्पादन के संबंधों को समाजवादी दिशा में रूपांतरित करने के काम को तेजी से आगे बढ़ाया।

उत्पादन के पुराने संबंधों को समाजवादी रूप देने में सबसे महत्वपूर्ण चीज है खेती की सहकारिता। युद्ध के बाद हमारे देश में यह एक ऐसी जरूरत थी जिसे पूरा करना समय की मांग थी।

युद्ध में बुरी तरह ध्वस्त होने तथा जन बल और खेती योग्य पशुओं की कमी होने के कारण हमारी ग्रामीण अर्थ व्यवस्था जिस स्थिति में थी, उसमें यदि व्यक्तिगत खेती का ही तरीका अपनाया गया होता तो न खेती की छिन्न भिन्न उत्पादक शक्तियों को फिर से स्थापित किया जा सकता था, न अभावग्रस्त किसानों की जिन्दगी में कोई सुधार आ सकता था और न गरीब किसानों की समस्या ही हल हो सकती थी, जिनकी संख्या युद्ध के दौरान और बढ़ गयी थी। खतरा यह था कि समाजवादी राजकीय उद्योग और व्यक्तिगत खेती के बीच के अंतर्विरोध उद्योग तथा खेती के बीच असमानता पैदा कर

देते, क्योंकि युद्ध के बाद उद्योग तो तेजी से पुनर्वासित और विकसित हो रहा था, जबकि खेती का पुनर्वास अत्यन्त मंद गति से चल रहा था।

हमारे देश में क्रांति के विकास की वास्तविक आवश्यकताओं तथा उपस्थित परिस्थितियों के ठोस विश्लेषण के आधार पर कामरेड किम इल सुंग ने हमारे देश की वास्तविक परिस्थितियों से कदम–ब–कदम चलते हुये, किसी तैयारशुदा फार्मूले या विदेश अनुभवों से चिपके बिना, अर्थ व्यवस्था के समाजवादी पुनर्गठन को पूरा करने की कार्य-नीति, यानी खेती के तकनीकी पुनर्निर्माण से पहले उसमें सहकारिता लाने की एक नयी और मौलिक कार्यनीति, पेश की।

तब तक यह एक नियम सा मान लिया गया था कि कृषि का समाजवादी रूपांतर औद्योगीकरण के आधार पर होना चाहिये।

हमारे देश में भी कठमुल्ले और गुटबाज तत्व विदेशियों का मुंह ताकते रहते थे और या तो वे इस या उस तरीके से खेती के समाजवादी रूपांतर का विरोध करते या उसमें बाधा डालते, जिसको सही ठहराने के लिये वे यह कहते कि "जब तक समाजवादी औद्योगीकरण नहीं पूरा होता, उत्पादन के संबंधों का रूपांतर असंभव है," या यह कि कि "जब उत्तर और दक्षिण अभी तक एक नहीं हुये तो सहकारिता कैसे लागू हो सकती है?"

कामरेड किम इल सुंग ने वास्तविक स्थिति से दूर ऐसे मार्क्सवाद–लेनिनवाद–विरोधी आरोपों को ठुकराया और सक्रिय रूप से खेती में सहकारिता को आगे बढ़ाया।

कामरेड किम इल सुंग ने सिखाया :

"...समाजवादी रूपांतर को उस समय नहीं रोका जा सकता, जब कि स्वयं जीवन यह मांग रहा हो कि उत्पादन के पुराने पड़ गये संबंधों को तुरन्त बदला जाय और, जब कि ऐसी क्रांतिकारी शक्तियां हैं, जो उत्पादक शक्तियों का विकास स्तर तथा तकनीकी प्रगति का स्तर अपेक्षाकृत नीचे होते हुये भी उस रूपांतर को पूरा करने के लिये तैयार हैं।"

कामरेड किम इल सुंग ने जो दिशा प्रस्तुत की वह सबसे अधिक सक्रिय और क्रांति-कारी दिशा थी जिसका उद्देश्य था कि सबसे पहले समाजवादी रास्ते पर उत्पादन के संबंधों में रूपांतर करके तकनीकी क्रांति का व्यापक मार्ग प्रशस्त किया जाय, ताकि उत्तरी आधे भाग में सामाजिक, आर्थिक विकास की तात्कालिक आवश्यकताओं के अनुसार उत्पादक शक्तियों के तीव्र विकास की गारंटी हो सके और इसके साथ ही क्रांतिकारी शक्तियों को ठोस ढंग से निर्मित कर उत्तरी आधे भाग के क्रांतिकारी अड्डे को सुदृढ़ किया

जाय और क्रांति की राष्ट्रव्यापी विजय में शीघ्रता लायी जाय।

युद्ध के दौरान ही कामरेड किम इल सुंग ने ग्रामीण क्षेत्रों में सहकारी अर्थ व्यवस्था के अंकुर जगा दिये थे और युद्ध विराम के तुरन्त बाद उन्होंने सर्वाधिक गरीब किसानों और पार्टी संगठनों पर भरोसा करके प्रयोगात्मक आधार कृषि सहकारी समितियां संगठित कीं और जैसे जैसे किसानों का जोश बढ़ता गया, इस आन्दोलन को सक्रिय रूप से आगे बढ़ाते गये।

कृषि सहकारीकरण को आगे बढ़ाते हुये कामरेड किम इल सुंग ने उन सिद्धांतों को सही रूप से निश्चित किया जिनका पालन पार्टी और राज्य को करना था, कृषि सहकारिता के विकास के चरणों और गति को निर्धारित किया, सहकारी समितियों के रूप और आकार को निर्धारित किया, और यह सब हमारे देश की यथार्थ परिस्थितियों के अनुकूल किया, तथा उन्होंने इन पेचीदा और दूरगामी सामाजिक–आर्थिक परिवर्तनों को तेजी से और सफलतापूर्वक मूर्त बनाने के लिये पथ–प्रदर्शन किया।

कृषि सहकारिता को आगे बढ़ाने में उन्होंने सही वर्गनीति निर्धारित की जिस के अनुसार गरीब किसानों पर दृढ़ता के साथ भरोसा करते हुए, मझोले किसानों के साथ मैत्री को सुदृढ़ करना था तथा धनी किसानों पर अंकुश लगाना और उन्हें धीरे धीरे नये सांचे में ढालना था। और उन्होंने इस बात का ध्यान रखा कि किसानों को अमली अनुभवों की शिक्षा दी जाय, खेती के सहकारी आन्दोलन में स्वेच्छा के सिद्धांत का सख्ती से पालन हो, तथा पार्टी और राज्य के निर्देशन और सहायता के सूत्र मजबूत हों।

कामरेड किम इल सुंग ने नवम्बर १९५४ में पार्टी की केन्द्रीय कमेटी के विस्तृत सम्मेलन के समापन के अवसर पर **'खेती के भावी विकास के लिये हमारी पार्टी की नीति'** शीर्षक से जो भाषण दिया, वह कृषि सहकारिता आन्दोलन को सफलतापूर्वक तेज करने में महान ऐतिहासिक महत्व का सिद्ध हुआ।

अपने उस भाषण में कामरेड किम इल सुंग ने कृषि सहकारिता आन्दोलन के प्रयोगात्मक दौर की उपलब्धियों का सार–संक्षेप बताया, इस आन्दोलन के दौरान दक्षिणपंथी और वामपंथी, सभी संभव भटकावों से चौकन्ना रहने की जरूरत की ओर ध्यान दिलाया और व्यापक पैमाने पर कृषि सहकारी आन्दोलन को चलाने का कर्तव्य प्रस्तुत किया।

कामरेड किम इल सुंग की शिक्षाओं का अनुसरण करते हुए कृषि सहकारिता ने जन आन्दोलन का रूप धारण कर लिया।

खेती का सहकारीकरण करते हुये कामरेड किम इल सुंग ने शहरी दस्तकारी,

पूंजीवादी व्यापार और उद्योग के समाजवादी रूपांतर का काम भी तेजी से शुरू कर दिया।

१९४७ में ही, जो कि संक्रमण काल का प्रारंभिक वर्ष था, उन्होंने उत्पादकों की सहकारी समितियां संगठित करके दस्तकारी के निजी अर्थतंत्र को समाजवादी सहकारी अर्थ व्यवस्था का रूप देना प्रारंभ कर दिया था। फलत: प्रारंभिक सफलता भी मिली और युद्ध के पहले दस्तकारी के समाजवादी रूपांतर के सिलसिले में कुछ अनुभव भी प्राप्त हो चुके थे।

जहां तक हमारे देश में पूंजीवादी व्यापार और उद्योग का प्रश्न है, कामरेड किम इल सुंग ने उनसे संबंधित विशेषताओं का बहुमुखी विश्लेषण किया और संक्रमण काल में उन्हें क्रमश: समाजवादी दिशाओं पर पुनर्गठित करने की नीति का अनुसरण किया तथा ऐसा करते समय उन्होंने उनके अच्छे अच्छे पहलुओं को बढ़ावा दिया और बुरे पहलुओं को नियंत्रित किया।

युद्धोत्तर कालीन वर्षों में पूंजीवादी व्यापार और उद्योग का समाजवादी पुनर्गठन समय की तात्कालिक मांग थी।

हमारे देश में जो थोड़ा बहुत पूंजीवादी व्यापार और उद्योग था, युद्ध के कारण उसका अस्तित्व मिट सा चुका था। और अगर कुछ बचा था तो वह दस्तकारी की तरह छोटे छोटे टुकड़ों में बंट गया था। अत: हमारे देश के कारखानेदारों या व्यापारियों के लिये यह संभव नहीं था कि युद्ध के बाद के वर्षों में बगैर सहकारी सहायता या आपस में सहयोग के वे अपनी अर्थ व्यवस्था को फिर से खड़ी कर सकते या अपना जीवन–स्तर सुधार सकते।

कामरेड किम इल सुंग ने इन विशेष परिस्थितियों को उचित रीति से समझा और अनेक तरह की सहकारी समितियों के माध्यम से समाजवादी आधार पर पूंजीवादी व्यापारियों और उद्योगपतियों को दस्तकारों के साथ संगठित करने की रचनात्मक कार्य-नीति प्रस्तुत की।

कामरेड किम इल सुंग ने पूंजीवादी तत्वों का सफाया करने के बजाय उनके समाजवादी रूपांतर की जो कार्यनीति पेश की, वह हमारे देश की विशेष परिस्थितियों के वैज्ञानिक विश्लेषण पर आधारित थी और वह सबसे सही कार्यनीति थी, जो न सिर्फ समाजवादी निर्माण की आवश्यकताओं के पूर्णतया अनुकूल थी, बल्कि स्वयं कारखानेदारों और व्यापारियों के हितों के भी अनुकूल थी।

कामरेड किम इल सुंग की सही कार्यनीति और बुद्धिमत्तापूर्ण नेतृत्व को ही श्रेय है कि शहरी दस्तकारी तथा पूंजीवादी व्यापार और उद्योग को समाजवादी

रीति से पुनर्गठित करने का कार्य हमारे देश में बहुत आसानी और तेजी से आगे बढ़ा।

उत्तरी आधे भाग में समाजवादी क्रांति और समाजवादी निर्माण के आगे बढ़ने के साथ साथ कामरेड किम इल सुंग ने साफ साफ समझाया कि उत्तर तथा दक्षिण में उत्पन्न नयी परिवर्तित परिस्थितियों और विभिन्न विशिष्ट वातावरण को ध्यान में रखते हुये हमारे देश में क्रांति का क्या चरित्र है और संबंधित कर्तव्य क्या हैं तथा उन्हें पूरा करने के तरीके क्या हैं और उन्होंने पार्टी सदस्यों तथा मेहनतकशों को सिखाया कि वे क्रांति के विकास की संभावनाओं को भलीभांति समझें, तथा साथ ही, उन्होंने क्रांतिकारी शक्तियों को राजनीतिक और सैद्धांतिक दृष्टि से और मजबूत करने के लिये, उन की वर्ग चेतना को और अधिक बढ़ाने के काम को गतिशील रूप से संगठित तथा विकसित किया।

यह उन परिस्थितियों में जब कि कठमुल्ले और महान शक्तियों के अनुचर क्रांति की प्रगति को रोकने पर तुले थे, बड़ा ही जरूरी प्रश्न बन गया था, वे कोरिया की क्रांति तथा उसकी संभावनाओं के बारे में जो मन में आता, अनाप–शनाप बका करते और ऐलान करते कि उत्तरी आधे भाग में समाजवादी क्रांति तब तक आगे नहीं बढ़ानी चाहिये जब तक उत्तर और दक्षिण को मिलाकर एक नहीं कर लिया जाता और यह कि उत्तर में समाजवादी क्रांति समय पूर्व है।

अप्रैल १९५५ में, कामरेड किम इल सुंग ने हमारी क्रांति के चरित्र और कर्तव्य के बारे में एक थीसिस पेश की जिसका शीर्षक था, **"देश के एकीकरण और स्वतंत्रता के लिये, और गणतंत्र के उत्तरी आधे भाग में समाजवादी निर्माण के लिये हर प्रयास किया जाय,"** और इस प्रकार स्पष्ट रूप से वह रास्ता दिखाया जिस पर हमारी क्रांति को चलना था।

इस ऐतिहासिक कृति में उन्होंने उस समय उत्तर और दक्षिण में उत्पन्न परिस्थितियों और पेचीदा सामाजिक तथा वर्ग संबंधों का वैज्ञानिक विश्लेषण प्रस्तुत किया और इस आधार पर हमारी क्रांति के चरित्र और कर्तव्यों की तथा उनसे उत्पन्न पार्टी की रणनीति और कार्यनीति की स्पष्ट परिभाषा की।

कामरेड किम इल सुंग ने उस थीसिस में यह सिखाया :

"...मौजूदा दौर में हमारी क्रांति के बुनियादी कर्तव्य हैं कि अमरीकी साम्राज्यवाद की आक्रामक शक्तियों, दक्षिण के जमींदारों, दलाल पूंजीपतियों, जापान-समर्थकों और अमरीका-समर्थक तत्वों तथा राष्ट्र के गद्दारों का सफाया किया जाय, जो उन की शक्तियों

को फैलाते हैं और उन के मित्र हैं, और वहां की जनता को साम्राज्यवादी, सामन्तवादी दमन और शोषण से मुक्त किया जाय तथा इस प्रकार जनवादी आधार पर देश को एक बनाया जाय तथा पूर्ण राष्ट्रीय स्वाधीनता अर्जित की जाय।"

और इस थीसिस में कामरेड किम इल सुंग ने उन पार्टी विरोधी गुटबाजों तथा कठमुल्लों के प्रतिक्रियावादी आरोपों का पर्दाफाश किया, तथा उनकी आलोचना की, जिनका यह कहना था कि जब तक उत्तर और दक्षिण को एकताबद्ध नहीं किया जाता और जब तक राष्ट्रव्यापी पैमाने पर साम्राज्य-विरोधी, सामन्त-विरोधी जनवादी क्रांति पूरी नहीं हो जाती, तब तक उत्तरी आधे भाग की क्रांति को आगे नहीं बढ़ाया जाना चाहिये, और वैज्ञानिक ढंग से साबित किया कि उत्तर में समाजवादी क्रांति और समाजवादी निर्माण किसी भी तरह राष्ट्रव्यापी क्रांति और देश की एकता के लक्ष्य का विरोधी नहीं है, बल्कि इससे उन लक्ष्यों की पूर्ति की प्रक्रिया और तीव्र होगी तथा उन्होंने उत्तरी आधे भाग में समाजवाद की नीवें डालने के आम कर्तव्यों को स्पष्ट किया।

कामरेड किम इल सुंग ने सिखाया :

"उत्तरी आधे भाग में समाजवादी निर्माण दक्षिणी आधे भाग की जनता, खासतौर से मजदूरों, किसानों और छोटी मिलकियत के व्यापक लोगों के लिये प्रोत्साहन सिद्ध होगा और इससे दक्षिणी आधे भाग में कुछ राष्ट्रीय पूंजीपतियों तक के साथ संयुक्त मोर्चा बनाने में भी सहायता मिलेगी।

"उत्तरी आधे भाग में समाजवादी निर्माण में प्राप्त सफलतायें न केवल देश के एकीकरण के लिये निर्णायक शक्ति सिद्ध होंगी, बल्कि देश की एकता अर्जित हो जाने पर दक्षिणी आधे भाग में अर्थ व्यवस्था को तेजी से पुनर्स्थापित और विकसित करने के लिये तथा राष्ट्र- व्यापी पैमाने पर समाजवादी निर्माण को आश्वस्त करने के लिये सशक्त भौतिक गारंटी भी सिद्ध होंगी।"

कामरेड किम इल सुंग ने यह भी सिखाया :

"समाजवाद तक संक्रमण के वर्तमान दौर में हमारी पार्टी के समक्ष प्रमुख कर्तव्य यह है कि मजदूर-किसान मैत्री को और आगे सुदृढ़ करते हुए युद्धोत्तर कालीन राष्ट्रीय अर्थ व्यवस्था के पुनर्वास और विकास के लिये संघर्ष में प्राप्त उपलब्धियों के आधार पर समाजवाद की नींवें डाली जायं।

"छोटे छोटे उत्पादकों और पूंजीपतियों वाली अर्थ व्यवस्था को धीरे धीरे समाजवादी दिशाओं में रूपांतरित करते हुए हमें, अर्थ व्यवस्था के समाजवादी स्वरूप को राष्ट्रीय अर्थतंत्र के सभी क्षेत्रों में प्रभुत्वशील बनाना चाहिये। और उसका विस्तार करना चाहिये

और समाजवाद की भौतिक और तकनीकी नीवें डालने के लिये उत्पादक शक्तियों को और अधिक विकसित करना चाहिये ।"

कामरेड किम इल सुंग ने समाजवाद की नींव डालने के सिलसिले में ये कर्त्तव्य प्रस्तुत किये : छोटे छोटे उत्पादकों और पूंजीपतियों की अर्थ व्यवस्था को समाजवादी दिशाओं में रूपांतरित करना, राष्ट्रीय अर्थ व्यवस्था के सभी क्षेत्रों में समाजवादी आर्थिक रूपों का एकछत्र प्रभुत्व स्थापित करना, और उत्पादक शक्तियों को आगे विकसित करते हुये समाजवादी औद्योगीकरण की ठोस नींव निर्मित करना ।

उन्होंने सिखाया कि क्रांति की विजय के लिये पार्टी को सुदृढ़ करना चाहिये और उसके गिर्द व्यापक देशभक्तिपूर्ण शक्तियों को एकजुट करना चाहिये, ताकि अमरीकी साम्राज्यवाद और उसके गुर्गों के विरुद्ध लड़ाई जारी रखा जा सके, और उत्तरी आधे भाग में क्रांति को आगे बढ़ाते हुये समाजवाद की नीवें डालने के कर्त्तव्यों को पूरा करना चाहिये, ताकि देश की एकता और स्वाधीनता को जीतने के लिये उत्तरी आधे भाग को निर्णायक शक्ति का रूप दिया जा सके ।

पितृभूमि की एकता और स्वाधीनता तथा उत्तरी आधे भाग में समाजवादी निर्माण के लिये जनता के संघर्ष में वह थीसिस हमारी जनता के लिये एक दृढ़ कार्यक्रम सम्बन्धी कुंजी सिद्ध हुई तथा एक ऐसी जुझारू पताका बन गयी, जिसने हमारी क्रांति और निर्माण को, जो युद्ध के बाद विकास के एक नये दौर में प्रविष्ट हुआ, एक सशक्त स्फूर्ति दी ।

कामरेड किम इल सुंग ने पार्टी सदस्यों और मेहनतकशों की वर्ग चेतना को और आगे बढ़ाने के लिये वर्ग शिक्षा को और अधिक तेज करने की तथा उन्हें क्रांति तथा निर्माण के लिये संगठित और आन्दोलित करने की कार्यनीति प्रस्तुत की, क्योंकि दक्षिण कोरिया पर अमरीकी साम्राज्यवाद के कब्जा कर लेने के कारण तथा विशेषत: इसलिये कि उत्तरी आधे भाग में समाजवादी क्रांति और समाजवाद का निर्माण गहरे वर्ग संघर्ष के साथ चल रहा था, हमारी क्रांति का चरित्र लम्बा खिचने वाला, कठिन और पेचीदा बन चुका था ।

"पार्टी सदस्यों की वर्ग शिक्षा को और अधिक गहन बनाओ", शीर्षक से अपनी रिपोर्ट में, जिसे उन्होंने अप्रैल १९५५ में पार्टी की केन्द्रीय कमेटी की विस्तृत बैठक में पेश किया, कामरेड किम इल सुंग ने वर्ग शिक्षा का कार्य तीव्र करने की आवश्यकता, उसके महत्व, उसकी ठोस दिशा तथा उसके सिद्धान्तों का पूर्ण स्पष्टीकरण किया ।

यह बताते हुये कि पार्टी सदस्यों और मेहनतकश जनता को मजदूर वर्ग के विचारों तथा उसकी वर्ग चेतना से लैस करके ही वे शत्रु के विरुद्ध अडिग संघर्ष कर सकते हैं और

김 일 성

모든 힘을 조국의 통일 독립과 공화국 북반부에서의 사회주의 건설을 위하여

'गणतंत्र के उत्तरी आधे भाग में देश के एकीकरण तथा स्वाधीनता के लिये और समाजवादी निर्माण के लिए हर प्रयत्न' नामक कामरेड किम इल सुंग की रचना की पांडुलिपि

क्रांति की विजय में दृढ़ आस्था के साथ समाजवाद और साम्यवाद के लक्ष्य की विजय के लिये जम कर लड़ सकते हैं, कामरेड किम इल सुंग ने कहा :

"हमें पार्टी सदस्यों को यह सिखाकर कि अतीत में कौन से वर्ग कोरियाई जनता का शोषण-उत्पीड़न कर रहे थे और कौन आज भी कर रहे हैं, तथा ये वर्ग देश तथा जनता के साथ गद्दारी क्यों करते हैं और वे मजदूरों तथा किसानों को किस चलाकी से धोखा देते हैं, अपने यहां के शत्रु वर्गों की प्रतिक्रियावादी प्रकृति का स्पष्ट बोध कराना चाहिये। साथ ही, हमें पार्टी सदस्यों को यह सिखाकर कि देश की स्वतंत्रता तथा स्वाधीनता के लिये अत्यन्त क्रांतिकारी ढंग से लड़ने में कौन सक्षम है, कौन से ऐसे वर्ग तथा श्रेणियां हैं, जिन से हम सहयोग कर सकते हैं और किन आधारों पर कर सकते हैं, हमें क्रांति में मुख्य प्रेरक शक्ति तथा उसके मित्रों से सम्बन्धित समस्याओं पर सही समझदारी पैदा करनी चाहिये।"

अपनी रिपोर्ट में कामरेड किम इल सुंग ने वर्ग शिक्षा के कार्य को देश के ठोस यथाथ तथा देश में क्रांति और निर्माण के अमली संघर्ष से सुसंगत रूप में जोड़कर चलाने की आवश्यकता पर बड़ा जोर दिया।

वर्ग-शिक्षा को सुदृढ़ करने के बारे में कामरेड किम इल सुंग की शिक्षाओं ने एक ऐसा महत्वपूर्ण ऐतिहासिक अवसर प्रस्तुत कर दिया जिससे पार्टी के सैद्धांतिक कार्य में नया मोड़ आ गया और क्रांति की शक्तियों को राजनीतिक और विचारधारात्मक रूप से सुदृढ़ करने में तथा क्रांति और निर्माण कार्य को और आगे ले जाने में वे शिक्षायें एक सबल प्रेरक शक्ति बनीं।

क्रांति औरनिर्माण, विशेषत: पार्टी के विचारधारात्मक कार्य के सभी क्षेत्रों में **बड़ी शक्तियों के प्रति अनुचर-भावना** और कठमुल्लापन के विरुद्ध कामरेड किम इल सुंग ने जछे को पूर्णतया स्थापित करने की कार्यनीति रखी। और समूची पार्टी उस कार्यनीति को लागू करने का सशक्त संघर्ष छेड़ने से पार्टी सदस्यों और मेहनतकशों के विचार-धारात्मक जीवन और देश में क्रांति सम्पन्न करने में महान परिवर्तन लाई।

कोरियाई क्रांति का नेतृत्व करने के प्रारम्भिक दिनों से ही कामरेड किम इल सुंग इस मार्क्सवादी-लेनिनवादी रीति-नीति पर दृढ़ता से जमे रहे. कि क्रांति की विजय में निर्णायक तत्व होता है—भीतरी क्रांतिकारी शक्तियां। और इसी के अनुसार उन्होंने जुछे की स्थापना करने की स्पष्ट दिशा प्रस्तुत की और पूर्ण संगति के साथ उस पर अमल के लिये संघर्ष का संचालन किया और इस प्रकार क्रांति और निर्माण को सफलता के साथ आगे बढ़ाया।

लेकिन हठी **जी हजूरों** और कठमुल्लों तथा गुटबाजों ने विदेशी चीजों को आंखें मूंद

कर निगलना शुरू किया, यांत्रिक रूप से उनकी नकल की और वे हमारी पार्टी की रचनात्मक दिशाओं और नीतियों को बाधित करने से नहीं चूके। समाजवादी क्रांति और निर्माण की तीव्र गति ऐसी हरकतों को अब बर्दाश्त नहीं कर सकती थी।

जी हजूरी और कठमुल्लापन को खत्म किये बिना पार्टी की उन दिशाओं और नीतियों को भली भांति पूरा करना असंभव था, जिनसे हमारे देश में समाजवादी क्रांति और समाजवादी निर्माण के दौरान उत्पन्न अनेक प्रश्नों को सृजनात्मक रूप से हल किया गया और युद्धोत्तर कालीन पुनर्वास काल की मुश्किल परिस्थितियों में पैदा होने वाली समस्याओं को हल नहीं किया जा सका।

उस समय जुछे दिशा की प्रतिष्ठा की समस्या उन आधुनिक संशोधनवादियों को पार्टी में घुसने से रोकने के लिये, जो अन्तर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट आन्दोलन में प्रकट हो रहे थे तथा मार्क्सवाद-लेनिनवाद के क्रांतिकारी सिद्धांत की मर्यादा की रक्षा करने के लिये भी परमावश्यक समस्या बन गयी थी।

कामरेड किम इल सुंग ने जुछे की सर्वांग स्थापना को ऐसी प्रमुख समस्या के रूप में पेश किया, जिस पर क्रांति और निर्माण का भविष्य टिका था। जो पार्टी का सबसे जरूरी कर्तव्य था, तथा उन्होंने जुछे की स्थापना के लिये दृढ़ संकल्प से प्रेरित नीति प्रस्तुत की।

कामरेड किम इल सुंग ने दिसम्बर १९५५ में पार्टी प्रचारकों तथा आन्दोलनकारियों के सम्मुख एक ऐतिहासिक भाषण दिया, जिसका शीर्षक था, **"विचारधारात्मक कार्य में कठमुल्लापन और नियम मात्र अनुवर्तनवाद का उन्मूलन तथा जुछे की स्थापना।"**

उन्होंने हमारी क्रांति के विकास की आवश्यकताओं के और पार्टी के विचारधारात्मक कार्य की तत्कालीन अवस्था के गहन विश्लेषण के आधार पर एक बार फिर जुछे के विचार के क्रांतिकारी सार-तत्व की, उसके औचित्य की तथा उसकी स्थापना के महान महत्व की सर्वतोमुखी रूप से व्याख्या की। और उन्होंने क्रांति और निर्माण के सभी क्षेत्रों में, विशेषकर पार्टी के विचारधारात्मक कार्य में जुछे की सर्वांग स्थापना का कार्यक्रम संबन्धी कर्तव्य स्पष्ट रूप से प्रस्तुत किया।

कामरेड किम इल सुंग ने स्पष्ट किया कि जुछे की स्थापना केवल सिद्धांत और अमल का प्रश्न नहीं, बल्कि यह हमारी पार्टी के प्रति, कोरियाई क्रांति के प्रति कम्युनिस्टों के रवैये और उनकी मूलस्थिति का प्रश्न है।

विचारधारात्मक कार्य में जुछे की स्थापना के लिये आदेश देते हुये कामरेड किम इल सुंग ने अपने भाषण में कहा :

"हमारी पार्टी के विचारधारात्मक कार्य में जुछे क्या है? हम क्या कर रहे हैं?

हम किसी और देश की क्रांति में नहीं जुटे हैं, बल्कि इस कोरिया की क्रांति में लगे हैं । हमारी पार्टी के विचारधारात्मक कार्य में जुछे ही कोरियाई क्रांति है । अतः सभी के विचारधारात्मक कार्य को कोरियाई क्रांति के हितों के अधीन किया जाना चाहिये ।"

जुछे की स्थापना का क्या अर्थ है, इस सिलसिले में कामरेड किम इल सुंग ने आगे सिखाया :

"जुछे की स्थापना का अर्थ है कि देश की वास्तविक परिस्थितियों के अनुसार और मुख्यतः अपने प्रयासों से क्रांति और निर्माण की सभी समस्याओं को स्वयं अपने आप हल करने के सिद्धांत का दृढ़ता से पालन किया जाय । यह एक ऐसी यथार्थवादी और रचनात्मक प्रवृत्ति है जो कठमुल्लेपन की विरोधी है और जिसके रूप में मार्क्सवाद-लेनिनवाद के सार्वभौम सत्य तथा अन्तर्राष्ट्रीय क्रांतिकारी आन्दोलन के अनुभवों को अपने देश की ऐतिहासिक परिस्थितियों और राष्ट्रीय विशेषताओं के अनुरूप कार्यरूप में परिणत किया जाता है । यह दूसरों पर निर्भरता को ठुकराने का स्वतंत्र रुख है, जिससे आत्म-निर्भरता की भावना प्रकट होती है और जो सिखाती है कि हर हालत में अपनी समस्याओं को केवल अपनी जिम्मेदारी पर, स्वयं ही हल करना चाहिये ।"

जुछे सम्बन्धी कामरेड किम इल सुंग के विचार पूर्णतया क्रांतिकारी विचार हैं जो खुद क्रांति की नियमित आवश्यकताओं से और मार्क्सवादी-लेनिनवादी सिद्धांत से पैदा होता है, और वह अत्यन्त सही मार्क्सवादी-लेनिनवादी पथ-निर्देशक विचार है । जिसका लक्ष्य है क्रांति और निर्माण को सफलतापूर्वक आगे बढ़ाना । और सही अर्थों में एक ऐसा अन्तर्राष्ट्रीयतावादी विचार है, जो अपने देश में क्रांति को सर्वांग सम्पन्न बनाते हुये अन्तर्राष्ट्रीय क्रांतिकारी आन्दोलन में सक्रिय रूप से योगदान करता है ।

कामरेड किम इल सुंग ने जोर दिया कि जुछे की दृढ़ता से स्थापना का प्रश्न हमारे देश की भौगोलिक परिस्थितियों तथा परिवेशों के, उसके ऐतिहासिक विकास की विचित्रताओं के तथा हमारी क्रांति की पेचीदा और कठिन प्रकृति के अलोक में विशेष महत्व का बन गया है ।

और यह सिखाते हुये कि राजनीतिक, आर्थिक, सैनिक तथा अन्य क्षेत्रों में जुछे की स्थापना के लिये पहली शर्त है कि विचारधारा के क्षेत्र में उसकी पूर्ण स्थापना हो, उन्होंने आदेश दिया कि विचारधारात्मक कार्य इस लक्ष्य को सामने रख कर चलाया जाय कि हमारी जनता को देश के विशिष्ट यथार्थ तथा अपनी अन्य चीजों की जानकारी हो और वे उनसे प्यार करें ।

खास तौर से यह सिखाते हुये कि पार्टी सदस्यों और मेहनतकशों में जुछे की स्थापना

की कुंजी यह है कि उन्हें हमारी पार्टी नीतियों और दिशाओं से लैस किया जाय, ताकि वे अपने कार्यों में उन नीतियों और दिशाओं को आधार बनाकर काम कर सकें, उन्होने पार्टी नीतियों मे शिक्षा को तीव्र करने पर विशेष जोर दिया ।

उन्होंने यह भी सिखाया कि पार्टी सदस्यों और मेहनतकशों में हमारी पार्टी की शानदार क्रांतिकारी परम्पराओं तथा क्रांति की सही समझदारी पैदा करके तथा उन्हें हमारे देश के राजनीतिक, आर्थिक सम्बन्धों तथा वर्ग सम्बन्धों, उसकी प्रकृति, भूगोल, संस्कृति, रीति रिवाज आदि से भली भांति परिचित कराके उनमें देश के प्रति गर्व की भावना और आत्म विश्वास पैदा करना चाहिये ।

विचारधारात्मक कार्य में कठमुल्लापन, **जीहजूरी** तथा नियम मात्रानुवर्तन-वाद का विरोध करके जुछे की पूर्णतया स्थापना से सम्बन्धित कामरेड किम इल सुंग की कार्य-क्रम-गत शिक्षा ने ऐसा मार्ग प्रशस्त किया कि **जीहजूरी** और कठमुल्लापन के उन घृणित सैद्धांतिक अवशेषों से छुटकारा पाने योग्य बुनियादी परिवर्तन आ गया, जो हमारे देश के इतिहास से हमें विरासत में मिले थे और उस शिक्षा ने ऐसा मार्ग, प्रशस्त किया कि सभी क्षेत्रों में जुछे की स्थापना हो गयी और स्वाधीनता, आत्म-निर्भरता और आत्म रक्षा के क्रांतिकारी सिद्धांत मूर्त हो चले । उससे संशोधनवादी और वामपंथी अवसरवाद के विरुद्ध, जो अन्तर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट आन्दोलन में उभर आये थे, और संघर्ष में मार्क्सवाद-लेनिनवाद के क्रांतिकारी सिद्धांतों की सुरक्षा करने, तथा उन्हें रचनात्मक दृष्टि से विकसित करने के लिये भी एक ठोस गारंटी पैदा हुई ।

कामरेड किम इल सुंग ने कहा :

"...हमारी पार्टी ने १९५५ में जुछे की स्थापना की सुनिश्चित नीति प्रस्तुत की थी और तब से वह उसे लागू करने के लिये जोरदार सैद्धांतिक संघर्ष चला रही थी । कठमुल्लापन के विरुद्ध पार्टी का सुसंगत संघर्ष १९५५ में नये मोड़ पर पहुंचा । दरअसल, समाजवादी शिविर में उभर कर आये आधुनिक संशोधनवाद के विरुद्ध हमारा संघर्ष उसी समय शुरू हुआ । कठमुल्लेपन के विरुद्ध हमारा संघर्ष इस प्रकार आधुनिक संशोधनवाद के विरुद्ध संघर्ष से जुड़ गया ।"

जी हजूरी और कठमुल्लापन के विरुद्ध जुछे की पूर्ण स्थापना के संघर्ष के जरिये हमारी पार्टी संगठनात्मक तथा विचारधारात्मक दृष्टि से मजबूत हुई और क्रांति की आन्तरिक शक्तियों का ठोस निर्माण हुआ ।

विशेष रूप से जुछे की स्थापना ने हमारी पार्टी के सदस्यों और मेहनतकशों को कठमुल्लापन और **जी हजूरी** की जंजीरों से मुक्त किया, उनकी रचनात्मक पहल को बढ़ा

दिया और क्रांति तथा निर्माण में महान परिवर्तन ला दिया ।

कामरेड किम इल सुंग ने अप्रैल १९५६ में कोरिया की वर्कर्स पार्टी की तीसरी कांग्रेस बुलायी जिसका उद्देश्य था पार्टी तथा जनता के लिये नया जुझारू कार्यक्रम तैयार करना, और समाजवाद की नींवों के निर्माण को पूर्ण करने के संघर्ष में जनता को संगठित और गोलबन्द करना, क्योंकि राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था के युद्धोत्तर कालीन पुनर्वास का कार्य मुख्यत: पूरा होने को आ रहा था । और उत्पादन सम्बन्धों के समाजवादी रूपांतर का काम विजय गति से पूरा किया जा रहा था ।

कामरेड किम इल सुंग ने पार्टी कांग्रेस में पार्टी की केन्द्रीय कमेटी के कार्य पर रिपोर्ट पेश की । उस रिपोर्ट में उन्होंने समीक्षित अवधि के दौरान अपनी गतिविधियों में पार्टी द्वारा अर्जित महान उपलब्धियों और अनुभवों का सार-संक्षेप प्रस्तुत किया और पितृभूमि के स्वतंत्र एकीकरण, उत्तरी आधे भाग में समाजवादी निर्माण तथा पार्टी को और शक्तिशाली बनाने के काम में तेजी लाने के लिये कर्त्तव्य बताये ।

उन्होंने १९५७ से एक दीर्घकालीन परिप्रेक्ष्यगत योजना, पंचवर्षीय योजना, की पूर्ति का काम शुरू करने का नया लक्ष्य पेश किया और समाजवाद की नीवें रखने के काम को पूरा करने, और इस दौरान जनता के खाद्य, वस्त्र और आवास को बुनियादी रूप से हल करने तथा इस प्रकार देश में क्रांति के विकास का नया अध्याय खोलने के सम्बन्ध में कार्यक्रम पर कर्तव्यों की व्याख्या की ।

कामरेड किम इल सुंग ने पार्टी के संगठनात्मक नेतृत्व तथा विचारधारात्मक कार्य को विकसित करने के जुझारू कर्तव्य भी प्रस्तुत किये, जिनमें पार्टी की एकता और एकरूपता बढ़ाने, पार्टी सदस्यों के पार्टी जीवन को सुदृढ़ करने, पार्टी-कार्य के पुराने रूपों, यथा आत्मपरकता, नौकरशाहियत और नियम मात्रानुवर्तनवाद को दूर करने तथा पार्टी सदस्यों और कार्यकर्ताओं को क्रांतिकारी जन-दृष्टिकोण से लैस करने के प्रश्न भी शामिल थे । उन्होंने जन सरकार के कामों और सर्वहारा नेतृत्व की भूमिका को और आगे बढ़ाने के लिये कर्तव्यों की ओर संकेत किया ।

कांग्रेस में कामरेड किम इल सुंग ने एक बार फिर देश के स्वतंत्र एकीकरण की दिशा को स्पष्ट किया जिसका अनुसरण पार्टी सुसंगत रीति से करती आ रही है तथा एकीकरण को चरितार्थ बनाने के लिये नये सुझाव और ठोस कदम सुझाये । उन्होंने हमारी पार्टी की विदेश नीति के बुनियादी सिद्धांतों की स्पष्ट व्याख्या की और कहा कि हमें आधुनिक संशोधनवाद का विरोध करना है, और मार्क्सवाद-लेनिनवाद की शुद्धता की दृढ़ता से रक्षा करनी है, सर्वहारा वर्ग के अन्तर्राष्ट्रीयतावाद के सिद्धान्तों के अनुसार

समाजवादी शिविर तथा अन्तर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट आन्दोलन की एकता और एकजुटता की रक्षा करनी है, साम्राज्य-विरोधी राष्ट्रीय मुक्ति संघर्ष को सक्रिय समर्थन देना है तथा अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में साम्राज्य-विरोधी संघर्ष को शक्तिशाली बनाना है ।

कोरिया की वर्कर्स पार्टी की तीसरी कांग्रेस में कामरेड किम इल सुंग ने जो रिपोर्ट पेश की, उससे हमारी पार्टी को वह सैद्धांतिक व वैचारिक अस्त्र मिल गया, जिसके जरिये वह गणतंत्र के उत्तरी आधे भाग में समाजवाद का आधार निर्मित करने के काम की पूर्ति का और देश के एकीकरण के लक्ष्य का संघर्ष तीव्र कर सकती थी और साथ ही अन्तर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट आन्दोलन तथा विश्व क्रांतिकारी आन्दोलन के विकास में एक महान योगदान कर सकती थी ।

कामरेड किम इल सुंग पार्टी कांग्रेस में फिर से पार्टी की केन्द्रीय कमेटी के अध्यक्ष चुन लिये गये और उन्होंने हमारी पार्टी और जनता को नयी विजय की ओर आगे बढ़ाने में नेतृत्व किया ।

कोरिया की वर्कर्स पार्टी की तीसरी कांग्रेस में कामरेड किम इल सुंग ने समाजवाद की नींवें रखने के काम को पूरा करने का जो कर्तव्य प्रस्तुत किया, वह घरेलू और विदेशी शत्रुओं के विरुद्ध घनघोर वर्ग संघर्ष द्वारा सम्पन्न हुआ । उस समय घरेलू और अन्त-र्राष्ट्रीय परिस्थिति बहुत ही पेचीदा थी और हमारी पार्टी तथा जनता के समक्ष अनेक कठिनाइयां और अग्नि-परीक्षायें खड़ी थीं ।

जैसे जैसे दिन बीतते गये, उन आधुनिक संशोधनवादियों की चालें बढ़ती गयीं जो अन्तर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट आन्दोलन में अपने सिर उठा रहे थे और साम्राज्यवादियों तथा अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिक्रियावादियों ने इस अवसर का लाभ उठा कर कम्युनिस्ट विरोधी शोरगुल मचा दिया । दक्षिण कोरिया पर कब्जा करके बैठे अमरीकी साम्राज्यवादियों तथा उनके गुर्गों ने गणतंत्र के उत्तरी आधे भाग के विरुद्ध ऐसा प्रतिक्रियावादी अभियान तेज किया जैसा कभी भी देखा सुना नहीं गया था । ऐसी पेचीदा परिस्थिति का लाभ उठाकर पार्टी के भीतर घुसे पार्टी-विरोधी प्रति-क्रांतिकारी गुटबाजों ने विदेशी शक्तियों की मदद से पार्टी पर हमला बोल दिया । पार्टी के भीतर पार्टी-विरोधी तत्वों तथा उनके समर्थकों, विदेशी संशोधनवादियों और महान राष्ट्र के मद में चूर तत्वों ने एक होकर हमारी पार्टी का विरोध शुरू किया और वे हमारी पार्टी तथा सरकार को गिराने का षडयंत्र तक करने लगे ।

देश का आर्थिक निर्माण भी साधनों और धन की कमी समेत अनेक बाधाओं से ग्रस्त था ।

इन खड़ी की गयी मुश्किलों कैसे से पार पाया जाय, यह हमारी क्रांति के भाग्य का निपटारा करने वाला प्रश्न बन गया। लेकिन कामरेड किम इल सुंग के अनुभवी नेतृत्व को इसका श्रेय है कि वे सारी मुश्किलें और अग्नि परीक्षायें समाप्त हो गयीं, क्योंकि कामरेड किम इल सुंग को समूची पार्टी तथा जनता का पूर्ण विश्वास प्राप्त है और वे बड़े से बड़े तूफान में भी बगैर किसी हिचक के क्रांति को विजय की ओर बढ़ाते चलते हैं।

इस मुश्किल परिस्थिति में, जबकि क्रांति के मार्ग में अनेक मुश्किलें और अग्नि परीक्षायें खड़ी थीं, कामरेड किम इल सुंग ने यह विवेकपूर्ण दिशा प्रस्तुत की कि मुख्य प्रयास समाजवादी आर्थिक निर्माण की ओर लगाना चाहिये और उसी के साथ पार्टी की पांतों को और भी सुदृढ़ बना कर तथा समस्त जनता को पार्टी के गिर्द और भी मजबूती से एकजुट करके देशी-विदेशी—सभी शत्रु-अभियानों के विरुद्ध निर्णायक जवाबी हमले करने चाहियें।

भीतरी और बाहरी शत्रुओं के अभियानों को पूरी तरह से कुचलने के लिये, तथा हमारी क्रांतिकारी मोर्चाबंदियों को और भी अभेद्य बनाने के लिये समस्त पार्टी और जनता को आन्दोलित करके, समस्त उत्पन्न कठिनाइयों को सक्रियतापूर्वक पार करने के लिये, और समाजवादी निर्माण में महान उत्थान लाने के लिये यह एक ठोस और साहसिक कार्यनीति थी।

कामरेड किम इल सुंग ने पार्टी के भीतर गुटबाजी का विरोध करने के लिये तथा पार्टी की एकता और एकरूपता को सुदृढ़ करने के लिये समूची पार्टी में राजनीतिक तथा विचारधारात्मक संघर्ष को संगठित किया और उसका निर्देशन किया।

समस्त पार्टी सदस्यों और मेहनतकशों ने, जो पार्टी और नेता के प्रति असीम रूप से आस्थावान हैं, कामरेड किम इल सुंग के नेतृत्व में पार्टी की केन्द्रीय कमेटी का राजनीतिक और विचारधारात्मक रूप से जमकर समर्थन किया, उसके गिर्द एकजुट हुये तथा उन्होंने पार्टी विरोधी, प्रतिक्रांतिकारी गुटबाजों की चालों का पर्दाफाश करने तथा धूल में मिलाने के लिये अडिग संघर्ष किया। इस प्रकार पार्टी की केन्द्रीय कमेटी की अगस्त १९५६ में हुई विस्तृत बैठक के बाद उन्होंने गुटबाजी का कूड़ा—करकट साफ कर दिया।

कामरेड किम इल सुंग के नेतृत्व में चलाये गये इस गंभीर संघर्ष के जरिये उस पुरानी गुटबाजी का सफाया कर दिया गया, जिससे ऐतिहासिक रूप से हमारी क्रांति को भारी क्षति पहुंचती आ रही थी, और हमारी पार्टी की एकता और एकरूपता तथा समस्त पार्टी सदस्यों और जनता में पार्टी की एकात्मक विचारधारात्मक व्यवस्था की स्थापना हो गयी। हमारी पार्टी को सुदृढ़ और विकसित करने तथा कोरिया की क्रांति की प्रगति

के लिये यह महान महत्व की घटना थी।

कामरेड किम इल सुंग ने जुछे की स्थापना के लिये कठमुल्लापन, **जीहजूरवाद** तथा **महान राष्ट्र दम्भ** के विरुद्ध तथा मार्क्सवाद-लेनिनवाद की शुद्धता की रक्षा के लिये संशोधनवाद के विरुद्ध संघर्ष को, पार्टी की एकता और एकरूपता को सुदृढ़ करने के लिये, गुटवाजी के विरुद्ध संघर्ष से घनिष्ठ रूप से जोड़ा।

उन्होंने गुटबाजी, कठमुल्लापन, **जी हजूरी** और संशोधनवाद के प्रतिक्रियावादी चरित्र को नंगा किया और पार्टी सदस्यों तथा मेहनतकशों को हमारी पार्टी के विचारों, उसकी दिशाओं तथा नीतियों से पूर्णतया लैस किया। और उन्होंने जनता का पथ-प्रदर्शन किया कि वह महान राष्ट्रदम्भियों द्वारा डाले जा रहे दबाव को ठुकराये, अपनी स्वतंत्र स्थिति को कायम रखे और इस प्रकार पार्टी की दिशाओं तथा नीतियों पर पूर्ण रूप से अमल करे। फलत: कठमुल्लापन, **जी हजूरी** और संशोधनवाद के विरुद्ध संघर्ष और अधिक तीव्र हो गया था तथा पार्टी सदस्यों और मेहनतकशों का राजनीतिक तथा विचारधारात्मक स्तर और ऊंचा उठा।

गुटबाजी को नष्ट करने के लिये पार्टी के भीतरी विचारात्मक संघर्षों को तथा शत्रु की प्रतिक्रांतिवादी चालों के विरुद्ध समस्त जनता के राजनीतिक संघर्ष को संगठित तथा निर्देशित करते हुये कामरेड किम इल सुंग ने आम जनता के क्रांतिकारी जोश और रचनात्मक योग्यता को संगठित और आन्दोलित किया तथा आम जनता को पार्टी के गिर्द एकजुट किया और इस प्रकार समाजवादी आर्थिक निर्माण कार्य में और छलिमा के महान आन्दोलन में क्रांतिकारी तूफान पैदा किया।

उन्होंने एक जुझारू सूत्र दिया—"आइये, छलिमा की गति से आगे बढ़ें।" और समाजवादी निर्माण को और तेज करने के गौरवशाली संघर्ष में समस्त पार्टी सदस्यों और मेहनतकश जनता को शामिल कर दिया।

पार्टी की केन्द्रीय कमेटी की दिसम्बर १९५६ की विस्तृत बैठक में कामरेड किम इल सुंग ने १९५७ की राष्ट्रीय योजना के यानी पंचवर्षीय योजना के प्रथम वर्ष के कर्तव्यों को तथा उसे सफल बनाने के तौर तरीकों को स्पष्ट किया और बैठक के बाद उन्होंने भीषण बर्फवाली, बींधती हुई हवाओं के बावजूद व्यक्तिगत रूप से कांगसन इस्पात कारखाने समेत देश के विभिन्न हिस्सों में कारखानों और गांवों का निरीक्षण किया, मजदूरों और किसानों को देश की मुश्किल परिस्थितियों के बारे में विस्तार से बताया तथा क्रांति की जरूरतों से और पार्टी के इरादों से परिचित कराया और इस प्रकार उन्हें अधिकतम उत्पादन वृद्धि और किफायतशारी के संघर्ष के लिये एकजुट किया।

हमारे मजदूर वर्ग और समस्त मेहनतकश लोगों ने, जो नेता के आवाहन पर हमेशा वफादारी से आगे आते रहे हैं, इस बार भी शिक्षाओं का हृदय से पालन करते हुए मुश्किलों पर विजय हासिल करने तथा समाजवादी निर्माण की गति को तीव्र करने के युद्ध में एक होकर भाग लिया ।

फलतः समाजवादी निर्माण के सभी मोर्चों पर महान परिवर्तन हुये तथा एक के बाद एक अनेक चमत्कार होने लगे । औद्योगिक उत्पादन एक वर्ष में ४४ फीसदी की उल्लेखनीय दर से बढ़ा और खेती की उपज के क्षेत्र में भी शानदार फसलें काटी गयीं ।

कामरेड किम इल सुंग के विवेकपूर्ण कदमों के फलस्वरूप जो क्रांतिकारी तूफान उठा उसके सामने शत्रु का 'कम्युनिस्ट-विरोधी' अभियान और पार्टी-विरोधी तत्वों के हमले काफूर हो गये, और उन लोगों का भी सिर नीचा हो गया, जो हमें बदनाम कर रहे थे । इसके विपरीत हमारी जनता बड़ी ऊंची क्रांतिकारी भावना के साथ नेता के गिर्द और भी दृढ़ता के साथ एकजुट हो गयी तथा क्रांति और निर्माण असाधारण गति से आगे बढ़ चले ।

इससे हमारे देश में समाजवादी निर्माण तथा महान छलिमा आन्दोलन का विराट तूफान उठ खड़ा हुआ ।

समाजवादी निर्माण तथा छलिमा आन्दोलन का महान तूफान कामरेड किम इल सुंग के नेतृत्व के विवेक की सारभूत अभिव्यक्ति है और वे उस क्रांतिकारी जन-कार्य नीति की महान विजय के प्रतिनिधि हैं, जिसका उन्होंने पूरी दृढ़ता और सुसंगति के साथ पालन किया ।

क्रांति के विकास के हर दौर की नीतियों को रूप देने में कामरेड किम इल सुंग ने हमेशा देश के विकास की, केवल वर्तमान और निकट भविष्य की ही नहीं, बल्कि सुदूर भविष्य की, संभावनाओं का वैज्ञानिक रीति से आकलन किया, और उन्होंने समय रहते जनता की आशा-आकांक्षाओं और जीवन द्वारा प्रस्तुत परिपक्व प्रश्नों को समझ कर जनता को संघर्ष का लक्ष्य और उसका मार्ग स्पष्ट रूप से बताया और एक बार नीति और दिशा निर्धारित हो जाने पर वे अडिग भाव से अन्त तक उसका पालन करते, और इससे चाहे जितनी पेचीदा और मुश्किल परिस्थितियां रास्ते में पड़तीं, वे एक कदम भी पीछे न हटते ।

सशक्त क्रांतिकारी गतिशीलता के साथ जनता की तीव्र क्रांतिकारी भावना को जोरदार तरीके से बढ़ाते हुये वे एक समस्या हल करते और तुरन्त दूसरा प्रश्न उठाते और इस प्रकार वे जनता को नयी खोज तथा प्रगति के लिये प्रेरित करने में नेतृत्व करते । इसके

साथ ही, उन्होंने समाजवादी निर्माण के हर दौर में काय की मुख्य कड़ी को सही ढंग से पकड़ा और उस पर सारे प्रयास केन्द्रित करके एक के बाद एक समस्याओं को हल किया तथा इस प्रकार समाजवादी निर्माण की पूरी कड़ी पर अपनी पकड़ बनाये रख कर वे उसे आगे बढ़ाते रहते ।

नीतियां निर्धारित करने में कामरेड किम इल सुंग की वैज्ञानिक दूरदर्शिता, मार्क्स-वादी-लेनिनवादी सिद्धांत के प्रति उनकी अडिग आस्था और उन पर अमल करने में उनकी असाधारण गतिशीलता ऐसे अदुभुत गुण थे जो हमारी जनता को अपने काम में सुदृढ़ विश्वास प्रदान कर प्रेरित करते और उसे नेता द्वारा बताये मार्ग पर हर मुश्किल का सामना करते हुए, बिना किसी दुविधा और हिचक के तेजी से आगे बढ़ते रहने के लिये प्रोत्साहित करते ।

कामरेड किम इल सुंग ने आम जनता की बुद्धि और शक्ति में हमेशा विश्वास किया और क्रांति के मार्ग में जब कभी नये कर्तव्य या मुश्किलें पैदा हुईं, उन्होंने जनता को देश की परिस्थिति से परिचित कराया और उससे प्रत्यक्ष ढंग से विचार—विमर्श किया कि समस्या का हल किस प्रकार होना चाहिये और कर्तव्यों की पूर्ति के लिये जनता की अथाह रचनात्मक शक्ति का समर्थन प्राप्त किया और उपयोग किया ।

नेता ने हमेशा जनता पर भरोसा किया, उसे अपार मूल्यवान समझा, सम्मान से, दिल से प्यार किया और जनता ने भी उन्हें असीम प्यार दिया, हमेशा सम्मान किया और यह विश्वास किया कि योग्य और सुखी विजय और गौरव केवल उन्हीं के नेतृत्व में सुलभ हो सकता है, अपना भविष्य उनके हाथों में सौंप दिया और इस तरह अथक भाव से संघर्ष किया। कामरेड किम इल सुंग का विशाल नेतृत्व और नेता के गिर्द एकजुट समस्त जनता की शक्ति—यही वह शक्ति स्रोत है जिसने छलिमा आन्दोलन को जन्म दिया और वह हमारी सभी विजयों की निश्चित गारंटी है ।

कामरेड किम इल सुंग ने आम जनता की राजनीतिक और विचारधारात्मक चेतना बढ़ाने के सिद्धांत का दृढ़ता से पालन कर, उसको सही रूप में भौतिक प्रोत्साहनों से संयुक्त करते हुये और इसको भी विज्ञान और टैक्नालोजी से आंगिक रूप से सम्बद्ध करते हुये, आम जनता के क्रांतिकारी उत्साह और रचनात्मक शक्ति को पूर्ण रूप से सक्रिय बनाकर, आम जनता को निष्क्रियतावाद और रूढ़िपंथ से लड़ने की प्रेरणा देने के लिये रचनात्मक उपाय किये और इस प्रकार छलिमा आन्दोलन को और अधिक विकसित तथा तीव्र किया ।

यह बताते हुये कि छलिमा आन्दोलन समाजवाद के सफल निर्माण की निर्णायक

गारंटी है, कामरेड किम इल सुंग ने आन्दोलन की परिभाषा बतायी कि वह समाजवादी निर्माण में हमारी पार्टी की आम दिशा है ।

कामरेड किम इल सुंग ने कहा :

"...छलिमा आन्दोलन हमारे देश की लाखों मेहनतकश जनता का क्रांतिकारी आन्दोलन बन चुका है—एक ऐसा आन्दोलन जो हर पुरानी चीज़ का सफाया कर देता है, जो हमारे आर्थिक, सांस्कृतिक, सैद्धांतिक तथा नैतिक क्षेत्रों में नित नयी खोजें करता है, समाजवादी निर्माण की रफ्तार को अभूतपूर्व गति से तीव्र बनाता है । यह आन्दोलन समाजवादी निर्माण में हमारी पार्टी की आम कार्यनीति बन चुका है ।

"इस कार्यनीति का सार-तत्व है—समस्त मेहनतकश जनता को शिक्षित करके तथा उसे कम्युनिस्ट विचारधारा में ढाल कर पार्टी के गिर्द अधिक घनिष्ठता से एकजुट करना और उसके क्रांतिकारी जोश और रचनात्मक प्रतिभा को पूर्ण रूप से सक्रिय करना, ताकि समाजवाद की रचना तेजी से और बेहतर ढंग से हो सके ।"

छलिमा आन्दोलन ने, जो समाजवाद के निर्माण में हमारी पार्टी की आम दिशा है, हमारे देश में समाजवादी निर्माण अधिकतम गति से पूरा करने का सबसे सही रास्ता खोज दिया है, और उससे इस बात की अमली मिसाल मिल गयी है कि समाजवाद और साम्यवाद की रचना के लिये, किसका भरोसा किया जाय और उसको कैसे किया जाय ।

छलिमा आन्दोलन को एक क्षण सांस लिये बिना, तेजी से आगे बढ़ाते हुये कामरेड किम इल सुंग ने पार्टी सदस्यों की एकता और एकरूपता को मजबूत बनाने, उनका जुझारू कौशल बढ़ाने और समाजवादी निर्माण की गति को तीव्र करने के लिये सक्रिय उपायों पर विचार करने के लिये मार्च १९५८ में कोरिया की वर्कर्स पार्टी का सम्मेलन आयोजित किया ।

तीसरी पार्टी कांग्रेस में पंचवर्षीय योजना के लिये जो बुनियादी दिशा बतायी गयी थी, उसके अनुसार इस पार्टी सम्मेलन में उन्होंने पांच वर्ष की अवधि के लिये राष्ट्रीय अर्थ व्यवस्था की विभिन्न शाखाओं के लिये कर्तव्य बताये और उन पर सफलतापूर्वक अमल के लिये ठोस तौर तरीके बताये ।

और उन्होंने गुटबाजी के विरुद्ध पहले चलाये गये संघर्षों के नतीजों का लेखा जोखा लिया और इस संघर्ष में प्राप्त अनुभवों और सबकों के आधार पर पार्टी की एकात्म विचार-धारात्मक व्यवस्था के आधार पर पार्टी की एकता और एकरसता सुदृढ़ करने के लिये तथा पार्टी कार्य को और आगे बढ़ाने और विकसित करने के लिये कर्तव्य निर्धारित किये ।

विशेषकर उन्होंने गुटबाजी, क्षेत्रीय-संकीर्णता, भाई-भतीजावाद तथा अन्य असंगत विचार-तत्वों और पार्टी-विरोधी गुटों द्वारा विचारधारा के क्षेत्र फैलाये गये पूंजीवादी तथा संशोधनवादी विचारों को समूचा नष्ट करने, पार्टी सदस्यों के पार्टी-जीवन को सुदृढ़ करने और पार्टी की केन्द्रीय पांतों को मजबूत करने और उनका विस्तार करने के लिए अनवरत संघर्ष जारी रखने की आवश्यकता पर जोर दिया, ताकि पार्टी की एकता और एकरसता सुदृढ़ हो ।

गुटबाजी के घृणित अवशेषों के उन्मूलन के आधार पर कामरेड किम इल सुंग ने पार्टी की एकता तथा एकरूपता को निर्णायक रूप से मजबूत करने के लिये पार्टी सम्मेलन में कदम उठाये और इस प्रकार हमारी पार्टी के विकास में नये अध्याय का सूत्रपात किया।

पार्टी सम्मेलन के बाद कामरेड किम इल सुंग ने पार्टी के काम में सुधार और मजबूती लाने के लिये तथा पार्टी की अग्रणी भूमिका को और आगे बढ़ाने के लिये और अधिक प्रयास किये ।

मार्च १९४८ में सूबा, नगर और काउन्टी की पार्टी और जन समितियों के अध्यक्षों के समक्ष : **"पार्टी को कैसे सुधारा जाय"** शीर्षक के भाषण तथा **"पार्टी कार्य की पद्धति"** और **"उत्तर हामग्योंग सूबे के पार्टी संगठनों के सामने कर्तव्य"** जैसे अनेक भाषणों में उन्होंने पार्टी को, जो क्रांति का सेनापति मण्डल है, शक्तिशाली बनाने, पार्टी की अग्रणी भूमिका को आगे बढ़ाने तथा क्रांतिकारी शक्तियों को दृढ़ता से निर्मित करने में उठने वाले सिद्धांत सम्बन्धी प्रश्नों का स्पष्टीकरण किया और पार्टी कार्य की बुनियादी पद्धतियों और उनके सार-तत्व की ठोस ढंग से व्याख्या की ।

कामरेड किम इल सुंग ने कहा कि समूची पार्टी में एकात्म विचारधारात्मक व्यवस्था की दृढ़ता से स्थापना और पार्टी की पांतों में इस्पात जैसी एकता और एकरूपता की उपलब्धि ही मार्क्सवादी-लेनिनवादी पार्टी की अजेयता का स्रोत है और उसकी जुझारू शक्ति को बढ़ाने तथा उसके समक्ष खड़े क्रांतिकारी कर्तव्यों को पूरा करने की निर्णायक गारंटी है ।

यह बताते हुये कि पार्टी की दिशाओं और नीतियों से सभी पार्टी सदस्यों और मेहनतकशों को लैस करना पार्टी में एकात्म विचारधारात्मक व्यवस्था की दृढ़ स्थापना के लिये बहुत महत्वपूर्ण है, कामरेड किम इल सुंग ने कहा:

"सबसे पहले पार्टी कार्यकर्ताओं को पार्टी नीतियों तथा केन्द्रीय कमेटी के फैसलों का अध्ययन करना चाहिये, और सभी पार्टी सदस्यों में उनकी स्पष्ट समझ पैदा करने के लिये उनकी व्याख्या और प्रचार करना चाहिये । जब सभी पार्टी सदस्य पार्टी की नीतियों

और फैसलों को भली भांति समझ लेंगे तभी, केन्द्रीय कमेटी के अध्यक्ष से लेकर री पार्टी कमेटी के अध्यक्ष तक—सभी दस लाख सदस्य एकात्म तन मन से कार्य करेंगे, एक ही सांस में सांस लेंगे और एक ही बात सबके मुंह से निकलेगी।"

यह सिखाते हुये कि क्रांतिकारी पांतों का दृढ़ता से निर्माण करना चाहिये, कामरेड किम इल सुंग ने सबसे पहले इस बात पर जोर दिया कि कार्यकर्ताओं की पातें तैयार की जायं जो क्रांति की रीढ़ होती हैं और उन्हें उचित शिक्षा और सहायता दी जाय। उन्होंने सिखाया कि पार्टी कमेटी में कार्यकर्ताओं के साथ काम को पहला स्थान मिलना चाहिये और उस कार्य को सुधारने के लिये उन्होंने ठोस तौर तरीके बताये।

साथ ही, उन्होंने सिखाया कि मजदूर वर्ग की पांतों का दृढ़ता के साथ निर्माण करना चाहिये और जीवन के सभी क्षेत्रों की आम जनता को खुले दिल से गले लगाना चाहिये, उसे शिक्षित करना चाहिये और पार्टी के गिर्द एकजुट करने के लिये उसे नये रूप में ढालना चाहिये।

यह सिखाते हुये कि तात्कालिक क्रांतिकारी कर्तव्यों को सफलता से पूरा करने के लिये पार्टी सगठनों को आर्थिक निर्देशन की जिम्मेदारी निभाने में अपने को सक्षम सिद्ध करना चाहिये, उन्होंने आर्थिक कार्यों में पार्टी के निर्देशन सम्बन्धी प्रश्नों तथा पार्टी कार्यकर्ताओं और प्रशासनिक तथा आर्थिक कार्यकर्ताओं के पारस्परिक सम्बन्धों पर भी स्पष्ट निष्कर्ष पेश किये।

कामरेड किम इल सुंग ने कहा :

"पार्टी कमेटी के अध्यक्ष और प्रशासनिक कार्यकर्ता के बीच सम्बन्धों की तुलना कर्णधार और खेवनहार के सम्बन्धों से की जा सकती है। प्रशासनिक कार्यकर्ता आगे बैठकर नाव खेता है, जब कि पार्टी कमेटी का अध्यक्ष पीछे बैठ कर कर्णदण्ड हाथ में थामे नाविक-सा दायीं या बायीं दिशा बताता है, और नाव को सही रास्ते पर रखता है, ताकि वह सीधे अपनी मंजिल की ओर आगे बढ़ती जाय।"

कामरेड किम इल सुंग ने सिखाया कि पार्टी कार्य का संचालन प्रशासनिक पद्धति से या हुक्म के जरिये अथवा शासन के जरिये नहीं किया जाता, बल्कि प्राथमिक रूप से शिक्षा और समझाव-बुझाव के साथ चलाया जाता है, ताकि पार्टी सदस्य और आम जनता स्वेच्छा भाव से और जागरूकता के साथ क्रांति में एकजुट हो जायें।

उन्होंने बताया कि पार्टी कार्यकर्ता चाहे प्रशासनिक संगठन में काम करता हो चाहे जन संगठन में या किसी और स्थान में हो, उसे हमेशा झण्डा ले कर आगे चलनेवाला बनना चाहिये, न कि उसे हुक्म चलाते रहना चाहिये, और इसके साथ ही उन्होंने हुक्म

चलाने तथा प्रशासनिक तरीकों को, पार्टी की सत्ता का डण्डा लेकर हांकने की कोशिशों को तथा प्रसिद्धि पाने की लाससा को मिटाने और नियममात्रानुवर्तनवाद का सफाया करने के लिये तथा पार्टी कार्य की पद्धति और शैली में सुधार के लिये ठोस विधियां और उपाय बताये ।

कामरेड किम इल सुंग की शिक्षायें, जिनसे पार्टी कार्य के दौरान उठने वाली सैद्धांतिक और अमली समस्याओं के सविस्तार उत्तर मिले और पार्टी संगठनों और पार्टी कार्यकर्ताओं के काम की दिशा स्पष्ट रूप से मिली, पार्टी कार्य को विकसित करने के लिये, तथा कार्यकर्ताओं के काम की पद्धति और शैली को सुधारने के लिये महत्वपूर्ण पाठ्य पुस्तक और पथ निर्देशिका बन गयीं ।

कामरेड किम इल सुंग की शिक्षाओं पर अमल के संघर्ष के जरिये हमारी पार्टी ने समूची पार्टी को कामरेड किम इल सुंग के महान क्रांतिकारी विचारों से पूर्णतया लैस, एक सशक्त जुझारू सेना के रूप में परिवर्तित कर दिया और कामरेड किम इल सुंग के नेतृत्व में पार्टी की केन्द्रीय कमेटी के गिर्द पार्टी सदस्यों तथा मेहनतकशों को दृढ़ता से एकजुट कर दिया। पार्टी कार्य को पद्धति और शैली में सुधार से पार्टी की अग्रणी भूमिका और ऊंची हो गयी और पार्टी संगठन इस योग्य बन गये कि वे पार्टी की नीतियों को लागू करने में पार्टी सदस्यों और मेहनतकशों को और भी तेजी से संगठित और गोलबन्द कर सकें ।

पार्टी को मजबूत करने, क्रांतिकारी पांतों का दृढ़ता से निर्माण करने तथा क्रांति और निर्माण को सफल बनाने की दृष्टि से कामरेड किम इल सुंग ने पार्टी सदस्यों और मेहनतकश जनता को हमारी पार्टी तथा क्रांति की ऐतिहासिक जड़ों से, तथा जापान-विरोधी सशस्त्र संघर्ष की शानदार परम्पराओं से पूर्णतया परिचित कराने की ओर गहरा ध्यान दिया और इस प्रकार उन्हें उन परम्पराओं की दृढ़ता से रक्षा करने तथा उन्हें आगे बढ़ाने के लिये प्रेरित किया ।

फ़रवरी १९५८ में कोरिया की जन सेना की ३२४ वीं टुकड़ी के सैनिकों और अफसरों के सामने कामरेड किम इल सुंग ने **"कोरिया की जन सेना जापान-विरोधी सशस्त्र संघर्ष की वारिस है"**, शीर्षक से जो भाषण दिया, उसमें उस टुकड़ी को यथास्थल निर्देश देते हुये उन्होंने क्रांतिकारी परम्पराओं की रक्षा करने और उन्हें आगे बढ़ने के लिये एक कार्यक्रम-परक पथ-प्रदर्शक निर्देश भी प्रस्तुत किया ।

उस ऐतिहासिक भाषण में तथा अपनी अन्य कृतियों में कामरेड क़िम इल सुंग ने वैज्ञानिक व्याख्या के साथ बताया कि क्रांतिकारी परम्पराओं को विरासत मे पाने का कितना बड़ा महत्व है, क्रांति और निर्माण में उनकी कितनी बड़ी भूमिका है, उनका बुनियादी

सार-तत्व क्या है, वे क्या सिद्धांत हैं, जिन्हें क्रांतिकारी परम्पराओं को आगे बढ़ाने में स्वीकार करना होता है और साथ ही उन्होंने क्रांतिकारी परम्पराओं में दीक्षा के तरीके बताये ।

कामरेड किम इल सुंग ने उन पार्टी विरोधी, प्रति-क्रांतिकारी गुटबाजों के अपराधों को नंगा किया और उनकी निंदा की, जिन्होंने पार्टी की, क्रांतिकारी परम्पराओं को ठुकराने की तथा पार्टी की एकात्म विचारधारात्मक व्यवस्था को धुंधला बनाने की कोशिश की थी, और साथ ही उन्होंने बताया कि चूंकि हम परम्पराओं को आगे बढ़ा रहे हैं, इसलिये हमें हर उल्टी सीधी बात को ढोते रहने की जरूरत नहीं । तब उन्होंने कहा:

"हमें सिर्फ उन्हीं परम्पराओं को स्वीकार करना है जो जापान-विरोधी छापामार सेना की क्रांतिकारी परम्परायें हैं, उस सेना की परम्परायें हैं, जिसने मार्क्सवाद-लेनिनवाद के झण्डे के नीचे मेहनतकश जनता के हितों की रक्षा में युद्ध किया ।"

जैसा कि उन्होंने सिखाया, क्रांतिकारी परम्परायें उन सारी चीजों को लेकर नहीं बनतीं हैं, जो क्रांति के इतिहास में घटित होती हैं, बल्कि केवल वे क्रांतिकारी निधियां, जिनसे पार्टी तथा क्रांति की जड़ें मजबूत होती हैं, जो क्रांति और निर्माण में शक्ति का स्रोत बनती हैं, क्रांतिकारी परम्परा बन सकती हैं । क्रांतिकारी पार्टी की कोई क्रांतिकारी परम्परा पूंजीवादी राष्ट्रीय आन्दोलन के दौरान हरगिज नहीं बन सकती जिसमें दक्षिणपंथी, वामपंथी अवसरवाद और गुटबाज पाये जाते हों और जिन्होंने क्रांतिकारी संघर्ष को बहुत क्षति पहुंचायी हो ।

कामरेड किम इल सुंग ने उन परम्पराओं के बुनियादी सार-तत्व को स्पष्ट किया, जिन्हें हमें आगे बढ़ाना है ।

कामरेड किम इल सुंग ने सिखाया :

"...मार्क्सवाद-लेनिनवाद के झण्डे के नीचे कोरियाई क्रांति की विजय का मार्ग बनाने के लिये किये गये अपने लम्बे वीरतापूर्ण संघर्ष में कोरियाई कम्युनिस्टों ने जो अदम्य जुझारू भावना प्रदर्शित की और जो मूल्यवान अनुभव तथा उपलब्धियां प्राप्त कीं, वही हमारी क्रांतिकारी परम्परायें हैं ।"

कामरेड किम इल सुंग ने यह भी कहा :

"जापान-विरोधी छापामार सेना की क्रांतिकारी परम्पराओं को उत्तराधिकार में पाने का क्या अर्थ है ? इसका अर्थ है—जापान-विरोधी छापामार सेना की विचारधारात्मक व्यवस्था और उसके काम की श्रेष्ठ-पद्धति तथा शैली को उत्तराधिकार में प्राप्त करना ।"

क्रांति तथा निर्माण में क्रांतिकारी परम्पराओं की स्थिति और भूमिका को समझाते हुये कामरेड किम इल सुंग ने सिखाया कि क्रांतिकारी परम्पराओं को जारी रखना और

उसका विकास करना क्रांति में विजय और समाजवादी तथा साम्यवादी निर्माण की मुख्य समस्याओं में से एक समस्या है ।

यह बताते हुये कि हमारी आज की विजय का श्रेय जापान-विरोधी सशस्त्र संघर्ष की शानदार क्रांतिकारी परम्परायें हैं, उन्होंने सिखाया कि क्रांतिकारी परम्परायें उस समय भी पुरानी नहीं पड़ सकतीं, जब कोरिया की क्रांति पूरी हो जायेगी, तथा कम्युनिज्म पूरी तरह फलीभूत हो जायेगा, और हमें भविष्य में भी इन परम्पराओं की निरन्तर रक्षा करनी होगी, इन्हें उत्तराधिकार में प्राप्त करना होगा तथा उन्हें विकसित करते रहना होगा ताकि क्रांति की अंतिम विजय हो ।

क्रांतिकारी परम्पराओं में शिक्षित होने के महत्व की चर्चा करते हुए कामरेड किम इल सुंग ने सिखाया :

"जनता को क्रांतिकारी परम्पराओं में गहराई और पूर्णता के साथ शिक्षित करने से इसे क्रांतिकारी बनाने तथा एकात्म-विचारधारात्मक व्यवस्था की स्थापना में बहुत बड़ी सहायता मिलती है ।"

कामरेड किम इल सुंग ने सिखाया कि केवल क्रांतिकारी परम्पराओं को उत्तराधिकार में प्राप्त कर और उस विरासत से पार्टी सदस्यों तथा मेहनतकशों को लैस करने से पार्टी की एकात्म विचारधारात्मक व्यवस्था को पूर्णतया स्थापित करना, समस्त समाज को क्रांतिकारी बनाना और उसमें मजदूर वर्ग की भावना प्रतिष्ठित करना, क्रांति की निधि I सुरक्षित कोप बनाना, क्रांति तथा निर्माण की गति को तीव्र करने तथा उसे बेहतर बनाने के लिये जनता के क्रांतिकारी जोश और क्रियाशीलता को बढ़ाना संभव होता है ।

उन्होंने यह भी सिखाया कि क्रांतिकारी परम्परा को विरासत में स्वीकार करके, उन्हें विकसित करके, तथा उनसे अपने को लैस करके ही हम जुछे को पूर्ण रूपेण स्थापित कर सकते हैं, मार्क्सवाद-लेनिनवाद की शुद्धता की रक्षा कर सकते हैं और क्रांति की रक्षा और प्रगति कर सकते हैं ।

"कोरिया की जन सेना जापान-विरोधी सशस्त्र संघर्ष की उत्तराधिकारिणी है" शीर्षक के अपने ऐतिहासिक भाषण में तथा क्रांतिकारी परम्पराओं पर अपनी अनेक शिक्षाओं में कामरेड किम इल सुंग ने क्रांतिकारी परम्पराओं से सम्बन्धित विचार और सिद्धांत पर सर्वतोमुखी और सर्वांग सम्पन्न व्याख्या दी और इस प्रकार हमारी पार्टी और जनता को क्रांति में विजय पाने के लिये एक सशक्त हथियार सौंपा और मार्क्सवाद-लेनिनवाद तथा अन्तर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट आन्दोलन की सैद्धांतिक और वैचारिक सम्पत्ति की वृद्धि में महान योग दिया ।

जब समाजवादी क्रांति और समाजवादी निर्माण की रफ्तार तेज हो चली तो कामरेड किम इल सुंग ने जन सरकार को मजबूत बनाने तथा राज्य और सामाजिक व्यवस्था को सुदृढ़ करने की दिशा में कदम उठाये, ताकि वे उन महान सामाजिक-आर्थिक परिवर्तनों के अनुकूल बन सकें जो पार्टी के गिर्द दृढ़ता से एकजुट आम जनता की अटूट राजनीतिक तथा वैचारिक एकता के आधार पर हमारे देश में दिखायी पड़ रहे थे।

अगस्त १९५७ में हमारे देश में द्वितीय सर्वोच्च जन विधान सभा के चुनाव हुये।

हमारी जनता ने एकमत से अपने सम्मानित प्रिय नेता कामरेड किम इल सुंग को सर्वोच्च जन विधान सभा के लिये निर्वाचित किया, जो आम जनता को सदा विजय तथा वैभव, सुख तथा समृद्धि की मंजिल की ओर बढ़ाने में नेतृत्व देते हैं और इस प्रकार जनता ने अपने नेता में असीम विश्वास और श्रद्धा की भावना अभिव्यक्त की, और सितम्बर १९५७ में जब द्वितीय सर्वोच्च जन विधान सभा का प्रथम अधिवेशन हुआ तो उसमें कामरेड किम इल सुंग को कोरिया के जनवादी जन गणतंत्र के मंत्रिमण्डल का प्रधान मंत्री फिर से नियुक्त किया गया।

इस अधिवेशन में कामरेड किम इल सुंग ने राजनीतिक कार्यक्रम पर भाषण दिया जिसका शीर्षक था—**"समाजवादी निर्माण में जनसत्ता के तात्कालिक कर्तव्य।"**

राजनीतिक कार्यक्रम पर अपने भाषण में कामरेड किम इल सुंग ने क्रांति के बाद के १२ वर्षों में क्रांति और निर्माण के काम में हमारी जनता ने जो सफलतायें अर्जित कीं, उनका सार-तत्व प्रस्तुत किया, वे कर्तव्य बताये जो पितृभूमि के एकीकरण तथा स्वतंत्रता और उत्तरी आधे भाग में समाजवादी निर्माण को तेजी से पूर्ण करने के संदर्भ में हमारे सामने आये थे, और उन्होंने क्रांति में नयी विजय के लिये जनता को प्रेरित और प्रोत्साहित किया तथा उसे छलिमा आन्दोलन में और जोश दिलाने के लिये आन्दोलित किया।

कामरेड किम इस सुंग ने इस समस्या पर ध्यान दिया कि जन सरकार के सर्वहारा अधिनायकत्व की भूमिका मजबूत हो तथा आर्थिक संगठनकर्ता और सांस्कृतिक शिक्षक के रूप में इसकी भूमिका निरन्तर बढ़ती रहे, ताकि क्रांति और निर्माण में प्राप्त सफलताओं को मजबूत बनाया जाय तथा देश के समाजवादी निर्माण को और जोश के साथ आगे बढ़ाया जाय।

जैसे जैसे हमारे देश में क्रांति और निर्माण की सफलतापूर्वक प्रगति होने लगी, भीतरी और बाहरी शत्रु हमारी प्रगति को रोकने की चेष्टा में बुरी तरह लग गये। उसी बीच, अन्तर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट आन्दोलन में संशोधनवादियों ने अपने मार्क्सवाद-लेनिनवाद

विरोधी" "सिद्धांत" का प्रचार करके सर्वहारा के अधिनायकत्व को दुर्बल बनाने के जोरदार प्रयत्न किये ।

यही वह समय था, यानी अप्रैल १९५८ का समय था कि कामरेड किम इल सुंग ने अपना भाषण **"हमारी पार्टी की न्यायिक नीति के अमल के लिये,"** में सर्वहारा के अधिनायकत्व के सार-तत्व की व्याख्या की और उसे मजबूत बनाने की दिशा और उसके तौर तरीके सुझाये ।

अपने भाषण में कामरेड किम इल सुंग ने समाजवाद के अन्तर्गत सर्वहारा अधिनायकत्व को और भी मजबूत करने पर जोर दिया और उन्होंने अधिनायकत्व के सारतत्व का वैज्ञानिक स्पष्टीकरण प्रस्तुत किया ।

कामरेड किम इल सुंग ने सिखाया :

"आज, हमारे युग में, दो तरह के अधिनायकत्व हैं : एक है पूंजीपति वर्ग का अधिनायकवाद, दूसरा है सर्वहारा का अधिनायकवाद ।

"...पूंजीपति वर्ग का अधिनायकवाद मजदूरों और किसानों पर तानाशाही लादता है और जमींदारों तथा पूंजीपतियों को लोकतंत्र की गारंटी करता है ।...सर्वहारा का अधिनायकवाद जमींदारों और पूंजीपतियों पर तानाशाही स्थापित करता है और मजदूरों—किसानों तथा आम श्रमजीवी जनता को जनवाद की गारंटी करता है । पूंजीवादी अधिनायकवाद पूंजीवादी व्यवस्था के लिये जरूरी होता है और सर्वहारा अधिनायकवाद समाजवादी व्यवस्था के लिये जरूरी है ।"

अपने भाषण में कामरेड किम इल सुंग ने कानूनों के सार-तत्व और उनके वर्ग-चरित्र का गहन मार्क्सवादी-लेनिनवादी विश्लेषण किया और कहा कि हमारे कानून सर्वहारा अधिनायकवाद के लिये ऐसे अस्त्र बनने चाहियें जिनके जरिये समाजवादी उपलब्धियों की रक्षा की जा सके । और उन्होंने सिखाया कि राजकीय कानून पर सही अमल का मतलब यह है कि हमारी पार्टी की नीति की सक्रिय रूप से रक्षा की जाय तथा उस को भलीभांति लागू किया जाय । और इसी के अनुसार, अगर कार्य-कर्ताओं को कानून सही ढंग से लागू करने हैं तो उन्हें चाहिये कि वे पार्टी की नीति का श्रमपूर्वक अध्ययन करें और अपनी पार्टी भावना पक्की करें ।

हमारी पार्टी की वर्ग-नीति को भलीभांति लागू करने तथा राज्य के सर्वहारा अधिनायकत्व की भूमिका को सुदृढ़ बनाने में वह भाषण सैद्धांतिक और अमली—दोनों तरीकों से बहुत बड़े महत्व का सिद्ध हुआ ।

जनसत्ता को सुदृढ़ बनाने तथा राज्य की सर्वहारा अधिनायकत्व की भूमिका बढ़ाने

में कामरेड किम इल सुंग की शिक्षाओं को लागू करने से समाजवादी निर्माण का महान अस्त्र, जनसत्ता, अपने सामने उपस्थित पेचीदा और मुश्किल क्रांतिकारी कर्तव्यों को और भी श्रेयस्कर ढंग से पूरा करने, उनको सुदृढ़ करने तथा और अधिक विकसित करने के योग्य बनीं।

कामरेड किम इल सुंग के विवेकशील नेतृत्व के फलस्वरूप शहरों और गांवों में उत्पादन-सम्बन्धों के समाजवादी रूपान्तर का लक्ष्य अगस्त १९५८ में पूर्ण हो गया।

कृषि सहकारिता के साथ निजी हस्तकला और पूंजीवादी व्यापार और उद्योग में समाजवादी रूपांतर के पूर्ण हो जाने के परिणामस्वरूप उत्पादन के समाजवादी संबंधों का अविभाजित प्रभुत्व स्थापित हो गया और हमारे देश के उत्तरी आधे भाग में शोषण और दमन से मुक्त समाजवादी व्यवस्था दृढ़ता से स्थापित हो गयी।

हमारे देश के उत्पादन संबंधों में समाजवादी रूपांतर की पूर्णता में कामरेड किम इल सुंग के महान विचार जुछे तथा सहकारिता संबंधी उनकी क्रांतिकारी, सृजनशील दिशा की महान विजय मुखरित हुई तथा इस देश में आगे बढ़े हुये समाजवादी समाज की रचना के बारे में उनकी दूरगामी योजना प्रतिफलित हुई।

यह कामरेड किम इल सुंग के विवेकशील नेतृत्व का ही सुफल था कि समाज को पुनर्गठित करने के सबसे पेचीदा और मुश्किल क्रांतिकारी काम, उत्पादन संबंधों के समाजवादी परिवर्तन का काम, चार या पांच वर्ष की कम अवधि में शानदार तरीके से पूर्ण हो गया, और वह भी ऐसी मुश्किल और पेचीदा परिस्थिति में, जब कि देश विभाजित था, हम विश्व साम्राज्यवाद के सरगना अमरीकी साम्राज्यवाद के विरुद्ध आमने-सामने खड़े थे और युद्ध में बुरी तरह तहस नहस राष्ट्रीय अर्थ व्यवस्था का फिर से पुनर्वास और निर्माण करना था।

कामरेड किम इल सुंग द्वारा प्रस्तुत समाजवादी परिवर्तन की मौलिक कार्यनीति को शानदार तरीके से लागू करने के साथ उत्पादन संबंधों के समाजवादी रूपांतर के लिये एक नया मार्ग खुल गया।

सितम्बर १९५८ में कोरिया के जनवादी जनगणतंत्र की सर्वोच्च जन विधानसभा ने समस्त कोरियाई जन की भावनाओं और इच्छाओं को व्यक्त करते हुये कामरेड किम इल सुंग को, जिन्होंने हमारे देश में समाजवादी क्रांति और समाजवाद की रचना को विजयी बनाया, कोरिया के जनवादी जनगणतंत्र के श्रम-वीर की उपाधि से विभूषित किया।

उत्पादन के साधनों के समाजवादी पुनर्गठन के पूर्ण होने पर कामरेड किम इल

सुंग ने समाजवादी व्यवस्था को और अधिक सुदृढ़ और विकसित करने के और साथ ही तकनीकी, सांस्कृतिक, वैचारिक क्रांतियों को तेजी से आगे बढ़ा कर समाजवादी निर्माण को तीव्र करने और पंचवर्षीय योजना को विजयपूर्वक पूरा करने के संघर्ष में समूची पार्टी और जनता को संगठित और लामबंद किया।

कामरेड किम इल सुंग ने विजयी समाजवादी व्यवस्था के फायदों और आम जनता की रचनात्मक शक्ति का उपयोग कर राष्ट्रीय अर्थ व्यवस्था में अन्तर्निहित क्षमताओं तथा सुरक्षित शक्तियों को पूरी तरह उभारने और देश की तकनीकी क्रांति की गति को तीव्र बनाने के लिये साहसपूर्ण और रचनात्मक कदम उठाये, जिसका नतीजा यह हुआ कि समाजवादी निर्माण में तीव्र प्रगति हुई।

उन्होंने शक्तिशाली भारी औद्योगिक आधार के निर्माण, विशेषत: मशीन निर्माण तथा धातु उद्योग के तीव्र विकास पर अपने प्रयत्न केन्द्रित किये, जो समाजवादी औद्योगी-करण की नीवें डालने में निर्णायक महत्व के थे।

कामरेड किम इल सुंग ने सितम्बर १९५८ में पार्टी की केन्द्रीय कमेटी की विस्तृत बैठक में नारा दिया : **"लोहा और मशीनें उद्योग के राजा हैं"** और उन्होंने लोहा और मशीन की समस्या हल करने के लिये समस्त मेहनतकश जनता को संगठित और गोलबन्द किया।

यही नहीं, उन्होंने "मशीनी यंत्र से मशीनी यंत्र पैदा करो" आन्दोलन को समस्त मेहनतकश जनता के आंदोलन के रूप में चलाया और इस प्रकार राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था के तकनीकी प्रसाधन तेजी से दृढ़ हुये और तकनीकी निर्माण आगे बढ़ा।

कामरेड किम इल सुंग ने केन्द्रीय अधिकार के अंतर्गत बड़े पैमाने के उद्योगों के समानान्तर जनता के उपभोक्ता माल के उत्पादन के लिये मझोले तथा लघु स्थानीय उद्योगों को विकसित करने की रचनात्मक कार्यनीति प्रस्तुत की, जिसके फलस्वरूप विभिन्न स्थानों में बेकार पड़े कच्चे माल और श्रम शक्ति के उपयोग से स्थानीय उद्योग-धंधों का निर्माण हुआ और इससे हलके उद्योगों का आधार तेजी से विस्तृत करना और जनता की दैनिक जरूरतों की बढ़ती हुई मांगों को भली भांति पूरा करना संभव हुआ।

कामरेड किम इल सुंग ने भारी उद्योग की बढ़ती हुई शक्ति पर भरोसा कर के ग्रामीण क्षेत्रों में तकनीकी क्रांति को सक्रियतापूर्वक आगे बढ़ाया। हमारे देश में जहां धान की खेती सबसे महत्वपूर्ण है, वहां की जलवायु प्राकृतिक विशेषताओं और विशेष परिस्थितियों के वैज्ञानिक-विश्लेषण के आधार पर उन्होंने खेती के तकनीकी पुनर्निर्माण

की नीति प्रस्तुत की और उस पर तेजी से अमल किया। यह एक ऐसी नीति थी जिसमें मशीनों, बिजली और रसायन के उपयोग के साथ साथ सिंचाई को प्राथमिकता दी गयी। फलतः थोड़े ही समय में हमारे देश के एक कोने से दूसरे कोने तक सिंचाई साधनों का जाल बुन उठा और खेती की सभी शाखाओं में बड़े बड़े परिवर्तन हो गये।

हमारे देश में हर वर्ष निरन्तर सूखा या बाढ़ के बावजूद जिस प्रकार खेती की उपज बढ़ती रही, इसी ग्रामीण वास्तविकता के आधार पर कहा जा सकता है कि खेती के तकनीकी पुनर्निर्माण की कार्यनीति कितनी सही थी।

कामरेड किम इल सुंग ने देश की सभी पहाड़ियों को फलों के बागों में बदलने की शानदार योजना को जन्म दिया और उन्होंने इस योजना के अमल का एक उदाहरण बुक्छंग में स्वयं प्रस्तुत किया। तथा इस उदाहरण को व्यापक रूप देने के लिये उन्होंने सारी जनता के आंदोलन के रूप में एक संघर्ष छेड़ दिया। और इस प्रकार थोड़ी ही अवधि में पूरे देश को एक ऐसे उद्यान में बदल दिया, जहां हर तरह के फल उगते हैं।

उन्होंने पहाड़ी क्षेत्रों में पर्वतों का प्रभावशाली उपयोग करके और प्राकृतिक—आर्थिक चरित्र को ध्यान में रख कर वहां स्थानीय उद्योग और खेती का पूर्ण विकास करके, पर्वतीय क्षेत्रों के किसानों का जीवन-यापन सुधारने की कार्यनीति भी पेश की, और उन्होंने देश के एक सुदूर कोने में स्थित छोंगसान काउन्टी का स्वयं दौरा किया तथा इस समस्या के समाधान का एक शानदार अनुभव प्रस्तुत किया, और इस प्रकार क्या मैदान, क्या पहाड़, देश के हर हिस्से की जनता के जीवन साधन को समान रूप से विकसित करने का मार्ग प्रशस्त किया।

उन्होंने तल-प्लावी और गहरे सागर में मछली पकड़ने के काम को विकसित कर, और बड़े मंझोले तथा छोटे पैमाने के मत्स्याखट को संयुक्त समुद्रों में वर्ष भर मछली पकड़ने की गतिविधियां जारी रखने और मछली आरक्षण को निर्णयकारी ढंग से सुधारने के कर्तव्य भी पेश किये। इसके लिये उन्होंने इस बात पर ध्यान दिया कि मत्स्य-उद्योग के तकनीकी क्षेत्र में नये नये साधन जुटाये जायें, मत्स्य उद्योग को उच्च वैज्ञानिक आधार दिया जाय और तरुणों में इस सामुद्रिक गतिविधि के लिये जोश पैदा हो। इस प्रकार उन्होंने इस बात पर ध्यान दिया कि मत्स्य उद्योग के विकास में भारी परिवर्तन लाया जाय, जिसका जनता के जीवन यापन के लिये बहुत बड़ा महत्व है।

कामरेड किम इल सुंग के विवेकशील नेतृत्व और उनके द्वारा प्रस्तुत सही आर्थिक नीति का ही सुफल था कि राष्ट्रीय अर्थ व्यवस्था के सभी क्षेत्रों में एक के बाद एक महान खोज कार्य होते रहे और हमारे देश के उत्पादन और निर्माण में उल्लेखनीय प्रगति होती रही।

कामरेड किम इल सुंग के नेतृत्व का यह निहित गुण है कि वे जड़ता और अनुदारतावाद का जम कर विरोध करते है, जनता को निरन्तर नयी नयी खोजों और अनवरत प्रगति के लिये प्रेरित करते हैं और क्रांति को नयी विजय तथा नये उभार की ओर आगे बढ़ाते रहते हैं।

इस अवधि में जब समाजवादी निर्माण में महान उत्थान आया, उन्होंने तुरन्त समझ लिया कि क्रांति को आगे बढ़ने से रोकने वाली प्रवृत्तियां हैं—अकर्मण्यता, अनुदारतावाद तथा तकनीक के बारे में रहस्यवादी धारणा, इसलिये उन्होंने जनता को आन्दोलित किया कि वह इन प्रवृत्तियों को खत्म कर दे। ऐसा करके उन्होंने समाजवादी निर्माण में महान उभार पैदा कर दिया और छलिमा आंदोलन विकास के उच्च स्तरीय चरण में पहुंच गया।

सितम्बर १९५८ में पार्टी की केन्द्रीय कमेटी की विस्तृत बैठक में तथा उत्पादन में नयी नयी खोजों संबंधी राष्ट्रीय सम्मेलन में कामरेड किम इल सुंग ने तकनीक के प्रति अकर्मण्यता, अनुदारतावाद और रहस्यवादी प्रवृत्तियों की आलोचना की, जो आम जनता की रचनात्मक क्षमता में विश्वास न करने की, क्षमताओं के पुराने हिसाब किताब, दूसरों के अनुभवों और काम के प्रतिमानों से चिपके रहने, और विज्ञान और तकनीक को रहस्य से मण्डित करने की प्रवृत्तियों के रूप में अभिव्यक्त होती हैं। उन्होंने पुराने विचारों के अवशेषों, जैसे कठमुल्लापन और जीहजूरी की निन्दा की और सिखाया कि सामूहिक तौर से नयेपन की खोज का आन्दोलन किस तरह तेज किया जाय।

उन्होंने एक जुझारू नारा पेश किया, "हम साहसपूर्वक सोचें, साहसपूर्वक काम करें" और समाजवादी निर्माण में उभार को और आगे बढ़ाने के लिये जनता को संगठित और आंदोलित किया तथा आम जनता के बीच खुद जाकर, उनसे विचारविमर्श करके और समस्याओं का हल ढूंढ़ कर नयी नयी खोजों के काम में जनता का नेतृत्व किया।

नेता के आवाहन पर हमारी मेहनतकश जनता ने हर तरह की ऐसी पुरानी और अनुदार चीजों को खत्म करते हुये, जो क्रांति के रास्ते को रोकती थीं, तथा उच्चतर क्रांतिकारी जोश और रचनात्मक पहल प्रकट करते हुये, हर रोज नये चमत्कार तथा नयी खोजें कर दिखायीं और इस प्रकार जनता ने काम के पुराने प्रतिमानों और निर्धारित क्षमताओं की सीमाओं को तोड़ा।

इस दौरान हमारे देश में ट्रैक्टर, मोटरें, खुदाई करने वाली मशीनें, ८ मीटर लेथें आदि सभी प्रकार की आधुनिक मशीनों तथा साज-सामान का नया उत्पादन होने लगा और

एक निश्चित धन राशि और साधनों से दुगुनी—तिगुनी चीजें बनन और पैदा करने में छलांग लग गयी ।

महान नेता के विवेकपूर्ण नेतृत्व के अंतर्गत हमारे देश में दुनिया को चौंका देने वाले नित नये चमत्कार और खोजें होती रहीं और छलिमा आन्दोलन और भी शान से आगे बढ़ता रहा।

कामरेड किम इल सुंग ने बताया कि राष्ट्रीय अर्थ व्यवस्था के तकनीकी पुन-र्निर्माण के साथ साथ सांस्कृतिक क्रांति समाजवादी निर्माण का बुनियादी कर्तव्य है और उन्होंने मेहनतकश जनता के ज्ञान, तकनीक और संस्कृति का स्तर ऊंचा उठाने के लिये और बहुत बड़ी संख्या में तकनीकी व्यक्तियों को प्रशिक्षित करने, जन स्वास्थ्य सेवाओं तथा सफाई व्यवस्था को सुधारने तथा विज्ञान और संस्कृति में तेजी से विकास करने के लिये उग्रगामी कदम उठाये और इस प्रकार सांस्कृतिक क्रांति में महान प्रगति की ।

कामरेड किम इल सुंग के प्रत्यक्ष सुझाव और व्यक्तिगत निर्देशन पर हमारे देश में व्यापक अनिवार्य माध्यमिक शिक्षा (सात वर्षीय पाठ्यक्रम) १९५८ में लागू हुई, जो कि एशिया में अपने ढंग का पहला कदम था और १९५८ से सभी स्कूलों में पूर्णत: नि:शुल्क शिक्षा लागू कर दी गयी, जिसमें पढ़ाई की फीस लेने की व्यवस्था का उन्मूलन कर दिय गया और बाद में १९६७ में व्यापक नौवर्षीय अनिवार्य तकनीकी शिक्षा लागू कर दी गयी ।

जन स्वास्थ्य सेवाओं में भी तीव्र प्रगति की गयी। कामरेड किम इल सुंग के व्यक्तिगत चिन्ता-भाव तथा उनके द्वारा प्रस्तुत सही जन स्वास्थ्य नीति के कारण मुफ्त चिकित्सा व्यवस्था लागू की गयी और अस्पतालों का जाल गांव—गांव तक और सुदूर स्थित पर्वतीय क्षेत्रों तक पहुंचा दिया गया, ताकि मेहनतकशों के स्वास्थ्य में सुधार लाया जा सके और जन स्वास्थ्य सेवाओं को रोग-निरोधक दिशा में तेजी से विकसित किया गया ।

इस प्रकार शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं की दृष्टि से हमारा देश संसार के सबसे आगे, बड़े देशों में गिना जाने लगा ।

कामरेड किम इल सुंग ने ध्यान रखा कि वैज्ञानिक शोध कार्यों में जुछे की स्थापना की जाय, ताकि समाजवादी निर्माण में पैदा होने वाली अमली समस्याओं के हल की दिशा में उन शोध कार्यों को मोड़ा जा सके। इस प्रकार उन्होंने विज्ञान के विकास में महान सफलताओं को संभव बनाया।

कामरेड किम इल सुंग ने सही साहित्यिक और कला संबंधी नीति भी प्रस्तुत की और बड़े ध्यान से उस नीति पर अमल कराया और इस प्रकार हमारा साहित्य और कला तेजी से विकसित करने लगे।

उन्होंने सिखाया कि समाजवादी साहित्य और कला उस मजदूर वर्ग के विचार-धारात्मक हथियार हैं, जिसने अपने हाथ में सत्ता संभाली है, अतः ऐसे साहित्य और कला में पूंजीवादी सिद्धांत और संशोवनवाद समेत सभी तरह के प्रतिक्रियावादी विचारों का विरोध होना चाहिये तथा उसे क्रांति और निर्माण की सेवा करनी चाहिये और समस्त समाज को क्रांतिकारी और मजदूर वर्गीय चेतना से संपन्न बनाने में साहित्य और कला को मदद करनी चाहिये।

कामरेड किम इल सुंग ने कहा :

"हमारे साहित्य और कला को किसी भी तरह क्रांति और पार्टी नीति के हितों से अलग नहीं होना चाहिये और न उनमें ऐसे तत्वों को घुसने की इजाजत देनी चाहिये, जो शोषक वर्गों की रुचि और पसंद को संतुष्ट करते हैं। जो क्रांतिकारी साहित्य और कला पार्टी की दिशा और नीति का पूर्णतः विश्वास करती है उसी को आम जनता का प्यार सुलभ हो सकता है और पार्टी के हाथ में वही एक सशक्त अस्त्र बन सकता है, जिसकी सहायता से मेहनतकश जनता को साम्यवाद की क्रांतिकारी भावना में दीक्षित किया जा सकता है।"

कामरेड किम इल सुंग ने विशेष रूप से यह सिखाया कि साहित्य और कला में जीहजूरी और कठमुल्लापन को ठुकरा देना चाहिये और जुछे की स्थापना करनी चाहिये, राष्ट्रीय संस्कृति की सुन्दर परंपराओं को आलोचनात्मक रूप से विरासत में स्वीकार करना चाहिये और विकसित करना चाहिये, ताकि वे समाजवाद का निर्माण कर रही मेहनतकश जनता के विचारों और भावनाओं के अनुकूल हों तथा साहित्य और कला खुद जनता की साथी बने और आम जनता को उसका सर्जक बनना चाहिये।

कामरेड किम इल सुंग ने क्रांतिकारी साहित्य और कला संबंधी विचारों को जन्म दिया और साहित्य और कला पर रचनात्मक दिशा प्रस्तुत की, ताकि आधुनिक संशोधन-वाद तथा वामपंथी अवसरवाद का विरोव किया जा सके। और साहित्य और कला की वुनियादी समस्याओं पर मार्क्सवादी-लेनिनवादी सिद्धांत को रचनात्मक दृष्टि से विकसित और समृद्ध किया, मसलन, क्रांति और निर्माण में साहित्य और कला की गतिविधि और भूमिका, राष्ट्रीय संस्कृति की परंपराओं को स्वीकार करना और उनमें नवोन्मेष करना, साहित्य और कला में वैचारिक सार-तत्व और कलात्मक गुण का आपसी संबंध तथा साहित्य और कला के विभिन्न रूप।

साहित्य और कला पर कामरेड किम इल सुंग के सृजनात्मक सिद्धांत तथा उनके विवेकशील नेतृत्व का सुफल था कि हमारे देश का साहित्य और कला फली फूली तथा

पार्टी और जन साहित्य के रूप में विकसित हुए, जिनका रूप राष्ट्रीय और सार-तत्व समाजवादी है ।

कामरेड किम इल सुंग ने भाषा के प्रश्न और भाषा शास्त्र के विकास पर सही दिशा दिखायी और हमारी भाषा तथा अक्षर के विकास की ओर गहरा ध्यान दिया ।

इस बात पर जोर देते हुये कि हमारी जनता को अपनी सुन्दर भाषा और अक्षर से प्रेम करना चाहिये और उस पर गर्व करना चाहिये, कामरेड किम इल सुंग ने सिखाया :

"हमारी भाषा अपने उतार-चढ़ाव की ध्वनियों तथा छोटे लम्बे स्वरों के कारण बहुत ही प्रवाहमय है और उसमें सुन्दर लय भी है तथा वह सुनने में बहुत सुन्दर लगती है । हमारी भाषा अभिव्यक्ति में इतनी संपन्न है कि वह किसी भी पेचीदा और कोमल भावना को व्यक्त कर सकती है, जनता को आन्दोलित कर सकती है, उसे हंसा और रुला सकती है । जनता को कम्युनिस्ट नैतिकता सिखाने में हमारी भाषा बहुत प्रभावशाली बन सकती है, क्योंकि उसमें आचार-व्यवहार प्रकट करने की पूर्ण क्षमता है । हमारी राष्ट्रीय बोली उच्चारण के मामले में भी बहुत समृद्ध है । अतः हमारी भाषा और लिपि में पूर्व या पश्चिम के किसी भी देश की भाषा का उच्चारण मुक्त रूप से किया जा सकता है ।"

यह निर्देश देते हुये कि हमारी भाषा का संस्कार और विकास बुनियादी तौर से देशज शब्दों की सहायता से होना चाहिये, कामरेड किम इल सुंग ने उस सिद्धांत की स्पष्ट व्याख्या की जो हमारी भाषा के विकास के लिये पथ प्रदर्शक होना चाहिये ।

कामरेड किम इल सुंग ने राष्ट्रीय भाषा के विकास के भविष्य के बारे में भी वैज्ञानिक दूरदृष्टि से काम लिया और उसकी स्पष्ट व्याख्या की ।

उन्होंने कहा कि जब सारी दुनिया कम्युनिस्ट हो जायेगी तब भी भाषाओं की राष्ट्रीय विशेषता बहुत दिनों तक कायम रहेगी, और उन्होंने सिखाया कि राष्ट्रीय विशेषता को आगे बढ़ाना चाहिये तथा उसे अधिकाधिक विकसित करना चाहिये और साथ ही संसार भर की जनता की भाषाओं के विकास की समान प्रवृत्तियों को ध्यान में रखना चाहिये ।

भाषा शास्त्रीय प्रश्न पर कामरेड किम इल सुंग की शिक्षायें हमारे देश में भाषा और लिपि के विकास के लिये कार्यक्रम संबंधी कुंजी सिद्ध हुईं ।

जब शहरों और गांवों में उत्पादन के साधनों का समाजवादी पुनर्गठन पूर्ण हो गया तो कामरेड किम इल सुंग ने सर्वतोमुखी कम्युनिस्ट शिक्षा का कार्य चालू करने की नीति पेश करने में देरी नहीं की और उन्होंने केवल क्रांति और निर्माण के वर्तमान को ही नहीं, बल्कि सुदूर भविष्य को भी ध्यान में रख कर वैचारिक क्रांति को तेजी से बढ़ाया ।

कामरेड किम इल सुंग ने सिखाया :

"समाजवादी समाज के निर्माण के लिये भौतिक और तकनीकी नीवें डालने के साथ-साथ जनता के दिमाग को भी फिर से ढालना जरूरी है। चाहे उत्पादन के साधनों का समाजवादी पुनर्गठन पूर्ण हो चुका हो और चाहे आधुनिक तकनीक लागू हो चुकी हो, तब भी हम उस समय यह नहीं कह सकते कि हमने समाजवाद का पूरी तरह निर्माण कर लिया, जब तक हम उन लोगों के दिमागों को नहीं बदल देते, जो समाज का संचालन करते हैं और तकनीक का संचालन करते हैं।"

कामरेड किम इल सुंग ने सिखाया कि जनता को कम्युनिस्ट रीति-नीति से शिक्षित करना और उसको फिर से ढालना समाजवादी तथा कम्युनिस्ट निर्माण की न्यायोचित आवश्यकता है और सर्वहारा के अधिनायकत्व का एक महत्वपूर्ण कर्तव्य है।

उन्होंने खासतौर से इस बात पर जोर दिया कि हमारे देश में उत्तर और दक्षिण में दो परस्पर विरोधी सामाजिक व्यवस्थायें होने के कारण और समाजवाद के विरुद्ध शत्रु की खतरनाक साजिशें चलते रहने के कारण, मेहनतकश जनता की वैचारिक शिक्षा का महत्त्व सबसे बढ़ कर हो जाता है।

कामरेड किम इल सुंग ने सिखाया कि थोड़े से निश्चित शत्रु तत्वों को छोड़ कर सभी लोगों को ऐसी परिस्थितियों में कम्युनिस्ट दिशाओं से शिक्षित और निर्मित किया जा सकता है, जब कि देश में समाजवादी व्यवस्था स्थापित हो चुकी हो और पूरे समाज में पार्टी की एकात्म विचारधारात्मक व्यवस्था प्रतिष्ठित हो चुकी हो और यह कि उन सबको कम्युनिस्ट समाज के साथ आगे बढ़ाना चाहिये और इसलिये उन्होंने आम जनता की शिक्षा-दीक्षा के काम को तेजी से आगे बढ़ाया तथा इसी के साथ दूसरे तमाम कामों से पहले वैचारिक क्रांति को निश्चित रूप से प्राथमिकता दी।

उन्होंने सिखाया कि कम्युनिस्ट रीति-नीति से आम जनता की शिक्षा-दीक्षा का उद्देश्य अंतिम विश्लेषण में यह होता है कि उसे क्रांतिकारी बनाया जाय, उसमें मजदूर वर्ग की भावना भरी जाय और उसे ऐसे कम्युनिस्टों तथा क्रांतिकारियों के रूप में ढाला जाय, जो पार्टी और क्रांति के लक्ष्यों के प्रति निष्ठावान हों और इसी प्रकार मेहनतकश जनता की वैचारिक शिक्षा का संचालन करते समय पार्टी नीतियों और क्रांतिकारी परंपराओं के बारे में जनता को शिक्षित करना सर्वोपरि बहुत जरूरी है और कम्युनिस्ट शिक्षा का सार-तत्व वर्ग-शिक्षा को बना कर, उसके साथ साथ समाजवादी देशभक्ति में भी आम जनता की शिक्षा होनी चाहिये :

नवम्बर १९५८ में प्रकाशित कामरेड किम इल सुंग की रचना **"कम्युनिस्ट शिक्षा**

के विषय में" मेहनतकश जनता की कम्युनिस्ट शिक्षा के लिये कार्यक्रम संबंधी कुंजी सिद्ध हुई ।

इसमें और अपनी अन्य कृतियों में कामरेड किम इल सुंग ने समाजवाद और साम्यवाद के निर्माण में मेहनतकश जनता के विचारों और चेतना की महान भूमिका का गहन विश्लेषण किया और कम्युनिस्ट शिक्षा के मुख्य सार-तत्व तथा पद्धति की स्पष्ट व्याख्या की ।

कामरेड किम इल सुंग ने सिखाया :

"यथासंभव जल्दी से जल्दी समाजवाद के ऊंचे शिखर पर पहुंचने के लिये हमें मेहनतकश जनता को कम्युनिस्ट विचारधारा से लैस करना होगा। जब तक हम वैचारिक शिक्षा नहीं करेंगे और सर्वांग संपन्न रूप से वैचारिक संघर्ष नहीं छेड़ेंगे, तब तक हम क्रांति की प्रगति की गारन्टी नहीं कर सकेंगे और न उन जीतों को सुदृढ़ कर सकेंगे, जो हम हासिल कर चुके हैं।

"हमें सड़े गले सामन्ती तथा पूंजीवादी सिद्धांतों के अवशेषों का उन्मूलन करना चाहिये, जो कि अब भी मेहनतकश जनता के दिमागों में शेष हैं।

"हम जो क्रांति चला रहे हैं, वह पुराने को नष्ट करने और नये का निर्माण करने का संघर्ष है। नये और पुराने, प्रगति और अनुदारता, सक्रियता और निष्क्रियता, सामूहिकता और व्यक्तिवाद यानी समाजवाद और पूंजीवाद के बीच संघर्ष—यही है हमारे क्रांतिकारी संघर्ष का निचोड़। समाजवादी निर्माण का लक्ष्य तभी पूरा हो सकता है, जब उसके रास्ते में खड़ी तमाम पुरानी और भ्रष्ट चीजों का सफाया कर दिया जाय।"

कम्युनिस्ट शिक्षा के मुख्य सार-तत्व की व्याख्या करते हुये कामरेड किम इल सुंग ने इस बात की जरूरत पर जोर दिया कि मेहनतकश जनता को हमारी पार्टी की नीतियों से लैस करना चाहिये, उसे पार्टी के प्रति आस्था की भावना में शिक्षित करना चाहिये, उसे समाजवादी व्यवस्था की श्रेष्ठता और उसकी विजय की अनिवार्यता के प्रति दृढ़ विश्वास से प्रेरित करना चाहिये, उसमें पूंजीवादी व्यवस्था के प्रतिक्रियावादी चरित्र तथा उसके पतन की अनिवार्यता की स्पष्ट समझ पैदा करनी चाहिये। और इस प्रकार उसे इस बात के लिये तैयार करना चाहिये कि वह समाजवादी व्यवस्था की सक्रिय रूप से रक्षा करे तथा उसे आगे और मजबूत तथा विकसित करे।

उन्होंने यह भी सिखाया कि मेहनतकश जनता को व्यक्तिवाद और स्वार्थपरता का विरोध करने के लिये, और सामूहिकता और श्रम को प्यार करने की भावना ग्रहण करने के लिये तैयार करना चाहिये और उसे समाजवादी देशभक्ति और सर्वहारा अन्तर्रा-

ष्ट्रीयतावाद की भावना से तथा निरन्तर नवोन्मेष और अनवरत प्रगति के क्रांतिकारी विचारों से लैस करना चाहिये ।

कामरेड किम इल सुंग ने सिखाया कि वर्गशिक्षा कम्युनिस्ट शिक्षा की नींव है ।

उन्होंने सिखाया कि वर्ग शिक्षा को सुदृढ़ करने का प्रश्न इस दृष्टि से बहुत ही महत्वपूर्ण प्रश्न बन गया है कि समाजवादी और कम्युनिस्ट क्रांति के साथ साम्राज्यवाद और सभी तरह के प्रतिक्रियावाद के विरुद्ध भयानक वर्ग संघर्ष चल रहा है और यह शिक्षा खासतौर से इसलिये महत्वपूर्ण है कि हमारा देश उत्तर और दक्षिण में विभाजित है और वह विश्व साम्राज्यवाद के सरगना अमरीकी साम्राज्यवाद के विरुद्ध खड़ा है । उन्होंने इस तथ्य का वैज्ञानिक विश्लेषण किया कि समाजवादी देशों में ऐसी पीढ़ियों के हाथ में समाज की बागडोर आती जा रही है, जिन्हें न तो शोषण और दमन का अनुभव है, न वे क्रांतिकारी संघर्षों की अग्नि-परीक्षाओं से ही गुजरी हैं, और वहां जनता अपनी पुरानी बदकिस्मती को आसानी से भूल सकती है, अकर्मण्यता तथा ढिलाई में पड़ सकती है, क्रांति से थक सकती है, क्योंकि क्रांति तो एक निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है, और इसलिये उसके रहन सहन का स्तर ऊंचा उठ गया है, इसलिये उन्होंने सिखाया कि वर्ग शिक्षा के प्रश्न का कम्युनिस्ट शिक्षा में विशेष महत्व हो गया है ।

उन्होंने कहा कि जिन देशों के एक हिस्से में ही क्रांति विजयी हो सकी उन देशों में और समाजवादी देशों में, जहां ऐसी परिस्थितियों में समाजवाद विजयी हुआ, जब कि साम्राज्यवाद का अस्तित्व बाकी है, वहां वर्ग शिक्षा का प्रश्न वर्तमान समय में अन्तर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट आन्दोलन के लिये बहुत बड़े महत्व का है । यह बताते हुये कामरेड किम इल सुंग ने कहा :

"सभी समाजवादी देशों में वर्ग-शिक्षा का कार्य तेजी के साथ चलाना चाहिये, ताकि वे अपनी क्रांति अन्तिम रूप से सम्पन्न कर सकें और विश्व क्रांति को भी पूर्ण कर सकें । यह कहा जा सकता है कि मेहनतकश जनता में वर्ग-शिक्षा के कार्य को सुदृढ़ करना एक ऐसा महत्वपूर्ण कार्य है, जिसे विश्व क्रांति के लक्ष्य ने हमारे युग के समस्त कम्युनिस्टों को सौंपा है ।"

कामरेड किम इल सुंग ने वर्ग-शिक्षा को कम्युनिस्ट शिक्षा की कुंजी बताते हुये न केवल कम्युनिस्ट शिक्षा के प्रमुख सार तत्व का स्पष्ट और बुद्धिमत्तापूर्ण विश्लेषण किया, बल्कि उन्होंने यह भी सिखाया कि कम्युनिस्ट शिक्षा क्रांतिकारी परंपरा की शिक्षा को सुदृढ़ करने के आधार पर तथा उसके साथ घनिष्ठ सम्बन्ध जोड़ कर चलायी जाना चाहिये ।

उन्होंने यह भी सिखाया कि कम्युनिस्ट शिक्षा का संचालन कार्य-स्थल को उसका

आधार बना कर करना चाहिये और उसका प्रमुख तरीका होना चाहिये—ठोस उदाहरणों द्वारा प्रभाव डाल कर शिक्षित करना ।

'कम्युनिस्ट शिक्षा के विषय में' नामक लेख में तथा कम्युनिस्ट शिक्षा संबन्धी अपनी सीखों में कामरेड किम इल सुंग ने एक नया मार्ग बताया और कहा कि पार्टी को चाहिये कि वह सैद्धांतिक शिक्षा के अपने काम में उस मार्ग का अनुसरण करे और उन्होंने पार्टी सदस्यों और मेहनतकशों को कम्युनिस्ट बनाने में तथा समूचे समाज को लाल बनाने में शक्तिशाली सैद्धांतिक तथा वैचारिक अस्त्र दिया ।

हमारे देश में वैचारिक क्रांति को पूरे जोश के साथ आगे बढ़ाते हुये कामरेड किम इल सुंग ने वैचारिक क्रांति के एक महत्वपूर्ण अंग के रूप में इस बात का बड़ा प्रयास किया कि उगती हुई पीढ़ी को समाजवाद और साम्यवाद के सुन्दर निर्माता के रूप में विकसित किया जाय—ऐसे नये, कम्युनिस्ट टाइप के मनुष्य के रूप में, जिनका सर्वतोमुखी विकास हो चुका हो ।

"बच्चों और युवकों के परिभाषण में शिक्षकों का कर्तव्य" और **"आइये, हम छात्रों को ऐसा शिक्षित करें कि वे समाजवादी तथा कम्युनिस्ट निर्माण के सच्चे उत्तराधिकारी बनें ।"** इन दोनों लेखों में और दूसरी कृतियों में कामरेड किम इल सुंग ने समाजवाद में नयी पीढ़ी की शिक्षा, विशेषतः स्कूली शिक्षा, के सिद्धांत की और उसके विकास की दिशा को नये रूप में पेश किया तथा उसे सफलतापूर्वक हल किया ।

कामरेड किम इल सुंग ने बताया कि क्रांति के उत्तराधिकारियों का उचित शिक्षण-प्रशिक्षण एक ऐसा क्रांतिकारी कार्य है, जो क्रांति के भविष्य का निर्णय करता है और उसकी विजय की गारंटी करता है, और इसीलिये वह कम्युनिस्टों का महान कर्तव्य है । कामरेड किम इल सुंग ने इसीलिये यह भी जोर देकर सिखाया कि बच्चों और युवकों की शिक्षा में शिक्षा संस्थाओं की भूमिका बढ़ानी पड़ेगी ।

कामरेड किम इल सुंग ने सिखाया कि समाजवाद के अन्तर्गत शिक्षा संस्थायें ऐसे महत्वपूर्ण संगठन हैं, जो सर्वहारा अधिनायकत्व के राज्य के शैक्षणिक-सांस्कृतिक दायित्वों को पूरा करते हैं और सैद्धांतिक क्रांति के संचालन में महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं ।

कामरेड किम इल सुंग ने सिखाया :

"आदमियों को क्रांतिकारी बनाने की खास बुनियाद स्कूली-शिक्षा में डालनी चाहिये । किण्डरगार्टन से लेकर प्रायमरी स्कूल, मिडिल स्कूल, उच्चतर तकनीकी स्कूल तथा उच्चतर शिक्षा संस्थान आदि सभी शिक्षा संस्थायें विचारधारात्मक क्रांति के संचालन

का एक बुनियादी साधन हैं। दूसरे शब्दों में शिक्षा संस्थायें, जो राज्य के शैक्षणिक-सांस्कृतिक दायित्वों को पूर्ण करती हैं, विचारधारात्मक शिक्षा का महत्वपूर्ण अस्त्र है।"

कामरेड किम इल सुंग ने सिखाया कि समाजवाद के अन्तर्गत शिक्षण संस्थाओं का बुनियादी कर्तव्य है ऐसे कम्युनिस्ट बनाना, जो समाज, जनता और मजदूर वर्ग के लिये शोषण और दमन के विरुद्ध लड़ें, इसलिये मजदूर वर्ग के वर्ग सिद्धांत का पूर्णतया पालन होना चाहिये और जुछे को स्कूलों में दृढ़ता से प्रतिष्ठित करना चाहिये।

कामरेड किम इल सुंग ने मार्क्सवाद-लेनिनवाद को सृजनात्मक दृष्टि से विकसित करके जो शिक्षा सम्बन्धी विचार और नीतियां प्रस्तुत की और उन्होंने बच्चों, युवकों तथा स्कूली शिक्षा के संदर्भ में उठने वाले सैद्धांतिक तथा व्यावहारिक प्रश्नों जैसे स्कूली शिक्षा की स्थिति और उसकी भूमिका, समाजवाद के अन्तर्गत इसकी दिशा और विषय वस्तु नये ढंग से पेश की और शानदार ढंग से उनका हल निकाला। उनके वे शिक्षा सम्बन्धी विचार क्रांति के उत्तराधिकारियों, बच्चों और तरुणों का ऐसे सच्चे क्रांतिकारियों के रूप में पालन-पोषण करने के लिये कार्यक्रम सम्बन्धी कुंजी सिद्ध हुये, जो क्रांति को पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ायें, समूचे समाज को क्रांतिकारी और मजदूर वर्ग की चेतना से युक्त करें और समाजवाद तथा साम्यवाद की विजय की गारंटी करें।

कामरेड किम इल सुंग द्वारा प्रस्तुत रीति-नीति के अनुसार विचारधारात्मक क्रांति तेजी से आगे बढ़ी और पार्टी नीतियों तथा क्रांतिकारी परम्पराओं में शिक्षा दीक्षा तथा वर्ग शिक्षा को सार-तत्व मान कर कम्युनिस्ट शिक्षा-दीक्षा को तीव्र किया गया, जिनसे मजदूर वर्ग की क्रांतिकारी तेजस्विता और रचनात्मक सक्रियता को प्रस्फुटित होने का पूर्ण अवसर मिले। तथा छलिमा आन्दोलन गहराई से विकसित होकर छलिमा कार्य टुकड़ी आन्दोलन में तबदील हो जाय।

छलिमा कार्य टुकड़ी आन्दोलन, जिसमें सामूहिक खोज आन्दोलन के साथ साथ लोगों को शिक्षित करने और उन्हें नये रूप में बदलने का आन्दोलन भी आंगिक रूप से संयुक्त किया गया था, व्यापक रूप में संगठित किया गया और उसकी नयी नयी संभावनायें खुलती गयीं, मेहनतकश जनता में सर्वतोमुखी रूप से कम्युनिस्ट शैली में काम करने, रहने और अध्ययन करने की एक नयी परिपाटी 'एक सबके लिये सब एक के लिये' नारे के साथ विकसित हुई और इसके फलस्वरूप आम जनता को शिक्षित करने और उसे नये रूप में ढालने के काम में बहुत बड़ा परिवर्तन हो गया।

हमारे देश में जिन नयी परिस्थितियों और अवस्थाओं ने जन्म लिया, जैसे उत्पादन सम्बन्धों का समाजवादी पुनर्गठन पूर्ण हो गया और समाजवादी आर्थिक स्वरूपों का

अविभाजित प्रभुत्व व्यापक ढंग से स्थापित हो गया, उत्पादक शक्तियां तेजी से विकसित हुईं, उत्पादन के परिणाम में तेजी से वृद्धि हुई तथा जनता का राजनीतिक जोश और उसकी रचनात्मक सक्रियता बेहद बढ़ गयी। उन नयी परिस्थितियों और अवस्थाओं के अनुकूल पार्टी, राज्य तथा आर्थिक संगठनों की कार्य-व्यवस्था में और कार्यकर्ताओं की कार्यपद्धति तथा शैली में हर तरह से सुधार लाना अनिवार्य हो गया।

कामरेड किम इल सुंग ने इस मांग को समय पर पहचान लिया और पार्टी की केन्द्रीय कमेटी की विस्तृत बैठक में, जो सितम्बर १९५९ में बुलायी गयी, निर्देश दिया कि नयी परिस्थितियों के अनुकूल काम की अवस्था और पद्धति में सुधार किया जाय। बाद में फरवरी १९६० में, कांगसो काउण्टी के छंगसान री गांव में जाकर १५ दिन तक उन्होंने यथास्थल ऐतिहासिक पथ-प्रदर्शन किया।

कामरेड किम इल सुंग ने काउण्टी और गांव के सभी कार्यों का गहन और प्रत्यक्ष ज्ञान प्राप्त किया और आम जनता से ठोस बहसें कीं और इस प्रकार पार्टी, राज्य तथा आर्थिक संगठनों के कामों में सुधार के ऐसे तरीके खोज निकाले, जो विकसित होते हुये यथार्थ तथा नयी परिवर्तित परिस्थितियों के अनुकूल थे।

छंगसान री तथा कांगसो काउण्टी में यथा-स्थल दिये गये पथ-प्रदर्शन द्वारा और छंगसान री पार्टी संगठन के आम पार्टी सदस्यों की मीटिंग में, **'समाजवादी ग्रामीण अर्थ-व्यवस्था के सही प्रबन्ध पर'** दिये गये भाषण द्वारा तथा कांगसो काउण्टी पार्टी कमेटी की विस्तृत बैठक में **'नयी परिस्थितियों से मेल खाते काउण्टी पार्टी संगठन की कार्य पद्धति में सुधार पर'** दिये गये भाषण द्वारा और पार्टी की केन्द्रीय कमेटी की विस्तृत बैठक में' **'कांगसो काउण्टी के पार्टी संगठन में काम के पथ-प्रदर्शन से प्राप्त सबक पर'** दिये गये भाषणों द्वारा उन्होंने उन सारे प्रश्नों का व्यापक और स्पष्ट उत्तर दिया, जो समाजवादी ग्रामीण अर्थ-व्यवस्था के प्रबन्ध और पार्टी तथा राज्य के कार्य के सिलसिले में उठ खड़े हुये थे।

छंगसान री भावना तथा छंगसान री पद्धति पार्टी तथा राज्य के कामों और समाज-वाद के अन्तर्गत आर्थिक कार्यों के संचालन के लिये सब से सही पथ-प्रदर्शक विचारधारा और प्रणाली है, जिसको कामरेड किम इल सुंग ने जन्म दिया और उसका नमूना उन्होंने स्वयं प्रस्तुत किया।

कामरेड किम इल सुंग ने कहा :

"छंगसान री पद्धति का सार तत्व यह है कि उच्चतर संगठन निचले संगठनों की मदद करें, वरिष्ठ अपने से छोटे की मदद करें और वरिष्ठ कार्यकर्ता हमेशा कार्य-स्थल

पर जाकर वहां की वास्तविक स्थिति को अच्छी तरह से समझें, समस्याओं का सही हल निकालें और सभी गतिविधियों में राजनीतिक कार्य को या जनता के साथ काम को प्राथमिकता दी जाय, ताकि जनता की सजग ओजस्विता तथा रचनात्मक पहल पूर्ण रूप से प्रस्फुटित हो, और इस प्रकार क्रांतिकारी कर्तव्य की पूर्ति की गारण्टी हो सके। यह पद्धति न सिर्फ काम का ऐसा प्रभावशील तरीका है, जो हमें तात्कालिक क्रांतिकारी कर्तव्यों को पूर्ण सफलता के साथ पूरा करने के योग्य बनता है, बल्कि यह शिक्षा का एक समर्थ तरीका है, जिससे कार्यकर्ताओं का विचारधारात्मक और राजनीतिक स्तर और अमल की क्षमता बढ़ती है और जनता क्रांतिकारी बनती है।"

उन्होंने सिखाया कि छंगसान री प्रणाली को पूर्णतया आत्मसात कर लेना चाहिये, ताकि जनना के काम करने के तरीके में सुधार आये और सारी जनता सक्रिय बनायी जा सके। दूसरे शब्दों में उन्होंने निर्देश दिया कि सभी पार्टी सदस्यों में काम के लिये इस तरह जोश पैदा करना चाहिये कि एक व्यक्ति दस में जोश भरे, दस सौ में और सौ व्यक्ति एक हजार में, ताकि समूची पार्टी एक सजीव संगठन बन जाय। और पार्टी सदस्यों को क्रांतिकारी कर्तव्यों को सफलता से पूरा करने के लिये समस्त जनता को जुटाना चाहिये।

छंगसान री पद्धति आम जनता के पथ-प्रदर्शन के लिये सच्ची पार्टी प्रणाली है, कम्युनिस्ट प्रणाली है। इसमें पार्टी, राज्य और आर्थिक कार्य के पथ-प्रदर्शन की बुनियादी सास्याओं का सर्वांग हल निहित है, वह मार्क्सवादी-लेनिनवादी पार्टी के क्रांतिकारी पथ प्रदर्शन की सैद्धांतिक और अमली मिसाल प्रस्तुत करती है।

आम जनता की शक्ति में सुदृढ़ विश्वास रखने वाले और जनता पर भरोसा करके सभी क्रांतिकारी काम पूरे करने वाले कामरेड किम इल सुंग का क्रांतिकारी दृष्टिकोण तथा उनकी क्रांतिकारी जन-नीति छंगसान री भावना छंगसान री पद्धति को रेखांकित करती है, जो सभी खोजों और विजयों का महान स्रोत है और जो समाजवाद और साम्यवाद के निर्माण के लिये एक शक्तिशाली सैद्धांतिक और व्यावहारिक अस्त्र है।

कठिन जापान-विरोधी सशस्त्र संघर्ष के पूरे दौर में और मुक्ति के बाद सभी पेचीदा और कठिन संघर्षों में कामरेड किम इल सुंग हमेशा जनता के बीच रहे, उसके सुख दुःख के भागी बने, राज्य के मामलों में जनता से सलाह लेते रहे तथा मुश्किलों के हल में और क्रांति तथा निर्माण को विजय तक पहुंचाने में आम जनता की अनन्त शक्ति और उसके विवेक का सहारा लेते रहे।

कामरेड किम इल सुंग किस सीमा तक आम जनता के बीच जाते और काम करते हैं, यह उनके यथा-स्थल जाकर पथ-प्रदर्शन करने के उदाहरणों से स्पष्ट होता है।

दक्षिण प्योगान प्रांत की कांगसो काउंटी, छंगसान री में घटनास्थल पर अपने मार्गदर्शन के दौरान कामरेड किम इल सुंग किसानों से बातचीत कर रहे हैं ।

अब तक वे देश के ८० फी सदी नगरों और जिलों में स्थल पर जाकर पथ प्रदर्शन कर चुके हैं । उन्होंने छंगसान री गांव में ही कम से कम ४० बार जाकर पथ-प्रदर्शन किया ।

सच तो यह है कि हमारे देश में एक भी ऐसी जगह नहीं, जहां कामरेड किम इल सुग न गये हों, चाहे शहर, गांव, कारखाना, उद्योग, स्कूल, वैज्ञानिक और सांस्क्रनिक संस्थान, पहाड़ियों में लकड़ी काटने वालों की बस्तियां, समुद्री तटों पर मछुआरों के गांव हों यानी उन्होंने हर जगह जाकर पथ-प्रदर्शन किया है ।

जनता क्या चाहती है और नीचे स्थिति क्या है, इसके विषय में उन्होंने यथा-स्थल पथ-प्रदर्शन करते हुये जो सर्वांग अध्ययन किया और समझा बूझा, उसके आधार पर उन्होंने पार्टी की दिशा और नीतियों को तैयार किया और उन पर अमल के लिये लोगों को संगठित किया, उनका पथ प्रदर्शन किया । उन्होंने यथार्थ का ठोस अध्ययन और विश्लेषण करने के बाद राज्य के काम काज का निर्देशन किया ।

इसके अलावा, यथा-स्थल पथ-प्रदर्शन के दौरान वे वात्सल्य भाव और विनम्र दृष्टि से समूचे देश की जनता के जीवन के हर पहलू के प्रति चिन्ता प्रकट करते हैं, जैसे मजदूरों-किसानों के खाने पीने की व्यवस्था, सड़क पर घूमते बच्चों को जूतों की आवश्यकता से लेकर वैज्ञानिकों के स्वास्थ्य की तथा छात्रों, बालक-बालिकाओं की पोशाकों की समस्या । और वे जरूरी समस्याओं का तुरन्त हल निकाल देते थे ।

छंगसान री भावना और छंगसान री पद्धति समाजवादी निर्माण के नवयथार्थ के अनुरूप एक क्रांतिकारी जन-कार्यनीति है और उसका साकार स्वरूप है, वह ऐसी कार्य-नीति है जिसका क्रांतिकारी पद्धति और जनप्रिय कार्यशैली की प्रतिमूर्ति कामरेड किम इल सुंग जापान विरोधी सशस्त्र संघर्ष के दिनों से दृढ़तापूर्वक पालन करते आ रहे हैं ।

छंगसान री भावना और छंगसान री पद्धति लाखों लोगों के दिलों पर अपनी गहरी छाप छोड़ चुकी है । क्योंकि उसमें क्रांतिकारी विकास की तात्कालिक आवश्यकताओं का सही प्रतिबिम्ब है और कामरेड किम इल सुंग के व्यक्तिगत उदाहरण की शक्ति प्रभा विद्यमान है ।

कामरेड किम इल सुंग द्वारा निर्मित छंगसान री भावना और छंगसान-री पद्धति पर अमल से काम की वह पुरानी व्यवस्था, पद्धति और शैली चूर चूर हो गयी, जो प्रगति में बाधक बनती थी और पार्टी, राज्य तथा आर्थिक निर्देशन के सभी क्षेत्रों में काम की एक नयी क्रांतिकारी व्यवस्था पद्धति और शैली पूर्णतया सुस्थापित हो गयी ।

पार्टी कार्य को पूर्णतया जनता के साथ कार्य में रूपांतरित कर देने से पार्टी के इरादे

आम जनता ने अविलम्ब स्वं कर लिये और पार्टी नीतियों को ढंग से पूरा किया जाने लगा।

छंगसान-री प्रणाली जैसे जैसे आम जनता में गहराई तक पहुंचती गयी, मेहनतकश जनता को शिक्षित करने और नये रूप में ढालने के काम को आम जनता ने अपना काम समझ लिया और वैचारिक पुनर्संस्कार के लिये जन-आन्दोलन विकसित हो गया।

छंगसान री में पथ-प्रदर्शन के साल भर बाद, जनवरी १९६१ में कामरेड किम इल सुंग ने सुंहो जिले में रिहयोन-री पार्टी संगठन के पार्टी सदस्यों की आम बैठक का खुद पथ-प्रदर्शन किया और एक ऐतिहासिक भाषण दिया, जिसका विषय था **"पार्टी कार्य का मुख्य सूत्र है—सारी जनता को शिक्षित करना, उसको नये रूप में ढालना और एकता के सूत्र में बांधना।"**

इस भाषण में कामरेड किम इल सुंग ने छंगसान-री भावना और छंगसान-री पद्धति का और विधिवत ढंग से पालन करने का कर्तव्य प्रस्तुत किया।

सबसे पहले कामरेड किम इल सुंग ने इस बात की ओर संकेत किया कि छंगसान री भावना तथा छंगसान-री पद्धति का सामान्यीकरण करने के बाद पार्टी संगठनों और पार्टी सदस्यों ने जो सबसे मुश्किल काम पूरा करना शुरू किया, वह था जनता को शिक्षित करने तथा उसे नये रूप में ढालने का और जीवन के सभी क्षेत्रों में आम जनता की दृढ़ एकता को सम्पन्न करने का। इसके बाद उन्होंने सिखाया :

"चूंकि हमारे पार्टी संगठन समर्पित कम्युनिस्ट योद्धाओं के अजेय जुझारू दस्ते बन चुके हैं, जो इस तरह के कार्य को सम्पादित करने के योग्य हैं, इसलिये हमें किसी चीज से डरने की जरूरत नहीं और कोई भी मुश्किल हमारे रास्ते को रोक नहीं सकती।

"हमने यह जो उपलब्धि अर्जित की है, वह सोने या लाखों टन चावल से भी अधिक मूल्यवान है और उसे किसी दूसरी चीज़ के बदले त्यागा नहीं जा सकता।"

छंगसान-री पद्धति का सामान्यीकरण करने के दौर में पार्टी की अग्रणी भूमिका को और आगे बढ़ाया गया और हमारी क्रांतिकारी पांतों को और अधिक सुदृढ़ किया गया। इस सबसे समाजवादी निर्माण तथा छलिमा आन्दोलन का महान वर्ग और अधिक तेज हुआ।

कामरेड किम इल सुंग के विवेकशील नेतत्व में समाजवाद निर्माण-कार्य के महान उभार और छलिमा आन्दोलन की तीव्र प्रगति के बीच कुल औद्योगिक उत्पादन की दृष्टि से पंच वर्षीय योजना ढाई साल में ही पूरी हो गयी और दूसरे अनेक लक्ष्यों की दृष्टि से वह योजना चार साल में सौ फीसदी और किन्हीं क्षेत्रों में उससे भी अधिक पूरी हो गयी।

१९६० में हमारा औद्योगिक उत्पादन पंचवर्षीय योजना में निर्धारित स्तर से १.३

गुना अधिक था और कुल औद्योगिक उत्पादन का मूल्य १९५६ की तुलना में ३.५ गुना और १९४४ (मुक्ति से पूर्व) की तुलना में ७.६ गुना अधिक हो गया। पंचवर्षीय योजना की पूर्ति के प्रथम चार वर्षों में अनाज की उपज ३२ फीसदी बढ़ गयी और ग्रामीण क्षेत्रों में तकनीकी क्रांति में भी भारी सफलता मिली।

पंच वर्षीय योजना की पूर्ति के साथ हमारे देश के उत्तरी आधे भाग में समाजवाद की नींव की स्थापना का ऐतिहासिक कर्तव्य विजयपूर्वक पूरा हो गया और हमारा देश एक समाजवादी औद्योगिक कृषि राज्य में परिवर्तित हो गया, जिसकी राष्ट्रीय अर्थ-व्यवस्था की नींवें मजबूती से जम चुकी थी।

शहरों और ग्रामीण क्षेत्रों में उत्पादन के समाजवादी सम्बन्ध पूर्णतया प्रभुत्वशील हो गये और भारी उद्योग का आधार, जिसकी धुरी मशीन निर्माण उद्योग था, और हल्के उद्योग का आधार भी तैयार हो गया तथा कृषि को भी उत्पादन का सुदृढ़ आधार मिल गया। जनता का जीवन स्तर सुधर गया और सभी लोग भोजन, वस्त्र और आवास की चिन्ताओं से मुक्त हो गये।

कामरेड किम इल सुंग के विवेकशील नेतृत्व में हमारी जनता ने थोड़े ही समय में एक स्वतंत्र राष्ट्रीय अर्थ व्यवस्था की ठोस नींव डाल दी और इस प्रकार हमारे देश की स्वाधीनता और राजनीतिक प्रभुसत्ता की मजबूत गारंटी कर दी और जनता के पास ऐसी अडिग प्रतिरक्षा शक्ति आ गयी कि वह शत्रु की किसी भी आक्रामक हरकत को एक चोट में मिट्टी में मिला सकती थी, तथा उसने गणतंत्र के उत्तरी आधे भाग को चट्टानी दृढ़ता के साथ क्रांतिकारी अड्डा बनाने में सफलता प्राप्त की, जो कि देश के एकीकरण तथा कोरियाई क्रांति की राष्ट्र व्यापी विजय के लिये निर्णायक गारंटी है।

इससे कामरेड किम इल सुंग के नेतृत्व का विवेक और सत्य साफ साफ सिद्ध हुआ, जिन्होंने स्वतंत्र राष्ट्रीय अर्थ व्यवस्था के निर्माण की दिशा प्रस्तुत की, भारी उद्योग को प्राथमिकता देने के साथ साथ हलके उद्योग और कृषि का विकास करते जाने के आर्थिक निर्माण का कार्यक्रम देखा और इस बात पर ध्यान दिया कि उस आर्थिक कार्यक्रम पर आत्म-निर्भरता की क्रांतिकारी भावना के साथ किफायत-शारी बरतते हुये पूर्णतया अमल हो।

तमाम तरह की मुश्किलों और अग्नि-परीक्षाओं को पार कर युद्ध के ध्वंस पर सफलता-पूर्वक समाजवाद की नींवें रखने में हमारी जनता को जो महान जीतें हासिल हुईं, उनसे जनता का यह विश्वास और भी पक्का हो गया कि जब वह कामरेड किम इल सुंग के विवेकपूर्ण नेतृत्व में एकजुट होकर आगे बढ़ती है तो उसके लिये कोई भी दुर्ग अजेय नहीं

रहना और वह हर मुश्किल और पेचीदा काम को शानदार सफलता के साथ पूरा कर सकती है ।

युद्ध के बाद गणतंत्र के उत्तरी आधे भाग में क्रांति और निर्माण के काम को सक्रिय रूप से आगे बढ़ाते हुये कामरेड किम इल सुंग ने दक्षिण कोरिया की क्रांति तथा देश के एकीकरण की रणनीति और कार्यनीति भी सही रूप में प्रस्तुत की और उन्होंने हर दौर के लिये जुझारू कर्तव्य बनाये और उन कर्तव्यों के सफल कार्यान्वियन में हमारी जनता का अडिग भाव से नेतृत्व किया ।

दक्षिण कोरिया की क्रांति के मार्ग को दिखाते हुये कामरेड किम इल सुंग ने कहा:

"मौजूदा दौर से दक्षिण कोरिया के समाज का बुनियादी अन्तर्विरोध यह है कि एक ओर अमरीकी साम्राज्यवाद और उसके संगी साथी जैसे जमींदार, दलाल पूंजीपति और प्रतिक्रियावादी नौकरशाह हैं, और दूसरी ओर मजदूर, किसान, शहरी निम्न मध्यम वर्ग और राष्ट्रीय पूंजीपति हैं, और इन्हीं दो खेमों के बीच बुनियादी अन्तर्विरोध हैं ।

"अतः स्वतंत्रता और मुक्ति प्राप्ति के लिये दक्षिण कोरिया की जनता को चाहिये कि वह अमरीकी साम्राज्यवादियों को मार भगाये और जमींदारों, दलाल पूंजीपतियों और प्रतिक्रियावादी नौकरशाहों का तख्ता पलट दे, जो अमरीकी साम्राज्यवाद के साथ सांठ गांठ किये हुये हैं । अमरीकी साम्राज्यवाद दक्षिण कोरिया की जनता के संघर्ष का सर्वप्रथम निशाना है ।"

यह सिखाते हुये कि दक्षिण कोरिया की क्रांति का बुनियादी कर्तव्य यह है कि अमरीकी साम्राज्यवाद की औपनिवेशिक हुकूमत को ध्वस्त कर दिया जाय, दक्षिण कोरिया के समाज का जनवादी विकास आश्वस्त किया जाय और उत्तरी आधे भाग की समाजवादी शक्तियों के साथ एकता से देश का एकीकरण प्राप्त कर लिया जाय, उन्होंने दक्षिणी आधे भाग की समस्त देशभक्त शक्तियों का आवहान किया कि वे एकता के सूत्र में बंध कर अमरीकी साम्राज्यवादी आक्रामकों के विरुद्ध अखिल जन-संघर्ष छेड़ दें ।

कामरेड किम इल सुंग ने सुसंगत रूप से यह सिद्धांत पेश किया कि विदेशी शक्तियों के हस्तक्षेप से मुक्त जनवादी उसूलों पर देश को स्वतंत्र ढंग से एक किया जाय और उन्होंने इस सिद्धात पर अमल करने के लिये जोर दिया ।

युद्ध के बाद उन्होंने देश के स्वतंत्र, शांतिपूर्ण एकीकरण के लिये बहुत ही सही और तर्कसंगत प्रस्ताव रखे और देश के एकीकरण के लिये नये दौर बताये ।

देश के स्वतंत्र, शांतिपूर्ण एकीकरण के लिये कामरेड किम इल सुग द्वारा प्रस्तुत हमारी पार्टी और सरकार की बुनियादी नीति यह थी कि जनतांत्रिक सिद्धांतों के आधार

पर समूचे कोरिया में स्वतंत्र चुनाव द्वारा एकीकृत सरकार की स्थापना की जाय, जिसमें शर्त यह हो कि अमरीकी साम्राज्यवादी आक्रामक सेनायें दक्षिण कोरिया से हटा ली जायं और किसी भी तरह का बाहरी हस्तक्षेप न हो ।

कामरेड किम इल सुंग ने सिखाया :

"हमारे देश की एकता कोरिया की जनता की जनवादी इच्छा के अनुसार शांतिपूर्ण ढंग से होनी चाहिये, जिसमें बाहर के किसी देश का हस्तक्षेप न हो । हमारा देश जो दक्षिण और उत्तर में विभाजित हो गया है, राष्ट्रव्यापी चुनाव के आधार पर एकताबद्ध किया जाना चाहिये, जो बालिग मताधिकार पर आधारित होना चाहिये, जिसमें मतदान प्रत्यक्ष, गुप्त और सार्वभौम होना चाहिए, और न तो बाहर का दबाव हो, न किसी तरह का प्रतिबन्ध, तथा उत्तर तथा दक्षिण कोरिया में सभी राजनीतिक पार्टियों को खुल कर काम करने की आजादी की गारंटी हो ।"

स्वतंत्र, शांतिपूर्ण एकीकरण की जो दिशा कामरेड किम इल सुंग ने प्रस्तुत की, वह समस्त कोरिया की जनता की एकमत इच्छा की अभिव्यक्ति होने के कारण उसे कोरिया की जनता का ही नहीं, समूची दुनिया की प्रगतिशील जनता की स्वीकृति और सक्रिय समर्थन प्राप्त हुआ ।

कोरिया में शांति को सुदृढ़ करने तथा देश के एकीकरण के लिये अनुकूल वातावरण बनाने के लिये कामरेड किम इल सुंग ने दक्षिण कोरिया से अमरीकी आक्रामक सेनाओं को निकालने, दक्षिण तथा उत्तर कोरिया की सेनाओं की संख्या कम करने, आर्थिक तथा सांस्कृतिक आदान-प्रदान शुरू करने, उत्तर तथा दक्षिण के बीच मुक्त यात्रायें और पत्र-व्यवहार की छूट देने, उत्तर तथा दक्षिण का महासंघ बनाने आदि के सिलसिले में अनेक तर्कसंगत प्रस्ताव रखे ।

उन्होंने अमरीकी साम्राज्यवादियों द्वारा औपनिवेशिक शासन के कारण ध्वस्त दक्षिण कोरियाई अर्थ-व्यवस्था के पुनर्वास के लिये और दक्षिणी आधे भाग की जनता के जीवन यापन को सुस्थिर करने के लिये, जो चीथड़ों और भूख में अपना समय बिता रही है, कई प्रस्ताव और राहत कार्यों के सुझाव भी रखे ।

देश के स्वतंत्र, शांतिपूर्ण एकीकरण के लिये कामरेड किम इल सुंग द्वारा पेश किये गये न्याय पूर्ण, तर्क संगत प्रस्तावों से अमरीकी साम्राज्यवाद तथा सिगमन री के कठपुतली गुट के विरुद्ध संघर्ष में दक्षिण कोरिया की जनता को अत्यधिक प्रेरणा मिली ।

दक्षिण कोरिया की जनता ने देश के एकीकरण के लिये कामरेड किम इल सुंग द्वारा प्रस्तावित हमारी पार्टी की कार्यनीति से तथा उनके नेतृत्व में उत्तरी आधे भाग में समाज-

वादी निर्माण में हुई शानदार प्रगति से साहस और शक्ति अर्जित की और अंततः १९६० में १९ अप्रैल के जनप्रिय विद्रोह के साथ वहां के जनता उठ खड़ी हुई तथा अमरीकी साम्राज्यवादियों के औपनिवेशिक शासन को घातक चोट पहुंचाते हुए अमरीकी साम्राज्य-वादियों के पुराने दलाल कठपुतली सिगमन री की हुकूमत को उलट दिया ।

१९ अप्रैल के जनप्रिय विद्रोह के बाद देश के एकीकरण के लिये दक्षिण कोरिया की जनता के बढ़ते हुये संघर्ष से घबरा कर साम्राज्यवादियों ने दक्षिण कोरिया में फासिस्त सैनिक हुकूमत की स्थापना कर दी ।

परिवर्तित परिस्थिति में कामरेड किम इल सुंग ने उत्तर और दक्षिण कोरिया की जनता को उत्तरी आधे भाग के क्रांतिकारी अड्डे को और सुदृढ़ बनाने के लिये, दक्षिण कोरिया में क्रांतिकारी शक्तियों का निर्माण करने के लिये और देश के एकीकरण की महान घटना की चुनौती को स्वीकार करने के योग्य बनने के लिये जनता को और भी ठोस संघर्ष के लिये जगाया ।

इस प्रकार दक्षिण कोरिया की क्रांति तथा देश के एकीकरण पर कामरेड किम इल सुंग की सही कार्यनीति को स्वीकार करते हुये दक्षिण कोरिया की जनता ने अथक संघर्ष छेड़ा ।

कामरेड किम इल सुंग ने जापान में बसे ६ लाख कोरियाइयों समेत विदेशों में रहने वाले कोरियाई नागरिकों को एक क्षण के लिये भी नहीं भुलाया। और उनके प्रति हमेश पिता-तुल्य भाव रखा तथा जनवादी राष्ट्रीय अधिकारों और स्वतंत्रता के उनके संघर्ष का सही मार्ग की ओर पथ-प्रदर्शन करते रहे ।

कामरेड किम इल सुंग ने जापान में रहने वाले कोरियाई नागरिकों के देश-भक्तिपूर्ण आन्दोलन तथा उनके जनवादी, राष्ट्रीय अधिकारों के संघर्ष को सही दिशा दी और इस प्रकार उन्हें इस योग्य बनाया कि वे जापानी प्रतिक्रियावादी शक्तियों के दमन और यातना को नाकाम कर दें और कोरिया के जनवादी जन गणतंत्र के प्रवासी नागरिकों की हैसियत से अपने राष्ट्रीय अधिकारों की रक्षा के लिये सफलतापूर्वक लड़ें ।

मई १९५५ में जापान स्थित कोरिया के नागरिकों ने कामरेड किम इल सुंग द्वारा प्रस्तुत संघर्ष नीति के अनुसार जापान में कोरियावासियों का आम संघ (छोंगरयोन) बनाया, जो कि उनका सही अर्थों में अपना संगठन है ।

जापान में कोरिया के जनवादी जन गणतंत्र के नागरिकों के संगठन छोंगरयोन का बनना एक ऐतिहासिक घटना थी, जिसने जापान में बसे कोरिया के नागरिकों के जीवन में और उनकी देशभक्तिपूर्ण गतिविधियों में नया मोड़ ला दिया ।

जापान में कोरियाई नागरिकों के बच्चों की शिक्षा के प्रति चिन्तित होकर उन्होंने न सिर्फ उनकी जनवादी राष्ट्रीय शिक्षा के विकास की सही दिशा प्रस्तुत की, बल्कि शिक्षा सहायता अनुदान के रूप में बहुत बड़ी मात्रा में धन भी भेजा और इस प्रकार जापान में कोरिया के नागरिकों को इस योग्य बनाया कि वे सफलतापूर्वक जनवादी, राष्ट्रीय शिक्षा का संचालन कर सकें।

जापान में रहने वाले कोरिया के नागरिकों तथा समस्त कोरियावासियों की इच्छा के अनुसार उन्होंने जापान से कोरियावासियों को वापस बुलाने का मार्ग भी प्रशस्त किया। फलतः १९५९ में जापान स्थित कोरिया के नागरिकों ने अपनी प्रिय मातृभूमि-कोरिया के जनवादी जन गणतंत्र में लौटना शुरू किया और इस प्रकार लौटे हुये लोगों ने नेता की छत्रछाया में सुखी जीवन बिताना प्रारम्भ कर दिया।

यही कारण है कि जापान में कोरिया के नागरिक इसे अपना महान सम्मान और सुख का विषय समझते है कि उन्हें कामरेड किम इल सुंग जैसा नेता मिला है और वे कोरिया के जनवादी जन गणतंत्र के नागरिकों के रूप में उनके नेतृत्व में रहते और संघर्ष करते है, इसीलिये उन्होंने देश के स्वतंत्र एकीकरण के लिये, अपने जनवादी राष्ट्रीय अधिकारों के लिये महान राष्ट्रीय गर्व और विश्वास के साथ जोरदार संघर्ष छेड़ा, हालांकि वे एक पराये देश में रहते थे।

हमारे देश में क्रांति और निर्माण को हमेशा सफल बनाते हुये कामरेड किम इल सुंग ने अन्तर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट आन्दोलन और विश्व कम्युनिस्ट आन्दोलन की प्रगति के लिये सक्रिय संघर्ष किया।

जब अन्तर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट आन्दोलन में आधुनिक संशोधनवाद ने अपना सिर उठाया तो उन्होंने उसे समय रहते पहचान लिया और मार्क्सवाद-लेनिनवाद के क्रांतिकारी सिद्धांतों तथा उसूलों पर दृढ़ता से टिके रह कर, मार्क्सवाद-लेनिनवाद की शुद्धता की रक्षा में डट कर संघर्ष किया और कठमुल्लापन के विरुद्ध भी जम कर संघर्ष किया। उन्होंने मार्क्सवाद-लेनिनवाद और सर्वहारा अन्तर्राष्ट्रीयतावाद के सिद्धांतों के आधार पर समाजवादी शिविर और अन्तर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट आन्दोलन की एकता तथा एकजुटता की रक्षा के लिये और पूर्ण समानता, स्वाधीनता, परस्पर सम्मान, दूसरे के आन्तरिक मामले में हस्तक्षेप न करने तथा साथियों जैसा सहयोग करने की नीति प्रस्तुत की और उसको चरितार्थ करने के लिये सिद्धांतसंगत संघर्ष चलाया।

विशेषकर, उन्होंने दूसरों पर अपनी गलत नीतियां लादने तथा उनके आन्तरिक मामलों में हस्तक्षेप करने की राष्ट्रदम्भियों की चालों के विरुद्ध स्वतंत्रता की

रक्षा के लिये डट कर संघर्ष किया। उन्होंने यह सिद्धांतसंगत दिशा प्रस्तुत की कि एक देश नहीं, बल्कि पूरे समाजवादी शिविर की रक्षा की जानी चाहिये और समाजवादी शिविर में फूट डालने की सभी कोशिशों के विरुद्ध जम कर संघर्ष किया।

कामरेड किम इल सुंग ने एशिया, अफ्रीका और लेटिन अमरीका के देशों के जनगण के साथ अन्तर्राष्ट्रीय भ्रातृत्व और एकता को मजबूत करने, इन क्षेत्रों में जनगण के साम्राज्य विरोधी, राष्ट्रीय मुक्ति आन्दोलन को सक्रिय समर्थन देने तथा अन्य देशों की जनता के क्रांतिकारी आन्दोलन को समर्थन देने, आक्रमण और युद्ध की साम्राज्यवादी नीति का विरोध करने तथा विश्व शांति और मानव जाति की प्रगति के लिये जम कर संघर्ष किया।

उन्होंने साम्राज्यवाद के सरगना अमरीकी साम्राज्यवाद के प्रति भ्रम फैलाने वाले आधुनिक संशोधनवादियों का पर्दाफाश किया और उनकी आलोचना की और यह सिखाया कि अगर विश्व की क्रांतिकारी शक्तियां एकजुट होकर अमरीकी साम्राज्यवाद पर चोट करती हैं और जहां भी वह पैर मारने की कोशिश करे, वहीं उसके हाथ-पांव बांध कर रख देती हैं, तभी शांति की सही अर्थों में सुरक्षा हो सकती है और जनता का क्रांतिकारी उद्देश्य पूरा हो सकता है।

मार्क्सवाद-लेनिनवाद के क्रांतिकारी झण्डे को ऊंचा उठाये हुये कामरेड किम इल सुंग ने समाजवादी शिविर और अन्तर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट आन्दोलन की एकता और एकरूपता के लिये सभी देशों के जनगण के क्रांतिकारी संघर्ष तथा विजय के लिये जिस प्रकार सिद्धांत-संगत संघर्ष किया, उन गतिविधियों के कारण विश्व भर के कम्युनिस्टों और क्रांतिकारी जनगण के बीच उन्हें व्यापक समर्थन मिला। इस प्रकार विश्व के असंख्य कम्युनिस्ट और क्रांतिकारी जनगण कामरेड किम इल सुंग को और अधिक गहराई से सम्मान देने लगे हैं तथा उन पर आस्था करने लगे हैं।

७

कोरिया की वर्कर्स पार्टी की तीसरी कांग्रेस में निर्धारित समाजवाद की नींवों के निर्माण का लक्ष्य सफलता से पूरे हो जाने पर कामरेड किम इल सुंग ने गणतंत्र के उत्तरी आधे भाग में समाजवादी निर्माण को और आगे बढ़ाने का नया रणनीतिक कर्तव्य पेश किया और उसे पूरा करने के लिये समस्त पार्टी और जनता को संगठित और गोलबन्द किया।

कोरिया की वर्कर्स पार्टी की चौथी कांग्रेस, जो विजेताओं की कांग्रेस, एकता की कांग्रेस थी, सितम्बर १९६१ में ऐसी परिस्थितियों में बुलायी गयी कि जब समूचा देश क्रांति के विकास के एक महान मोड़ पर खड़ा था और सर्वत्र श्रम का उत्थान और रचनात्मक उत्साह उमड़ रहा था।

कांग्रेस में पार्टी की केन्द्रीय कमेटी के काम की अपनी रिपोर्ट में कामरेड किम इल सुंग ने समीक्षित काल में समाजवादी क्रांति और समाजवाद की रचना में हमारी पार्टी द्वारा प्राप्त शानदार उपलब्धियों का सर्वतोमुखी सार प्रस्तुत किया और समाजवाद की महानता अर्जित करने के लिये सात वर्षीय राष्ट्रीय आर्थिक योजना के शानदार कार्यक्रम सम्बन्धी कर्तव्य को सामने रखा।

यह बताते हुये कि सात वर्षीय योजना हमारे देश में समाजवादी निर्माण की निर्णायक बेला को उजागर करेगी, कामरेड किम इल सुंग ने कहा:

"सात वर्षीय योजना का बुनियादी कर्तव्य यह है कि चौतरफा तकनीकी पुनर्निर्माण और सांस्कृतिक क्रांति की जाय और विजयी समाजवादी व्यवस्था पर भरोसा करते हुए जनता के जीवन स्तर को तेजी से सुधारा जाय। हमें समाजवादी औद्योगीककरण को आगे बढ़ाना चाहिये, राष्ट्रीय अर्थ व्यवस्था की सभी शाखाओं को आधुनिक तकनीक से सम्पन्न करना चाहिये तथा समस्त जनता के भौतिक और सांस्कृतिक स्तर को निर्णायक ढंग से ऊंचा उठाना चाहिये, और इस प्रकार समाजवाद के ऊंचे शिखर पर पहुंच जाना चाहिये।"

कामरेड किम इल सुंग ने विशेष जोर दिया कि क्रांतिकारी दिशाओं और नीतियों का दृढ़ता से पालन और सर्वांगत: अमल किया जाय, वे दिशायें हैं युद्धोत्तर निर्माण की बुनियादी दिशा, स्वतंत्र राष्ट्रीय निर्माण का छलिमा आन्दोलन, जो कि समाजवादी निर्माण में पार्टी की आम नीति का प्रतिनिधित्व करता है और महान छंगसान-री भावना तथा छंगसान-री पद्धति, जिसकी सत्यता अमली संघर्ष के दौरान निस्सन्देह रूप से प्रमाणित हो चुकी है ।

कामरेड किम इल सुंग ने दक्षिण कोरिया की क्रांति और देश के स्वतंत्र एकीकरण की कार्यनीति को फिर से पुष्ट किया और दक्षिण कोरिया के परिवर्तनों के गहन विश्लेषण तथा देश के एकीकरण के लक्ष्य की प्राप्ति के लम्बे संघर्ष में प्राप्त अनुभवों के आधार पर उत्तर तथा दक्षिण कोरिया की जनता के जुझारू कर्तव्यों को सर्वतोमुखी रूप से पेश किया ।

उन्होंने समीक्षित काल में पार्टी की पांतों का सुदृढ़ता से निर्माण करने तथा उसकी अग्रणी भूमिका को ऊंचा उठाने से सम्बन्धित कामों में प्राप्त सफलताओं और अनुभवों का सार-संक्षेप प्रस्तुत किया और छंगसान-री भावना तथा छंगसान-री पद्धति को लागू करने के लिये कार्यकर्ताओं में नेतृत्व के स्तर को निर्णयकारी रूप से ऊंचा उठाने के लिये और अखिल पार्टी और अखिल जन पैमाने पर शिक्षा और दीक्षा द्वारा जनता को एकजुट करने का काम चलाने के लिये जुझारू कर्तव्य पेश किये ।

उन्होंने जन-सरकार के सर्वहारा अधिनायकत्व की क्रियाशीलता को आगे बढ़ाने के लिये पार्टी के प्रसारण साधनों, श्रमजीवियों के संगठनों की भूमिका बढ़ाने के लिये शिक्षा दी ।

अपनी रिपोर्ट में कामरेड किम इल सुंग ने संशोधनवाद तथा कठमुल्लापन का विरोध करने के लिये, समाजवादी शिविर तथा अन्तर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट आन्दोलन की एकता और भ्रातृत्व की रक्षा के लिये, और साम्राज्यवाद तथा उपनिवेशवाद के विरुद्ध स्वतंत्रता और राष्ट्रीय स्वाधीनता के लिये चल रहे एशिया, अफ्रीका तथा लैटिन अमरीका के जनगण के संघर्ष को सक्रिय समर्थन और प्रोत्साहन देने के लिये अन्तर्राष्ट्रीय मजदूर वर्ग के क्रांतिकारी संघर्ष का समर्थन करने के लिए पार्टी की सर्वांगत साम्राज्य विरोधी, सर्वहारा अन्तर्राष्ट्रीयतावादी विदेश नीति की व्याख्या की ।

कांग्रेस में प्रस्तुत कामरेड किम इल सुंग की रिपोर्ट ने पार्टी सदस्यों और मेहनतकशों में विजेता की तरह गर्व और विश्वास पैदा किया और नये संघर्ष के लिये प्रेरित करने वाले एक सशक्त वैचारिक और सैद्धांतिक अस्त्र से लैस कर दिया ।

कामरेड किम इल सुंग की मौलिक दिशाओं और नीतियों को पूरा करने के दौरान हमारी पार्टी ने जो अनुभव और उपलब्धियां प्राप्त की थीं, उनका सामान्यीकरण और

सर्वांग विश्लेषण करने वाली और आगे के लिये जुझारू कर्तव्यों का स्पष्टीकरण करने वाली उनकी रिपोर्ट ने मार्क्सवाद-लेनिनवाद की निधि को तथा अन्तर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट आन्दोलन के अनुभवों को समृद्ध करने में मूल्यावान योगदान दिया ।

कामरेड किम इल सुंग उस कांग्रेस में फिर से पार्टी की केन्द्रीय कमेटी के अध्यक्ष निर्वाचित हुये ।

कोरिया की वर्कर्स पार्टी की ऐतिहासिक चौथी कांग्रेस के तुरन्त बाद कामरेड किम इल सुंग ने कांग्रेस के निर्णयों पर अमल करने के लिये समूची पार्टी और जनता को संग-ठित तथा आन्दोलित किया ।

समाजवादी निर्माण को तीव्र बनाने और सात वर्षीय योजना के कायक्रम संबंधी कर्तव्यों को पूरा करने की दृष्टि से महत्वपूर्ण प्रश्नों में से एक प्रश्न यह था कि अर्थ-व्यवस्था के राजकीय निर्देशन को सुधारा और सुदृढ़ किया जाना, तथा उद्योगों के प्रबंध और संचालन को इस तरह सुदृढ़ किया जाय कि वे समाजवादी अर्थ-व्यवस्था के चरित्र के तथा निरन्तर विकसित यथार्थ की आवश्यकताओं से अनुकूल सिद्ध हों।

समाजवादी अर्थ-व्यवस्था के निर्देशन और प्रबंध में सुधार लाने की समस्या इतने तात्कालिक महत्व की बन चुकी थी कि उसका अविलम्ब पूरा किया जाना समाजवाद और साम्यवाद के निर्माण के लिये अनिवार्य बन चुका था।

लेकिन न तो कभी किसी ने इस प्रश्न का निश्चित उत्तर दिया कि समाजवादी अर्थ-व्यवस्था का निर्देशन और प्रबंध कैसे किया जाना चाहिये और न कहीं से कोई ऐसे अनुभव सुलभ थे, जिनके आधार पर उसका हल निकाला जाता।

कामरेड किम इल सुंग ने गहन चिन्तन और सिद्धांत, दृढ़ क्रांतिकारी स्थिति तथा समाजवादी आर्थिक व्यवस्था के वैज्ञानिक विश्लेषण के आधार पर, जुछे की नीति के अनुसार इस समस्या के एक पहलू का मौलिक हल ढूंढ़ निकाला।

नवम्बर १९६१ में पार्टी की चौथी केन्द्रीय कमेटी की दूसरी विस्तृत बैठक में कामरेड किम इल सुंग ने सिखाया कि छंगसान-री पद्धति का बुद्धिमत्ता के साथ उपयोग करके अर्थ-व्यवस्था के निर्देशन और उद्योगों के संचालन और प्रबंध के पथ-प्रदर्शन को सुधारना चाहिये। वे एक स्थल पर स्वयं गये और समस्या को सुलझाया। दिसम्बर १९६१ में दैआन बिजली की मशीन कारखाने में यथा-स्थल पथ-प्रदर्शन करते हुये उन्होंने कारखाने के प्रबंध की पुरानी व्यवस्था में उग्र सुधार किया और दैआन कार्य व्यवस्था के नाम से औद्योगिक प्रबंध की एक नयी समाजवादी व्यवस्था को जन्म दिया।

काम की नयी व्यवस्था में कामरेड किम इल सुंग ने यह सिद्धांत प्रतिपादित किया

कि कारखाने का प्रबंध पार्टी कमेटी के सामूहिक नेतृत्व में होना चाहिये और उन्होंने उत्पादन के पथ-प्रदर्शन की ऐसी व्यवस्था स्थापित की जिससे उत्पादन का तकनीकी पथ-प्रदर्शन तीव्र हो और उसे व्यापक दिशा मिले। और उन्होंने सामान सप्लाई की भी व्यवस्था बनायी, जिसके अंतर्गत उच्चतर इकाइयां निचली को सामग्री भेजें और उन्होंने नयी पूर्ति सेवा व्यवस्था को जन्म दिया।

कामरेड किम इल सुंग ने कहा :

"दैआन कार्य व्यवस्था पुरानी कार्य व्यवस्था से बिलकुल भिन्न है, यह एक आगे बढ़ी हुई अर्थ व्यवस्था है, जिसमें उद्योग के कम्युनिस्ट प्रबंध के अनेक तत्व शामिल है। कार्यं की यह नयी व्यवस्था उस सामूहिक कम्युनिस्ट जीवन के सिद्धांत का अद्भुत प्रतिमान है, जिसका नारा है "एक सब के लिये सब एक के लिये"।

कामरेड किम इल सुंग द्वारा निर्मित दैआन कार्य व्यवस्था समाजवादी अर्थ-व्यवस्था के पथ-प्रदर्शन और प्रबंध की कम्युनिस्ट व्यवस्था है और वह आर्थिक प्रबंध की एक ऐसी नयी क्रांतिकारी व्यवस्था है, जिसमें समाजवादी आर्थिक व्यवस्था के लाभों को पूर्णतया उद्घाटित करने की क्षमता है।

जैसा कि कामरेड किम इल सुंग ने कहा, औद्योगिक प्रबंध की नयी व्यवस्था, दैआन व्यवस्था, ने आर्थिक संगठनों और उद्योगों को, इस योग्य बना दिया कि वे पार्टी कमेटियों के सामूहिक नेतृत्व में अपने सभी काम पूरा करें, राजनीतिक कार्य को प्राथमिकता देते हुये तथा आम जनता की सक्रियता बढ़ाते हुये अपने क्रांतिकारी कर्तव्य पूरे करें और उस व्यवस्था ने ऐसी स्थिति पैदा कर दी कि उच्चतर संगठन निचले संगठन की मदद करें, बड़े संगठन छोटे संगठनों की मदद करें; जो अपने काम में कुशल हों, वे कम कुशल संगठनों की मदद करें, सभी लोग साथियों जैसी भावना से एक दूसरे से सहयोग करें और कल-कारखाने, एक दूसरे के साथ घनिष्ठ सहयोग करें कि सहकारी उत्पादन का विकास हो और अर्थ व्यवस्था के वस्तुगत नियमों के अनुसार वैज्ञानिक आधार पर अर्थ-व्यवस्था तर्कसंगत रीति से संचालित हो।

कामरेड किम इल सुंग ने दैआन कार्य व्यवस्था में एकताबद्ध और विस्तृत नियोजन की नीति स्थापित की। और इस प्रकार समाजवादी अर्थ व्यवस्था के नियोजन में उग्र परिवर्तन किया।

एकताबद्ध और विस्तृत नियोजन का अर्थ है कि पूरे देश में राज्य नियोजन संगठन और नियोजन शाखायें एक नियोजन श्रृंखला में बंध जायं, ताकि एकात्मक केन्द्रीय नेतृत्व के अंतर्गत नियोजन में पूर्ण एकता हासिल कर ली जाये। और उद्योगों की प्रबंध

संबंधी गतिविधियों के पुर्जे सूक्ष्मतम रूप से एक साथ संचालित होने लगें ।

नियोजन का यह सबसे क्रांतिकारी और वैज्ञानिक तरीका है, जिसमे योजना की मांगें भली भांति पूरी होती हैं। और समाजवादी आर्थिक प्रबंध में संतुलन आता है, तथा राज्य के केन्द्रीयकृत सुनियोजित निर्देशन को तीव्र करके, योजना की पूर्ति में अनुशासन मजबूत करके, नियोजन में जन कार्यनीति का पालन करके तथा सभी रिवाजों का अधिकतम उपयोग करके अर्थ व्यवस्था को तेज रफ्तार से बराबर विकसित किया जा सकता है।

एकीकृत और विस्तृत नियोजन से आर्थिक संगठनकर्ता के रूप में राज्य संगठनों की भमिका और सुदृढ़ हुई, राज्य नियोजन इकाइयों की आत्मपरकता दूर हुई तथा नियोजन में उत्पादकों का विभागीपन और स्थानीयतावाद मिटा, जिससे राज्य के इरादों को उत्पादकों की रचनात्मक पहल के साथ उचित रीति से जोड़ कर, सही अर्थों में यथार्थवादी, वैज्ञानिक और सक्रिय योजनायें तैयार की जा सकीं ।

सच तो यह है कि एकीकृत तथा विस्तृत नियोजन एक ऐसा मौलिक कदम है, जिससे उन बुनियादी समस्याओं का स्पष्ट उत्तर मिला जिसको हल करना नियोजन में अनिवार्य होता है।

दैआन अर्थ व्यवस्था की रचना के बाद कामरेड किम इल सुंग ने समाजवादी कृषि में पथ-प्रदर्शन की व्यवस्था में उग्र संशोधन किये ।

ग्रामीण अर्थ-व्यवस्था के क्षेत्र में उन्होंने कृषि-प्रदर्शन की नयी व्यवस्था स्थापित की, जिसके लिये काउन्टी सहकारी फार्म प्रबंध कमेटी को आधार बनाया गया और उसके अंतर्गत कृषि तकनीक विशेषज्ञों तथा राज्य उद्योगों को खेती की सेवा में लगाया। कृषि पथ-प्रदर्शन की नयी व्यवस्था की स्थापना से कृषि के प्रबंध को औद्योगिक तरीके से संचालित करना, सहकारी फार्मों को और अधिक प्रभावशाली ढंग से राजकीय भौतिक और तकनीकी सहायता प्रदान करना और सहकारी सम्पत्ति के संदर्भ में समस्त जनता की सम्पत्ति की अग्रणी भूमिका को निर्णयकारी रूप में सुदृढ़ करना संभव हुआ।

उन्होंने उप-वर्क टीम प्रबंध व्यवस्था को भी जन्म दिया, जो श्रम संगठन का ऐसा सबसे अधिक विवेकपूर्ण तरीका है, जिससे खेती को समाजवादी कृषि व्यवस्था के लाभों का पूर्णतया उद्घाटन होता है और जो किसानों में कम्युनिस्ट विचार पैदा करने के लिये सामहिक जीवन का केन्द्र बनता है। तथा बुनियादी इकाई में उत्पादन संगटन का एक रूप बन जाता है।

हमारे देश के ग्रामीण क्षेत्रों में उप वर्क टीम प्रबंध व्यवस्था लागू होने के बाद कृषि

प्रबंध की एक सबसे अधिक वैज्ञानिक व्यवस्था सबसे निचली बुनियादी इकाइयों तक में स्थापित हो गयी।

कामरेड किम इल सुंग ने जब दैआन कार्य पद्धति और नयी कृषि पथ-प्रदर्शन व्यवस्था बनायी, तब उसके बाद ही समाजवादी अर्थ व्यवस्था के पथ-प्रदर्शन और प्रबंध की समस्या, जो अंतर्राष्ट्रीय पैमाने पर समाजवाद और साम्यवाद के निर्माण के दौरान एक महत्वपूर्ण समस्या बन चुकी थी, मार्क्सवादी-लेनिनवादी आधार पर विलक्षण ढंग से हल की जा सकी।

समाजवादी अर्थ-व्यवस्था के पथ-प्रदर्शन और प्रबंध की नयी कार्य-प्रणाली की रचना के बाद कामरेड किम इल सुंग ने सिखाया कि इस कार्य प्रणाली को भलीभांति क्रियान्वित करने के लिये कार्यकर्ताओं के वैचारिक दृष्टिकोण और काम के तरीकों को सुधारना चाहिये और पार्टी की चौथी केन्द्रीय कमेटी की दसवीं विस्तृत बैठक में उन्होंने पथ-प्रदर्शन संबंधी कार्यकर्ताओं के स्तर को ऊंचा उठाने के लिये कदम उठाये, ताकि विकसित होते यथार्थ और नयी कार्य प्रणाली की आवश्यकतायें पूरी की जा सकें।

और इस समस्या को हल करने के लिये उन्होंने मंत्रालयों और ब्यूरो की पार्टी बैठकों का स्वयं पथ-प्रदर्शन किया और आगे बढ़े हुये कार्यकर्ताओं में यह चेतना भरी कि वे पार्टी भावना, मजदूर वर्ग की भावना और जनप्रिय भावना को ऊंचा उठायें। उसके बाद वे मंत्रालयों तथा ब्यूरो के आगे बढ़ते हुये कार्यकर्ताओं के साथ ह्वांगहै लोहा कारखाने में गये और स्वयं इस बात का उदाहरण प्रस्तुत किया कि दैआन कार्य व्यवस्था द्वारा अपेक्षित क्रांतिकारी कार्य प्रणाली पर कैसे अमल किया जाता है।

पथ-प्रदर्शन के दौरान कामरेड किम इल सुंग ने सिखाया कि जो लोग पथ-प्रदर्शन करने आते हैं और जिनका पथ-प्रदर्शन किया जाता—है दोनों में सहयोग होना चाहिये, और उन्होंने एक एक करके उन सिद्धांतों और तरीकों की ओर संकेत किया, जिनकी मदद से पथ-प्रदर्शन को पार्टी कमेटी के काम में तबदील किया जा सकता है और इस बात का ठोस मार्ग दिखाया कि ऊंचे संगठन निचले संगठनों को पार्टी भावना के अनुकूल और राजनीतिक ढंग से किस प्रकार सहायता दे सकते हैं।

ह्वांगहै लोहा कारखाने में जाकर कामरेड किम इल सुंग ने जो यथा-स्थल पथ-प्रदर्शन किया, वह कम जानकार लोगों को शिक्षित करने, आम जिम्मेदारी सौंपने की उनकी परंपरागत प्रणाली का उपयोग करने, और फिर विशेष प्रश्न पर जुट कर एक नमूना पेश करने और फिर उस नमूने का सामान्यीकरण करने का एक और सजीव उदाहरण बना।

कामरेड किम इल सुंग की शिक्षा को ऊंचा उठाते हुये समूची पार्टी में पार्टी भावना, मजदूर वर्गीय भावना और जनप्रिय भावना बढ़ाने का संघर्ष छिड़ गया और इस दौरान

कामरेड किम इल सुंग ह्वांगहे लोहा कारखाने में घटनास्थल पर मार्ग दर्शन कर रहे हैं

नेतृत्वकारी कार्यकर्ताओं तथा पार्टी सदस्यों के विचारधारात्मक दृष्टिकोण तथा काम के प्रति रुख में उग्र परिवर्तन आ गया।

समाजवादी आर्थिक निर्माण को सफलतापूर्वक पूरा करने के लिये कामरेड किम इल सुंग ने इस बात पर ध्यान दिया कि आर्थिक प्रबंध के क्षेत्र में दैआन कार्य व्यवस्था भलीभांति लागू हो और साथ ही उन्होंने समय रहते समाजवादी निर्माण में उत्पन्न आवश्यक समस्याओं को समझा और उनके हल के लिये रचनात्मक कदम उठाये।

उन्होंने समूचे देश की अर्थ-व्यवस्था के लिये एकीकृत नियोजन व्यवस्था का निर्माण किया और उसके बाद बैंक व्यवस्था को पुनर्गठित किया, जो राष्ट्रीय अर्थ-व्यवस्था के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है।

उन्होंने व्यापारिक व्यवस्था को भी पुनर्गठित किया, ताकि वह जनता के निरन्तर सुधरते हुये भौतिक तथा सांस्कृतिक जीवन की आवश्यकताओं की पूर्ति करती रहे और उन्होंने एक सुसंगठित भूमि प्रशासन व्यवस्था स्थापित की, जो देश के प्राकृतिक साधनों की देखभाल करने और देश के आर्थिक जीवन का अधिक सतर्कता के साथ प्रबंध करने के लिये बहुत महत्वपूर्ण कदम है।

अर्थ-व्यवस्था के पथ-प्रदर्शन और प्रबंध में सुधार करते हुये कामरेड किम इल सुंग ने चौथी पार्टी कांग्रेस द्वारा निर्धारित बुनियादी कार्यनीति के सार, छंगसान-री भावना और छगसान-री पद्धति, को लागू करके पार्टी कार्य को और अधिक सुधारने तथा सुदृढ़ बनाने पर अत्यधिक ध्यान दिया।

१९६२ के प्रारंभ में दक्षिण ह्वांहै सूबे में पार्टी संगठनों का यथा-स्थल पथ-प्रदर्शन करते हुये कामरेड किम इल सुंग को यह समझ में आ गया कि कुल मिलाकर पार्टी कार्य किस स्थिति में है और इस आधार पर उन्होंने मार्च १९६२ में पार्टी की चौथी केन्द्रीय कमेटी की तीसरी विस्तृत बैठक बुलायी और पार्टी कार्य में सुधार के लिये कदम उठाये।

बैठक में अपने समापन भाषण में जिसका शीर्षक था **पार्टी के संगठनात्मक और सैद्धांतिक काम में सुधार और दृढ़ता के विषय में,** कामरेड किम इल सुंग ने पार्टी कार्य के मूल तत्व और अन्तर्वस्तु का स्पष्टीकरण किया और सिखाया कि पार्टी संगठनों को प्रशासन कार्य अपने ऊपर लेने की आदत समाप्त करनी चाहिये, अपने प्रयासों को पार्टी कार्यों पर केन्द्रित करना चाहिये और पार्टी को एक क्रांतिकारी, लड़ाकू, जीवन्त संगठन तथा सक्रिय पार्टी बनायें।

उन्होंने यह बताते हुये कि पार्टी कार्य का उद्देश्य है, पार्टी को निर्मित और सुदृढ़ करना, बराबर विकास और प्रसार करना, और मार्क्सवादी-लेनिनवादी पार्टी की तरह उसको

अपनी जुझारू भूमिका को पूर्णतया प्रदर्शित करने के लिये अपने सभी संगठनों को क्रियाशीलता के लिये जाग्रत करना, उन्होंने पार्टी के अन्दरूनी कार्य को, यानी पार्टी सदस्यों और कार्यकर्ताओं के साथ पार्टी सेल और कमेटियों के साथ कार्य को सुधारने तथा शक्तिशाली बनाने के विषय में विस्तार से शिक्षायें दीं।

यह बताते हुये कि पार्टी कार्य में प्रमुख कड़ी पार्टी सदस्यों को उनके पार्टी जीवन में सही पथ-प्रदर्शन देना, कामरेड किम इल सुंग ने सिखाया :

"पार्टी सदस्य जिस दिन पार्टी में भर्ती होता है, उसी दिन से वह पार्टी संगठन का अंग बन जाता है और उसे पार्टी संगठन की ओर से जो काम मिले, पूरा करना होगा।

"पार्टी सदस्य का संगठनात्मक जीवन उसी क्षण शुरू हो जाता है, जब वह पार्टी संगठन में शामिल होता है। पार्टी में संगठनात्मक जीवन का अर्थ है कि पार्टी मेम्बर को पार्टी की तरफ से जो काम दिया जाय, वह उसे पूरा करे। वही पार्टी मेम्बर का राजनीतिक जीवन और उसकी क्रांतिकारी गतिविधियां हैं। हम हमेशा कहते हैं कि क्रांतिकारी में अपेक्षित गुण अपने अन्दर उपलब्ध करने चाहियें और क्रांतिकारी कोई असाधारण व्यक्ति नहीं होता। यदि कोई पार्टी सदस्य, पार्टी-नियमों का पालन करते हुये, पार्टी द्वारा दी गयी क्रांतिकारी जिम्मेदारी को कौशल के साथ पूरा करता है तो यह कहा जा सकता है कि उसने एक क्रांतिकारी के कर्तव्य पूरे कर लिये।"

कामरेड किम इल सुंग ने यह भी हिदायत दी कि पार्टी जीवन के निर्देशन में महत्वपूर्ण बात यह है कि पार्टी सदस्यों को उचित जिम्मेदारी सौंपी जाय, ताकि वे पार्टी द्वारा दिये गये कामों को नियमानुसार पूरा कर सकें और इस प्रकार समूची पार्टी निरन्तर सक्रिय हो, और इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिये उन्होंने सिखाया कि पार्टी सदस्य जिन पार्टी सेलों से संबंधित होते हैं, उनका और सभी स्तरों पर पार्टी कमेटियों का, मजबूती के साथ निर्माण होना चाहिये और उनकी जुझारू क्षमता बढ़ायी जानी चाहिये।

इसके अलावा कामरेड किम इल सुंग ने जोर दिया कि सभी पार्टी संगठनों को चाहिए कि पार्टी कार्य पर अपने प्रयास केन्द्रित करने के साथ-साथ वे प्रशासकीय तथा आर्थिक कार्यों के संदर्भ में अपनी कर्णधार जैसी भूमिका और बढ़ायें और उन्होंने सभी स्तरों और विभागों के लिये पार्टी कमेटियों के काम की दिशा के बारे में विस्तृत व्याख्या दी।

उस विस्तृत बैठक में कामरेड किम इल सुंग द्वारा प्रस्तुत शिक्षायें हमारी पार्टी के काम के विकास के लिये कार्यक्रम की कुंजी सिद्ध हुईं।

क्रांति के जनरल स्टाफ अर्थात् पार्टी, की दृढ़ता के साथ रचना करते हुये और उसके जुझारू कौशल को बढ़ाते हुये उन्होंने पार्टी के प्रसारण साधनों, यानी मेहनतकशों के संगठनों,

के काम को सुधारने में अनेक रचनात्मक कदम उठाये, ताकि समाजवादी निर्माण की नयी परिस्थितियों के अनुसार उनकी भूमिका बढ़े।

कामरेड किम इल सुंग ने मई १९६४ में कोरिया की जनवादी युवक लीग की पांचवीं कांग्रेस का स्वयं पथ-प्रदर्शन करते हुये समाजवादी निर्माण के मौजूदा दौर के लिये युवक संगठन के कर्तव्यों और उसकी भूमिका पर प्रकाश डाला और इस पर ध्यान दिया कि उसके कर्तव्यों और भूमिका के अनुरूप उसका नाम बदल कर समाजवादी श्रमजीवी युवक लीग रख दिया जाय।

उसके वाद उन्होंने जून १९६४ में पार्टी की चौथी केन्द्रीय कमेटी की नवीं विस्तृत बैठक बुलायी, जिसमें उन्होंने समाजवाद के अंतर्गत मजदूर संगठनों की भूमिका और उनके कर्तव्यों की नयी परिभाषा दी और विकसित यथार्थ की आवश्यकताओं के अनुसार सर्वांगत: उनकी कार्य-पद्धति और प्रणाली को सुधारने के ठोस कर्तव्य सुझाये।

उस विस्तृत बैठक में कामरेड किम इल सुंग ने खास तौर से कृषि श्रमिकों के संघ को नये सिरे से संगठित करने के लिये दिशा प्रस्तुत की।

कृषि श्रमिक संघ को संगठित करने की उनकी रचनात्मक दिशा एक ऐसी विवेकपूर्ण दिशा थी, जिसके माध्यम से ग्रामीण क्षेत्रों में बिना किसी अपवाद के सभी श्रमिकों को एक राजनीतिक संगठन में एकताबद्ध किया जा सकता था। और समाजवादी सहकारीकरण के बाद परिवर्तित परिस्थितियों में उन्हें सजग समाजवादी और कम्युनिस्ट निर्माताओं के रूप में शिक्षित-दीक्षित किया जा सकता था। वह समाजवाद तथा साम्यवाद के निर्माण में पार्टी के प्रसारण साधनों की भूमिका के संबंध में मार्क्सवाद-लेनिनवाद के सिद्धांत का एक और विकास था।

कामरेड किम इल सुंग ने महिला संगठनों के कर्तव्यों पर तथा समाजवादी निर्माण की अवधि में उनकी भूमिका में वृद्धि करने की आवश्यकता के बारे में भी कार्य-क्रम सम्बन्धी शिक्षा दी और महिला संघ के काम के प्रति गहरी चिन्ता व्यक्त करते हुये उसका सही पथ-प्रदर्शन किया।

उन्होंने नवम्बर, १९६१ में हुये माताओं के राष्ट्रीय सम्मेलन में स्वयं भाग लिया तथा उसके कार्यों का पथ-प्रदर्शन किया और उसके बाद जनवादी महिला संघ की तीसरी राष्ट्रीय कांग्रेस और नर्सरी अध्यापिकाओं तथा किंडरगार्टेन के कार्यकर्ताओं के राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लिया। और हर दौर के लिये महिला संघ संगठनों और महिलाओं के लिये कार्यक्रम सम्बन्धी कर्तव्य बताये।

हमारे देश में मजदूर संघों का महासंघ, कृषि श्रमिक संघ, समाजवादी युवक लीग

तथा जनवादी महिला संघ जैसे श्रमिक संगठन हमारी पार्टी के भरोसे योग्य प्रसारण साधनों के रूप में निर्मित हुये, वे ऐसे दृढ़ राजनीतिक संगठन के रूप में निर्मित हुये जो जटिल से जटिल और कठिन से कठिन परिस्थितियों में नेता के आवाहन पर सम्मान पूर्वक कोई भी काम पूरा कर सकते हैं और उन संगठनों ने समस्त श्रमिकों को कामरेड किम इल सुंग की क्रांतिकारी विचारधारा से, पार्टी की एकात्म विचारधारा से लैस कर दिया है और जनता को नेता के गिर्द और निकटता से एकजुट किया है ।

कामरेड किम इल सुंग ने सिखाया कि पार्टी की मूल धुरी शक्ति, कार्यकर्ताओं के के नेतृत्व का स्तर निर्णायक ढंग से ऊंचा किया जाना चाहिये, ताकि पार्टी कार्य और सामाजिक जीवन के सभी क्षेत्रों में छंगसान-री भावना तथा छंगसान री पद्धति जम जाय तथा क्रांतिकारी कर्तव्य सफलतापूर्वक पूरे होते रहें और इस समस्या के हल के लिये उन्होंने कदम उठाये ।

तेजी से विकसित हो रहे यथार्थ से कदम-ब-कदम चलने की दृष्टि से कार्यकर्ताओं और समस्त मेहनतकश जनता का स्तर ऊंचा उठाने के लिये उन्होंने समूची पार्टी का यह कर्तव्य बना दिया कि अध्ययन जारी रहे और खास तौर से काउण्टी स्तर के तथा उसके ऊपर के कार्यकर्ता अध्ययन जारी रखते हुये अपना स्तर ऊंचा उठायें ताकि थोड़े से थोड़े समय में कालेज या विश्वविद्यालय के स्नातक का स्तर प्राप्त कर लें ।

कामरेड किम इल सुंग ने सिखाया कि कार्यकर्ताओं और मेहनतकश जनता का स्तर ऊंचा करने में जरूरी चीज यह है कि पार्टी की नीतियों में उनकी शिक्षा सुदृढ़ हो और साथ ही वे अपने अपने क्षेत्रों के लिये अपनी तकनीकी और अमली योग्यता बढ़ायें ।

पार्टी नीतियों में शिक्षा का महत्व बताते हुये कामरेड किम इल सुंग ने सिखाया :

"हमारी पार्टी की नीतियां कोरिया की क्रांति के ठोस अमल में लागू किया गया लेनिनवाद हैं और वे हमारे सभी कार्यों की पथ-प्रदर्शिका हैं । जब आप उन्हें जान जाते हैं तो आपके हाथ में एक पैमाना आ जाता है । उस पैमाने से आप सभी घटनाओं को नाप सकते हैं । जब आप यह निर्णय करने लगते हैं कि आप जो कर रहे हैं, उसका पार्टी नीति से मेल बैठता है या नहीं और पार्टी नीतियों पर चलने के लिये कौन सा रास्ता अपनाना चाहिये तथा आप गलत और सही के बीच भेद कर सकने योग्य बन पाते हैं, सिद्धांतों का पालन कर पाते हैं और हाथ में आयी समस्या को सही ढंग से हल कर सकते हैं ।"

कार्यकर्ताओं और मेहनतकश जनता का स्तर ऊंचा उठाने के लिये कामरेड किम इल सुंग ने इस बात पर ध्यान दिया कि सभी कार्यकर्ता अपने से छोटों को शिक्षित करने की जिम्मेदारी संभालें, और उन्होंने कार्यकर्ताओं की शिक्षा और दीक्षा की व्यवस्था

बनायी, जिसके अन्तर्गत कार्यकर्ता काम करते समय पढ़ भी सकता था। और उन्होंने कार्यकर्ताओं के लिये पढ़ाई करते समय सभी तरह की सुविधायें जुटायीं, यहां तक कि उनके पढ़ाई के घंटे भी तय कर दिये, ताकि सभी कार्यकर्ता अपने राजनीतिक, सैद्धांतिक स्तर और व्यावहारिक योग्यता को ऊंचा कर सकें।

१९६२ में अमरीकी साम्राज्यवादियों ने दक्षिण कोरिया में नये युद्ध की जोरों से तैयारी करते हुये गणतंत्र के उत्तरी आधे भाग के विरुद्ध आक्रामक कारर्वाइयां तेज कर दीं और अन्तर्राष्ट्रीय पैमाने पर क्यूबा गणतंत्र के विरुद्ध कैरीबियन संकट खड़ा कर दिया तथा दक्षिण वियतनाम में अपने आक्रामक युद्ध को और अधिक फैला दिया।

ऐसी परिस्थिति का मुकाबला करने के लिये कामरेड किम इल सुग ने दिसम्बर १९६२ में पार्टी की चौथी केन्द्रीय कमेटी की पांचवीं विस्तृत बैठक बुलायी और आर्थिक निर्माण तथा प्रतिरक्षा के निर्माण को समानान्तर पैमाने पर आगे बढ़ाने की नयी कार्य-नीति प्रस्तुत की।

विद्यमान परिस्थितियों में आर्थिक निर्माण को पुनर्गठित और निरन्तर विकसित करते हुये उन्होंने हमारी पार्टी की सैनिक नीति को भली भांति कार्यान्वित करने के लिये अनेक महत्वपूर्ण कदम उठाये, जो राष्ट्रीय प्रतिरक्षा में अपनी रक्षा आप करने के पार्टी सिद्धांत का पूर्ण प्रतीक थी और उसका बुनियादी सार तत्व यह था कि समूची सेना को केडर सेना के रूप में प्रशिक्षित किया जाय, उसे आधुनिक बनाया जाय, समूची जनता को सशस्त्र किया जाय और समूचे देश की किलेबन्दी की जाय।

इस प्रकार हमारी आत्म-रक्षा क्षमता और बढ़ी तथा शत्रु की युद्ध भड़काने की चालों का मुकाबला करने की पूरी तैयारी हो गयी।

हमारे देश में गहराई के साथ समाजवादी निर्माण के विकास के साथ जीवन का तकाजा था कि ग्रामीण समस्या के अन्तिम हल की वैज्ञानिक व्याख्या की जाय।

समाजवाद के अन्तर्गत ग्रामीण समस्या एक बुनियादी समस्या है, जिसका हल समाज-वाद के निर्माण के लिये तथा साम्यवाद तक पहुंचने की तैयारी के लिये अनिवार्य है।

लेकिन किसी ने कभी इस प्रश्न का स्पष्ट उत्तर नहीं दिया था और इसके अलावा कुछ देश समाजवादी कृषि व्यवस्था के लाभों को भली भांति पुष्पित करने में सफल भी नहीं हुये। इस बीच साम्राज्यवादियों तथा उनके चाकरों ने उन कठिनाइयों का लाभ उठा कर, जिनका कुछ समाजवादी देशों को ग्रामीण समस्या के हल के सदर्भ में सामना करना पड़ा, समाजवादी कृषि व्यवस्था का मजाक उड़ाना और उस पर कीचड़ उछालना शुरू कर दिया।

इस प्रकार समाजवादी ग्रामीण समस्या एक कठिन और पेचीदा समस्या थी और एक ज्वलन्त समस्या थी, जिसका हल अनिवार्य था ।

फरवरी १९६४ में महान मार्क्सवादी-लेनिनवादी कामरेड किम इल सुंग ने अपनी ऐतिहासिक रचना प्रस्तुत की, जिसका शीर्षक था, **"हमारे देश में समाजवादी ग्रामीण समस्या पर थीसिस"** जिसमें उन्होंने समाजवादी ग्रामीण समस्या के अन्तिम हल के बारे में वैज्ञानिक व्याख्या प्रस्तुत की ।

इस थीसिस में उन विलक्षण सफलताओं और अनुभवों का वैज्ञानिक विश्लेषण प्रस्तुत किया, जिन्हें हमारी पार्टी ने पिछले दिनों समाजवादी ग्रामीण व्यवस्था के निर्माण में अर्जित किया गया था और उसके आधार पर समाजवाद के अन्तर्गत ग्रामीण समस्या के मूल तत्वों और अन्तर्वस्तु का और उसके हल के लिये बुनियादी सिद्धांतों और तरीकों का गहन और विस्तृत स्पष्टीकरण किया ।

उस थीसिस में कामरेड किम इल सुंग ने स्पष्ट किया कि समाजवाद के अन्तर्गत किसान और कृषि समस्या, ग्रामीण क्षेत्रों में स्थापित समाजवादी व्यवस्था को लगातार सुदृढ़ करने के आधार पर, खेती की उत्पादक शक्तियों को ऊंचे स्तर तक विकसित करने का, किसानों का जीवन समृद्ध बनाने का, शोषक समाज द्वारा छोड़े गये ग्रामीण पिछड़ेपन को दूर करने का, और क्रमशः शहर और गांव का अन्तर दूर करने का प्रश्न है । और उन्होंने ग्रामीण समस्या के हल के लिये उन मूल सिद्धांतों का स्पष्टीकरण किया, जिनका पालन अनिवार्य होता है । उन्होंने कहा :

"पहले ग्रामीण क्षेत्रों में तकनीकी, सांस्कृतिक और विचारधारात्मक क्रान्तियों को पूर्णतया सम्पन्न करना चाहिये ।

"दूसरा, किसानों पर मजदूर वर्ग के नेतृत्व को, खेती को उद्योगों से मिलने वाली सहायता को, ग्रामीण क्षेत्रों को शहरों से मिलने वाले समर्थन को हर प्रकार से सुदृढ़ करते रहना चाहिये ।

"तीसरा, ग्रामीण अर्थ व्यवस्था के निर्देशन तथा प्रबन्ध को निरन्तर आगे बढ़ाते हुये औद्योगिक प्रबन्ध के उन्नत स्तर तक पहुंचाना चाहिये, समस्त जनता की सम्पति और सहकारी सम्पत्ति के बीच की कड़ी को सुदृढ़ करना चाहिये और सहकारी सम्पत्ति को लगातार समस्त जनता की सम्पत्ति के निकटतर लाते जाना चाहिये ।"

उस थीसिस में कामरेड किम इल सुंग ने क्लासिक शैली में यह मौलिक विचार प्रतिपादित किया कि मार्क्सवादी-लेनिनवादी पार्टी को चाहिये कि वह समाजवादी व्यवस्था की स्थापना के बाद भी समाजवाद और साम्यवाद की विजय के लिये क्रांति को जारी रखे ।

कामरेड किम इल सुंग ने कहा :

"समाजवाद के पूर्ण निर्माण के लिये तथा साम्यवाद तक क्रमशः पहुंचने की तैयारी के लिये क्रांति जारी रहनी चाहिये ।

"चूंकि शोषक वर्गों के उन्मूलन तथा समाजवादी रूपांतर के पूर्ण होने के बाद भी शहर और गांव का अन्तर और मजदूर वर्ग और किसान के बीच वर्गीय अन्तर बना रहता है, इसलिये इस तथ्य से यह सिद्ध होता है कि क्रांति जारी रहनी चाहिये और गांवों में खासतौर से, क्रांति को और भी अच्छी तरह जारी रखना चाहिये ।"

कामरेड किम इल सुंग ने विचारधारात्मक, तकनीकी और सांस्कृतिक क्रांतियों की ऐसे केन्द्रीय क्रांतिकारी कर्तव्यों के रूप में व्याख्या की, जिन्हें ग्रामीण क्षेत्रों में निरन्तर पूरा करते रहना चाहिये और उन कर्तव्यों पर अमल के तौर तरीकों के विषय में उन्होंने ठोस शिक्षायें दीं ।

यह बताते हुए कि किसानों पर मजदूर वर्ग के नेतृत्व को, खेती को उद्योगों से मिलने वाली सहायता को तथा गांव को शहर से मिलने वाले समर्थन को हर तरह से सुदृढ़ करते रहना चाहिये, उन्होंने सिखाया कि शहर और गांव के अन्तर को मिटाने के लिये यह एक अनिवार्य शर्त है ।

यहां से शुरू करके उन्होंने जोर देकर कहा कि पार्टी और राज्य को चाहिये कि वे ग्रामीण क्षेत्रों को अधिकाधिक सहायता देते रहें ताकि सहकारी खेती और किसानों का बोझ निरन्तर हल्का होता रहे और किसानों को भी, मजदूरों की तरह, भविष्य में राज्य और पूरे समाज द्वारा उत्पादन और जीवन यापन की सभी परिस्थितियां सुलभ हों ।

कामरेड किम इल सुंग का यह विचार इस क्रांतिकारी सिद्धांत की प्रतिमूर्ति है कि मजदूर वर्ग किसानों का नेतृत्व करके उसे साम्यवादी समाज तक पहुंचाये और उनका यह विचार मजदूर वर्ग के ऐतिहासिक मिशन के प्रति उनकी असीम आस्था की अभि-व्यक्ति है ।

उनका विचार समाजवादी तथा साम्यवादी निर्माण की अवधि में ऐतिहासिक परिस्थितियों के अनुरूप मजदूर-किसान-मैत्री के विषय में मार्क्सवादी-लेनिनवादी सिद्धांत का सृजनात्मक विकास और पूर्ण भाष्य है ।

उस थीसिस में कामरेड किम इल सुंग ने बताया कि समाजवादी खेती का निर्देशन और प्रबन्ध, सहकारी सम्पत्ति का विकास और समस्त जनता की सम्पत्ति और सहकारी सम्पत्ति में आपसी सम्बन्ध का प्रश्न, समाजवादी ग्रामीण व्यवस्था की स्थापना के लिये तथा स्वयं समाजवादी निर्माण के लिये एक बुनियादी प्रश्न है और मजदूर वर्ग तथा

किसानों के बीच वर्ग भेद मिटाने के लिये एक महत्वपूर्ण सैद्धांतिक प्रश्न भी है। उन्होंने इस समस्या के हल के लिये स्पष्ट तरीके सुझाये।

उन्होंने सिखाया कि उद्योग की तरह ही आधुनिक तकनीक से सुसज्जित बड़े पैमाने की सहकारी खेती का भी औद्योगिक प्रबन्ध की प्रणाली से संचालन होना चाहिये। इस पर जोर देते हुये कि खेती में सहकारी अर्थ-व्यवस्था अपनी श्रेष्ठता प्रदर्शित करते हुये उत्पादक शक्तियों के विकास को तेजी से आगे बढ़ाती है, कामरेड किम इल सुंग ने यह भी निर्देश दिया कि सहकारी खेती की क्षमताओं और संभावनाओं को अधिकतम सीमा तक ढूंढ़ना चाहिये और उनका उपयोग करना चाहिये तथा ग्रामीण अर्थ व्यवस्था की भौतिक तथा तकनीकी नींव सुदृढ़ बनाते हुए और किसानों का सांस्कृतिक, वैचारिक तथा चेतनाजन्य स्तर ऊंचा उठाते हुये, उसके साथ सहकारी सम्पत्ति को विकसित और सर्वांग सम्पन्न बनाना चाहिये। उन्होंने बताया कि इसके साथ ही दोनों प्रकार की सम्पत्ति के आपसी सम्बन्ध तथा उद्योग और खेती के रिश्ते को सही ढंग से हल करना चाहिये।

कामरेड किम इल सुंग ने कहा:

"समस्त जनता की सम्पत्ति और सहकारी सम्पत्ति के आपसी सम्बन्ध तथा उद्योग और कृषि के रिश्तों की समस्या को सही ढंग से हल करना चाहिमे। इस सिलसिले में प्राथमिक महत्व की बात यह है कि दोनों प्रकार की सम्पत्ति के सम्बन्धों को इस तरह आंगिक रूप से जोड़ना चाहिये कि उद्योग और कृषि के बीच प्रत्यक्ष उत्पादन सम्बन्ध सुदृढ़ हों और उनसे सहकारी सम्पत्ति के ऊपर समस्त जनता की सम्पत्ति की भूमिका निरन्तर बढ़ती जाय।"

उद्योग तथा कृषि के बीच रिश्ते और दोनों प्रकार की सम्पत्ति के आपसी सम्बन्ध के सिलसिले में कामरेड किम इल सुंग के भौतिक विचारों से ऐसा सबसे अधिक वैज्ञानिक मार्क्सवादी-लेनिनवादी रास्ता स्पष्ट होता है, जिस पर चल कर मजदूर वर्ग के राजनीतिक तथा विचारधारात्मक प्रभाव को किसानों पर बढ़ाया जा सकता है। खेती में उद्योगों की मशीनी तकनीक, औद्योगिक प्रबन्ध के उन्नत तरीके और उत्पादन संस्कार को बेहतर ढंग से लागू किया जा सकता है तथा गांवों को शहरों से प्रभावशाली मदद पहुंचायी जा सकती है, और इस प्रकार सहकारी-सम्पत्ति को इस तरह सुदृढ़ और विकसित किया जा सकता है कि वह समस्त जनता की सम्पत्ति के निकटतर आ सके तथा सहकारी सम्पत्ति को समस्त जनता की सम्पत्ति में क्रमशः ढालने की प्रक्रिया को सुगम और तीव्र बनाया जा सके।

उस थीसिस में उन्होंने उस विचार को भी और विकसित किया, जिसे उन्होंने स्वयं

अगस्त, १९६२ में छंगसान-री स्थानीय पार्टी तथा आर्थिक कार्यकर्ताओं के संयुक्त सम्मेलन में प्रस्तुत किया था और इस आधार पर उन्होंने काउण्टी को एक ऐसी क्षेत्रीय इकाई बताया, जो ग्रामीण कार्य में तथा समस्त स्थानीय मामलों में प्रत्यक्ष एकीकृत और व्यापक नेतृत्व प्रदान करे, तथा ग्रामीण क्षेत्रों में वैचारिक, तकनीकी और सांस्कृतिक क्रांतियों को तीव्र करने और गांवों तथा नगरों को जोड़ने तथा नगरों का समर्थन गांवों तक पहुंचाने का अड्डा बने और उन्होंने गांवों की भूमिका बढ़ाने का कर्तव्य प्रस्तुत किया।

उन्होंने समाजवादी कृषि के भौतिक तथा तकनीकी आधार को सुदृढ़ बनाने तथा किसानों के जीवन स्तर में तेजी से सुधार लाने के बारे में भी ठोस कर्तव्य प्रस्तुत किये।

उस थीसिस ने हमारी जनता के समक्ष एक व्यापक संभावना पैदा की, जिसके अनुसार नगर और गांव का अंतर, मजदूर और किसान के बीच का वर्गजन्य अन्तर दूर किया जा सके और एक ऐसा समृद्ध, सुसंस्कृत समाजवादी ग्रामीण क्षेत्र निर्मित किया जा सके, जहां हर एक को सुखी जीवन बिताने का अवसर प्राप्त हो सके।

हमारी पार्टी की चौथी केन्द्रीय कमेटी की आठवीं विस्तृत बैठक में **"हमारे देश में समाजवादी ग्रामीण समस्या पर थीसिस,"** को समाजवादी ग्रामीण क्षेत्र के निर्माण में में हमारी पार्टी के एक महान कार्यक्रम के रूप में स्वीकार किया।

"हमारे देश में समाजवादी ग्रामीण समस्या पर थीसिस", जिस में ग्रामीण समस्या के हल से सम्बन्धित कामरेड किम इल सुंग की सभी विलक्षण योजनायें परिलक्षित होती हैं, कार्यक्रम सम्बन्धी एक ऐसा महान दस्तावेज है, जिसने वैज्ञानिक ढंग से उस मार्ग का संकेत किया, जिस पर चल कर मार्क्सवाद-लेनिनवाद के विकास के इतिहास में पहली बार ग्रामीण समस्या का अन्तिम हल सुलभ होता है।

उस थीसिस ने खेती की समाजवादी व्यवस्था पर साम्राज्यवादियों और प्रतिक्रियावादियों द्वारा उछाले गये कीचड़ को धो दिया और इस व्यवस्था के असली लाभों को प्रदर्शित कर दिया। उस थीसिस ने ग्रामीण समस्या के हल में मार्क्सवाद-लेनिनबाद की शुद्धता की भी रक्षा की और समाजवादी तथा कम्युनिस्ट निर्माण के लक्ष्य की ओर महान योगदान देते हुये उसने मार्क्सवाद-लेनिनवाद को एक नये कोण से विकसित किया।

वह थीसिस जैसे ही प्रकाशित हुई, दुनिया भर में अनेक कम्युनिस्टों और क्रांतिकारी लोगों ने उसकी भारी प्रशंसा करते हुए कहा कि वह "समाजवादी ग्रामीण समस्या के हल की सबसे सही पाठ्य-पुस्तक है," और "एक ऐसा मूल्यवान मार्क्सवादी-लेनिनवादी दस्तावेज है, जिसने समाजवादी और साम्यवादी निर्माण की बुनियादी समस्या का वैज्ञानिक हल प्रस्तुत कर दिया है।"

थीसिस में बताये गये कर्तव्यों को पूरा करने के लिये कामरेड किम इल सुंग ने जिन्स के रूप में कृषि-कर वसूली को खत्म करके, ग्रामीण क्षेत्र को राज्य से मिलने वाली सहायता को सुदृढ़ बना कर युगान्तरकारी कदम उठाया ।

मार्च १९६४ में तृतीय सर्वोच्च जन विधान सभा के तीसरे अधिवेशन ने कामरेड किम इल सुंग की पहल पर एक ऐतिहासिक कानून पास किया, जिसके अनुसार १९६४ से १९६६ के बीच जिन्स के रूप में कृषि कर की वसूली का खात्मा कर दिया गया, राज्य कोष की सहायता से ग्रामीण क्षेत्र में पूंजीगत निर्माण कार्य तथा भवन निर्माण शुरू हुआ तथा राज्य के खर्चे पर गांवों में प्रमुख उत्पादन के साधन और खेती की मशीनें सप्लाई की गयीं ।

थीसिस में प्रस्तुत कर्तव्यों के अनुसार हमारे देश के ग्रामीण क्षेत्रों में वैचारिक, तकनीकी और सांस्कृतिक क्रांतियां तेजी से आगे बढ़ीं तथा राज्य-कोष की सहायता से पूंजीगत निर्माण तथा भवन-निर्माण का कार्य व्यापक स्तर पर पुरा हुआ । फलतः आज ग्रामीण क्षेत्रों का चित्र ऐसा बदल चुका है कि उन्हें पहचाना नहीं जा सकता । ग्रामीण क्षेत्रों में सिंचाई व्यवस्था, मशीनी करण, बिजली और रसायन की सुविधायें व्यापक बन चुकी हैं और जिन्स के रूप में कृषि-कर वसूली हमेशा के लिये खत्म कर दी गयी है । पुरानी समाज व्यवस्था वाले हमारे ग्रामीण क्षेत्र, जहां हजारों वर्षों से अज्ञान, अंधकार, शोषण और गरीबी का साम्राज्य था, आज कामरेड किम इल सुंग के नेतृत्व में वर्कर्स पार्टी के युग में समाजवादी ग्रामीण क्षेत्रों के रूप में बदल दिये गये हैं जहां न शोषण है, न दमन, जहां हर तरह से कर-टैक्स खत्म कर दिये गये हैं और जहां फसल की खराबी का नाम सुनने में नहीं आता ।

गणतंत्र के उत्तरी आधे भाग में समाजवादी निर्माण कार्य पूरे जोश के साथ आगे बढ़ाते हुये कामरेड किम इल सुंग ने देश के एकीकरण तथा दक्षिण कोरिया में क्रांति को निश्चयतापूर्वक सम्पन्न करने के संघर्ष की स्पष्ट दिशा प्रस्तुत की ।

फरवरी १९६४ में चौथी केन्द्रीय कमेटी की आठवीं विस्तृत बैठक में उन्होंने देश के एकीकरण की तथा दक्षिण कोरिया में क्रांति के लक्ष्य को आगे बढ़ाने के लिये रणनीति सम्बन्धी दिशा और जुझारू कर्तव्य पेश किये ।

उन्होंने हमारे देश में उत्पन्न परिस्थिति तथा क्रांति और प्रतिक्रांति के बीच शक्ति सन्तुलन का वैज्ञानिक विश्लेषण किया, और व्याख्या पेश की कि गणतंत्र के उत्तरी आधे भाग की क्रान्तिकारी शक्तियां, दक्षिणी आधे भाग की क्रांतिकारी शक्तियां और अन्तर्राष्ट्रीय क्रान्तिकारी शक्तियां, वे तीन प्रमुख क्रान्तिकारी शक्तियां हैं, जो देश

के एकीकरण के लक्ष्य को पूरा करने के लिये अनिवार्य तत्व हैं और उन्होंने उन शक्तियों को हर तरह से सुदृढ़ करने के लिये दिशा प्रस्तुत की और जुझारू कर्तव्य सुझाये तथा इस प्रकार उन्होंने उत्तरी और दक्षिणी कोरिया की जनता के सामने संघर्ष के मार्ग को स्पष्टतया आलोकित किया ।

खासतौर से जब अमरीकी साम्राज्यवादी और पाक जंग ही कठपुतली गुट "रिपब्लिक आफ कोरिया-जापान वार्ता" के "अन्तिम नतीजे" पर पहुंचने की कोशिश में तेजी से लगे हुये थे और जापानी सैन्यवादी आक्रमण की साजिशें खुलकर करने लगे थे, कामरेड किम इल सुंग ने "आर. ओ. के.—जापान वार्ता" के प्रतिक्रियावादी चरित्र का विश्लेषण किया और पर्दाफाश किया और दक्षिण कोरिया की जनता को उसके विरुद्ध संघर्ष के लिये तेजी से जगाया ।

मार्च १९६४ में दक्षिण कोरिया के देशभक्त युवकों, छात्रों और जनता के व्यापक हिस्सों ने पाक जंग के कठपुतली गुट के देश द्रोही कुकृत्य के विरुद्ध जन-प्रदर्शन के द्वारा संघर्ष छेड़ दिया, जो दक्षिण कोरिया को अमरीकी तथा जापानी साम्राज्यवादियों के हाथों दुहरे उपनिवेश के रूप में बेच रहे थे । और उन्होंने जापानी सैन्यवादियों द्वारा आक्रमण की साजिशों के खिलाफ भी संघर्ष छेड़ा, जो अमरीकी साम्राज्यवादियों की मदद से दक्षिण कोरिया में घुसने की कोशिश कर रहे थे ।

क्रुद्ध युवकों, छात्रों और जनता के संघर्ष से घबरा कर अमरीकी साम्राज्यवादियों तथा पाक जंग ही कठपुतली गुट ने निर्मम दमन तथा धोखेभरी समझौतावादी चालों से उनके संघर्ष को कुचलने की बदहवास कोशिशें कीं ।

कामरेड किम इल सुंग द्वारा निर्धारित नीति के अनुसार तृतीय सर्वोच्च जन विधान सभा के तीसरे अधिवेशन ने दक्षिण कोरिया के युवकों, छात्रों और जनता के साथ देशभक्तिपूर्ण समर्थन और एकता प्रदर्शित की और अपील की कि राष्ट्रव्यापी स्तर पर संयुक्त अमरीकी विरोधी, जापान विरोधी राष्ट्रीय मुक्ति मोर्चा अविलम्ब बनाया जाय ।

और जन विधान सभा के अधिवेशन ने उत्तर और दक्षिण में राष्ट्रीय मेल-मिलाप के टूटे हुये रिश्ते जोड़ने के लिये, आर्थिक आदान-प्रदान शुरू करने के लिये और बड़ी मात्रा में सामान भेजने के लिये ठोस सुझाव रखे ।

चार करोड़ कोरियाई जनता के महान नेता कामरेड किम इल सुंग की विवेकसंगत संघर्ष नीति और गहन सहानुभूति से अनन्त प्रोत्साहन प्राप्त कर, दक्षिण कोरिया के युवकों, छात्रों और जनता ने शत्रु के कठोर दमन का सामना करते हुये अमरीकी साम्राज्यवादियों और उनके गुर्गों पर जोरदार प्रहार करते हुए, ७० से भी अधिक

दिन तक वीरतापूर्ण संघर्ष चलाया ।

कामरेड किम इल सुंग ने दक्षिण कोरिया की जनता को अपनी संघर्ष भावना निरन्तर बढ़ा कर तथा एक और नया युद्ध छेड़ने, तथा दक्षिण वियतनाम में सेना भेजने के अमरीकी साम्राज्यवादी कुचक्र को मटियामेट करने, अपने देश में अत्याचारी सैनिक फासिस्त शासन को खत्म करने, जनवादी अधिकार और स्वतंत्रता अर्जित करने की दिशा स्पष्ट रूप से बतायी ।

उन्होंने सिखाया कि दक्षिण कोरिया में क्रांति की प्रमुख शक्ति को, यानी उन बुनियादी वर्गों को जिन्हें क्रांति के लिये लामबन्द किया जा सकता है और उन वर्गों में जड़ें जमाये हुये मार्क्सवादी-लेनिनवादी पार्टी को सबसे पहले सुदृढ़ बनाना चाहिये और संयुक्त मोर्चे के काम को मजबूत बनाना चाहिये, ताकि समस्त सामाजिक श्रेणियों की आम जनता को क्रान्ति के पक्ष में लाया जा सके ।

उन्होंने दक्षिण कोरिया की जनता को शत्रु के दमन से अपनी क्रान्तिकारी शक्तियों को बचा कर तथा साथ ही संघर्ष के दौरान उन शक्तियों को निरन्तर सुदृढ़ बनाते और विस्तृत करते हुये क्रान्ति की निर्णायक घड़ी के सक्रिय स्वागत की तैयारी में अपने प्रयास केन्द्रित करने के लिये प्रेरित किया और उन्होंने ऐसे रणनीति और कार्यनीति सम्बन्धी सिद्धान्तों की भी व्याख्या की, जिनका पालन करना क्रान्तिकारी शक्तियों की एकजुटता बढ़ाते हुये, क्रान्ति को सफल बनाने के लिये आवश्यक है ।

कामरेड किम इल सुंग ने कहा :

"विद्यमान मनोगत और वस्तुगत परिस्थितियों के अनुरूप संघर्ष के विभिन्न स्वरूपों को, जैसे राजनीतिक और आर्थिक संघर्ष, हिंसक और अहिंसक, कानूनी और गैर कानूनी संघर्ष, उचित रीति से, जोड़ कर क्रान्तिकारी आन्दोलन को विकसित किया जाना चाहिये ।

"दक्षिण कोरिया के क्रान्तिकारी संगठनों और क्रान्तिकारी लोगों का कर्तव्य है कि वे अमरीकी साम्राज्यवाद तथा उसके गुर्गों के विरुद्ध ठोस संघर्ष के जरिये क्रान्तिकारी शक्तियों को निरन्तर एकजुट और विस्तृत करते रहें ।"

दक्षिण कोरिया की क्रान्ति और देश के एकीकरण के लिये कामरेड किम इल सुंग ने रणनीति तथा कार्यनीति सम्बन्धी जो नीतियां प्रस्तुत कीं तथा जो कर्तव्य बताये, उनसे दक्षिण कोरिया की क्रान्ति की ऐसी परिस्थितियों में भी सबसे सही रास्ते पर आगे बढ़ने की सम्भावना पैदा हुई, जबकि अन्तर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट आन्दोलन में प्रकट होने वाले दक्षिणपंथी और वामपंथी अवसरवादियों ने भयानक ढंग से तिकड़में शुरू कर दी थीं ।

रणनीति और कार्यनीति सम्बन्धी इन नीतियों और कर्तव्यों ने दक्षिण कोरिया की जनता और वहां के क्रांतिकारियों के दिलों में तुरन्त जगह बना ली, उन्हें तेजी से एकताबद्ध किया और उन्हें तूफानी गति से अमरीका विरोधी राष्ट्रीय मुक्ति संघर्ष में, जिसमें सशस्त्र संघर्ष भी शामिल था, और भी अधिक सक्रिय किया ।

कामरेड किम इल सुंग के गहरे चिन्तन तथा विलक्षण रणनीति और कार्यनीति को इस बात का श्रेय प्राप्त है कि दक्षिण कोरिया की क्रांति और देश की एकता का लक्ष्य मुश्किलों को विजयपूर्वक लांघता गया और निरन्तर प्रगति करता रहा ।

कामरेड किम इल सुंग के सही नेतृत्व में जब हमारी जनता उत्तरी आधे भाग में समाजवादी निर्माण के लिये तथा देश के एकीकरण के लिये महान क्रान्तिकारी जोश के साथ लड़ रही थी, तब अमरीकी साम्राज्यवादियों की अगुआई में साम्राज्यवादी अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थिति में और अधिक तनाव पैदा कर रहे थे और जनगण के बढ़ते हुये क्रान्तिकारी आन्दोलन को अधिकाधिक बदहवास होकर कुचलने की कोशिश कर रहे थे ।

और समाजवादी शिविर तथा अन्तर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट आन्दोलन में अनेक पेचीदा सवाल उठ खड़े हुये ।

इस परिस्थिति ने विश्व क्रान्तिकारी आन्दोलन के विकास में रुकावटें पैदा कीं और हमारे देश में भी क्रांति तथा निर्माण को प्रभावित किया ।

कामरेड किम इल सुंग ने, जिन्होंने हमेशा हमारी क्रांति के लिये मार्ग प्रशस्त किया और जो अन्तर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट आन्दोलन और विश्व क्रान्ति के विकास के लिये पूरे जोश के साथ संघर्ष कर रहे हैं, अन्तर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट आन्दोलन के अन्दर उत्पन्न परिस्थिति और अवस्था का सही विश्लेषण किया और उन का सामना करने के लिये सकारात्मक और क्रान्तिकारी नीति तैयार की ।

अक्तूबर १९६६ में कामरेड किम इल सुंग ने कोरिया की वर्कर्स पार्टी का प्रतिनिधि सम्मेलन बुलाया ।

पार्टी के प्रतिनिधि सम्मेलन में प्रस्तुत **"वर्तमान परिस्थिति और हमारी पार्टी के कर्तव्य"** शीर्षक से अपनी रिपोर्ट में कामरेड किम इल सुंग ने वर्तमान अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थिति का व्यापक और सर्वांग वैज्ञानिक विश्लेषण किया तथा सही मार्क्सवादी-लेनिनवादी लेखा-जोखा दिया और वर्तमान स्थिति के अनुकूल, हमारे देश में क्रांति और निर्माण का काम तेजी से आगे बढ़ाने के लिये और अन्तर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट आन्दोलन तथा समूचे विश्व क्रान्तिकारी आन्दोलन की भी प्रगति के लिये हमारी पार्टी की आन्तरिक और वैदेशिक गतिविधियों की दिशा स्पष्ट की ।

उन्होंने स्पष्ट किया कि अमरीकी साम्राज्यवादियों की आक्रामक और युद्ध की आग सुलगाने की नीति को विफल करना विश्व क्रान्ति की बुनियादी रणनीति है ।

कामरेड किम इल सुंग ने सिखाया :

"आज विश्व क्रांति की बुनियादी रणनीति है अमरीकी साम्राज्यवाद के विरुद्ध मुख्य रूप से हमला करना ।"

उन्होंने बताया कि आज अमरीकी साम्राज्यवादियों की रणनीति यह है कि विभाजित या छोटे देशों को एक-एक कर के निगल लिया जाय, दूसरी ओर बड़े देशों के साथ सम्बन्ध बिगाड़ने से बचा जाय । यह बताते हुये कामरेड किम इल सुंग ने कहा:

"वर्तमान परिस्थिति में अमरीकी साम्राज्यवादियों पर दुनिया के हर हिस्से में, हर मोर्चे पर—एशिया, यूरोप, अफ्रीका, लैटिन अमरीका और सभी छोटे बड़े देशों को प्रहार करके उनकी शक्तियों को तितर बितर कर देना चाहिये और जहां कहीं भी वे पांव रखें, उनके हाथ पांव बांध देने चाहियें, ताकि वे मनमानी न कर सकें । सिर्फ इसी तरीके से ही हम अमरीकी साम्राज्यवादियों की रणनीति को सफलतापूर्वक नष्ट कर सकते हैं, जिनकी साजिश यह है कि इस या उस क्षेत्र या देश में अपनी शक्तियां केन्द्रित करके एक के बाद एक अन्तर्राष्ट्रीय क्रान्तिकारी शक्तियों को नष्ट कर दिया जाय, जिन में समाजवादी देश भी शामिल हैं ।"

इस बात पर जोर देते हुये कि अमरीकी साम्राज्यवाद के विरुद्ध सभी शक्तियों को केन्द्रित किया जाना चाहिये, उन्होंने अपनी रिपोर्ट में संयुक्त साम्राज्यवाद-विरोधी कार्यवाहियां करने तथा संयुक्त साम्राज्य-विरोधी मोर्चा बनाने की रणनीति सम्बन्धी दिशा प्रस्तुत की ।

कामरेड किम इल सुंग ने सिखाया :

"संयुक्त साम्राज्यवाद-विरोधी कार्यवाहियां उपलब्ध करना और संयुक्त साम्राज्य-विरोधी मोर्चा बनाना आज अन्तर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट आन्दोलन में सिद्धान्त का सब से उत्कट प्रश्न बना हुआ है । इसका सम्बन्ध इस बुनियादी प्रश्न से है कि आक्रमण और युद्ध की अमरीकी साम्राज्यवादी नीति को रोका जा सकता है या नहीं ? समाजवादी शिविर की रक्षा की जा सकती है या नहीं ? राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलन को तेजी से आगे बढ़ाया जा सकता है या नहीं ? और विश्वशांति और सुरक्षा को बचाया जा सकता है या नहीं ?"

कामरेड किम इल सुंग द्वारा प्रस्तुत विश्व क्रान्ति की बुनियादी रणनीति तथा संयुक्त साम्राज्य-विरोधी कार्यवाही उपलब्ध करना और संयुक्त साम्राज्य-विरोधी मोर्चा बनाने की रणनीतिक दिशा ने सबसे सही मार्ग को आलोकित किया, जिस पर चल कर वर्तमान
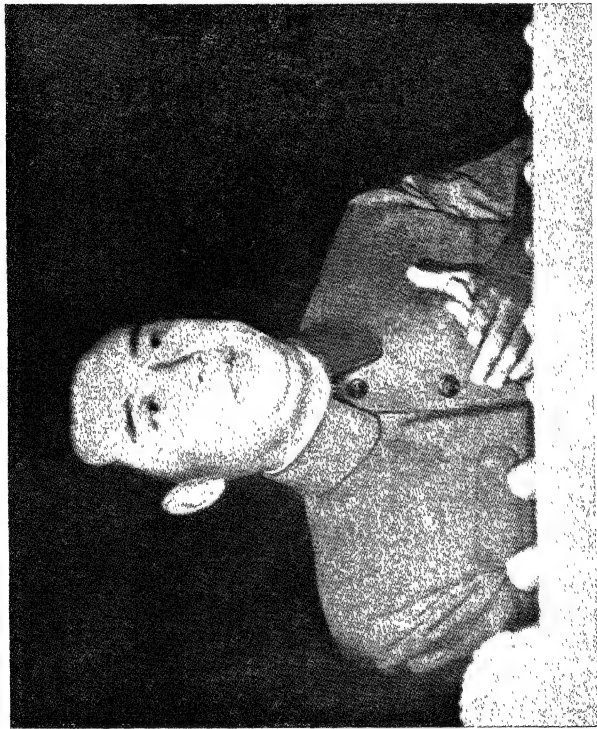
कामरेड किम इल सुंग कोरिया की मजदूर पार्टी के सम्मेलन में रिपोर्ट पेश कर रहे हैं।

समय की पेचीदा परिस्थिति पर विजय पाई जा सकती है और विश्व क्रान्ति को पूरे जोश के साथ आगे बढ़ाया जा सकता है ।

अपनी रिपोर्ट में उन्होंने हमारी पार्टी के उस साम्राज्य-विरोधी, सर्वहारा अन्तर्राष्ट्रीयतावादी रुख को दुहराया, जिसका उद्देश्य है अमरीकी साम्राज्य के विरुद्ध और साथ ही उसके मित्र जापानी और पश्चिम जर्मन सैन्यवाद के विरुद्ध लड़ना, वियतनामी जनता को टोस सहायता पहुंचाना, जो अमरीकी साम्राज्यवाद के विरुद्ध वीरतापूर्वक लड़ रही है, क्यूबा की क्रान्ति की रक्षा करना और मदद करना तथा एशिया, अफ्रीका और लैटिन अमरीका के जनगण के साम्राज्य-विरोधी, उपनिवेशवाद-विरोधी संघर्ष की तथा पूंजीवादी देशों के मजदूर वर्ग के क्रान्तिकारी संघर्ष की सक्रिय सहायता करना ।

कामरेड किम इल सुंग ने दक्षिण तथा वामपंथी अवसरवाद के सच्चे चरित्र और उससे होने वाली क्षति का गहन विश्लेषण किया, उन दोनों भटकावों के विरुद्ध दोनों मोर्चों पर सक्रिय रूप से लड़ने के लिये क्रान्तिकारी रुख का स्पष्टीकरण किया और सबसे सही तौर तरीका बताया, जिसके आधार पर दक्षिणपंथी तथा वामपंथी अवसरवाद पर विजय पायी जा सकती है और समाज़वादी शिविर तथा अन्तर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट आन्दोलन की एकता और एकरूपता पुनर्स्थापित की जा सकती है ।

उन्होंने सिखाया कि सिर्फ दक्षिण और वामपंथी अवसरवाद पर विजय प्राप्त करके और मार्क्सवाद-लेनिनवाद की शुद्धता की रक्षा करके ही समाजवादी शिविर और अन्तर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट आन्दोलन की एकता कायम की जा सकती है । और उन्होंने सिखाया कि दक्षिण तथा वामपंथी अवसरवाद के विरुद्ध संघर्ष समाजवादी शिविर की एकता और अन्तर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट आन्दोलन की एकरूपता के संघर्ष से जुड़ा हुआ है । उन्होंने लड़ते हुये एकता के सूत्र में बंधने और एकता में बंधते हुये लड़ने के सिद्धान्त का स्पष्टीकरण किया ।

कामरेड किम इल सुंग ने कहा :

"हमें अवसरवाद के विरुद्ध लड़ने के लिये एकजुटता को ठुकराने की वामपंथी गलती नहीं करनी चाहिये । इसी प्रकार एकजुटता की रक्षा में अवसरवाद के विरुद्ध संघर्ष को छोड़ने की दक्षिणपंथी गलती नहीं करनी चाहिये ।"

उन्होंने खास तौर से यह सिखाया कि समाजवादी शिविर एक मिलीजुली इकाई है, जो समान राजनीतिक और आर्थिक आधार पर एकताबद्ध है और समाजवादी तथा साम्यवादी निर्माण के एक ही लक्ष्य से आपस में बंधी हुई है । और उन्होंने बताया कि इसे कोई अपनी मर्जी से मिटा नहीं सकता, न इस शिविर में कोई भगोड़ों को शामिल

कर सकता है, न अपनी इच्छा के अनुसार किसी देश को शिविर से बाहर रखा सकता है, और उन्होंने सिखाया कि बिरादराना पार्टियों का फर्ज है कि वे पूरे समाजवादी शिविर की रक्षा के लिये लड़ें। उसी के साथ उन्होंने यह भी सिखाया कि बिरादराना पार्टियों के बीच जो पेचीदा सवाल उठ खड़े हुये हैं, वे समाजवादी शिविर तथा अन्तर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट आन्दोलन के आन्तरिक प्रश्न हैं। अतः एकता की इच्छा से प्रेरित वैचारिक संघर्ष के जरिये ही उन सवालों को हल किया जाना चाहिये।

आगे यह बताते हुये कि अवसरवाद पर विजय पाने के लिये अमली क्रांतिकारी संघर्ष भी चलाना होगा और वैचारिक संघर्ष भी, उन्होंने सिखाया कि संयुक्त साम्राज्य-विरोधी मोर्चा तथा संयुक्त साम्राज्य-विरोधी कार्यवाही—दोनों को उपलब्ध करना होगा।

कामरेड किम इल सुंग ने सिखाया कि सभी देशों की कम्युनिस्ट तथा मजदूर पार्टियों को अपनी स्वतंत्रता बनाये रखनी चाहिये।

उन्होंने सिखाया कि जब हर पार्टी स्वाधीन होगी, तभी वह अपने देश में क्रांति को सफल बना सकती है। और विश्व क्रांति में भी योगदान कर सकती है और तभी बिराद-राना पार्टियों की एकता और सहयोग सही अर्थों में स्वेच्छानुसार ठोस और साथियों जैसा हो सकता है।

खास तौर से उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि स्वाधीनता बनाये रखने के लिये जी हजूरी और महान राष्ट्र दम्भ को ठुकराना चाहिए और हर परिस्थिति में मार्क्सवाद-लेनिनवाद के प्रति आस्था को अडिग बनाये रखना चाहिये।

कामरेड किम इल सुंग ने कहा :

"कम्युनिस्ट क्रांति में इसलिये नहीं जुटे हैं कि उन्हें किसी ने हुक्म दिया है या किसी की कृपा प्राप्त करनी है। कम्युनिस्ट इसलिये क्रांति करते हैं कि अपने अपने देशों के मजदूर वर्ग और मेहनतकश जनता की मुक्ति और अंतर्राष्ट्रीय मजदूर वर्ग के महान लक्ष्यों की उपलब्धि के लिये मार्क्सवाद-लेनिनवाद में उनकी अपनी आस्था है, अपनी आस्थाओं पर टिके रहना तथा उनके लिये अडिग भाव से लड़ना कम्युनिस्टों की महान उदात्त विशेषता है।"

उस रिपोर्ट के दूसरे भाग में कामरेड किम इल सुंग ने उत्तरी आधे भाग के क्रांतिकारी अड्डे को राजनीतिक, आर्थिक तथा सैनिक दृष्टि से और अधिक सुदृढ़ करने के संबंध में रणनीतिक दिशा प्रस्तुत की, जो कि हमारी क्रांति की विजय की पक्की गारण्टी है।

कामरेड किम इल सुंग ने सब से पहले आर्थिक निर्माण और प्रतिरक्षा निर्माण को समानान्तर रूप से बढ़ाने की रणनीतिक दिशा को पार्टी की अडिग नीति के रूप में निर्धारित किया और कहा :

"आज हमारे क्रांतिकारी संघर्ष और रचनात्मक निर्माण कार्य में सर्वोच्च महत्व की बात है कि हम समाजवादी निर्माण के समस्त कार्य को वर्तमान परिस्थितियों की आवश्यकताओं के अनुरूप पुनर्गठित करें और खास तौर से अर्थ-व्यवस्था और प्रतिरक्षा को समानान्तर रूप से विकसित करें, ताकि प्रतिरक्षा क्षमता इतनी बढ़ जाय कि हम शत्रु की आक्रामक चालों का सामना कर सकें।"

यह क्रांतिकारी दिशा ही एकमात्र क्रांतिकारी दिशा है, जिस के अनुसार युद्ध के खतरे का पूरी तरह ध्यान रखते हुये, जिसको साम्राज्यवादी कभी भी छेड़ सकते हैं, प्रतिरक्षा क्षमताओं को सुदृढ़ करने, आर्थिक नींवों को मजबूत करने तथा जनता के जीवन-स्तर को सुधारने से संबंधित सारे काम एक साथ पूरे किये जा सकते हैं। और वह भी इस दृढ़ विश्वास के साथ कि अमरीकी साम्राज्यवादियों की अगुआई में साम्राज्यवादियों द्वारा भड़काये गये आक्रामक युद्ध से हमारे आर्थिक निर्माण में कुछ देरी हो सकती है, किन्तु समाजवाद और साम्यवाद की ओर हमारी प्रगति कभी नहीं रुक सकती।

कामरेड किम इल सुंग द्वारा प्रस्तुत इस क्रांतिकारी दिशा ने सबसे क्रांतिकारी मार्क्स-वादी-लेनिनवादी रुख और दृष्टिकोण को स्पष्ट कर दिया, जो साम्राज्यवाद के प्रति रवैये में दक्षिण तथा वामपंथी भटकावों का और युद्ध का विरोधी है, जिसे साम्राज्यवाद कभी भी छेड़ सकता है। और जो साम्राज्यवादी आक्रमण का सामना करने में भी सक्षम है, तथा उन्होंने इस बुनियादी प्रश्न का वैज्ञानिक उत्तर दिया कि साम्राज्यवाद के बने रहने की स्थिति में क्रांति और निर्माण की कैसे रक्षा की जा सकती है और कैसे उसे आगे बढ़ाया जा सकता है।

उत्तरी आधे भाग में क्रांतिकारी अड्डे को और अधिक सुदृढ़ करने के लिये राजनीतिक तथा सैद्धांतिक दृष्टि से सुदृढ़ क्रांतिकारी पांत बनाने से संबंधित कर्तव्य प्रस्तुत करते हुये कामरेड किम इल सुंग ने अपनी रिपोर्ट में आम जनता की राजनीतिक तथा विचारधारात्मक एकता को वर्ग संघर्ष के साथ सही ढंग से संयुक्त करने की रचनात्मक कार्यनीति भी स्पष्ट की।

कामरेड किम इल सुंग द्वारा प्रस्तुत यह दिशा उस बुनियादी प्रेरक शक्ति के वैज्ञानिक विश्लेषण पर आधारित है, जो समाजवादी समाज के विकास को और समाजवाद के अंतर्गत वर्ग संघर्ष की विशेषताओं को आगे बढ़ाने वाली मूल प्रेरक शक्ति होती है।

उन्होंने यह स्पष्ट कर दिया कि समाजवादी समाज में जहां शोषक वर्गों का सफाया हो चुका है, मजदूर वर्ग, सहकारी किसानों और श्रमजीवी बुद्धिजीवियों की एकता और सहयोग सामाजिक संबंधों का आधार बनाते हैं, और मजदूर-किसान मैत्री पर आधारित

आम जनता की राजनीतिक और विचारधारात्मक एकता तथा पार्टी के नेतृत्व में समाजवाद और साम्यवाद के निर्माण से संबंधित उनकी समान महत्वाकांक्षायें और उत्साह ऐसी मौलिक प्रेरक शक्ति बनते हैं, जो समाजवादी समाज के विकास को आगे बढ़ाते हैं और समाजवादी निर्माण की गति को तीव्र करने में निर्णायक तत्व बनते हैं।

साथ ही उन्होंने व्याख्या की कि समाजवाद के अंतर्गत भी वर्ग संघर्ष चलता रहता है। और उन्होंने दो तत्वों, वर्ग संघर्ष और आम जनता की राजनीतिक तथा विचारधारात्मक एकता, के उचित समन्वय पर जोर दिया।

कामरेड किम इल सुंग ने कहा :

"यदि कोई सिर्फ वर्ग संघर्ष पर जोर देता है, उसका महत्व बढ़ा चढ़ा कर बताता है और यह भूल जाता है कि समाज के अंतर्गत मजदूर वर्ग, किसान और बुद्धि-जीवी की मैत्री सामाजिक संबंधों का आधार बनती है तो ऐसा व्यक्ति वामपंथी भूल करता है।..... इसके विपरीत यदि किसी को सिर्फ आम जनता की राजनीतिक और सैद्धांतिक एकता ही दिखायी पड़ती है और वह उसे अपने आप में पूर्ण समझता है और यह तथ्य भूल जाता है कि समाजवाद के अन्तर्गत भी विरोधी तत्व पाये जाते हैं, पुराने वैचारिक अवशेष बने रहते हैं और वर्ग संघर्ष जारी रहता है, तो ऐसा व्यक्ति दक्षिणपंथी भटकाव का शिकार होता है।"

कामरेड किम इल सुंग की यह शिक्षा साफ साफ बताती है कि मुट्ठीभर शत्रु तत्वों को पूर्णतया दबा देना और अकेला कर देना, आम जनता को शिक्षित और दीक्षित करना और उन दक्षिणपंथी भटकावों का, जो या तो आम जनता की राजनीतिक तथा वैचारिक एकता पर ही जोर देने और उसे पूर्ण मानने में व्यक्त होते हैं या केवल वर्ग संघर्ष पर जोर देने के रूप में अभिव्यक्त होते हैं, दो टूक विरोध करने और जनता की राजनीतिक-वैचारिक एकता को वर्ग संघर्ष के साथ उचित रूप से संयुक्त करने के आधार पर जनता को पार्टी के गिर्द दृढ़ता से एकजुट करना क्रांति और निर्माण को तीव्र बनाने का सबसे सही मार्ग है।

अपनी रिपोर्ट में कामरेड किम इल सुंग ने समाजवाद और साम्यवाद के निर्माण के वर्ग सार और अन्तर्वस्तु का वैज्ञानिक विश्लेषण किया और पूरे समाज के क्रांतिकारीकरण तथा उसके मजदूर वर्गीकरण की सृजनात्मक नीति प्रस्तुत की।

उन्होंने सिखाया कि समूचे समाज का क्रांतिकारीकरण और मजदूर-वर्गीकरण करने के लिये आवश्यक है कि मजदूर वर्ग की नेतृत्वकारी भूमिका बढ़ायी जाय, उसका क्रांतिकारी प्रभाव बढ़ाया जाय, उसकी विचारधारा, संगठन और संस्कृति आगे बढ़ायी जाय, उसकी पांतों में और घनिष्ठ एकता पैदा की जाय और इस प्रकार मजदूर वर्ग को और

अधिक क्रांतिकारी और सुसंस्कृत वर्ग तथा नेतृत्वकारी वर्ग के रूप में अपनी भूमिका अदा करने योग्य बनाया जाय।

उन्होंने जोर दिया कि किसान जनता को, जिसका पूरे समाज के क्रांतिकारीकरण में महत्वपूर्ण स्थान है, क्रांतिकारी बनाने तथा उस के मजदूर-वर्गीकरण के लिये जरूरी है कि ग्रामीण क्षेत्रों में तकनीकी, सांस्कृतिक तथा सैद्धांतिक क्रांतियां तेजी से आगे बढ़ायी जायें, मजदूर वर्ग की पार्टी और राज्य द्वारा गांवों की सहायता और रहनुमाई को निरन्तर सुदृढ़ किया जाय और सहकारी सम्पत्ति को समस्त जनता की सम्पत्ति के निकट लाया जाय, साथ ही सम्पत्ति के इन दो स्वरूपों को एक दूसरे के अभिन्न अंग के रूप में विकसित किया जाय।

कामरेड किम इल सुंग ने बुद्धिजीवियों के क्रांतिकारीकरण पर गहरा ध्यान दिया। बुद्धिजीवियों का क्रांतिकारीकरण तथा मजदूर वर्गीयकरण करने से संबंधित कामरेड किम इल सुंगकी नीति का स्रोत यह है कि बुद्धिजीवियों का बहुत ध्यान रखते हैं और उन में आस्था रखते हैं, उन्होंने मुक्ति के बाद से ही हमारे देश के बुद्धिजीवियों की राष्ट्रीय तथा जनवादी क्रांतिकारी भावना में विश्वास करते हुये उन्हें स्पष्टतः गले लगाया, शिक्षित किया और बहुत ही सही मार्ग पर उनका नेतृत्व किया, ताकि वे मजदूर वर्ग के क्रांतिकारी लक्ष्य की वफादारी के साथ सेवा कर सकें।

बुद्धिजीवियों को क्रांतिकारी बनाने से संबंधित उनकी नीति सही अर्थों में मार्क्सवादी-लेनिनवादी और क्रांतिकारी नीति है, जो उस दक्षिणपंथी भटकाव से बचाती है, जो पुराने विचारधारा के अवशेषों के खतरों को देखने में और बुद्धिजीवियों को क्रांतिकारी ढंग से शिक्षित करने में असफल रहता है, और दूसरी ओर उस वामपंथी भटकाव से बचाती है जिसमें बुद्धिजीवियों पर संदेह करने और उन्हें ठुकराने की प्रवृत्ति पायी जाती है और बुद्धिजीवियों के दिमागों में पुराने विचारों के अवशेष मौजूद होने के खतरे को बढ़ा चढ़ा कर देखा जाता है।

कामरेड किम इल सुंग ने मेहनतकश जनता में राजनीतिक और विचारधारात्मक कार्य को तीव्र करने का ठोस कर्तव्य बताया, ताकि पूरे समाज के क्रांतिकारीकरण और मजदूर-वर्गीकरण करने तथा क्रांतिकारी पांतों को सुदृढ़ बनाने की प्रक्रिया तीव्र की जा सके।

विशेषतः इस प्रसंग में उन्होंने सिखाया कि पार्टी नीतियों तथा क्रांतिकारी परंपराओं में शिक्षा देने की प्रक्रिया को सुदृढ़ करना चाहिये और कम्युनिस्ट शिक्षा-जिसकी मुख्य अन्तर्वस्तु है वर्ग शिक्षा-को सुदृढ़ करने और समाजवादी देशभक्ति में शिक्षा को गहन बनाना चाहिये।

कामरेड किम इल सुंग ने समाज के सभी सदस्यों के क्रांतिकारीकरण तथा मजदूर वर्गीकरण करने की सृजनात्मक नीति को स्पष्ट किया और इस प्रकार समाजवाद और साम्यवाद के निर्माण के दौरान मजदूर वर्ग के नेतृत्व को दृढ़ता से कायम रखने की ऐतिहासिक आवश्यकता की स्पष्ट व्याख्या की, और पहली बार उस मार्ग का स्पष्टीकरण किया, जिस पर चल कर वर्गों का उन्मूलन हो सकता है तथा वर्गहीन समाज की ओर संक्रमण सुव्यवस्थित तथा वैज्ञानिक ढंग से किया जा सकता है।

कामरेड किम इल सुंग ने सर्वहारा अधिनायकत्व के ऐतिहासिक मिशन और उसके क्रिया कलाप की नयी, सर्वांगीण परिभाषा दी।

कामरेड किम इल सुंग ने बताया :

"सर्वहारा के अधिनायकत्व का ऐतिहासिक मिशन केवल इसी बात तक सीमित नहीं कि शोषक वर्गों का उन्मूलन कर दिया जाय और उनके प्रतिरोध को समाप्त कर दिया जाय, बल्कि उसकी चरितार्थता इसमें है कि समस्त मेहनतकश जनता को दीक्षित करके उनका मजदूर-वर्गीकरण किया जाय और इस प्रकार सभी वर्ग विभेदों को धीरे धीरे समाप्त किया जाय। हमारे समाज में जहां शोषक वर्गों का सफाया हो चुका है और समाजवादी व्यवस्था विजयी हो चुकी है, सर्वहारा के अधिनायकत्व का एक महत्वपूर्ण कर्तव्य यह है कि मेहनतकश जनता को शिक्षित और दीक्षित किया जाय और समस्त समाज के मजदूर-वर्गीकरण करने का काम पूरा किया जाय।"

कामरेड किम इल सुंग ने उसकी व्यवस्था की कि एकता और एकजुटता के उद्देश्य से मजदूरों, किसानों और श्रमजीवी बुद्धिजीवियों का क्रांतिकारीकरण और मजदूर-वर्गीकरण करना समाजवाद के अंतर्गत वर्ग संघर्ष का एक बुनियादी स्वरूप है।

अपनी अगली कृतियों में समाजवाद के अंतर्गत वर्ग संघर्ष के स्वरूपों का उल्लेख करते हुये कामरेड किम इल सुंग ने सिखाया :

"समाजवादी समाज में वर्ग संघर्ष का एक स्वरूप यह है कि देश के भीतर और शत्रु पर अधिनायकत्व स्थापित किया जाय और उसी के साथ वर्ग संघर्ष का बुनियादी स्वरूप है मजदूरों, किसानों और श्रमजीवी बुद्धिजीवियों की एकता और एकरूपता के लक्ष्य को ध्यान में रख कर सहयोग की पद्धति से उन्हें क्रांतिकारी बनाना और उनका पुनर्संस्कार करना।"

इसी से आगे बढ़ कर उन्होंने सिखाया कि हालांकि समाजवाद के अंतर्गत सर्वहारा के अधिनायकत्व को वर्ग संघर्ष और अधिनायकत्व अपने ऐतिहासिक मिशन के अनुकूल मुट्ठीभर विरोधी तत्वों के विरुद्ध चलाना चाहिये, फिर भी मेहनतकश जनता के क्रांतिकारी-

करण और मजदूर-वर्गीकरण के उद्देश्य से उसके दिमागों में जमे पुराने व्यर्थ विचारों के अवशेषों के विरुद्ध संघर्ष केवल समझा बुझा कर तथा शिक्षा द्वारा ही चलाया जाना चाहिये, क्योंकि यह मेहनतकश जनता का ऐसा अन्दरूनी मामला है, जो समान आदर्श की पूर्ति के लिये कंधे से कंधा मिला कर आगे बढ़ती है, और वह ऐसा कर्तव्य है, जिसका समस्त मेहनतकश जनता को शिक्षित करने तथा उसका पुनर्संस्कार करने और उसे कम्युनिस्ट समाज तक पहुंचाने का उद्देश्य है।

कामरेड किम इल सुंग के विचार ने, जिसने सर्वहारा-अधिनायकत्व के ऐतिहासिक मिशन तथा समाजवाद के अंतर्गत वर्ग संघर्ष की विशेषताओं की नयी सर्वतोमुखी परिभाषा दी, मेहनतकश जनता के दिमागों से पुराने वैचारिक अवशेषों को दूर करने तथा उनका कम्युनिस्ट रीति-नीति के अनुरूप शिक्षण और पुनर्संस्कार करने, और साथ ही, पुराने विचारों के अवशेषों के खतरे को नजरअन्दाज करके और उनके विरुद्ध संघर्ष की अवहेलना करके सर्वहारा अधिनायकत्व की भूमिका को कमजोर करने के दक्षिणपंथी भटकाव के विरुद्ध तथा पुराने विचारों के अवशेषों के खतरे को बुरी तरह बढ़ा चढ़ा कर उनके विरुद्ध संघर्ष को शत्रु तत्वों के दमन के संघर्ष से एक बना कर वामपंथी भटकाव पैदा करने के विरुद्ध जागरूक बनाने का सब से सही और विवेकपूर्ण मार्ग बताया।

दक्षिण कोरिया की मौजूदा परिस्थितियों के गहन वैज्ञानिक विश्लेषण के आधार पर कामरेड किम इल सुंग ने एक बार फिर दक्षिण कोरिया की क्रांति के विकास के लिये और देश के एकीकरण के लिये बुनियादी नीति और ठोस जुझारू कर्तव्य प्रस्तुत किये।

कामरेड किम इल सुंग की रिपोर्ट **"वर्तमान परिस्थिति और हमारी पार्टी के कर्तव्य"** केवल ऐसा कार्यक्रम संबंधी दस्तावेज ही नहीं है, जो कोरिया की क्रांति के मार्ग को आलोकित करता है, बल्कि वह एक क्लासिक दस्तावेज है, जो मौजूदा दौर में मार्क्सवाद-लेनिनवाद को और विकसित करता है तथा अंतर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट आन्दोलन में तथा विश्व क्रांति के विकास में महान योगदान देता है।

कामरेड किम इल सुंग की रिपोर्ट **"वर्तमान परिस्थिति और हमारी पार्टी के कर्तव्य"** को सारी दुनिया के कम्युनिस्टों और क्रांतिकारियों का पूर्ण समर्थन और सहानुभूति प्राप्त हुई।

पार्टी के प्रतिनिधि सम्मेलन में कामरेड किम इल सुंग ने समस्त पार्टी की एकमत इच्छा से पार्टी की केन्द्रीय कमेटी के महा मंत्री की भारी जिम्मेदारी को फिर से संभाला।

मई, १९६७ में कामरेड किम इल सुंग ने एक अमर कृति प्रकाशित की। पुस्तक का

नाम है : **"पूंजीवाद से समाजवाद तक संक्रमण काल के तथा सर्बहारा अधिनायकत्व के प्रश्न।"**

अपनी इस कृति में उन्होंने जुछे की नीति पर जमे रह कर संक्रमण काल के प्रश्न पर मार्क्सवाद-लेनिनवाद के संस्थापकों की स्थापनाओं को उनके काल की ऐतिहासिक परिस्थितियों से तथा जिन मूल आधारों पर उन्होंने काम शुरू किया था, उनसे जोड़ते हुये उनका गहनता के साथ ' किया, उन्हें आज के ठोस यथार्थ पर ' ढंग से लागू किया तथा विकसित किया और इस प्रकार सभी तरह के दक्षिणपंथी और वामपंथी भटकावों पर विजय पाते हुये, प्रस्तुत प्रश्न पर पहली बार एक अत्यन्त वैज्ञानिक और सर्वतोमुखी सुस्पष्ट व्याख्या दी।

कामरेड किम इल सुंग ने कहा :

"क्लासिक मार्क्सवादी-लेनिनवादी ग्रंथों में संक्रमण काल तथा सर्बहारा के अधिनायकत्व के प्रश्नों पर जो परिभाषा दी गयी है, वह तत्कालीन-ऐतिहासिक परिस्थितियों में और, जिन मूल आधारों पर उन्होंने काम शुरू किया था, उनके अनुसार बिलकुल सही थी।

"लेकिन हमारा वर्तमान यथार्थ यह मांग करता है कि हम उन्हें रचनात्मक दृष्टि से विकसित करें, न कि सतही ढंग से उन्हें लागू कर दें। हमने ऐसी परिस्थितियों में समाजवादी क्रांति की, जहां हमें विरासत में औपनिवेशिक देश की बहुत ही पिछड़ी हुई उत्पादक शक्तियां मिलीं और हम ऐसी परिस्थितियों में समाजवाद की रचना कर रहे हैं, जब कि पूंजीवाद अब भी संसार में एक काफी बड़ी शक्ति के रूप में कायम है।

"हमें अपने इन्हीं विशिष्ट यथार्थ स्थितियों को ध्यान में रखना चाहिये, ताकि हम संक्रमण काल तथा सर्बहारा अधिनायकत्व की समस्याओं का सही हल निकाल सकें। इस बात को ध्यान में रख कर मैं यह कहना अतिरंजना मानता हूं कि हमारे देश में संक्रमण काल साम्यवाद के उच्चतर दौर तक पहुंचता है, मैं यह कहना ठीक समझता हूं कि यह काल समाजवाद तक पहुंचता है। लेकिन यह मानना भी गलत है कि जैसे ही समाजवादी क्रांति विजयी हुई, तथा समाजवादी व्यवस्था स्थापित हुई, संक्रमण काल समाप्त हो जायेगा।"

समाजवाद की पूर्ण विजय तक के संक्रमण काल की परिभाषा करते हुये कामरेड किम इल सुंग ने हमें सिखाया कि जब हम समाजवादी निर्माण को आगे बढ़ा लेंगे, और भूतपूर्व मध्यम वर्गों को क्रांति के पक्ष में कर लेंगे, तथा जब हम मजदूर वर्ग और किसानों के बीच का अन्तर मिटा देंगे और वर्ग-हीन समाज का निर्माण कर लेंगे, तब हम यह कहने योग्य होंगे कि पूंजीवाद से समाजवाद की ओर संक्रमण काल पूरा हो गया।

कामरेड किम इल सुंग : लेखन में व्यस्त

आगे यह बताते हुये कि चाहे संक्रमण काल समाप्त भी हो जाय और वर्गहीन समाज बन भी जाय, फिर भी साम्यवाद का उच्चतर दौर उसके तुरन्त बाद नहीं आ जाता, उन्होंने स्पष्ट किया कि संक्रमण काल की समाप्ति के बाद भी क्रांति और निर्माण कार्य जारी रहने चाहियें, ताकि साम्यवाद के उच्चतर दौर में प्रवेश किया जा सके।

संक्रमण काल संबंधी कामरेड किम इल सुंग का विचार और सिद्धांत वैज्ञानिक साम्यवाद के सिद्धांत के विकास में एक और अमर उपलब्धि है।

साथ ही उनकी कृति में सर्वहारा के अधिनायकत्व की समस्या की नयी और सर्वतोमुखी व्याख्या भी मिलती है।

संक्रमण काल तथा सर्वहारा अधिनायकत्व की मूल स्थापनाओं की वैज्ञानिक व्याख्या के आधार पर कामरेड किम इल सुंग ने यह स्पष्ट किया कि संक्रमण काल और सर्वहारा का अधिनायकत्व अपनी अवधियों में सौ फी सदी एक दूसरे के अनुरूप नहीं होंगे और यदि संक्रमण काल समाप्त भी हो जाय तो सर्वहारा का अधिनायकत्व तब तक चलता रहेगा, जब तक मजदूर वर्ग का क्रांतिकारी संघर्ष जारी रहेगा।

कामरेड किम इल सुंग ने कहा :

"यदि हमारे देश में वर्ग हीन समाज बन जाता है और समाजवाद पूर्ण रूप से विजयी हो जाता है, यानी यदि संक्रमण काल के कर्तव्य पूरे हो जाते हैं, तो क्या सर्वहारा अधिनायकत्व की जरूरत नहीं रह जायेगी? हम ऐसा कभी नहीं कह सकते। संक्रमण काल पूरा हो जाने के बाद भी सर्वहारा अधिनायकत्व साम्यवाद के उच्चतर दौर तक जारी रखना चाहिये, पूरे संक्रमण काल में उसे बनाये रखने की जरूरत तो स्पष्ट ही है।"

कामरेड किम इल सुंग ने यह भी सिद्ध किया कि यदि एक देश में साम्यवाद का उच्चतर दौर उपलब्ध भी हो जाता है, तब भी जब तक कि संसारव्यापी पैमाने पर क्रांति नहीं पूरी हो जाती, तब तक की परिस्थितियों में सर्वहारा अधिनायकत्व की जरूरत बनी रहेगी।

कामरेड किम इल सुंग का यह विचार कि मजदूर वर्ग को चाहिए कि वह तब तक सर्वहारा के अधिनायकत्व को मजबूती से कायम रखे, जब तक उसका क्रांतिकारी लक्ष्य पूरा नहीं हो जाता, आज की उन सभी तरह की अवसरवादी प्रवृत्तियों के विरुद्ध निर्णायक चोट है, जो सर्वहारा के अधिनायकत्व को ठुकराती है, समाजवादी राज्य के वर्ग-चरित्र से इनकार करती है और राज्य के विलीन हो जाने का शोर करती हैं।

"पूंजीवाद से समाजवाद तक संक्रमण काल के तथा सर्वहारा अधिनायकत्व के प्रश्न" नामक कामरेड किम इल सुंग की कृति अंतर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट आन्दोलन तथा वैज्ञानिक

साम्यवाद के सिद्धांत के विकास में एक महान योगदान है, वह एक ऐसी क्लासिक कृति है, जिस ने वर्ग संघर्ष से संबंधित सिद्धांत को सर्वांग-संपन्न बना दिया।

कामरेड किम इल सुंग ने, जिन्हें विश्व क्रांति के विकास के विषय में सदा गहरी चिंता रही है, अगस्त, १९६७ में एक पुस्तक लिखी, जिसका शीर्षक है, **"आओ, हम साम्राज्यवाद विरोधी, अमरीका-विरोधी संघर्ष तेज करें"**। अक्तूबर, १९६८ में उन्होंने एक कृति तैयार की जिसका शीर्षक है, **"एशिया, अफ्रीका, लैटिन अमरीका के जनगण का महान साम्राज्य-विरोधी क्रांतिकारी लक्ष्य अजेय है"**, और इस प्रकार उन्होंने उन जनगण को प्रोत्साहित किया, जो साम्राज्यवाद की औपनिवेशिक दास-व्यवस्था को हमेशा के लिये मिटा देने पर तुल गये हैं।

इन कृतियों में उन्होंने साम्राज्य-विरोधी, उपनिवेशवाद-विरोधी संघर्ष में संसार के क्रांतिकारी जनगण के अनुभवों का सार-संक्षेप प्रस्तुत किया और उसके आधार पर, उपनिवेशों में साम्राज्य-विरोधी, अमरीका विरोधी तथा राष्ट्रीय मुक्ति संघर्ष को तीव्र करने के लिये, एक बार फिर क्रान्तिकारी तथा वैज्ञानिक रणनीतिक और कार्यनीतिक दिशाओं को स्पष्ट किया।

इन कृतियों में कामरेड किम इल सुंग ने तीनों महाद्वीपों के जनगण के साम्राज्य-विरोधी, उपनिवेशवाद-विरोधी संघर्ष के विश्वव्यापी ऐतिहासिक महत्व और उसकी भूमिका का नितान्त सही विश्लेषण किया है। **"आओ, हम साम्राज्यविरोधी, अमरीका-विरोधी संघर्ष को तीव्र करें"** नामक कृति में यह बताया गया है कि एशिया, अफ्रीका तथा लैटिन अमरीका के जनगण का साम्राज्य-विरोधी, उपनिवेशवाद-विरोधी संघर्ष अपने आपको मुक्त करने का पवित्र संघर्ष है, साथ ही यह विश्व साम्राज्यवाद के जीवन स्रोत को नष्ट कर देने का भी महान संघर्ष है और यह संघर्ष तथा अंतर्राष्ट्रीय मजदूर वर्ग का क्रांतिकारी संघर्ष हमारे युग की दो प्रमुख क्रांतिकारी शक्तियां हैं।

उन्होंने बताया कि साम्राज्यवादी शक्तियां गुलाम जनगण को उपहार में स्वतंत्रता भेंट कर देंगी, यह भ्रम तोड़ देना चाहिये और समझाया कि दमित जनगण सिर्फ संघर्ष के जरिये ही अपने को मुक्त कर सकते हैं। तब उन्होंने साम्राज्यवाद के विरुद्ध संघर्ष से डरने या बचने की सभी प्रवृत्तियों की निन्दा की और कहा कि ये प्रवृत्तियां आक्रमण और युद्ध की साम्राज्यवादी नीति को मदद देने के समान हैं।

यह कहते हुये कि जब तक साम्राज्यवाद छोटे और दुर्बल राष्ट्रों को ताकत के बल पर लूटता और दबाता है, तब तक दमित राष्ट्रों का यह अडिग अधिकार है कि वे आक्रामकों के विरुद्ध अपने हाथ में अस्त्र लेकर लड़ें, कामरेड किम इल सुंग ने सिखाया :

"संघर्ष तब तक चलता रहना चाहिये, जब तक हर तरह के उपनिवेशवाद का धरती से हमेशा के लिये सफाया न हो जाय और जब तक सभी दमित और अपमानित राष्ट्र अपने स्वाधीन राज्यों की स्थापना न कर लें और सामाजिक प्रगति तथा राष्ट्रीय समृद्धि हासिल न कर लें।"

यह बताते हुये कि क्रांति अपने आप नहीं विकसित हो सकती, बल्कि वह सिर्फ क्रांतिकारियों के सक्रिय तथा कठिन संघर्ष के जरिये आगे बढ़ती और परिपक्व होती है, कामरेड किम इल सुंग ने सिखाया :

"हर देश के क्रांतिकारियों का यह कर्तव्य है कि वे अन्दरूनी तथा बाहरी परिस्थितियों के सही मूल्यांकन तथा शत्रु और मित्र के बीच शक्ति संतुलन के उचित आकलन के आधार पर संघर्ष का विज्ञान-प्रेरित सतर्क मार्ग बनायें और तपे हुये कार्यकर्ताओं को धुरी बना कर क्रांति की अग्नि परीक्षा में आम जनता को जगाते हुये, सक्रिय संघर्ष छेड़ते हुये, फिर भी अड़चनों को समझते हुये, तथा सामान्य समय में अनावश्यक बलिदानों से बचते हुये, क्रांतिकारी शक्तियों का निर्माण करें तथा महान क्रांतिकारी घटना की जिम्मेदारियां संभालने के लिये पूरी तैयारी करें। और जैसे ही क्रांतिकारी स्थिति पैदा हो जाय, उन्हें प्रतिक्रियावादी शासन को ध्वस्त करने के लिये अविलम्ब उठ खड़े हो कर, आखिरी वार करने का अवसर नहीं खोना चाहिये।"

कामरेड किम इल सुंग ने स्पष्ट किया कि क्रांतिकारी संघर्ष का स्वरूप और कार्य-पद्धति भी व्यक्तियों की अपनी इच्छा-आकांक्षा के अनुसार तय नहीं होती, बल्कि उस समय उत्पन्न आत्मपरक और वस्तुपरक स्थितियों से तय होती है। और इस बात से तय होती है कि शासक वर्ग किस हद तक प्रतिरोध करता है।

अपनी कृतियों में उन्होंने जोर दिया कि साम्राज्यवाद के विरुद्ध लड़ने के लिये हमले की मुख्य धार सब से पहले विश्व साम्राज्यवाद के सरगना अमरीकी साम्राज्यवाद के विरुद्ध मोड़नी चाहिये और उस उद्देश्य के लिये संयुक्त अमरीका-विरोधी कार्यवाही उपलब्ध करनी चाहिये तथा संयुक्त अमरीका-विरोधी मोर्चा बनाना चाहिये।

उन्होंने सिखाया कि अमरीकी साम्राज्यवाद को तितर बितर करना तथा उसे अन्तिम रूप से कमजोर बनाना और जनता की बहुत बड़ी शक्ति द्वारा उसे नष्ट कर देने में जनता का नेतृत्व करना तभी संभव है, जब कि यथासंभव व्यापक संयुक्त अमरीका-विरोधी मोर्चा बने, अमरीकी साम्राज्यवाद को एकदम अकेला कर दिया जाय, जहां भी वह अपने आक्रामक पंजे फैलाये, वहीं उसे संयुक्त शक्ति के जरिये चूर कर दिया जाय।

कामरेड किम इल सुंग ने कहा कि खासतौर से छोटे देशों को जी हजूरी त्याग देनी

चाहिये, जिसका अर्थ है कि साम्राज्य-विरोधी, अमरीका-विरोधी संघर्ष में छोटे देश बड़े देशों पर निर्भरता छोड़ दें और उन्होंने सिखाया कि यदि छोटे देश जुछे की स्थापना करें, आम जनता को एकजुट करें और बलिदान से डरे बिना उठ खड़े हों और लड़ने लगें, तो छोटे देश भी बड़े दुश्मन को पराजित कर सकते हैं ।

"आओ, हम साम्राज्य-विरोधी, अमरीका-विरोधी संघर्ष तेज करें, और 'एशिया, अफ्रीका तथा लैटिन अमरीका के जनगण का महान साम्राज्य-विरोधी क्रांतिकारी लक्ष्य अजेय है," नामक कृतियों को संसार की क्रान्तिकारी जनता की ओर से दिन प्रतिदिन अधिकाधिक हार्दिक समर्थन प्राप्त हो रहा है, क्योंकि उन में उन दमित जनगण की एकमत इच्छाओं और संकल्पों की अभिव्यक्ति मिलती है, जो संघर्ष चला रहे हैं ।

पार्टी के प्रतिनिधि सम्मेलन के बाद कामरेड किम इल सुंग ने पार्टी के प्रतिनिधि सम्मेलन के फैसलों को पूरा करने के संघर्ष में समस्त पार्टी और समस्त जनता को संगठित और आन्दोलित किया ।

पार्टी के प्रतिनिधि सम्मेलन के फैसलों को पूरा करने के लिये कामरेड किम इल सुंग ने सब से पहले पार्टी को सुदृढ़ बनाने और क्रान्तिकारी पांतों का राजनीतिक और वैचारिक दृष्टि से सुदृढ़ निर्माण करने के काम पर अपने प्रयास केन्द्रित किये ।

उन्होंने सबसे महत्वपूर्ण कार्य यह बताया कि पार्टी सदस्यों और मेहनतकश जनता को पार्टी की एकात्मक विचारधारा से लैस किया जाय ।

यह बताते हुये कि पार्टी की एकात्मक विचारधारा-व्यवस्था की दृढ़ स्थापना मार्क्सवादी-लेनिनवादी पार्टी के निर्माण का बुनियादी सिद्धान्त है और क्रान्ति तथा निर्माण कार्य को सफलतापूर्वक चलाने की निर्णायक गारन्टी है, कामरेड किम इल सुंग ने पार्टी की एकात्मक विचारधारा की विवेचना इस प्रकार प्रस्तुत की:

"पार्टी की एकात्मक विचारधारा हमारी पार्टी के वे विचार हैं, जो विचारधारात्मक रूप से जुछे सिद्धान्त से, राजनीति में स्वतंत्रता की प्रवृत्ति से, अर्थ व्यवस्था में आत्म-निर्भरता से तथा राष्ट्रीय प्रतिरक्षा में आत्मरक्षा से ओत-प्रोत हैं । हमारी पार्टी के विचार और हमारी पार्टी की नीतियां, वह मार्क्सवाद-लेनिनवाद है, जो हमारे यथार्थ पर रचनात्मक दृष्टि से लागू किया गया है, जिससे कोरिया की क्रांति को पूर्णतया सम्पन्न करने में और कोरिया की जनता को सबसे सही मार्ग से समाजवाद और साम्यवाद तक पहुंचाने में सहायता मिलती है ।"

उन्होंने सिखाया कि जब समस्त पार्टी सदस्य और मेहनतकश जनता हमारी पार्टी की एकात्मक विचारधारा से दृढ़ता के साथ लैस हो जाते हैं तभी वे जुछे की भलीभांति

स्थापना कर सकते हैं, क्रातिकारी परम्पराओं की दृढ़ता से रक्षा कर सकते हैं और सभी तरह की अस्वाथ्यकर वैचारिक प्रवृत्तियों के विरुद्ध सफलतापूर्वक लड़ सकते हैं।

कामरेड किम इल सुंग ने सिखाया कि पार्टी की एकात्मक विचारधारा व्यवस्था को स्थापित करने के लिये पार्टी सदस्यों और मेहनतकश जनता के बीच पार्टी की नीतियों और क्रान्तिकारी परम्पराओं की शिक्षा सुदृढ़ बनाने के लिये और दक्षिणपंथी तथा वामपंथी अवसरवाद, बड़ी शक्तियों की जीहजूरी, पूंजीवादी विचार, सामन्ती कन्फ्यूशियस विचार, गुटबाजी, क्षेत्रीय संकीर्णता, भाई-भतीजावाद जैसे अस्वास्थ्यकर वैचारिक विषयों को निर्मूल करने के लिये जोरदार संघर्ष चलाना चाहिये।

पार्टी की एकात्मक विचारधारा-व्यवस्था की स्थापना के संघर्ष के जरिये समूची पार्टी में तथा समस्त जनता में यह क्रांतिकारी विशेषता पूर्णतया पैदा हो गयी है कि वे हर स्थिति में, हर कहीं कामरेड किम इल सुंग के विचारों और इच्छाओं के अनुकूल आचरण करने लगे, बड़े से बड़े तूफान में बिना किसी दुविधा के पार्टी की नीतियों को सच्चे मन से स्वीकार करने लगे तथा नीतियों को अन्त तक निभाने लगे तथा उनकी हिमायत करने लगे, और समूची पार्टी तथा जनता कामरेड किम इल सुंग के इर्द-गिर्द दृढ़ता से एकताबद्ध हो गयी।

कामरेड किम इल सुंग ने एक ओर पार्टी को सुदृढ़ बनाने के तथा क्रान्तिकारी खेमे को एकताबद्ध करने के काम का पथ प्रदर्शन करते हुए, दूसरी ओर आर्थिक निर्माण तथा प्रतिरक्षा को समानान्तर पूरा करने की नयी क्रान्तिकारी नीति पालन के संघर्ष को पूरी ताकत से संगठित और प्रफुल्लित किया, उस पर चलने के लिये संघर्ष को जोरों से संगठित और संचालित किया।

कामरेड किम इल सुंग ने पार्टी सदस्यों और मेहनतकश जनता को पार्टी की एकात्मक विचारधारा से लैस करने का काम जोरों से संगठित और संचालित किया और साथ ही निष्क्रियता और अनुदारतावाद का विरोध करने, मेहनतकश जनता के क्रान्तिकारी जोश और रचनात्मक गतिविधि को पूर्णरूप से क्रियाशील बनाने का काम भी शुरू किया, तथा इस प्रकार सभी क्षेत्रों में नये, महान क्रान्तिकारी उत्थान को जन्म दिया।

उन्होंने इस पूंजीवादी तथा संशोधनवादी नजाकत को धूल में मिला दिया कि जब अर्थ व्यवस्था विकसित होती है और उसका पैमाना विस्तृत होने लगता है तो प्रगति की दर को बढ़ाया नहीं जा सकता। उन्होंने हमारी मेहनतकश जनता में आत्म विश्वास और प्रेरणा भरी, जो जड़ता और गतिरोध से मुक्त होकर निरन्तर प्रगति कर रही है। और अबाध गति से नयी खोजें कर रही है।

हामहुंग क्षेत्र में, जिसमें रियोंगसन मशीन निर्माण कारखाना शामिल है, कारखानों और उद्योगों में यथास्थल पथ-प्रदर्शन करते हुये, जून १९६७ में कामरेड किम इल सुंग ने आर्थिक निर्माण और प्रतिरक्षा के सुदृढ़ीकरण तथा नयी खोजों को प्रेरित करने के कामों में पार्टी की क्रान्तिकारी नीति के अमल के दौरान निष्क्रियतावाद और रूढ़िवाद की जो प्रवृत्तियां प्रकट हुई, उनके विरुद्ध संघर्ष की मशाल जलायी। और उन्होंने हमारे वीर मजदूर वर्ग की अपार सृजन शक्ति पर भरोसा करते हुये उनकी साहसिक पहलों का सक्रियतापूर्वक समर्थन किया तथा उनको अपनी पहलों को अमल में लाने के लिये प्रेरित किया।

कामरेड किम इल सुंग ने यथास्थल जो पथ-प्रदर्शन किया, उससे देश भर की मेहनतकश जनता ने निष्क्रियता और रूढ़िवाद के कूड़े को जला दिया और आर्थिक निर्माण और प्रतिरक्षा निर्माण को समानान्तर रूप से चलाने से सम्बन्धित पार्टी की क्रान्तिकारी कार्यनीति पर अमल के संघर्ष में नया श्रम-तूफान उठाने के लिये प्रेरित करने की दिशा में एक महान क्रांतिकारी मोड़ आया।

नेता की शिक्षाओं से असीमित रूप से प्रेरित होकर समूचे देश की मेहनतकश जनता ने राष्ट्रीय अर्थ-व्यवस्था के सभी क्षेत्रों में ऐसी नयी नयी खोजें करने और चमत्कार दिखाने में महान क्रान्तिकारी जोश प्रदर्शित किया—जिन की अतीत में कल्पना तक नहीं की जा सकती थी। देश के विभिन्न भागों में अनेक कारखानों और उद्योगों में मेहनतकश जनता ने अपनी वार्षिक योजनायें निर्धारित समय से तीन महीने पहले ही पूरी कर दीं। १९६७ में गत वर्ष की तुलना में कुल औद्योगिक उत्पादन में १७ फी सदी तथा अनाज के उत्पादन में १६ फी सदी की वृद्धि हुई।

प्रतिरक्षा निर्माण कार्य में भी अस्त्र-शस्त्र उद्योग का तेजी से विकास हुआ और पार्टी की समूची सैनिक नीति पर भली भांति अमल हुआ, जिसका बुनियादी सारतत्व है—समूची सेना को एक केडर सेना के रूप में प्रशिक्षित करना, उसे आधुनिक बनाना, समस्त जनता को सशस्त्र करना और समूचे देश को अजेय दुर्ग बना देना।

हमारी वीर जन-सेना विकसित होकर और शक्तिशाली बन कर केडर सेना में बदल गयी, जिसका एक एक सदस्य सौ-सौ के बराबर है, वह एक शक्तिशाली, आधुनिक, क्रांतिकारी सेना बन गयी, समस्त जनता को सशस्त्र कर दिया गया, और देश का हर क्षेत्र अभेद्य दुर्ग में परिणत हो गया। अखिल जन, अखिल-राष्ट्र प्रतिरक्षा व्यवस्था को, जन सेना जिसका हृदय है, इस बात का श्रेय प्राप्त है कि हमारी पार्टी और जनता इस स्थिति में पहुंच गयी कि वह अमरीकी साम्राज्यवादी आक्रामकों की सैनिक हरकतों को,

जो पहले से भी अधिक बढ़ गयी हैं, हर कदम पर नाकाम कर सकती है। और वह देश तथा क्रान्तिकारी उपलब्धियों की दृढ़ता से रक्षा कर रही है।

पार्टी को शक्तिशाली बनाने, क्रान्तिकारी पांतों को सुदृढ़ बनान तथा आर्थिक निर्माण और प्रतिरक्षा कार्य को तेजी से आगे बढ़ाने में प्राप्त महान सफलतायें उस रीति-नीति की सच्चाई का पर्याप्त प्रमाण हैं, जिसे पार्टी सम्मेलन में कामरेड किम इल सुंग ने प्रस्तुत किया था और यह सफलतायें उनके नेतृत्व के विवेक का भी प्रमाण हैं।

एक ऐसी स्थिति में, जब कि पार्टी के समस्त मेम्बर और मेहनतकश जनता पार्टी के प्रतिनिधि सम्मेलन के फैसलों का पालन करते हुये, समाजवादी आर्थिक निर्माण और प्रतिरक्षा के सभी क्षेत्रों में नया क्रान्तिकारी तूफान खड़ा कर रहे थे, नवम्बर १९६७ में चौथी सर्वोच्च जन विधान सभा के सदस्यों का निर्वाचन हुआ।

उन चुनावों से यह स्पष्ट हो गया कि हमारी जनता कामरेड किम इल सुंग में तथा उनके नेतृत्व में चलने वाली पार्टी और गणतंत्र की सरकार में अटूट आस्था रखती है और उनका पूर्णतया समर्थन करती है, तथा उन चुनावों ने संसार के सामने एक बार फिर यह स्पष्ट कर दिया कि हमारी जनता एकरूप राजनीतिक तथा सैद्धांतिक एकता में गुंथ कर अपने सम्मानित तथा परमप्रिय नेता कामरेड किम इल सुंग के गिर्द मजबूती से खड़ी है।

चौथी सर्वोच्च जन विधान सभा के प्रथम अधिवेशन ने दिसम्बर, १९६७ में कामरेड किम इल सुंग को हमारी जनता की सर्वसम्मत इच्छा के अनुसार, गणतंत्र के मंत्रिमण्डल का प्रधान मंत्री चुना।

उस अधिवेशन में कामरेड किम इल सुंग ने गणतंत्र की सरकार के ऐतिहासिक, राजनीतिक कार्यक्रम को प्रस्तुत किया, जिसका शीर्षक था : **"आओ, हम राज्य की गतिविधि के सभी क्षेत्रों में स्वाधीनता, आत्मनिर्भरता और आत्मरक्षा की क्रांतिकारी भावना को और अधिक सम्पूर्ण रूप से साकार बनाएं।"**

हमारी पार्टी और गणतंत्र की सरकार की सही नीतियों के कारण क्रान्ति और निर्माण में जो विलक्षण सफलतायें मिलीं, उनकी अपने राजनीतिक कार्यक्रम में समीक्षा करते हुये, उन्होंने पूरी गम्भीरता के साथ घोषणा की कि गणतंत्र की सरकार भविष्य में भी अपनी गतिविधि के सभी क्षेत्रों में स्वाधीनता, आत्म-निर्भरता और आत्म रक्षा की क्रान्तिकारी रीति-नीति का पालन करती रहेगी और हमारी क्रान्ति के आम कर्तव्यों के अनुरूप उन्होंने गणतंत्र की सरकार के समक्ष प्रस्तुत राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक तथा सैनिक कर्तव्यों को इस रूप में पेश किया:

"पहला, गणतन्त्र की सरकार हमारी पार्टी के जुछे के विचार को सभी क्षेत्रों में दृढ़ता के साथ साकार रूप देकर स्वाधीनता, आत्म-निर्भरता, आत्मरक्षा की दिशा को अमल में पूरी तरह लाएगी, ताकि देश की राजनैतिक स्वाधीनता को सुदृढ़ बनाया जा सके और हमारे राष्ट्र के पूर्ण एकीकरण, स्वाधीनता व समृद्धि की गारंटी करने की क्षमता रखने वाले स्वतंत्र राष्ट्रीय अर्थतंत्र की नींव को और मजबूत किया जा सके और खुद की शक्ति पर निर्भर हो कर पितृभूमि की सुरक्षा की विश्वास के साथ रक्षा की जा सके।

"दूसरा, प्रादेशिक भूमि का कृत्रिम बंटवारा तथा राष्ट्र के विभाजन से उत्पन्न हमारी जनता के वर्तमान दुर्भाग्य को जल्दी से जल्दी खत्म करने, दक्षिण कोरिया में जनता को मुक्त करने और पितृभूमि के एकीकरण को प्राप्त करने के लिये, गणतन्त्र की सरकार गणतन्त्र के उत्तरी आधे भाग में नैतिक तथा भौतिक रूप से जनता को दृढ़तापूर्वक तैयार करेगी, ताकि वे पवित्र अमरीका-विरोधी, राष्ट्रीय मुक्ति संघर्ष में दक्षिण कोरियाई जनता का हमेशा समर्थन कर सकें और महान क्रांतिकारी घटना का सक्रिय रूप से सामना कर सकें ।...

"तीसरा, कोरिया की मजदूर पार्टी के नेतृत्व में गणतन्त्र की सरकार सैद्धांतिक तथा सांस्कृतिक क्रांतियों को और तेज करके तथा मजदूर वर्ग के नेतृत्व की भूमिका को और आगे बढ़ाकर समाज के सभी सदस्यों को, जिन में किसान व बुद्धिजीवी भी शामिल हैं, क्रांतिकारी बनाने तथा उनका मजदूर वर्गीकरण करने के लिये शक्तिशाली संघर्ष चलाएगी ।....

"चौथा, गणतंत्र की सरकार राज्य और आर्थिक संगठनों के कर्मचारियों में नौकरशाही को खत्म करेगी तथा क्रांतिकारी जन दृष्टिकोण कायम करेगी, ताकि जनसत्ता के कार्यों तथा भूमिका को बढ़ाया जाये और क्रांति व निर्माण के लिये व्यापक जन समूह को सक्रिय रूप से संगठित और एक जुट किया जाये ।...

"पांचवां, गणतन्त्र की सरकार समाजवादी औद्योगीकरण के लिये कोरिया की मजदूर पार्टी की नीति को निरन्तर कायम रखते हुए और जन अर्थतन्त्र के समस्त क्षेत्रों में तकनीकी क्रांति को चलाने के लिये संघर्ष करते हुए, देश के स्वतन्त्र राष्ट्रीय अर्थतन्त्र की नींव को सुदृढ़ बनाएगी, जनता के जीवन-यापन को और अधिक उन्नत करेगी तथा मेहनतकश जनता को सख्त श्रम से मुक्त करने के पवित्र कार्य को पूरा करेगी ।...

"छठा, गणतन्त्र की सरकार कोरिया की मजदूर पार्टी के जुछे के विचार का दृढ़तापूर्वक पालन करते हुए देश के विज्ञान तथा टेक्नालाजी के विकास को अदम्य रूप से तेज करने के लिये और समाजवादी संस्कृति के निर्माण के लिये दृढ़ संघर्ष करती रहेगी ।

"सातवां, गणतन्त्र की सरकार वर्तमान स्थिति का सामाना करने के लिये देश की प्रतिरक्षात्मक क्षमताओं को और अधिक बढ़ाकर समूचे देश तथा पूरी जनता के प्रतिरक्षात्मक ढांचे का निर्माण करने के लिये सब कुछ करेगी, जो वह कर सकती है ।....

"आठवां, कोरिया के जनवादी जन गणतन्त्र की सरकार आत्म-निर्भरता की पताका के अन्तर्गत अपनी शक्ति तथा घरेलू स्रोतों को पूरी तरह एकजुट करके स्वतन्त्र राष्ट्रीय अर्थतंत्र के निर्माण की दिशा को लगातार कायम रखने के साथ साथ अन्य देशों के साथ सर्वहारा अन्तर्राष्ट्रीयवाद, पूर्ण समानता तथा आपसी लाभ के सिद्धान्तों पर आर्थिक संबंध स्थापित करके विदेश व्यापार विकसित करेगी ।...

"नवां, कोरिया के जनवादी जन गणतन्त्र की सरकार विदेश में सभी कोरियाई स्वदेशवासियों के हितों तथा राष्ट्रीय अधिकार की रक्षा के लिये सक्रिय रूप से संघर्ष करेगी ।

"दसवां, कोरिया के जनवादी जन गणतन्त्र की स्थापना के पहले दिन से ही हमने निरंतर इस बात की अभिघोषणा की है कि हम उन सभी देशों के साथ मैत्रीपूर्ण संबंध बढ़ाएंगे, जो साम्राज्यवादी आक्रमण का विरोध करते हैं, हमारी जनता की स्वाधीनता और आजादी का सम्मान करते हैं और हमारे देश के साथ समान आधार पर राजकीय संबन्ध स्थापित करना चाहते हैं और हम भविष्य में भी विदेश नीति के मामले में इसी सिद्धान्त पर डटे रहना जारी रखेंगे ।"

कामरेड किम इल सुंग ने गणतंत्र की सरकार के जिस राजनीतिक कार्यक्रम की घोषणा की, वह राज्य की गतिविधियों की कुंजी है, जिसमें गणतंत्र की सरकार की आन्तरिक तथा बाह्य नीतियों में जुछे के विचार का शानदार प्रतिरूप मिलता है और वह एक ऐसा कार्यक्रम सम्बन्धी दस्तावेज है, जो कोरिया की क्रान्ति के विजय मार्ग को आलोकित करता है ।

हमारे देश की क्रान्ति के व्यावहारिक अनुभवों का सामान्यीकरण करके जुछे की स्थापना करने के प्रश्न को कामरेड किम इल सुंग ने राजनीतिक कार्यक्रम में क्रान्ति तथा निर्माण के लिये बुनियादी महत्व का प्रश्न बताया ।

कामरेड किम इल सुंग ने कहा :

"जुछे की स्थापना होती है या नहीं, यह एक ऐसा प्रमुख प्रश्न है, जिस पर हमारी क्रान्ति की विजय निर्भर करती है—यह एक जीवन्त प्रश्न है, जो हमारे राष्ट्र के भविष्य का फैसला करता है ।"

राजनीतिक कार्यक्रम में उन्होंने बताया कि सिर्फ जुछे की सुदृढ़ता से स्थापना करके हर देश जी-हजूरीवाद और कठमुल्लापन को दूर कर सकता है, मार्क्सवाद-लेनिनवाद के

विश्वव्यापी सत्य को तथा दूसरे देशों के अनुभवों को अपनी ऐतिहासिक परिस्थितियों तथा राष्ट्रीय विशेषताओं के अनुरूप रचनात्मक दृष्टि से लागू कर सकता है और दूसरों पर भरोसा करने की प्रवृत्ति को छोड़ कर तथा आत्म-निर्भरता की भावना का परिचय देकर, अपनी जिम्मेदारी पर अपनी समस्याओं को अपने आप हल कर सकता है और तदनुसार अपने क्रान्तिकारी लक्ष्य तथा निर्माण कार्य को सफलता के साथ पूरा कर सकता है ।

कामरेड किम इल सुंग ने राजनीतिक कार्यक्रम में यह भी सिखाया कि कोरिया के यथार्थ का अध्ययन तथा विश्लेषण करने और जुछे के विचार के अनुसार स्वतंत्र ढंग से क्रान्ति और निर्माण में उठने वाली समस्याओं को हल करने के सिद्धान्त का सदा दृढ़ता से पालन होना चाहिये ।

कामरेड किम इल सुंग ने घोषणा की कि राजनीतिक स्वतंत्रता को मजबूत बनाने के लिये हमें चाहिये कि हम देश की सभी नीतियों की स्वतंत्र ढंग से रचना करें, अपनी यथार्थ परिस्थितियों के अनुसार स्वयं अपने मन और विश्वास के आधार पर अपने सभी मामले तय करें और अपने राष्ट्र के अधिकार और सम्मान के उल्लंघन या अपमान की अनुमति किसी को न दें ।

यह स्पष्ट करते हुये कि हमारी पार्टी और सरकार स्वाधीन राष्ट्रीय अर्थ व्यवस्था के निर्माण की जिस रीति-नीति का निरन्तर पालन कर रही है, वह आर्थिक निर्माण की पूर्णतया क्रांतिकारी रीति-नीति है और वह समाजवाद तथा साम्यवाद के निर्माण की संगत आवश्यकताओं के अनुरूप है, कामरेड किम इल सुंग ने जोर दे कर कहा कि भविष्य में भी हमारी पार्टी और सरकार आत्म निर्भरता के सिद्धान्त और स्वाधीन राष्ट्रीय अर्थ व्यवस्था की रीति-नीति का पालन करती रहेगी और उन पर और भी सर्वांगतः अमल करेगी ।

उन्होंने सिखाया कि कोई राष्ट्र तभी राजनीतिक स्वाधीनता अर्जित कर सकता है, देश को समृद्ध, सशक्त और अग्रगामी बना सकता है तथा राष्ट्रीय वैभव प्राप्त कर सकता है, जब वह स्वतंत्र राष्ट्रीय अर्थ व्यवस्था का निर्माण करे ।

उन्होंने यह भी सिखाया कि जब तक राष्ट्रीय विभेद बने रहेंगे और राज्यों का अस्तित्व बना रहेगा, तब तक हर राष्ट्रीय राज्य को इकाई मान कर स्वतंत्र राष्ट्रीय अर्थ व्यवस्था का निर्माण होना चाहिये । तभी यह सम्भव है कि समाजवाद और साम्यवाद की दृढ़ भौतिक तथा तकनीकी नींवें रखी जा सकें, विज्ञान, तकनीक और संस्कृति का तेजी से विकास किया जा सके, मेहनतकश जनता के तकनीकी तथा

सांस्कृतिक स्तर को निरन्तर ऊंचा किया जा सके और लोगों को सर्वतोमुखी रूप से विक-सित करके नये ढंग का इन्सान बनाया जा सके ।

उन्होंने यह भी कहा कि स्वतंत्र राष्ट्रीय अर्थ-व्यवस्था का निर्माण वह बुनियादी गारण्टी है, जिससे यह क्षमता आती है कि उस आर्थिक पिछड़ेपन को दूर किया जा सके, जो असमानता का असली आधार है तथा राष्ट्रीय समृद्धि हासिल की जा सके और समाजवादी तथा साम्यवादी समाज की रचना सफलतापूर्वक की जा सके ।

स्वतंत्र राष्ट्रीय अर्थ-व्यवस्था के निर्माण से सम्बन्धित कामरेड किम इल सुंग का गहन विचार और सिद्धान्त उस सब से सही रास्ते की ओर संकेत करते हैं, जिस पर चलकर समाजवाद और साम्यवाद की सफल रचना की जा सकती है तथा राष्ट्रीय असमानता और वर्ग-विभेद का उन्मूलन किया जा सकता है ।

राजनीतिक कार्यक्रम में कामरेड किम इल सुंग ने एक बार फिर गणतंत्र की सर-कार की स्वतंत्र और सिद्धान्तपरक विदेश नीति का स्पष्टीकरण किया, राज्यों तथा विश्व समाजवादी बाजार के बीच आर्थिक सहयोग के महत्व की नयी व्याख्या की और उस बुनियादी स्थिति की विवेचना की, जिसे विदेश व्यापार के सम्बन्धों में समाजवादी राज्यों को स्थापित करना चाहिये ।

कामरेड किम डल सुंग ने जोर दिया कि विदेश व्यापार में समाजवादी देशों को वर्ग-दृष्टि कायम रखनी चाहिये और प्राथमिक रूप से विश्व समाजवादी बाजार की मजबूती तथा उसके विकास पर सब से पहले ध्यान रखना चाहिये, और साम्राज्यवाद तथा उपनिवेशवाद के विरोध तथा समाजवाद और साम्यवाद की रचना के समान लक्ष्य की विजय के राजनीतिक हितों से शुरू करके सर्वहारा अन्तर्राष्ट्रीयतावाद की महान भावना का प्रदर्शन करना चाहिये तथा पारस्परिक आर्थिक सम्बन्धों में कट्टर स्वार्थ को पूर्णतया तिलांजलि देनी चाहिये ।

इसी के साथ उन्होंने सिखाया कि समाजवादी देशों को चाहिये कि वे एशिया तथा अफ्रीका के उन नव स्वतंत्र देशों के साथ पूर्ण समानता और परस्पर लाभ के सिद्धान्तों पर आर्थिक सम्बन्ध विकसित करें, जिन्होंने साम्राज्यवाद का जुआ उतार फेंका और राज-नीतिक स्वतंत्रता अर्जित की है और विकसित समाजवादी देशों का खासतौर से यह फर्ज है कि वे आर्थिक दृष्टि से पिछड़े हुये उन देशों को बिना किसी राजनीतिक शर्तों के नि:स्वार्थ भौतिक सहायता दें, जो साम्राज्यवाद के विरुद्ध समाजवाद के लिये प्रयास कर रहे हैं ।

राजनीतिक कार्यक्रम में जो बुनियादी विचारधारा प्रवाहित होती है, वह कामरेड किम इल सुंग की जुछे सम्बन्धी विचारधारा ही है।

कामरेड किम इल सुंग की जुछे सम्बन्धी विचारधारा क्रान्ति तथा निर्माण को सफलतापूर्वक संचालित करने की सबसे सही पथ प्रदर्शक विचारधारा है।

"आओ, हम राज्य की गतिविधि के सभी क्षेत्रों में स्वतंत्रता, आत्म-निर्भरता और आत्म रक्षा की क्रांतिकारी भावना को और अधिक सम्पूर्ण रूप से साकार बनाएं", शीर्षक से गणतंत्र की सरकार का राजनीतिक कार्यक्रम, जो कामरेड किम इल सुंग के जुछे विचार सम्बन्धी विचार की प्रति मूर्ति है, एक ऐसा शक्तिशाली शस्त्र है, जिससे हमारी जनता को और बड़ी जीतों तथा विजय की दृढ़ गारण्टी के लिये नये संघर्ष में गतिशील ढंग से जागृत किया जा सकता है।

राजनीतिक कार्यक्रम वह प्रेरणादायक झण्डा बन चुका है, जो देश के पूर्ण एकीकरण तथा उसकी स्वाधीनता के लिये तथा समाजवादी और साम्यवादी लक्ष्य की विजय के लिये संघर्ष करने वाली समूची कोरियाई जनता में अदम्य क्रान्तिकारी संकल्प और शक्ति फूंकता है। तथा जो एक ऐसा भयानक बम है, जिससे अमरीकी साम्राज्यवाद, उसके गुर्गों और क्रांति के शत्रुओं के दिलों में कंपकंपी, दहशत और चिन्ता फैल गई है।

अन्तर्राष्ट्रीय दृष्टि से राजनीतिक कार्यक्रम ने क्रान्तिकारी जनगण के मन में, जो साम्राज्यवाद के विरोध में वीरतापूर्वक लड़ रहे हैं, अपनी विजय के प्रति विश्वास तथा साहस बढ़ा दिया और इस साम्राज्यवाद विरोधी संघर्ष में उनका और शक्तिशाली ढंग से उत्साहवर्द्धन किया।

राजनीतिक कार्यक्रम उन सैद्धांतिक और वैचारिक प्रश्नों पर नयी रोशनी डालता है, जिनका हल समाजवाद और साम्यवाद की रचना के लिये अनिवार्य बन गया है और इस प्रकार उसने मार्क्सवादी-लेनिनवादी सिद्धान्त के विकास में महान योगदान किया है।

आज गणतंत्र की सरकार के राजनीतिक कार्यक्रम को, जो कामरेड किम इल सुंग ने जुछे सम्बन्धी महान विचार की प्रतिमूर्ति है, न सिर्फ कोरिया की जनता का, बल्कि संसार भर का सच्चे कम्युनिस्टों और क्रान्तिकारी जनगण का भी निर्विवाद समर्थन मिल चुका है और अन्तर्राष्ट्रीय पैमाने पर उसकी महान प्रतिध्वनि गूंज रही है।

संसार के अनेक क्रान्तिकारियों और क्रान्तिकारी जनगण ने गणतंत्र की सरकार के राजनीतिक कार्यक्रम की महती प्रशंसा करते हुए उसे एक ऐसा दस्तावेज बताया है, "जिसने मार्क्सवाद-लेनिनवाद में सबसे महत्वपूर्ण, सबसे निर्णायक योगदान किया है,"

तथा उसे "समाजवादी निर्माण के सिद्धान्त के बारे में एक क्लासिक" और "संसार भर के राजनीतिज्ञों के लिये एक पाठ्य पुस्तक" बताया है ।

गणतंत्र की सरकार का राजनीतिक कार्यक्रम, जिसने मार्क्सवाद-लेनिनवाद को और अधिक विकसित और समृद्ध करने में महान योगदान किया है, समय बीतने के साथ साथ अपनी जीवन्तता निरन्तर अधिकाधिक प्रकट करता जा रहा है ।

१९६८ के प्रारम्भ में अमरीकी साम्राज्यवादियों द्वारा एक नया युद्ध भड़काने की चालें तेज किये जाने के फलस्वरूप हमारे देश में एक तनावपूर्ण स्थिति पैदा हो गयी ।

विशेषकर जनवरी १९६८ में, जब अमरीकी साम्राज्यवादियों के सशस्त्र जासूसी जहाज "प्यूबलो" को, जिसे उन्होंने हमारे देश की जल सीमा के अन्दर दूर तक पैठने के लिये भेजा था और गम्भीर भड़काव पैदा किया था, हमारी वीर जनसेना की नौसेना नें पकड़ लिया, तब अमरीकी साम्राज्यवादियों ने जिस तरह बदहवास होकर युद्ध का शोरगुल मचाया, उससे स्थिति और भी संगीन हो गयी ।

अमरीकी साम्राज्यवादियों की युद्ध भड़काने वाली अंधी हरकतों से, जिन से किसी भी वक्त युद्ध छिड़ जाने का खतरा पैदा हो गया था, हमारे देश में गम्भीर हालत पैदा हो गयी और संसार भर का ध्यान कोरिया की ओर आकर्षित हो गया ।

कामरेड किम इल सुंग ने अमरीकी साम्राज्यवादी आक्रामकों को, जो "प्यूबलो" के पकड़े जाने के प्रश्न पर युद्ध छेड़ने के लिये अन्धाधुन्ध शोर कर रहे थे, निम्न शब्दों में गम्भीर रूप से चेतावनी दी:

"यदि अमरीकी साम्राज्यवादियों ने इस मसले को अपनी सशस्त्र सेना जमा करके धमकी और ब्लैकमेल द्वारा हल करने की कोशिश जारी रखी तो उन्हें इससे कुछ भी हासिल नहीं होगा । अगर उनके हाथ कुछ लगेगा तो वह होगी मौत और लाशें ।

"हम युद्ध नहीं चाहते, लेकिन हमें युद्ध से डर भी नहीं लगता । हमारी जनता और जन सेना अमरीकी साम्राज्यवादियों को "प्रतिकार" का उत्तर प्रतिकार से और पूर्ण युद्ध का उत्तर पूर्ण युद्ध से देंगी ।"

इस चेतावनी ने शत्रु के दिल में आतंक पैदा कर दिया और हमारी जनता के दिल में क्रान्ति की विजय के प्रति दृढ़ विश्वास और शत्रु के विनाश के लिये जुझारू संकल्प पैदा कर दिया और उसको देश की प्रतिरक्षा के लिये और समाजवादी निर्माण को आगे बढ़ाने के लिये शानदार संघर्ष के लिये आगे बढ़ाया ।

"प्यूबलो" की गिरफ्तारी के बाद अमरीकी साम्राज्यवादियों ने हमारी जनता से 'बदला' लेने की धमकी दी, जैसे कोई चोर कोतवाल को डांट रहा हो ।

लेकिन वे दुष्ट हमारी जनता को, जिसमें एक व्यक्ति सौ के बराबर होता है, और जो कामरेड किम इल सुंग के महान क्रान्तिकारी विचारों से लैस है, भयभीत न कर सके।

कामरेड किम इल सुंग की महान सिद्धान्तपरक और अडिग नीति पर आधारित गणतंत्र की सरकार के सुदृढ़ रवैये के सामने, अपने नेता के गिर्द घनिष्ठ रूप से एकजुट हमारी जनता के अदम्य संकल्प और अजेय शक्ति के सामने और संसार की जनता की सुनिश्चित मोर्चेबन्दी के सामने अपने को सांप-छछून्दर की हालत में पाकर अमरीकी साम्राज्यवादियों को अन्ततः दिसम्बर १९६८ में कोरिया की जनता के सामने घुटने टेकने पड़े, अपनी आक्रामक हरकत के लिये माफी मांगनी पड़ी और माफीनामे पर दस्त खत करने पड़े, जिससे यह गारण्टी देनी पड़ी कि वे फिर कभी ऐसे जुर्म नहीं दुहरायेंगे।

यह क्रांति के महान नेता कामरेड किम इल सुंग द्वारा प्रस्तुत आतमरक्षा की दिशा की विलक्षण विजय थी और साम्राज्यविरोधी, अमरीका विरोधी संघर्ष में हमारी जनता की एक और महान विजय थी।

इससे एक बार फिर अमरीकी साम्राज्यवाद को अपमानजनक पराजय का शिकार बनाते हुये, उसके 'पराक्रम' का 'भ्रम' तोड़ दिया गया तथा इससे हमारे गणतंत्र का पराक्रम जगजाहिर हो गया और संसार की उस क्रान्तिकारी जनता में, जो साम्राज्यवाद के विरुद्ध, अमरीका के विरुद्ध, संघर्ष में खड़ी है, असीम विश्वास और वीरता की भावना पैदा हुई।

कामरेड किम इल सुंग ने एक ओर तो सारे कामों का ठीक तरह संगठन और निर्देशन किया, ताकि यदि दूसरा युद्ध छेड़ने के लिये अमरीकी साम्राज्यवाद तिकड़में शुरू करे तो उनका जम कर मुकाबला किया जा सके, और साथ ही उन्होंने आर्थिक निर्माण और प्रतिरक्षा कार्य के सभी मोर्चों पर छलिमा अभियान को तीव्र करने के महान क्रान्तिकारी उत्थान का ज्वार उठाने के लिये अनेक कदम उठाये।

सम्मानित और प्रिय नेता कामरेड किम इल सुंग के गिर्द दृढ़ता से साथ एकत्र हमारे वीर मजदूर वर्ग तथा हमारी मेहनतकश जनता ने क्रांतिकारी संघर्ष छेड़ दिया, एक एक मिनट और सेकेण्ड का उपयोग करके दुगना तीन गुना काम पूरा करना शुरू किया और ऐसी तैयारी कर ली कि यदि दुश्मन हम पर आक्रमण करने का दुस्साहस करे तो एक झटके में उसके दांत खट्टे कर दिये जाएं और इस प्रकार हमारी जनता हर तरह के अवरोध और पुरानपथ को मिटा दे कर छलिमा भावना से आगे-आगे बढ़ती गयी और संघर्ष करती आगे कदम बढ़ाती गयी।

कामरेड किम इल सुंग : जन सेना के सैनिकों के बीच

फलतः देश भर में अनेक कारखानों और उद्योगों ने गणतंत्र की स्थापना की बीसवीं वर्षगांठ से पहले ही, अपनी वार्षिक योजना को निर्धारित अवधि से पूर्व पूरी करने में उल्लेखनीय सफलतायें हासिल कीं और रात दिन विश्व को चौंका देने वाले करिश्मे और खोजें कर दिखायीं ।

सितम्बर १९६८ में हमारी जनता ने अपनी गौरवशाली पितभूमि, कोरिया के जनवादी जन गणतंत्र की २० वीं वर्षगांठ बड़ी धूमधाम और शानशौकत से मनायी, और वह कामरेड किम इल सुंग जैसा नेता प्राप्त करके तथा उनके नेतत्व में ऐसी शानदार परिस्थितियों के बीच, जब कि देश के कोने कोने में सृजन तथा प्रगति की भावना गूंज रही थी और महान क्रान्तिकारी जोश हिलोरें ले रहा था, असीम आनन्द और उत्साह से ओतप्रोत हो उठी थी ।

गणतंत्र की २० वीं सालगिरह के आयोजन के अवसर पर कामरेड किम इल सुंग ने ऐतिहासिक रिपोर्ट प्रस्तुत की : **"कोरिया का जनवादी जन गणतंत्र हमारी जनता के लिये आजादी और स्वतंत्रता का झण्डा है तथा समाजवाद और साम्यवाद की रचना का शक्तिशाली अस्त्र है ।"**

अपनी रिपोर्ट में कामरेड किम इल सुंग ने गत २० वर्षों में गणतंत्र के झण्डे के नीचे क्रान्ति तथा निर्माण में हमारी जनता द्वारा प्राप्त महान उपलब्धियों तथा समृद्ध सैद्धांतिक और व्यावहारिक अनुभवों का वैज्ञानिक ढंग से विश्लेषण करके उनका सार-तत्व प्रस्तुत किया तथा संघर्ष के उन कार्यक्रम सम्बन्धी कर्तव्यों को बताया, जिनके जरिये उत्तरी आधे भाग में समाजवाद की पूर्ण विजय हो, दक्षिण कोरिया की क्रान्ति और देश के एकीकरण का लक्ष्य तेजी से पूरा किया जा सके, अमरीकी साम्राज्यवादियों की विश्व रणनीति नाकाम हो तथा समग्र रूप से अन्तर्राष्ट्रीय क्रान्ति का लक्ष्य आगे बढ़े ।

रिपोर्ट में कामरेड किम इल सुंग ने समाजवादी व्यवस्था के मूल तत्व के, उसके सामाजिक-आर्थिक तथा वर्ग सम्बन्धों के चरित्र के, सर्वहारा के अधिनायकत्व के ऐतिहासिक मिशन तथा समाजवादी समाज के विकास के नियम आदि के गहन विश्लेषण के आधार पर समाजवाद की पूर्ण विजय के प्रश्न की नयी मार्क्सवादी-लेनिनवादी व्याख्या की तथा उसे पूरा करने के लिये ऐतिहासिक कर्तव्यों की विवेचना की ।

कामरेड किम इल सुंग ने सिखाया:

"जिस समाज में परस्पर विरोधी वर्ग गुप्त साजिशें करते रहें, पुराने विचारों की सड़ान्ध जारी रहे, शहरों और गांवों का अन्तर तथा मजदूर वर्ग और किसान वर्ग के बीच वर्ग भेद विभेद बना रहे, देश का पूर्ण औद्योगीकरण न हुआ हो, तथा जहां समाजवाद

का भौतिक और तकनीकी आधार दृढ़ता से न रखा गया हो, ऐसे समाज को पूर्ण विजयी समाजवाद नहीं कहा जा सकता ।

"समाजवाद की पूर्ण विजय तथा मजदूर वर्ग के ऐतिहासिक लक्ष्य को प्राप्त करने के लिये समाजवादी राज्य को चाहिये कि वह अपने को वर्ग संघर्ष के अस्त्र के रूप में, समाजवाद तथा साम्यवाद के निर्माण के अस्त्र के रूप में अपनी भूमिका को और अधिक सुदृढ़ बनाये । दूसरे शब्दों में, समाजवादी राज्य को चाहिये कि वह एक ओर वर्ग संघर्ष को दृढ़ता से आगे बढ़ाते हुये और दूसरी ओर समाजवादी अर्थ व्यस्था के निर्माण को तेजी के साथ आगे बढ़ाते हुये, सर्वहारा अधिनायकत्व को सुदृढ़ करे ।"

समाजवादी व्यवस्था की विजय के बाद क्रांति को निरन्तर जारी रखने के लिये तथा समाजवाद की पूर्ण विजय उपलब्ध करने के लिये कामरेड किम इल सुंग ने सिखाया कि यह जरूरी है कि वर्ग-शत्रुओं पर अधिनायकत्व को तेज किया जाय, विचारधारात्मक क्रान्ति को सर्वांगतः आगे बढ़ाया जाय, पूरे समाज को क्रांतिकारी बनाया जाय तथा उसमें मजदूर वर्ग की चेतना भरी जाय, ग्रामीण समस्या को हमेशा के लिये हल कर दिया जाय, नगर तथा गांव का अन्तर मिटा दिया जाय और समाजवाद के भौतिक तथा तकनीकी आधार का सुदृढ़ता से निर्माण किया जाय । उन्होंने आगे सिखाया कि उन कर्तव्यों को ठीक ढंग से पूरा करने के लिये समस्त संक्रमण काल में सर्वहारा के अधिनायकत्व को, शत्रु के तत्वों के विरुद्ध अधिनायकत्व को दृढ़ता से साथ कायम रखा जाय । क्रान्ति तथा आर्थिक कार्य को समान रूप से आगे बढ़ाया जाय, ताकि वैचारिक और भौतिक दुर्गों पर अधिकार स्थापित हो जाय । इसके साथ ही, उन्होंने सर्वहारा के अधिनायकत्व के सार तत्व की स्पष्ट मार्क्सवादी-लेनिनवादी व्याख्या की और इस आवश्यकता पर जोर दिया कि अधिनायकत्व और जनवाद, वर्ग संघर्ष और आम जनता की एकता तथा एकजुटता को मजबूती के साथ संगत रूप से जोड़ना चाहिये ।

समाजवाद की पूर्ण विजय पर कामरेड किम इल सुंग द्वारा प्रस्तुत गहन सिद्धान्त और सही नीतियां संक्रमण काल, वर्ग संघर्ष और सर्वहारा के अधिनायकत्व से सम्बन्धित मार्क्सवादी-लेनिनवादी सिद्धान्त के सर्वांग तथा और आगे विकास हैं ।

अपनी रिपोर्ट में कामरेड किम इल सुंग ने समाजवादी निर्माण के ऐतिहासिक अनुभवों और सम्भावनाओं के गहन विश्लेषण के आधार पर समाजवाद की अन्तिम विजय के प्रश्न पर भी नया और वैज्ञानिक विवेचन प्रस्तुत किया ।

यह सिखाते हुये कि अनेक देशों में समाजवादी क्रांतियों के फूट पड़ने तथा उनकी पूर्ण विजयों के दौरान तथा समाजवादी शिविर के क्रमशः विस्तृत, शक्तिशाली और

विकसित होने के दौरान विश्व क्रान्ति की अन्तिम विजय होगी। कामरेड किम इल सुंग ने कहा कि समाजवादी देशों की वर्ग मैत्री तथा एकता और समाजवादी शिविर की एक-जुटता को सुदृढ़ किया जाना चाहिये और शिविर की शक्ति को अजेय बनाना चाहिये, ताकि समाजवाद की अन्तिम विजय सम्भव बन सके।

समाजवाद की पूर्ण तथा अन्तिम विजय के लिये सर्वांगतः क्रान्तिकारी तथा वैज्ञानिक मार्ग पर नया और सुस्पष्ट प्रकाश डालते हुये कामरेड किम इल सुंग ने संसार के क्रान्तिकारी जन गण को एक ऐसा सशक्त हथियार दे दिया है, जिसके जरिये आज की पेचीदा परिस्थितियों में दक्षिणपंथी तथा वामपंथी अवसरवाद के विरुद्ध मजदूर वर्ग के ऐतिहासिक लक्ष्य को शानदार तरीके से पूरा किया जा सकता है।

अपनी रिपोर्ट में कामरेड किम इल सुंग ने अमरीकी साम्राज्यवाद को ध्वस्त करने के लिये तथा आज की परिस्थिति में समूची विश्व क्रान्ति को और अधिक विकसित करने के लिये, साम्राज्य-विरोधी, अमरीका विरोधी संघर्ष को और अधिक तीव्रता से चलाने के लिये हमारी पार्टी और सरकार की अडिग स्थिति, युद्ध रणनीति तथा कार्यनीति को भी स्पष्ट किया।

यह बताते हुये कि संसार भर के जनगण के संघर्ष का पहला निशाना है अमरीकी साम्राज्यवाद, उन्होंने सिखाया कि अमरीकी साम्राज्यवाद को पराजित करने के लिये व्यापक साम्राज्यवाद-विरोधी शक्तियों को चाहिये कि वे मिल जुल कर अमरीकी साम्राज्यवाद पर चोट करें तथा एशिया और यूरोप, अफ्रीका और लैटिन अमरीका में, सभी छोटे बड़े देशों में, सभी क्षेत्रों और भू-खण्डों में, जहां जहां अमरीकी साम्राज्यवाद ने आक्रामक पंजे फैला रखे हैं, उस पर दवाब डालें।

उन्होंने इस पर खासतौर से जोर दिया कि यदि क्रांति में रत छोटे देशों के जनगण विजय में सुदृढ़ आस्था रखते हुये अपनी शक्तियों को एकजुट कर लें तो उन में इतनी बड़ी ताकत आ सकती है कि अमरीकी साम्राज्यवाद को हर मोर्चे पर झुकाया जा सकता है।

संसार में हर कहीं, हर किसी को अमरीकी साम्राज्यवाद को कुचलने के लिये एकजुट हो जाना चाहिये, अमरीका विरोधी संघर्ष की रणनीति की व्याख्या करते हुए कामरेड किम इल सुंग ने कहा:

"क्रांति में संलग्न सभी देशों के जनगण को चाहिये कि वे सारे संसार में अमरीकी दरिन्दे के टुकड़े टुकड़े कर दें और उसका सिर काट लें। अमरीकी साम्राज्यवादी ऊपर से ताकतवर लगते हैं, लेकिन जब अनेक देशों के जनगण सभी तरफ से उन पर हमला बोल देंगे, और उनका वध करना शुरू कर देंगे तो वे शक्तिहीन हो जायेंगे और अन्त में धूल चाटने लगेंगे।"

यह सर्वश्रेष्ठ सिद्धान्तपरक रणनीति, जो विश्वक्रान्ति से सम्बन्धित कामरेड किम इल सुंग के महान विचार का मूर्त रूप है, वर्तमान परिस्थितियों में एकमात्र सही दिशा है, जिसके द्वारा साम्राज्य-विरोधी, अमरीका-विरोधी संघर्ष को और आगे विकसित किया जा सकता है और जिससे क्रान्ति की विजय में संसार के क्रान्तिकारी जनगण को महान प्रोत्साहन और दृढ़ विश्वास मिला है।

रिपोर्ट में कामरेड किम इल सुंग ने एक बार फिर दक्षिण कोरिया की क्रान्ति तथा देश के स्वतंत्र एकीकरण के लिये गणतंत्र की सरकार की सुसंगत नीति की घोषणा की और हमारी क्रान्ति की राष्ट्रव्यापी विजय को और तीव्र बनाने के लिये सही रणनीति और कार्यनीति तथा कदमों को स्पष्ट किया।

कामरेड किम इल सुंग ने सिखाया कि दक्षिण कोरिया की जनता को चाहिये कि वह अमरीकी साम्राज्यवादी आक्रामकों को भगाने तथा उनके औपनिवेशिक शासन को नष्ट करने के लिए संघर्ष चलाये और इस संघर्ष को सत्ता पर अधिकार करने के संघर्ष के साथ जोड़ते हुए चलाये। उन्होंने आगे सिखाया कि दक्षिण कोरिया के क्रान्तिकारी संघर्ष में सभी तरह के संघर्ष के तरीकों को राजनीतिक और आर्थिक; कानूनी और गैरकानूनी, हिंसक और अहिंसक, छोटे और बड़े पैमाने के संघर्षों को उस तरह अपनाना चाहिये कि वे संघर्ष सत्ता पर अधिकार करने के लिये निर्णायक युद्ध की तैयारी बन जायें और यह निर्णायक युद्ध केवल हिंसक तरीकों से ही विजयी बन सकता है।

देश के एकीकरण के प्रश्न पर रोशनी डालते हुए कामरेड किम इल सुंग ने जोर दिया कि यह तभी संभव है जब अमरीकी साम्राज्यवादी आक्रामकों को अपने देश से भगा दिया जाय और दक्षिण कोरिया की कठपुतली हुकूमत को मिटा दिया जाय और उन्होंने कहा:

"जब दक्षिण कोरिया से अमरीकी साम्राज्यवाद को भगा दिया जायेगा और वहां की जनता की जनवादी क्रांति विजयी हो जायगी तथा जनता अपने हाथ में सत्ता संभाल लेगी तभी उत्तरी आधे भाग की समाजवादी शक्तियों और दक्षिण कोरिया की जनवादी शक्तियों की संयुक्त शक्ति से राष्ट्रीय एकीकरण का लक्ष्य पूरा होगा।"

कामरेड किम इल सुंग द्वारा प्रस्तुत यह नीति सब से सही नीति है, जिसका मेल हमारी जनता की इच्छाओं और राष्ट्र के हितों के साथ भली भांति बैठता है और सारी दुनिया के जनगण उसका समर्थन करते हैं।

कोरिया के जनवादी जन गणतंत्र की स्थापना की बीसवीं साल गिरह के समारोह के अवसर पर कामरेड किम इल सुंग द्वारा प्रस्तुत ऐतिहासिक रिपोर्ट एक ऐसा विलक्षण

ऐतिहासिक दस्तावेज है, जिसने हमारी पार्टी और जनता द्वारा नये समाज के निर्माण में प्राप्त नतीजों और अनुभवों का गहन मार्क्सवादी-लेनिनवादी विश्लेषण प्रस्तुत किया, समीक्षा की ओर उनका सामान्यीकरण किया, तथा वह एक महान कार्यक्रम सम्बन्धी दास्तावेज है, जिसने हमारी समाजवादी व्यवस्था को सुदृढ़ करने और उसे विकसित करने, समाजवाद की पूर्ण विजय को प्राप्त करने, दक्षिण कोरिया में क्रान्ति को तथा देश के एकीकरण को तीव्र करने की स्पष्ट सम्भावनाओं और जुझारू कर्तव्यों को प्रस्तुत किया।

वह रिपोर्ट एक क्रान्तिकारी दस्तावेज भी है, जो उस रणनीति और संघर्ष की दिशा को स्पष्ट करता है, जिस पर चल कर वर्तमान दौर में अमरीकी साम्राज्यवाद की विश्व-रणनीति को विफल बनाया जा सकता है, उसके अन्तिम पतन की प्रक्रिया को तीव्र बनाया जा सकता है तथा अन्तर्राष्ट्रीय क्रान्तिकारी लक्ष्य की विजय हासिल की जा सकती है।

वह रिपोर्ट, जो क्रांति तथा निर्माण के बारे में गहन विचारों, वैज्ञानिक सिद्धान्तों तथा विशिष्ट दिशाओं को व्यवस्थित और बोधगम्य बनाती है, क्लासिकीय महत्व का महान मार्क्सवादी-लेनिनवादी दस्तावेज है।

कोरिया के जनवादी जन गणतंत्र की स्थापना की बीसवीं सालगिरह के अवसर पर जैसे ही कामरेड किम इल सुंग की वह रिपोर्ट संसार के सामने आयी, संसार के अनेक क्रांतिकारियों और क्रांतिकारी जनगण ने उसके प्रति अपना निरपेक्ष समर्थन तथा सहानुभूति व्यक्त की, और उस रिपोर्ट को "सर्वांगतः समाजवादी क्रान्ति तथा समाजवादी निर्माण पर एक महान सैद्धान्तिक तथा कार्यक्रम सम्बन्धी दस्तावेज," "बीसवीं सदी के मध्य का कम्युनिस्ट घोषणापत्र" और "वर्तमान समय में क्लासिकीय महत्व का एक महान मार्क्सवादी-लेनिनवादी दस्तावेज है" कह कर उसका उच्च मूल्यांकन किया।

समस्त कोरियाई जनता, जिसने क्रान्ति में विजय के उज्ज्वल मार्ग को आलोकित करने वाली ऐतिहासिक रिपोर्ट को पढ़ा, आज संघर्ष के उस शानदार रास्ते पर दुगुने साहस के साथ आगे बढ़ती हुई लड़ रही हैं, जो विजय और प्रगति का रास्ता उसके नेता ने दिखाया है, वह विवेकशील नेता कामरेड किम इल सुंग के प्रति असीम सम्मान और विश्वास से भर उठी है, जो हमेशा विजय और सम्मान के स्वर्णिम मार्ग पर उस का पथप्रदर्शन करते रहे हैं और जिन्हें अपने नेता के रूप में पाकर, वह हमेशा गर्व और आनन्द से ओत-प्रोत होती रही है।

मार्च १९६९ में महान मार्क्सवादी-लेनिनवादी तथा क्रान्ति के विलक्षण नेता कामरेड किम इल सुंग ने अपनी वैज्ञानिक कृति, "**समाजवादी अर्थ-व्यवस्था की कुछ सैद्धांतिक**

समस्याएं," प्रकाशित की, जिसमें उन महत्वपूर्ण सैद्धान्तिक तथा अमली समस्याओं के उत्तर मिले, जिनकी आज के दौर में समाजवाद तथा साम्यवाद के निर्माण के सिलसिले में व्याख्या करना अपेक्षित है ।

इस कृति में कामरेड किम इल सुंग ने समाजवाद तथा साम्यवाद के निर्माण क्रम में उठने वाली महत्वपूर्ण समस्याओं पर तथा समाजवादी राजनीतिक अर्थशास्त्र के मूल प्रश्नों पर—जैसे अर्थतंत्र के पैमाने और उत्पादन विकास की दर के आपसी सम्बन्ध का प्रश्न, माल के रूप में उत्पादन के साधन तथा मूल्यगत नियम के उपयोग का प्रश्न और किसान मण्डी तथा समाजवादी समाज में उसके उन्मूलन के उपाय—एक नया मार्क्सवादी-लेनिनवादी प्रकाश डाला, और हल के सूत्र बताये ।

"समाजवादी अर्थ व्यवस्था की कुछ सैद्धान्तिक समस्यायें" नामक कामरेड किम इल सुंग की विलक्षण पुस्तक का प्रकाशन हमारी क्रान्ति के विकास के लिये, समाजवाद तथा साम्यवाद के निर्माण के लिये तथा अर्थ-व्यवस्था के मार्क्सवादी-लेनिनवादी सिद्धान्त प्रस्तुत करने के लिये एक ऐतिहासिक घटना सिद्ध हुई ।

इस कृति में कामरेड किम इल सुंग ने सबसे पहले महान सत्य को विलक्षण ढंग से स्पष्ट किया तथा इसका अकाट्य सैद्धांतिक और व्यावहारिक प्रमाण प्रस्तुत किया कि समाजवादी समाज में इस बात की असीम क्षमता पायी जाती है कि उसकी अर्थ-व्यवस्था निरन्तर उच्च दर से विकास करे और यह कि ज्यों ज्यों समाजवादी रचना आगे बढ़ती हैं तथा आर्थिक आधार सुदृढ़ होता जाता है, त्यों त्यों क्षमतायें और बढ़ती जाती हैं ।

कामरेड किम इल सुंग ने सिखाया :

"समाजवादी समाज में अपनी अर्थ व्यवस्था को इतनी ऊंची दर से निरन्तर विकसित करने की क्षमता पैदा होती है, जिसकी पूंजीवादी समाज में कल्पना भी नहीं की जा सकती है और समाजवादी निर्माण जितना आगे बढ़ता जाता है तथा उसका आर्थिक आधार जितना सुदृढ़ होता जाता है, उसकी क्षमतायें उतनी अधिक बढ़ती जाती हैं ।"

समाजवादी अर्थ व्यवस्था के विकास की नियम चालित प्रक्रिया को प्रदर्शित करने के आधार पर कामरेड किम इल सुंग ने सिखाया कि समाजवादी समाज में उत्पादन के विकास की दर इतनी ऊंची होती है कि पूंजीवादी समाज में उसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती और उन्होंने उस पर अमल करने की परिस्थितियों और सैद्धांतिक तरीकों पर नया और पूर्ण प्रकाश डाला ।

उन्होंने सिखाया कि समाजवादी समाज में देश के श्रम-साधनों और प्राकृतिक संपत्ति को बहुत ही तर्कपूर्ण ढंग से उपयोग में लाया जा सकता है तथा उत्पादन को योजना के

अनुसार अबाध गति से आगे बढ़ाया जा सकता है और उत्पादन-विकास की यह संभावना त्यों त्यों बढ़ती जायेगी, ज्यों ज्यों सर्वहारा के अधिकनायकत्व के राज्य की आर्थिक संगठक भूमिका को सुदृढ़ करते हुये कार्यकर्ताओं के आर्थिक प्रबंध के स्तर को ऊंचा उठाते जाने के साथ साथ, राष्ट्रीय अर्थ-व्यवस्था की विभिन्न शाखाओं के बीच संगत संतुलन सुरक्षित रखा जायेगा और देश की अर्थ-व्यवस्था को सही रखा जायेगा।

और उन्होंने बताया कि समाजवादी समाज में समाजवाद के उत्पादन संबंधों द्वारा प्रस्तुत उत्पादक शक्तियों के विकास की असीमित संभावनाओं के इस्तेमाल से टेक्नालाजी बड़ी तेजी से विकसित होती है और इसी के साथ श्रम की उत्पादकता निरन्तर बढ़ती रहती है तथा उत्पादन उच्च दर से विकसित होता है।

खासतौर से कामरेड किम इल सुंग ने स्पष्ट किया कि समाजवादी समाज में उत्पादन शक्तियों के विकास को सशक्त संवेग देने में निर्णायक तत्व होता है-जनता का उच्च स्तरीय क्रांतिकारी जोश, और उन्होंने सिखाया कि पार्टी और सर्वहारा का राज्य, अपनी अपनी कार्यगत भूमिकाओं के अनुरूप जितना ही अधिक तेजी से मेहनतकश जनता में वैचारिक क्रांति सुदृढ़ करते हैं और उसके दिमाग से पुरानी विचारधाराओं के अवशेष दूर करते हैं, त्यों त्यों मेहनतकश जनता समाजवादी उत्पादन के विकास के लिये अपने काम से अपनी प्रतिभा और शक्ति अधिकाधिक मात्रा में लगाती है।

समाजवादी समाज में सुलभ लाभों के गहन विश्लेषण तथा हमारे देश मे समाजवाद के निर्माण के व्यावहारिक अनुभवों के आधार पर कामरेड किम इल सुग ने इस सिद्धांत की भ्रामकता और अनौचित्य को वैज्ञानिक ढंग से सिद्ध किया कि समाजवादी समाज में अर्थ-व्यवस्था के विकास और उसके पैमाने के विस्तार के साथ साथ बढ़े हुये उत्पादन की सुरक्षित शक्ति धीरे धीरे घटने लगती है और उत्पादन को ऊंची दर पर आगे नहीं बढ़ाया जा सकता।

अपनी पुस्तक में कामरेड किम इल सुंग ने पहली बार इस प्रश्न का भी व्यापक मार्क्स-वादी-लेनिनवादी उत्तर दिया कि माल-रुपया संबंध को कैसे हल किया जाय। खासतौर से उन्होंने इस बात का उत्तर दिया कि माल के रूप में उत्पादन के साधनों की समस्या कैसे हल की जाय और समाजवादी समाज में मूल्य के नियम का कैसे उपयोग किया जाय।

अपनी वैज्ञानिक सूक्ष्म दृष्टि की विलक्षण क्षमता द्वारा तथा हमारे देश में समृद्ध व्यावहारिक अनुभवों के आधार पर कामरेड किम इल सुंग ने उस कारण की स्पष्ट व्याख्या की कि समाजवादी समाज में माल का उत्पादन क्यों होता है और उत्पादन का साधन कब माल बन जाता है, कब नहीं, और फिर पहली बार इतिहास में इस प्रश्न का स्पष्ट

और विवेकपूर्ण सैद्धांतिक उत्तर मिला कि राजकीय उद्योगों में उत्पादन के साधनों का विनिमय होना माल का रूप धारण करने के बराबर होता है और यहां मूल्य का नियम पूर्ण रूप से लागू होता है।

कामरेड किम इल सुंग ने सिखाया :

"प्रथमतः, जब राजकीय स्वामित्व के क्षेत्र में तैयार किये गये उत्पादन के साधनों को सहकारी स्वामित्व के क्षेत्र में हस्तान्तरित कर दिया जाता है या जब इसी प्रक्रिया को उलट दिया जाता है तो वह दोनों ही सूरत में माल का रूप धारण कर लेता है और इसलिये यहां मूल्य का नियम लागू होता है, दूसरे, जब उत्पादन के साधनों का सहकारी स्वामित्व की सीमा में, सहकारी फार्मों के बीच या उत्पादकों की सहकारी समितियों के बीच या इन दोनों में ही आपस में, विनिमय किया जाता है, तो भी उत्पादन साधन माल बन जाते हैं और यहां भी मूल्य का नियम लागू होता है, तीसरे, निर्यात के मामले में उत्पादन के साधन माल होते हैं और उनका क्रय-विक्रय विश्व बाजार की दर पर या समाजवादी बाजार की दर पर होता है।

"यह कहना ठीक होगा कि साज-सामान और सामग्री की सप्लाई तथा सहकारी उत्पादन की योजना के अनुसार उत्पादन के जिन साधनों का राजकीय उद्योगों के बीच विनिमय होता है वे माल नहीं होते, बल्कि माल का रूप ले लेते हैं, और तदनुसार, इस मामले में मूल्य का नियम सारतः उसी तरह लागू नहीं होता जैसे माल के मामले में होता है, वह केवल रूप मात्र में लागू होता है।"

इस बात का भी वैज्ञानिक कारण बताते हुये कि राजकीय उद्योगों में परस्पर हस्तांतरित उत्पादन के साधनों को माल नहीं कहते, बल्कि वे केवल माल का स्वरूप ग्रहण करते हैं, कामरेड किम इल सुंग ने सिखाया कि ऐसा इसलिये है कि राजकीय उद्योग अपेक्षाकृत स्वाधीन होते हैं और समान मुआविजे के सिद्धांत पर उत्पादन के साधन देते हैं, और प्रबंध में राजकीय उद्योगों की स्वाधीनता तथा समान मुआविजे के सिद्धांत का कुछ न कुछ संबंध समाजवादी समाज के उस विशिष्ट पहलू से है, जो संक्रमणशील होता है, यानी कि यह उत्पादक शक्तियां और जनता की कम्युनिस्ट चेतना उच्च स्तर तक विकसित नहीं होती तथा श्रम जनता के लिये जीवन की प्राथमिक आवश्यकता नहीं बना होता।

कामरेड किम इल सुंग ने वैज्ञानिक ढंग से इस समस्या की भी व्याख्या की कि उत्पादन तथा माल के संचरण में मूल्य के नियम का किस प्रकार उपयोग किया जाता है और खासतौर से यह बताया कि समाजवादी बुनियादी आर्थिक नियम तथा मूल्य के नियम की आवश्य-

कताओं के सही मूल्यांकन के आधार पर तथा उससे उत्पन्न सिद्धांतों के अनुरूप माल की उचित कीमत कैसे तय की जाती है।

"समाजवादी अर्थ व्यवस्था की कुछ सैद्धांतिक समस्यायें" नामक अपनी कृति में कामरेड किम इल सुंग ने समाजवादी समाज में किसान मण्डी की समस्या का व्यापक ढंग से भाष्य किया, जो कि अब तक बगैर किसी व्याख्या के पड़ी हुई थी और उन्होंने किसान मण्डी की अवधारणा, जग (मण्डी-अनु) का मूल उद्गम, व्यापार के पिछड़े स्वरूप के रूप में किसान मण्डी की प्रकृति, किसान मण्डी में पूंजीवाद के अवशेष, समाजवादी समाज में किसान मण्डी के अस्तित्व का कारण और उसकी भूमिका, उसके उन्मूलन का तरीका, तथा अन्य समस्याओं पर प्रकाश डाला और उन्होंने माल के संचरण की समाप्ति का और समाजवादी व्यापार की पूर्ति व्यवस्था में संक्रमण से संबंधित सर्वथा नये प्रश्न उठाये तथा इस सिलसिले में उन्होंने नियम चालित प्रक्रिया की विलक्षण व्याख्या की।

यहां उन्होंने खास तौर से यह मौलिक विचार प्रस्तुत किया कि किसानमण्डी और चोरी छिपे का व्यापार तभी समाप्त हो सकता है तथा व्यापार अन्ततः सप्लाई व्यवस्था का रूप तभी ले सकता है, जब कि उत्पादक शक्तियां इस सीमा तक विकसित हो जायं कि जनता की आवश्यकता की सभी सामग्री पर्याप्त मात्रा में पैदा की जा सके और सप्लाई की जा सके तथा सहकारी सम्पत्ति समस्त जनता की संपत्ति में तबदील हो जाय। इससे उस प्रश्न का स्पष्ट वैज्ञानिक विश्लेषण प्राप्त होता है कि माल उत्पादन कैसे खत्म होगा और उसके बाद किस रूप में माल का वितरण होगा।

"समाजवादी अर्थ व्यवस्था पर कुछ सैद्धांतिक प्रश्न" नामक कामरेड किम इल सुंग की कृति, जिसमें इतिहास में पहली बार गहन और प्रत्यक्ष तर्कों तथा अकाट्य तथ्यों के आधार पर समाजवादी व्यवस्था की बुनियादी समस्याओं की सर्वांग संपन्न, त्रुटिहीन, वैज्ञानिक रूपेण सैद्धांतिक विवेचना मिलती है, और जिसने उन समस्याओं के हल के लिये एकमात्र सही मार्ग आलोकित किया है, समाजवादी अर्थ-व्यवस्था से संबंधित एक महान क्लासिकी दस्तावेज है, एक कार्यक्रम संबंधी दस्तावेज है और एक महान मार्क्सवादी-लेनिनवादी दस्तावेज है, जिससे सर्वहारा के अधिनायकत्व के राज्य को अपनी आर्थिक नीति के निर्धारण और कार्यान्वियन के लिये पथ-प्रदर्शन प्राप्त करना चाहिए।

यह कृति मार्क्सवाद-लेनिनवाद को रचनात्मक ढंग से विकसित करने और समाजवाद के आर्थिक सिद्धांत के क्षेत्र में उसकी शुद्धता की रक्षा करने का शानदार उदाहरण है। और पूंजीपति वर्ग के प्रतिक्रियावादी आर्थिक सिद्धांत तथा अवसरवाद के आर्थिक सिद्धांत पर निर्णयकारी आघात है।

कामरेड किम इल सुंग के विशिष्ट सिद्धांत ने, जो समाजवाद और साम्यवाद के विजय पथ को शानदार रूप से आलोकित करता है, उस कोरिया की जनता में असीम विश्वास, जुझारू भावना और साहस पैदा किया, जो समाजवाद की पूर्ण विजय तथा राष्ट्र व्यापी क्रांति की विजय के लिये वीरतापूर्ण संघर्ष चला रही है और इस सिद्धांत ने समाजवाद तथा साम्यवाद की कामना करने वाले क्रांतिकारी विश्व जनगण को कम्युनिस्ट लक्ष्य की न्यायसंगतता, उसकी विजय में गहन विश्वास तथा अपार उत्साह की भावनाओं से अनुप्राणित किया।

संसार के अनेक प्रकाशनों ने इस पुस्तक की बड़ी प्रशंसा करते हुये कहा है कि "यह एक ऐतिहासिक दस्तावेज है, जो समाजवादी आर्थिक सिद्धांत के विकास में युगान्तरकारी महत्व का नया मीलस्तम्भ है "और" यह एक ऐसा कार्यक्रम संबंधी दस्तावेज है जिसका सर्वहारा के अधिनायकत्व वाले राज्य को अपनी आर्थिक नीति निर्धारित करने में पालन करना चाहिये।"

कामरेड किम इल सुंग के विवेकपूर्ण और महान नेतृत्व के अंतर्गत कोरिया की जनता ने गत आधी सदी के तूफानों को झेलते हुये क्रांति और निर्माण में शानदार जीतें हासिल की हैं।

यह कामरेड किम इल सुंग के महान क्रांतिकारी विचारों तथा सिद्धांतों का, उनके द्वारा प्रस्तुत वैज्ञानिक दिशाओं और नीतियों का और उनके द्वारा संचित अनुभव भण्डार का ही प्रताप था कि हमारी पार्टी और जनता ने क्रांति और निर्माण में बहुत ही सही और सीधा रास्ता तय किया और एक ऐसा अजेय सैद्धांतिक तथा व्यावहारिक अस्त्र प्राप्त किया, जिसके जरिये वह अपने अभियान में तमाम तरह की मुश्किलों और अग्नि परीक्षाओं को पार कर सकती है।

कोरिया की जनता इस विश्वास से ओत प्रोत है कि जब वह कामरेड किम इल सुंग के नेतृत्व में उनके द्वारा इंगित विजय-पथ पर आगे बढेगी, तो उसकी विजय निश्चित है।

हमारी जनता का यह चट्टानी विश्वास और संकल्प गत ४० वर्षों से भी अधिक अवधि में प्राप्त जीवन के उसके अनुभव पर आधारित है, जिसके दौरान वह कामरेड किम इल सुंग के विवेकपूर्ण नेतृत्व में संघर्ष करती रही और विजय प्राप्त करती रही।

कोरिया की जनता के लिये विलक्षण विजय और वैभव सुरक्षित है, क्योंकि वह अंतर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट तथा विश्व क्रांतिकारी आन्दोलनों के एक महान नेता, क्रांति के प्रतिभाशाली योद्धा, महान मार्क्सवादी-लेनिनवादी, सम्मानित तथा प्रिय नेता कामरेड किम इल सुंग के महान क्रांतिकारी विचारों से लैस होकर, उनके नेतृत्व में संघर्ष कर रही है तथा

आगे बढ़ रही है, और देश का एकीकरण तथा कोरिया में समाजवाद और साम्यवाद का लक्ष्य निश्चित ही पूरा होगा।

X X X

चार करोड़ कोरियाई जनता के महान नेता कामरेड किम इल सुंग न ४० वर्षो मे भी अधिक अवधि तक कोरिया की क्रांति की विजय को और आगे बढ़ाया और सही अर्थो में अमर उपलब्धियां अर्जित कीं।

कामरेड किम इल सुंग ने वैज्ञानिक क्रांतिकारी नीतियां और दिशायें प्रस्तुत कीं और हमारे देश के यथार्थ पर मार्क्सवाद-लेनिनवाद को सृजनात्मक ढंग से लागू करके कोरिया की क्रांति को सही रास्ते पर आगे बढ़ाया और इस प्रकार क्रांति का एक नया महान युग शुरू किया, जिससे कम्युनिस्ट आन्दोलन में तथा कोरिया के जापान विरोधी राष्ट्रीय मुक्ति आन्दोलन में एक उग्रवादी अध्याय का सूत्रपात हुआ और उन्होंने इस एक ऐसे देश में सशक्त समाजवादी राज्य की स्थापना की, जो बहुत दिनों से आक्रामकों के पैरों तले कुचला जाता रहा और उन्होंने हमारी जनता के राजनीतिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक जीवन में युगान्तरकारी परिवर्तन ला दिया।

जापानी साम्राज्यवादी शासन के सबसे भयंकर दिनों में कामरेड किम इल सुंग ने वीरतापूर्ण जापान-विरोधी सशस्त्र संघर्ष संगठित किया और उसे आगे बढ़ाया तथा इस प्रकार उन्होंने समस्त संसार के सामने हमारे राष्ट्र के आत्म-सम्मान और जीवन्त भावना को प्रदर्शित किया तथा हमारी पार्टी और जनता की शानदार क्रांतिकारी परंपराओं को स्थापित किया।

कामरेड किम इल सुंग ने घृणित जापानी साम्राज्यवादियों को पराजित करने में हमारी जनता का नेतृत्व किया तथा पितृभूमि की पुनर्स्थापना उपलब्ध की। उन्होंने साम्राज्यवाद के सरगना, ऐसे अमरीकी साम्राज्यवाद के आक्रमण को कुचलने के लिये कोरिया की जनता के पितृभूमि मुक्ति युद्ध का विजय पथ पर नेतृत्व किया, जिसका दावा था कि वह संसार में सबसे 'शक्तिशाली' है और उन्होंने देश की स्वाधीनता और जनता की आजादी की रक्षा की।

कामरेड किम इल सुंग ने जापान-विरोधी सशस्त्र संघर्ष के दौरान पार्टी की स्थापना के लिये जो संगठनात्मक और सैद्धांतिक तैयारी की, उसके आधार पर उन्होंने कोरिया की वर्कर्स पार्टी को जन्म दिया, और उसे एक अजेय मार्क्सवादी लेनिनवादी पार्टी के रूप में सुदृढ़ बनाया और विकसित किया। उन्होंने हमारे देश में सर्वहारा के अधिनायकत्व

के प्रथम राज्य की स्थापना की और बाहरी और भीतरी शत्रुओं के विरुद्ध भयानक संघर्ष के बीच उसे मजबूत और विकसित किया और उन्होंने क्रांति की विश्वसनीय रक्षक जन-सेना की स्थापना की और उसे मजबूत तथा विकसित बना कर एक क्रांतिकारी सशस्त्र सेना का रूप दिया, जो कि एक केडर सेना है, और जो आधुनिक है तथा जिसका हर सदस्य सौ के बराबर है।

कामरेड किम इल सुंग ने ऐसे सही क्रांतिकारी सिद्धांत को जन्म दिया, जिसके आधार पर उन्होंने हमारे देश को विजय के सबसे सही मार्ग पर आगे बढ़ाया, पार्टी, राज्य तथा श्रमजीवी जनता के संगठनों के रूप में सर्वहारा के अधिनायकत्व की सुचालित व्यवस्था की स्थापना की और वे इन सब का नेतृत्व कर रहे हैं।

कामरेड किम इल सुंग ने पार्टी और जनता को विजयी बनाते हुये नेतृत्व किया और गणतंत्र के उत्तरी आधे भाग में थोड़े ही समय में साम्राज्य-विरोधी जनवादी क्रांति को पूरा किया और इस प्रकार हमारे देश में एक सर्वाधिक प्रगतिशील समाजवादी व्यवस्था की स्थापना की, जो शोषण के समस्त रूपों से मुक्त है, उन्होंने हमारे देश में एक शक्तिशाली, स्वतंत्र राष्ट्रीय अर्थ व्यवस्था का निर्माण किया, जो जापानी तथा अमरीकी साम्राज्यवाद के विनाश का शिकार बन चुकी थी, और उन्होंने विज्ञान, शिक्षा और संस्कृति को गौरव-शाली रूप से पुष्पित-पल्लवित किया।

समाजवादी व्यवस्था की स्थापना के बाद उठने वाली नयी सैद्धांतिक तथा व्याबहारिक समस्याओं को कामरेड किम इल सुंग ने सबसे सही और मौलिक ढंग से हल किया और इस प्रकार हमारे देश में समाजवाद और साम्यवाद की पूर्ण विजय का मार्ग प्रशस्त किया।

कामरेड किम इल सुंग ने दक्षिण कोरिया की क्रांति और देश के एकीकरण के लिये सबसे सही दिशाओं और नीतियों को जन्म दिया और वे उन पर अमल के लिये उत्तर तथा दक्षिण कोरिया की जनता का नेतृत्व कर रहे हैं ताकि राष्ट्रव्यापी पैमाने पर कोरिया की क्रांति की विजय-गति तीव्र हो।

सच बात यह है कि कोरिया की क्रांति के विकास का मार्ग कामरेड किम इल सुंग के महान क्रांतिकारी विचारों तथा उनके परिपक्व नेतृत्व की शानदार विजय का मार्ग है।

सम्मानित तथा प्रिय नेता कामरेड किम इल सुंग के लम्बे अडिग क्रांतिकारी संघर्ष तथा विवेकपूर्ण नेतृत्व का ही सुफल है कि कोरिया की जनता हर तरह के शोषण और दमन से मुक्त हुई, सदियों पुराना पिछड़ापन तथा गरीबी मिटी, और अब वह देश और समाज की स्वामी बन कर स्वतंत्र तथा सुखद जीवन व्यतीत कर रही है।

यह कामरेड किम इल सुंग के श्रेष्ठ नेतृत्व का ही सुफल है कि कोरिया की जनता

ऐसी अजेय जनता बन चुकी है कि जिसके पास सर्वाधिक क्रांतिकारी पार्टी, जन सरकार और ऐसी क्रांतिकारी सेना है, जिसका हर सदस्य सौ के बराबर है। और वह ऐसी जनता बन चुकी है, जिसके पास प्रगतिशील समाजवादी व्यवस्था है, सशक्त अर्थ व्यवस्था है, एक प्रकाशमय संस्कृति है और, जो क्रांति की विजयी प्रगति के युग में जी रही है, एक ऐसे युग में ,जिसमें उनके इतिहास में पहली बार राष्ट्रीय समृद्धि का आगमन हुआ।

मार्क्सवाद-लेनिनवाद के क्रांतिकारी सिद्धांतों का दृढ़ता से पालन कर कामरेड किम इल सुंग अंतर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट आन्दोलन तथा समूची विश्व क्रांति के विकास में अपनी समस्त शक्ति लगा रहे हैं।

उन्होंने अंतर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट आन्दोलन में दक्षिणपंथी और वामपंथी अवसरवाद पर विजय पाने के लिये, समाजवादी देशों की एकता के लिये, अंतर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट आन्दोलन की एकता के लिये सबसे सही दिशा का संकेत किया और वे उसके पालन के लिये बहुत ही सुसंगत ढंग से संघर्षरत हैं।

साम्राज्यवाद-विरोधी, अमरीका-विरोधी संघर्ष का भी झण्डा ऊंचा किये हुये वे अमरीका की अगुआई में चलने वाले साम्राज्यवादियों के आक्रमण तथा युद्ध की नीति को विफल बनाने के लिये तथा एशिया, अफ्रीका और लैटिन अमरीका के जनगण के क्रांतिकारी संघर्ष को आगे बढ़ाने के लिये पूर्ण आत्मार्पण के साथ लड़ रहे हैं।

कामरेड किम इल सुंग ने न केवल हमारे देश की क्रांति तथा निर्माण के दौरान उठने वाले, बल्कि वर्तमान युग में अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र में पैदा होने वाले सिद्धांत संबंधी सभी प्रश्नों का सही उत्तर दिया और इस प्रकार वे अंतर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट तथा विश्व क्रांतिकारी आन्दोलनों के विकास में महान योगदान दे रहे हैं।

गंभीर कठिनाइयों में कोरिया की क्रांति को विजय तक पहुंचाने में कामरेड किम इल सुंग की अमर उपलब्धियां, अंतर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट आन्दोलन तथा विश्वक्रांति के विकास में उनका अपार योगदान, उनकी गौरवपूर्ण कृतियों में संचित उनके महान क्रांतिकारी विचार, मौलिक सिद्धांत और कार्य पद्धति तथा उनके द्वारा संचित अनुभवों का भण्डार-यह सब समाजवाद तथा साम्यवाद के लक्ष्य की विजय के लिये अमूल्य सम्पदा तथा समृद्ध भण्डार हैं।

साथ ही, उनसे मार्क्सवाद-लेनिनवाद की शुद्धता की रक्षा में तथा उसके सैद्धांतिक और वैचारिक कोष की वृद्धि में सहायता मिली है।

सच तो यह है कि कामरेड किम इल सुंग का गौरवशाली, क्रांतिकारी इतिहास एक ऐसा स्रोत है, जिससे कोरिया की जनता में और उन सारे जनगण में, जो अपने देश की

स्वतंत्रता और समृद्धि के लिये, अपनी आजादी और खुशहाली के लिये तथा समाजवाद और साम्यवाद के लिये लड रहे हैं, अडिग शक्ति, साहस और विश्वास का जन्म होता है और जिससे उनमें क्रांतिकारी जोश और विवेक पैदा होता है। यह इतिहास एक ऐसी क्रांतिकारी पुस्तक है, जो विजय-मार्ग को आलोकित करती है।

कामरेड किम इल सुंग क्रांति के विलक्षण नेता हैं, जो क्रांतिकारी सिद्धांतों के प्रति अडिग भाव से समर्पित हैं, उनके संकल्प को किसी भी तरह के संकट और तूफान में नहीं डिगाया जा सकता, उनमें असाधारण गतिशीलता है जिसके सहारे वे मुश्किलों और अग्नि-परीक्षाओं को पार करके क्रांति को आगे बढ़ाते रहते हैं, वे हर चीज और घटना का विश्लेषण करने में पूरा मनोयोग दिखाते हैं, वे हर पेचीदा परिस्थिति और हालत को भेद कर भीतर की हर चीज देख लेते हैं और सही रास्ता ढूंढ़ निकालते हैं और उनमें नेतृत्व की असाधारण योग्यता है।

चूंकि उन्होंने जुछे से प्रेरित क्रांतिकारी दिशा और नीतियां प्रस्तुत कीं और हमारी जनता को विजय के सीधे मार्ग पर बिना किसी भटकाव के आगे बढ़ाया, इसीलिये कोरिया की क्रांति इस योग्य बन सकी कि वह साम्राज्यवादियों के बदहवास हमलों का मुंहतोड़ जवाब दे सके, देशद्रोहियों की तोड़ फोड़ वाली साजिशों को नाकाम कर सके, महान राष्ट्र मदान्धता के दबाव को विफल कर सके, और उन कमियों से पैदा अवरोधों को दूर कर सके, जो हमें इतिहास में मिली थीं और आग उगलते तूफानों में आगे बढ़ कर आज महान विजय तक पहुंच सके।

कामरेड किम इल सुंग का क्रांतिकारी इतिहास जनता के प्रति असीम प्यार तथा जनप्रिय कार्यपद्धति और कार्यशैली के चमकते उदाहरणों से परिपूर्ण है।

कामरेड किम इल सुंग सिर्फ क्रांति के ही महान नेता नहीं, वे एक शिक्षक और उदार पिता भी हैं, जो जनता को क्रांति और निर्माण का मार्ग दिखाते हैं और उनके जीवन के हर पक्ष की देखभाल करते हैं, और वे एक घनिष्ठ कामरेड हैं, जो हमारी जनता के सुखदुख के साझीदार हैं।

वे हमेशा जनता के बीच रहते हैं, उसकी पीड़ा को अपनी पीड़ा समझते हैं और वात्सल्य की भावना के साथ वे जनता की देखरेख करते हैं।

राज काज के मामलों में उन्होंने हमेशा मजदूरों, किसानों तथा मेहनतकश जनता के अन्य अंगों से परामर्श लिया है, उनकी शक्ति और विवेक को संगठित तथा आन्दोलित किया है और उन पर भरोसा करके क्रांति तथा निर्माण का विजय- पर्यन्त नेतृत्व किया है।

कोरिया की क्रांति तथा विश्व क्रांति की प्रगति के संघर्ष की अपनी महान उपलब्धियों

के कारण कामरेड किम इल सुंग को आज न सिर्फ कोरिया की जनता का, बल्कि संसार के अनेक क्रांतिकारियों तथा क्रांतिकारी जनगण का भी संपूर्ण विश्वास और सम्मान प्राप्त है।

कामरेड किम इल सुंग को अपने नेता के रूप में पाकर, उनके क्रांतिकारी सैनिक के रूप में जीवन बिता कर, काम करके तथा संघर्ष करके कोरिया की जनता महान आनंद का अनुभव करती है तथा सम्मानित महसूस करती है और वह समूचे संसार के समक्ष अपनी इस भावना को सगर्व प्रकट करती है।

हमारी पार्टी सदस्य तथा मेहनतकश जनता कामरेड किम इल सुंग के सच्चे सैनिक और क्रांतिकारी के रूप में अपने को दीक्षित करने के लिये यथाशक्ति सब कुछ कर रहे हैं-ऐसे क्रांतिकारी के रूप में अपने को दीक्षित करने के लिये, जो मार्क्सवादी-लेनिनवादी विश्वदृष्टि से सुसज्जित हों और जो कामरेड किम इल सुंग की महान क्रांतिकारी गतिविधियों के इतिहास का अध्ययन करके तथा उन से सीख कर अडिग क्रांतिकारी भावना और संकल्प से परिपूर्ण हों।

हमारी जनता में इस बात का दृढ़ संकल्प है कि अतीत की तरह भविष्य में भी वह कामरेड किम इल सुंग के नेतृत्व की पताका ऊंची किये रहेगी और उनके प्रति असीम वफादारी के साथ क्रांतिकारी सैनिकों की तरह लड़ती रहेगी।

कोरिया की जनता अजेय है, जिसे अद्वितीय देशभक्त, राष्ट्रीय जननायक, चिर विजयी, लौह संकल्प संपन्न, विलक्षण कमाण्डर तथा अंतर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट और मजदूर वर्ग के आन्दोलनों के एक महान नेता और चार करोड़ कोरियावासियों के सम्मानित तथा परम प्रिय नेता कामरेड किम इल सुंग का विवेकपूर्ण नेतृत्व प्राप्त है।